2

ईश्वर, इन्सान और इन्सानियत

सत्य की ओर एक कदम

- सृष्टि का हर्ता कर्ता धर्ता सब का मालिक एक है
- जो सब का मालिक है वही ईश्वर है
- ईश्वर का इन्सान के लिए नियम ही इन्सानियत है
- जिसमें इन्सानियत है वही इन्सान है

लेखक

श्री प्यारे लाल

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं।©

लेखक व प्रकाशक :
प्यारे लाल
प्रबंधक,
श्री मदन धाम, माणकपुर।
गांव : मेदा माजरा,
डाकखाना : प्रताप नगर,
नंगल डैम, रूप नगर (पंजाब)
पिन : 140125

11 सितम्बर 2012.
प्रथम संस्करण : 3000 प्रतियाँ
मूल्य : 40 रुपए

समर्पण

मैं इस पुस्तक को परम पूजनीय श्री ज्योति शक्ति जी के शुभ-जन्म दिवस के अवसर पर अपने इष्ट परम शक्ति के साकार रूप पूर्ण परमेश्वर श्री मदन जी के कमल चरणों में सादर समर्पित करता हूँ।

प्यारे लाल

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या

i. दो शब्द

ii. प्रस्तावना

1. ईश्वर है तो कैसे ?

2. ईश्वर क्या है ?

3. ईश्वर एक है, कैसे ?

4. इन्सान और उस के जीवन में ईश्वर का महत्व

5. इन्सानियत

6. इन्सान दुःखी क्यों ?

7. इन्सान के जीवन का उद्देश्य

8. मोक्ष प्राप्ति

9. ईश्वर के दर्शनों से पाप कब, क्यों और कैसे कटते हैं ?

10. आज्ञा और आदेश

11. परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप में धरा पर ! कैसे ?

12. श्री मदन धाम व दूसरे धार्मिक स्थानों में अन्तर

13. श्री मदन धाम में गुरुदीक्षा या नाम दान क्यों नहीं

14. कुल देवता से परमशक्ति तक कौन क्या है ?

15. परमशक्ति का अस्तित्व सिद्ध क्यों नहीं किया जा सकता ?

16. परमशक्ति अपनी सर्वोच्चता सदैव बनाये रखती है

17. इन्सान आस्तिक से नास्तिक और नास्तिक से आस्तिक क्यों और कैसे ?

18. परिवर्तन : कुदरत का नियम, क्यों और कैसे ?

19. ईश्वर एक है तो मत-मतान्तर क्यों ?

20. परमशक्ति और परम-आत्मा / भगवान में अन्तर

दो शब्द

श्री मदन धाम माणकपुर आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ पर परमशक्ति इन्सानी रूप में आ कर आने वाले श्रद्धालुओं को अपने बारे में स्वयं ज्ञान दे रही है और अपनी दिव्य शक्ति से उस ज्ञान पर चला भी रही है। अत: उनसे बढ़ कर उच्चकोटि का पथ-प्रदर्शक और कौन हो सकता है, क्योंकि परमशक्ति की ही घोषणा है कि "मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ लेकिन इस समय एक इन्सान बनी हूँ। यह शरीर मेरा है, मेरा नाम मदन है।" माणकपुर दरबार में परमशक्ति के साकार रूप "पूर्ण परमेश्वर श्री मदन जी" अपने श्रीमुख से अध्यात्मवाद का सच्चा ज्ञान दे रहे हैं। उसके साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों, वहम-भ्रमों व आडम्बरों पर से भी पूरी तरह से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठा रहे हैं।

श्री मदन धाम माणकपुर से प्राप्त होने वाले ज्ञान की अद्वितीय विशेषता यह है कि हर बात क्रियात्मक रूप में सिद्ध करके सिखाई जाती है। इस प्रकार का प्रशिक्षण शायद ही कभी देखने और सुनने में आया हो। जो व्यक्ति स्वयं को यहाँ का श्रद्धालु मानता है, उसे यहाँ से प्राप्त किए गए ज्ञान को अपने जीवन में अपनाना पड़ता है। यदि कोई श्रद्धालु इसे अपनाने में आनाकानी करता है तो परमशक्ति अपनी ईश्वरीय शक्ति से उसे अपनी राह पर बलपूर्वक चलाने की क्षमता रखती है।

आज के युग में ईश्वर के बारे में इन्सान के मन में बहुत सी भ्रान्तियाँ हैं। परमशक्ति श्री मदन जी उन सभी भ्रांतियों पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठा रहे हैं। मैंने इस पुस्तक में श्री मदन जी द्वारा दिए गए ज्ञान को ही संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की है ताकि पाठकगण इसका लाभ उठा सकें। ईश्वर है या नहीं है एक द्वंद्व बना रहा है। इन्सान के बारे में भी हर किसी की सोच अलग-अलग है। जैसे हर इन्सान की शक्ल और आवाज़ अलग-अलग है ठीक उसी तरह हर इन्सान की र ुचियाँ, स्वभाव, आदतें, सोच अलग-अलग होने के कारण उनका कर्म भी अलग-अलग है। कर्म के कारण ही इन्सान हैवान, शैतान या महान् बनता है।

इस पुस्तक में मैंने कोशिश की है कि ईश्वर, इन्सान और इन्सानियत के बारे में जो भ्रान्तियाँ या द्वंद हैं उनको दूर किया जा सके। परमशक्ति श्री मदन जी ने यहाँ पर जो भी क्रियात्मक रूप में ज्ञान दिया है उसका सारांश ही यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। यह ज्ञान इन्सान को एक नेक इन्सान बनाने में काफी सीमा तक सहायक हो सकता है। यह बातें मैंने सर्वोच्च शक्ति के इन्सानी रूप श्री मदन जी के कमल चरणों में बैठ कर, सुन कर, सीख कर, अनुभव करके वर्णन की है। मैं पूर्ण परमेश्वर श्री मदन जी का अति आभारी हूँ जिन्होंने ने मुझे अपनी शरण के योग समझते हूए ,इस दरबार का कार्य-भार सोंपा है। इस के अत िरिक्त मैं श्री सुभाष आर्य, यशपाल सिंह डडवाल, गुरबखश सिंह और मनदीप जी का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के लेखन कार्य और ढांचा तैयार करने में अपना पूर्ण सहयोग दिया है।

आशा है कि पाठकगण इस पुस्तक का गहन अध्ययन करके अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करेंगे। इसके साथ-साथ अपने जीवन को आदर्शमय बनाने हेतु ढंग और नियमों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए "जीवन दर्पण" पुस्तक का अध्ययन करें।

प्यारे
लाल
माणकपुर
तिथि : 11 सितम्बर, 2012.
गांव : मेदा माजरा,
डाकखाना : प्रताप नगर
नंगल डैम, रूप नगर (पंजाब)
पिन :140125

प्रस्तावना

संसार में जितने भी लोग़ अध्यात्मवाद से जुड़े हुए हैं उनमें से कुछ लोगों की धारणा है कि संसार को चलाने वाली केवल एक ही शक्ति है। वही शक्ति कोई न कोई रूप बना कर, कहीं न कहीं अगम्य लोक में बैठ कर सृष्टि का संचालन कर रही है। वे उसे अनादि, अनन्त, अजन्मी और सर्वोच्च मानते हैं। उनकी यह धारणा भी परिपक्व है कि ईश्वर साकार रूप में कहीं न कहीं स्थायी रूप में विद्यमान है परन्तु वह इन्सान बन कर धरती पर कभी नहीं आता। वही रूप अपनी माया से सारी सृष्टि का संचालन कर रहा है परन्तु वह किसी को दिखाई नहीं देता।

सर्वोच्च शक्ति समय-समय पर महानात्माओं को अपने साधन के रूप में धरा पर भेज कर किसी सीमा तक अपने नियमों और गुणों का उनके द्वारा प्रदर्शन करती रही है।

वर्तमान काल में उसी शक्ति ने, जो कि सर्वोच्च और परम है, जिसके ऊपर कोई शक्ति है ही नहीं, स्वयं माणकपुर दरबार में घोषणा की है कि वह अब इन्सानी रूप में धरती पर आ चुकी है। आज उसका एक रूप, एक नाम और निश्चित मुकाम भी है। परमशक्ति के धरा पर आने के एक से अनेक प्रयोजन हो सकते हैं जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण यही है कि इन्सान को क्रियात्मक रूप में प्रमाण देकर यह सिद्ध करना कि उसका कोई भी स्थायी रूप कहीं भी नहीं है लेकिन वह कोई भी रूप बना कर धरती पर आ सकती है, आती रही है और अब आ चुकी है। जब इन्सान उसे भूल कर, उससे विमुख हो कर और उसके बनाए हुए नियमों की खुले आम धज्जियां उड़ाता है तथा अपने आप को ही कर्ता समझता है, तब उसे समय-समय पर इन्सानी रूप में धरा पर आना पड़ता है। अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन वह पूर्ण रूप से किसी भी साधन द्वारा नहीं करती। सम्पूर्ण मानवता के मन में यह धारणा बनाए रखना कि उसका अस्तित्व सृष्टि की रचना से पहले भी था, अब भी है और आगे भी रहेगा, उसका मुख्य उद्देश्य है।

उसके धरा पर आने के मुख्य उद्देश्य अपना अस्तित्व सिद्ध करना, क्रियात्मक रूप में आध्यात्मिक शिक्षा का ज्ञान देना और विश्व-बन्धुत्व की स्थापना करना है।

यहाँ यह बताना भी अति आवश्यक है कि पूर्ण परमेश्वर श्री मदन जी की शरण में आने से पहले मैं न तो किसी का उपासक था और न ही किसी का विरोधी। हालातों के वशीभूत होकर मैं श्री मदन धाम आया और पूर्ण परमेश्वर श्री मदन जी ने अपनी कृपा से मुझे अपना अनुभव कराया। साक्षात्कार होने के बाद मैंने उनके चरण कमलों में बैठ कर अध्यात्मवाद के सम्बन्ध में जो कुछ भी सीखा, अनुभव किया या देखा उसका ही वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। ईश्वर क्या है, उसके गुण, नियम, शक्तियाँ क्या हैं, वो एक है तो कैसे, ईश्वर और इन्सान का आपसी सम्बन्ध क्या है इनके बारे में संक्षिप्त रूप से ज्ञान दिया गया है। इन्सान क्या है, उसके जीवन का उद्देश्य क्या है, इन्सान के ईश्वर के प्रति क्या कर्तव्य हैं, वह एक नेक इन्सान कैसे बन सकता है आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है। इन्सान को इन्सान समझना भाव इन्सानियत ही मनुष्य का सच्चा धर्म है। इन्सानित के मूल आधार क्या हैं इसका वर्णन भी इस पुस्तक में किया गया है।

श्री मदन धाम अध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ सृष्टि का स्वामी, जो सबका मालिक है, क्रियात्मक रूप में ज्ञान दे रहा है। परमशक्ति द्वारा दिए गए ज्ञान के आधार पर ही इस पुस्तक में श्री मदन धाम और दूसरे धार्मिक स्थानों में अन्तर, परमशक्ति इन्सानी रूप में धरा पर कैसे, इन्सान दुखी क्यों, इन्सान के जीवन का उद्देश्य, ईश्वर प्राप्ति के पड़ाव, मोक्ष प्राप्ति, क्या ईश्वर के दर्शन मात्र से ही जन्म-जन्म के पाप कट जाते हैं, आज्ञा और आदेश, कुल देवता से परमशक्ति तक कौन क्या है, यहाँ गुरुदीक्षा क्यों नहीं दी जाती, परमशक्ति का अस्तित्व सिद्ध क्यों नहीं किया जा सकता,

आस्तिक से नास्तिक और नास्तिक से आस्तिक क्यों और कैसे, परमशक्ति अपनी सर्वोच्चता सदैव बनाए रखती है, कुदरत का नियम परिवर्तन क्यों और कैसे, ईश्वर एक है तो मत-मतान्तर क्यों इत्यादि विषयों पर क्रियात्मक रूप में जो ज्ञान परमशक्ति के श्रीमुख से प्राप्त किया है, उसका ही इस पुस्तक में वर्णन किया गया है।

यह ज्ञान इन्सान को एक नेक इन्सान बनाने में काफी हद तक सहायक हो सकता है। ये सभी बातें मैंने स्वयं सर्वोच्च शक्ति के इन्सानी रूप श्री मदन जी के कमल चरणों में बैठ कर, सुन कर, सीख कर और अनुभव करके वर्णन की हैं।

तिथि : 11 सितम्बर 2012.

प्यारे लाल,
प्रबंधक,
श्री मदन धाम माणकपुर।

1
ईश्वर है तो कैसे ?

सब कुछ बन जाने के बाद ही इन्सान धरती पर प्रकट हुआ। ज़ाहिर है कि यह सब कुछ बनाने में इन्सान का कोई योगदान नहीं तो फिर वह कौन है जिसने यह सब कुछ बनाया ? इन्सान इस धरती पर सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। विज्ञान के चमत्कारों से आज इन्सान में यह धारणा बनती जा रही है कि ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं है, पर विज्ञान भी इस बात से सहमत है कि इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले ही सृष्टि की रचना हो चुकी थी। जीव–निर्जीव अर्थात पर्वत, नदियाँ, समुद्र, वनस्पति, पानी के जीव, धरती पर विचरने वाले जीव, पशु-पक्षी, सूर्य, चाँद, जलवायु, वायुमंडल आदि सब अस्तित्व में आ चुके थे। इस से प्रमाणित होता है कि इन सबको बनाने वाला कोई और है, वही ईश्वर है।

जीव–निर्जीव, सूर्य–चन्द्रमा, सितारे-ग्रह और इन्सानी जीवन नियमों में बंधा हुआ है जैसे सूर्य का उदय और अस्त होना, ग्रहों का नियमित गति से चक्कर लगाना, पौधों का उगना, निश्चित समय में उन का विकास होना और उन पर फूलों और फलों का लगना आदि। इसी तरह इन्सान का पैदा होना, शिशु अवस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था का होना, निश्चित समय पर इन्सान के कद का बढ़ना बंद हो जाना और फिर बुढ़ापे का आना, बच्चे के जन्म लेते ही माँ के शरीर में दूध का आना, हर जीव का पैदा होना और मरना, निर्जीव का भी खत्म हो जाना, आदि। धरती में आकर्षण शक्ति का होना, अगर धरती में पर्याप्त आकर्षण शक्ति न होती और जीवन रक्षक वायु-मण्डल न होता तो क्या इन्सानी जीवन संभव हो सकता था ? धरती में उपजाऊ शक्ति का होना और धरती में ही खनिज पदार्थ, तेल, पेट्रोलियम, कोयला, लोहा, चांदी, ताम्बा आदि का होना। प्रश्न है कि इन सब को नियमों में बांधने वाला कौन है ? धरती के अंदर उन पदार्थों को पैदा करने वाला कौन है ? इन्सान तो इनके बारे में ठीक ढंग से जान भी नहीं सका है। उन सब को नियमों में बाँधने वाला और धरती के अंदर इनको पैदा करने वाला इन्सान तो नहीं हो सकता, फिर वह कौन है ? वह ही ईश्वर है।

हर जीव के शरीर के अंदर रक्त-संचार प्रणाली, श्वास प्रणाली, पाचन प्रणाली मौजूद होती हैं, इसी तरह इन्सानी शरीर में भी यह प्रणालियाँ होती हैं जैसे कि सांस का निश्चित गति से चलना, खाने के बाद खाने का पाचन होना, शरीर में रक्त का संचार निश्चित गति से होना। प्रश्न है कि इन प्रणालियों का संचालन कौन करता है ? इन्सान चाहे भी तो इनका संचालन अपनी इच्छा से नहीं कर सकता। फिर इनका संचालन कौन करता है ? जो शक्ति संचालन कर रही है वही ईश्वर है।

इन्सानी जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ और वातावरण बन जाते है जब इन्सान सब कुछ होते हुए भी लाचार, बेबस, मजबूर हो जाता है, जो वह करना चाहता है कर नहीं पाता जो नहीं चाहता वह हो जाता है। क्या इन्सान चाहता है कि वह जीवन में दुःख पाए, उसे कारोबार में असफलता मिले, उसका अपयश हो, पर इन्सान को अपने जीवन में इन परिस्थितियों में से गुजरना पड़ता है। इससे तो यही सिद्ध होता है कि कोई और है जिस के आगे इन्सान बेबस, लाचार और मजबूर होता है और जिस के हाथ में इन्सान की सफलता-असफलता, यश-अपयश, सुख-दुःख, लाभ-हानि है। वही ईश्वर है।

ईश्वर के सम्बन्ध में अनेक धार्मिक ग्रंथ, शास्त्र, आदि लिखे गये हैं। ऋषियों, मुनियों, सन्तों और महान् आत्माओं ने भी ईश्वर के बारे में ज्ञान दिया है परन्तु मौखिक रूप में। क्रियात्मक रूप में ईश्वर का ज्ञान केवल वही दे सकता है जो सब कुछ है, जिसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं, वह इन्सान नहीं हो सकता। जो अपनी इच्छा से कोई भी रूप धारण कर सकता है, वह ही ईश्वर है।

यह सब जानते है कि अध्यात्मवाद में जो भी देवी-देवता, वीर-पीर, भगवानों के नाम हैं वे सब कभी न कभी शरीर रूप में धरती पर आए थे अर्थात् वे सब इन्सान थे। प्रश्न है कि किसने इन्हें मान्यता दी, किसने प्रदर्शन किया जिस आधार पर उनके नामों के साथ विशेषण लगे। इन्सानों में से देवी देवताओं का चयन वही कर सकता है जिसके लिए कुछ भी असंभव नहीं, जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है वह इन्सान नहीं है। जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है, वही ईश्वर है।

जैसे शरीर के अन्दर एक शक्ति है, जो शरीर का संचालन करती है पर दिखाई नहीं देती और जिस के अस्तित्व से इन्कार भी नहीं किया जा सकता, ठीक उसी तरह इस सृष्टि का संचालन करने वाली भी एक शक्ति है जो अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है और वह इस सृष्टि के कण-कण में होते हुए भी दिखाई नहीं देती। उस अदृश्य शक्ति को ही परम शक्ति, ईश्वर, अल्लाह, वाहिगुरु, गॉड, राधा-स्वामी, निरंकार आदि नाम दिए गए हैं। उसको ही कुदरत, प्रकृति, नेचर कहा गया है। ईश्वर के अस्तित्व के सर्वविदित यह कुछ स्पष्ट प्रमाण है।

2

ईश्वर क्या है ?

ईश्वर न नर है न नारी, वह तो एक शक्ति है, जो अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। केवल वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। जीव-निर्जीव को बनाने वाली, उन्हें नियमों में बांधने वाली, जीवों की पालन कर्ता और संहार कर्ता केवल वही है। वही शक्ति सर्वरूपणी है अर्थात् हर रूप में वह स्वयं ही कार्य करती है। वही कर्मफल दाता है। वह सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है। वह न्यायकारी होते हुए भी परम दयालु है। वह आनन्द की दाता, सुखों का भण्डार, शरणागत् की रक्षक, पाप कटेश्वर और मुक्तेश्वर है।

ईश्वर अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए कभी-कभी महान् आत्माओं के द्वारा अपना निर्जीव चिह्न या सजीव रूप निर्धारित करके उनके माध्यम से अपने कुछेक नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करता है। वह शक्ति जिस को ईश्वर कहा गया है, बहुत लम्बे समय के बाद अपनी इच्छा से स्वयं ही इन्सानी रूप में धरती पर आती है। उस समय ही वह क्रियात्मक रूप में प्रमाणित करती है कि इन्सान का यश-अपयश, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, सुख-दुःख, खुशी-गमी, शान्ति-अशान्ति, जीवन-मृत्यु आदि उसी के हाथ में है।

ईश्वर भी चेतन है जड़ नहीं। उन्हें भी हर इन्सानी घटनाक्रम का एहसास होता है जिसका उन पर प्रभाव भी पड़ता है। ईश्वर भी इन्सान से कुछ चाहते हैं क्योंकि उन्होंने जो कुछ भी बनाया है इन्सान के लिए ही बनाया है, वह भी चाहते है कि इन्सान उनके अस्तित्व को माने और उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करे, उनसे निःस्वार्थ प्यार करे और सदा उनका शुक्रगुज़ार रहे। जो इन्सान उनको नर रूप में मानते हैं वह उनको परमपिता परमात्मा, ईश्वर, अल्लाह, वाहिगुरु, राधा-स्वामी, निरंकार, आदि नामों से याद करते हैं। जो इन्सान उनको नारी रूप में मानते हैं वह उनको जगत-जननी, जगदम्बे, अम्बे, अम्बिका, जगदीश्वरी, जगन्माता, जगदम्बिका, परमेश्वरी, योगमाया, महामाया, महामाई, महेश्वरी आदि नामों से याद करते हैं। जो इन्सान उसको किसी भी रूप में नहीं मानते वह उन्हें कुदरत, प्रकृति, नेचर, अगम्य शक्ति, अनाम शक्ति, अन्जान शक्ति आदि नामों से पुकारते हैं। उपरोक्त दिए सभी नाम एक ही शक्ति के हैं।

ईश्वर ने अपने और इन्सान के कार्यक्षेत्र की सीमाएँ निश्चित की हुई हैं। जो काम इन्सान के कार्यक्षेत्र से बाहर होता है या जो काम इन्सान की शक्ति से बाहर हो वह काम ईश्वर स्वयं करते हैं। ईश्वर कभी भी इन्सान के कार्यक्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करते हैं। ईश्वर ने अपना फ़र्ज़ निभाते हुए इन्सान की हर जरूरत को पूरा करने का प्रबन्ध पहले ही कर दिया था। जैसे जल-वायु, अग्नि, धरती, आकाश, सूर्य, चाँद, सितारे, ग्रह, उपग्रह, धरती में उपजाऊ शक्ति, खनिज पदार्थ, तेल, कोयला, लोहा, चांदी, ताम्बा, पेट्रोलियम आदि। धरती पर हल चलाना, अनाज पैदा करना, बीज बीजना, धरती में से खनिज पदार्थ निकालना इन्सान का काम है। बीजों से पौधों को पैदा करना, उसका विकास करना, वर्षा करना ये सब ईश्वर के काम हैं।

ईश्वर ने इन्सान को अपने बारे में ज्ञान करवाने के लिए समय-समय पर महान्- आत्माओं को धरती पर भेजा है। देश, काल और समय की परिस्थितियों के अनुसार उनके द्वारा अपने बारे में ज्ञान भी करवाया ताकि इन्सान यह जान सके कि इस सृष्टि को कोई चलाने वाला है, नियमों में बांधने वाला है। वही कर्म फल दाता, भाग्यविधाता, मोक्षदाता है, वही यमराज है, वही धर्मराज है, वही सत्य, न्याय और प्यार का प्रतीक है। उस के पास ही इन्सान अपना नाशवान शरीर त्याग कर जाता है। संक्षिप्त में

इतना ही कहना है कि ईश्वर और इन्सान के कार्यक्षेत्र की अपनी-अपनी सीमाएं हैं। ईश्वर ने इन्सान के प्रति अपने कर्तव्य निभाए हैं जो कुछ भी बनाया है इन्सान के प्रयोग के लिए ही बनाया है।

3
ईश्वर एक है, कैसे ?

सभी कहते हैं कि सबका मालिक एक है, यह भी कहा गया है कि "एक नूर से सब जग उपजा", भाव इस सृष्टि को बनाने वाला कोई है जो गिनती में एक है। अब प्रश्न है कि जो सब का मालिक है जो इस सृष्टि का निर्माता है, गिनती में एक है तो संसार में अनेक रूपों में पूजा क्यों हो रही है ? संसार में कोई देवी-देवताओं के रूप में पूजा करता है, कोई वीरों-पीरों के रूप में, कोई भगवानों के रूप में और कोई ऋषि-मुनिओं और गुरुओं की मान्यता करता है। जो जिसकी मान्यता करता है वह उसको ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान मानता है। अब इन्सान प्रार्थना तो उस रूप के सामने अपने मन में करता है और समझता है कि जिसके आगे वह प्रार्थना कर रहा है वह उसकी प्रार्थना सुन रहा है। जब उसकी मनोकामना पूरी हो जाती है तो वह यही सोचता है कि जिसके आगे उसने प्रार्थना की है उसने ही उसकी मनोकामना को पूरा किया है। इन्सान का विश्वास इसलिए भी पक्का हो जाता है क्योंकि जब इन्सान से कोई निरादर या भूल हो जाती है तब उसे कष्ट, परेशानी का सामना करना पड़ता है तब उसका विश्वास और भी दृढ़ हो जाता है। क्या देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान, संत-गुरु, ऋषि-मुनि आदि सारे सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान हैं ? अगर ये सारे सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान हों तो क्या होगा ? फिर तो सारे कर्मफल दाता बन जाएंगे और ईश्वर की कार्यप्रणाली में अराजकता फ़ैल जाएगी। सत्य तो केवल यही है कि ये लोग कभी न कभी धरती पर इन्सानी रूप में आए थे। इन सब ने, जो सबका मालिक है, उसकी भक्ति की, उससे नि:स्वार्थ प्यार किया, उसके प्रति श्रद्धा, विश्वास और लगन रखी। उस ताकत ने उन्हें उपरोक्त रूपों में मान्यता प्रदान की और उनका महत्व बनाए रखने के लिए उन के लिए स्थानों की स्थापना करवाई और उन स्थानों में जाने वाले लोगों की मनोकामनाओं को पूर्ण किया। उनके रूपों में लोगों को दु:खों, कष्टों, परेशानियों से राहत दी भाव उस ताकत ने स्वयं परदे के पीछे रहकर उनको यश दिया। उनके भक्तों के पास भी वही ताकत, जिस को ईश्वर, अल्लाह, वाहिगुरु, गॉड, राधास्वामी, निरंकार कहा है, आप स्वयं उनका रूप बना कर दर्शन देने जाती है। इसीलिए पूजा अनेक रूपों में हो रही है और इसलिए ईश्वर को सर्वव्यापी भी कहा गया है क्योंकि हर रूप में वह स्वयं ही कार्य करती है।

ईश्वर ही कर्मफल दाता है, भाग्यविधाता है क्योंकि केवल वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान हैं। ईश्वर के अतिरिक्त अध्यात्मवाद में जितने भी नाम हैं, उनमें से कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं है। ईश्वर ही माया रूप में जग के कण-कण में व्यापक है और वह गिनती में एक है। वास्तविकता तो केवल यह है कि ईश्वर एक है, उसके रूप अनेक हैं और वही हर रूप में कार्य करते हैं।

4
इन्सान

इन्सान का शाब्दिक अर्थ है मनुष्य, आदमी, मानव । प्रश्न यह है कि इन्सान किसको कहते हैं ? यह जो शरीर है क्या इसको इन्सान कहा गया है ? अगर इसको इन्सान कहा गया है तो यह शरीर जब प्राण छोड़ देता है तो इसको मुर्दा क्यों कहा जाता है । अगर देखा जाए तो यह शरीर चर्बी, हड्डियां, नसें, खून, अंतड़ियाँ, फेफड़े, गुर्दे, माँस और चमड़ी का मिश्रण है, क्या यह सब मिलकर इन्सान कहलाते हैं ? यह सब चीज़ें तो पशु-पक्षियों और जानवरों के शरीर में भी मौजूद होती हैं, फिर इन्सान क्या है ?

इन्सान सब प्राणियों में से ईश्वर द्वारा रची हुई सर्वश्रेष्ठ रचना है । ईश्वर ने इन्सान को सारे प्राणियों का सरताज बनाया है । इन्सानी ढांचे का निर्माण इतने सुंदर ढंग से किया गया है कि इन्सान अपना काम स्वतन्त्र ढंग से कर सके । इन्सान को ही बुद्धि तत्व दिया है जिससे वह अच्छे-बुरे की पहचान कर सके, इस के साथ ही विचारों को प्रकट करने के लिए भाषा दी है । यहाँ प्रश्न पैदा होता है, ईश्वर क्या है इस को पिछले अध्याय में स्पष्ट कर दिया गया है । संक्षेप में इतना ही कहना है कि ईश्वर वह ताकत है जो न नर है न नारी है, वह तो अनादि, अनंत, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है । वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है वही कर्मफल दाता है, उसने ही सृष्टि बनाकर नियमों में बाँधी है । उसने जो कुछ भी इस सृष्टि में बनाया है वह इन्सान के लिए ही बनाया है । अंत में उसने इन्सानी चेतन शक्ति को शरीर देकर अपने लिए उसका निर्माण किया, उसी ताकत ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है जैसे कि दिन-रात, सर्दी-गर्मी, अध्यात्मवाद-भौतिकवाद, ईश्वर-इन्सान, उसी तरह से इन्सानी चेतन-शक्ति और भौतिक शरीर । अगर शरीर में चेतन शक्ति न हो तो वह शरीर शव है । अगर भौतिक शरीर नहीं है, तो उस चेतना का कोई महत्व नहीं है, भाव यह कि चेतन-शक्ति के बिना शरीर की कोई पहचान या महत्व नहीं और शरीर के बिना चेतन-शक्ति की कोई पहचान नहीं है । दोनों के समावेश को ही इन्सान कहा गया है ।

इन्सानों की भी श्रेणियाँ है । एक वह इन्सान है जिसके अन्दर इन्सानियत नाम की कोई चीज़ ही नहीं होती । वह अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है । उसके अंदर इर्ष्या, नफरत, जलन कूट-कूट कर भरी होती है । वह दूसरों के दुःख को देख कर आनन्द महसूस करता है । उसकी सोच में शैतानियत, हैवानियत और दुष्ट विचार भरे होते है क्योंकि वह कर्म और कर्मफल के प्रति ध्यान नहीं देता । संक्षेप में इतना ही कहना है कि उसके कर्म सिर्फ दूसरों को दुःख देना, उनका मज़ाक उड़ाना, दूसरों के कामों में रुकावट पैदा करना और उनकी मज़बूरी का लाभ उठाना, भाव हर मौके का लाभ उठाना ही उसकी विशेषता होती है । इस तरह के इन्सान ईश्वर को न मानने वाले होते है । इनकी संख्या भी कम होती है ।

दूसरी श्रेणी में वह इन्सान आते हैं जिनमें अच्छे और बुरे गुणों का मिश्रण होता है । अधिकतर यह विकारों के अधीन ही काम करते हैं और अपने स्वार्थों तक ही सीमित रहते हैं । इनकी सोच अपने परिवार, सगे-सम्बन्धी या दोस्तों तक ही सीमित रहती है । जब तक इनका स्वार्थ पूरा होता रहता है तब तक यह किसी का बुरा नहीं करते । पर जब इनके स्वार्थ टकराते हैं तब यह इर्ष्या, द्वेष, नफरत, जलन, छल-कपट, बदले की भावना का सहारा लेते हैं । भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए ठीक-गलत दोनों ढंगों का प्रयोग कर लेते हैं । इस तरह के इन्सान दुष्कर्म करते समय इस बात का एहसास नहीं करते कि वे गलत काम कर रहे हैं । विवेकशील न होने के कारण वह गलत-सही का निर्णय नहीं कर पाते । इनमें इन्सानियत होती तो है पर कम । इनमें से कुछ इन्सान ऐसे भी होते है जो स्वार्थ से भी ऊपर उठ कर जीवन गुज़ारते हैं । इसलिए इनमें अच्छे गुण, बुरे गुणों से ज्यादा होते हैं और यह अच्छे-बुरे, ठीक-

गलत का एहसास कर सकते हैं। यह इन्सान आस्तिक और नास्तिक दोनों तरह के होते हैं, इस तरह के इन्सानों की संख्या सर्वाधिक होती है।

तीसरी श्रेणी के इंसान वे होते है जिनमे अच्छे गुणों की भरमार होती है और अवगुण नाम मात्र होते हैं। विकार तो हर इन्सान में होते ही हैं पर ऐसे इन्सान विकारों का सदुपयोग करते हैं। इसलिए ऐसे व्यक्ति ईश्वर की कृपा के पात्र बनते हैं। इनका स्वभाव शांत और सरल होता है। इनमें छल-कपट, चुस्ती-चालाकी, हेरा-फेरी आदि नहीं होते। इन इन्सानों में भौतिक सुखों के प्रति आकर्षण कम होता है और वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ठीक और उचित ढंग को अपनाते हैं। इनको जो कुछ भी मिलता है उसमें ही संतुष्ट हो जाते हैं। यह इन्सान ज़्यादातर सद्कर्म करते हैं। यह आस्तिक होते हैं और ईश्वर के साथ निःस्वार्थ प्यार करते हैं और दूसरों की भावनाओं की कदर करते हैं। वे नेक कर्म सद्व्यवहार और सभी से प्यार करते हैं और दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा व्यवहार अपने लिए दूसरों से चाहते हैं। इस तरह के इन्सान बहुत कम होते हैं।

चौथी श्रेणी के इन्सान सदगुणों का भंडार होते हैं। यह इन्सान अपनी इच्छा से कुछ नहीं करते, सब कुछ परमशक्ति की इच्छा पर छोड़ देते हैं। इनका व्यवहार सत्य, न्याय और प्रेम पर आधारित होता है। इनके अंदर त्याग की भावना अधिक होती है, इसलिए वे भौतिक सुखों की इच्छा नहीं करते। वे आदर्श जीवन जीते हैं और सभी के दिलों में बसते हैं। वे अधर्म का नाश करने के लिए किसी भी नीति का प्रयोग कर लेते हैं। वे दयालु, कृपालु, और दया के सागर होते हैं। वे किसी को भी अपना दुश्मन नहीं मानते, अगर कोई इन्हें अपना दुश्मन भी समझता है तो भी वे उनसे प्यार ही करते हैं। ऐसा इन्सान एक समय में गिनती में केवल एक ही होता है और वह भी निश्चित होता है।

उपरोक्त श्रेणियाँ गुणों के आधार पर हैं। अब जिन श्रेणियों का वर्णन करने जा रहे हैं वह इन्सान की सोच और बुद्धिमत्ता पर आधारित हैं।

मनमत् --

सबसे पहली श्रेणी उनकी है, जो अपनी बुद्धि पर ही विश्वास करते हैं। जो कुछ उनके मन में आता है उसे ही वे श्रेष्ठ मानते हैं और वे किसी के कहने को सत्य नहीं मानते। इस तरह के इन्सान अपनी धुन के पक्के होते हैं। जो उनकी समझ में आता है उसी को वे सही मानते हैं। जो उनकी समझ में नहीं आता है उस वे सही नहीं मानते। ऐसी सोच वाले व्यक्तियों को मनमति या मनमत् वाला कहा जाता है।

शास्त्रमत् --

दूसरी श्रेणी में वे इन्सान आते हैं जो सिर्फ धार्मिक ग्रंथों से ज्ञान प्राप्त करने को ही उचित मानते हैं। वो इन ग्रंथों में दिए ज्ञान का पूरी तरह अनुसरण करते हैं। इस तरह के ज्ञान को शास्त्रमत् या किताबी ज्ञान भी कहा जाता है।

गुरुमत् --

तीसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जो गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान को महत्व देते हैं। उनके गुरु जो कहते हैं वे उन्हें ही सत्य मानते हैं और अपनी व्यक्तिगत सोच और विचारों से ज्यादा गुरु की शिक्षा को महत्व देते हैं। इस तरह की सोच वाले इन्सानों को गुरुमत् को मानने वाले कहा गया है।

श्रीमत् --

चौथी श्रेणी उन इन्सानों की है जो न तो अपनी सोच से काम लेते हैं, न ही शास्त्रों, ग्रंथों के ज्ञान को मान्यता देते हैं और न ही किसी गुरु या महान् आत्माओं के ज्ञान को मान्यता देते हैं। उनके अनुसार ज्ञान केवल वही श्रेष्ठ होता है जो ज्ञान ईश्वर किसी शरीर का प्रयोग करके या स्वयं अपने इन्सानी रूप में अपने मुख से देते हैं। उस वक्त दिया गया ज्ञान श्रीमत का ज्ञान कहलाता है, परंतु यह ज्ञान किसी विरले के ही भाग्य में होता है।

उपरोक्त श्रेणियों के अलावा और भी श्रेणियां हैं जो उनके मनोबल पर आधारित हैं:

साधारण मनोबल --

इनमें पहली श्रेणी उन इन्सानों की है जो बिना किसी संघर्ष के अपनी मंजिल को पाना चाहते हैं। अगर मंजिल की प्राप्ति में उनको मुश्किल नज़र आती है तो वह रास्ता छोड़ कर किसी और रास्ते पर चल पड़ते हैं भाव मुश्किल और परेशानियों के डर से काम शुरू ही नहीं करते।

मध्यम मनोबल --

दूसरी तरह के इन्सान वे हैं जो अपनी मंजिल को पाना तो चाहते हैं, उस के लिए कोशिश भी करते हैं, पर अगर उनकी मंजिल में रुकावटें, परेशानियां ज्यादा आ जाती हैं, तो वे धीरज छोड़ देते हैं और निराश होकर अपना रास्ता बदल लेते हैं, भाव इस तरह के इन्सान ज्यादा संघर्ष नहीं कर सकते ।\

ऊँचा मनोबल --

तीसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जो अपनी मंजिल को पाने के लिए हर तरह की रुकावट, समस्या, मुश्किल का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं । मुश्किलों, परेशानियों से वे घबराते नहीं अपितु मज़बूती के साथ अपनी मंजिल की तरफ बढ़ते रहते हैं भाव किसी भी हालत में उनका मनोबल नहीं गिरता और वे अन्ततः अपनी मंजिल को प्राप्त करते हैं ।

यह पहले भी स्पष्ट किया जा चुका है कि इन्सानी शरीर और जीव आत्मा (चेतन शक्ति) दोनों के मिश्रण को इन्सान कहा गया है । इस के साथ ही यह स्पष्ट करना भी ज़रूरी है कि इन्सानी शरीर के अन्दर जीव आत्मा के साथ ईश्वरीय शक्ति भी विराजमान होती है जो परमशक्ति का अंश होता है और मूक दर्शक बना रहता है । वह तब तक मूक दर्शक रहता है जब तक जीव-आत्मा ईश्वरीय अंश के साथ सम्पर्क स्थापित नहीं कर लेती । जब जीव आत्मा का सम्पर्क ईश्वरीय अंश से हो जाता है तब वह अंश उस जीव आत्मा का मार्ग दर्शन करता है । कर्मफल इन्सानी जीव आत्माएं भोगती हैं, ईश्वर का अंश नहीं । परमशक्ति ने इन्सान के प्रति अपने हर कर्तव्य को पूरा किया है, उसके जीवन के लिए हर उचित प्रबंध किया है । उसे अपने बारे में ज्ञान करवाने के लिए समय-समय पर अनेक महान् आत्माओं को धरती पर भेजा है । उनके द्वारा इन्सान को अपने बारे में ज्ञान करवाया कि इन्सान को रचने वाला कोई है जो सब कुछ करने में समर्थ हैं । इसलिए इन्सान का कर्तव्य है कि वह उस ईश्वर के अस्तित्व को माने और उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे कि ईश्वर के गुण, शक्तियां और नियम क्या हैं । इन्सान का कर्तव्य है कि वह ईश्वर को पहला स्थान दे । जो इन्सान इस तरह करता है तो ईश्वर भी उसको पहला स्थान देते हैं । जब इन्सान ईश्वर के प्रति अपने फर्जों से बेमुख होता है तो उसे अपने जीवन में दुःखों-कष्टों और परेशानियों का सामना करना पड़ता है । परमशक्ति ने इन्सान के जीवन को सुचारू ढंग से चलाने के लिए निम्नलिखित कुछ फ़र्ज़ बना रखे हैं ।

1. इन्सान का पहला फ़र्ज़ अपने प्रति है कि वह अपनी सेहत का ध्यान रखे । अगर उसकी अपनी सेहत ठीक है तब ही वह अपने परिवार और समाज के प्रति फर्ज़ों को निभा सकेगा ।
2. दूसरा कर्तव्य परिवार के प्रति है । माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति फ़र्ज़ है कि वे अपने बच्चों का पालन-पोषण अपने सामर्थ्य के अनुसार ठीक ढंग करें । इसी प्रकार बच्चों का भी फ़र्ज़ है कि वे अपने माता-पिता का सहारा बनें ।
3. इन्सान का तीसरा कर्तव्य समूची मानवता के प्रति है । वह देश और मानवता के प्रति ऐसा कोई भी काम न करें जो देश और मानवता के लिए घातक हो । इन्सान का धर्म व कर्म इन्सानियत पर ही आधारित होना चाहिए ।
4. इन्सान का चौथा कर्तव्य उन इन्सानों के प्रति है जिनके बीच उसे हर समय विचरना होता है । इन्सान का कर्तव्य है कि दूसरों से ऐसा ही व्यवहार करे जैसा व्यवहार वह अपने लिए दूसरों से चाहता है । किसी के साथ इर्ष्या-द्वेष, नफ़रत आदि न करे ।

5. इन्सान का पांचवा कर्तव्य ईश्वर के प्रति है कि वह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करे, उस के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करे और ईश्वर के प्रति शुक्रगुज़ार रहे। क्योंकि ईश्वर से बड़ा परोपकारी कोई नहीं होता है, इसलिए इन्सान को ईश्वर के उपकारों को कभी भी भूलना नहीं चाहिए।

वास्तव में इन्सान वही है जिसमें इन्सानियत होती है। इन्सानियत क्या है ? ईश्वर द्वारा इन्सान के लिए बनाए गये नियमों और सिद्धांतों पर चलना जैसे कि नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करना ही इन्सानियत है। दूसरा नियम है, दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करो जैसा कि आप अपने लिए दूसरों से चाहते हो। जब इन्सान इन नियमों को जीवन में अपनाता है तब इसका अर्थ है कि उस में इन्सानियत नाम की चीज़ है और वही इन्सान कहलाने का हकदार है भाव उसे ही इन्सान कहना उचित है।

इन्सान के जीवन में ईश्वर का महत्व

पाठकगण पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं कि संसार के सब प्राणियों में से ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना इन्सान है। ईश्वर ने इन्सान को ही वह बुद्धि दी जिससे वह अच्छे बुरे की पहचान कर सके, विचार व्यक्त करने के लिए उसे भाषा दी, विवेकशीलता दी, इस के साथ ही ईश्वर ने इन्सान के अन्दर पांच प्रवृतियों काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार का समावेश किया ताकि सृष्टि का संचालन एवम् आवागमन का चक्र सुचारू ढंग से चलता रहे। इन्सान कर्म करता है और कर्म फल भोगता है। उसी को ईश्वर ने अपना राज़दार बनाया है। समय-समय पर महान आत्माओं को धरा पर भेज कर इन्सान को अपने बारे में ज्ञान करवाया। इन्सान के जीवन में सुख-दुःख, खुशी-गमी, सफ़लता-असफलता, लाभ-हानि, यश-अपयश, जीवन-मृत्यु सभी ईश्वर की देन हैं पर यह सब पूर्व जन्म के संस्कारों का ही फल होता है □ ईश्वर ने ही इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले उसकी हर जरूरत का उचित प्रबंध किया अर्थात् इन्सान जिन वस्तुओं का प्रयोग करता है वह सब ईश्वर ने ही बनाई हैं इन्सान ने तो उनकी केवल खोज ही की है □ इन सब प्रमाणों के होने के बावजूद इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को मानने से इन्कार कर रहा है क्योंकि इन्सान को ईश्वर दिखाई नहीं देता □ इस लिए इन्सान कह देता है कि यह सब अपने आप ही हो रहा है, इन्सान ही कर्ता है और कोई कर्ता नहीं है जो इन्सान के जीवन को प्रभावित कर रहा है □ इन्सान के जीवन में ईश्वर का क्या महत्व है और क्यों है ? निम्नलिखित कुछ कारण दिए गए हैं जो यह दर्शाते हैं कि इन्सान के जीवन में ईश्वर का क्या महत्व है और क्यों है ?

सृष्टि रचना में ईश्वर की इन्सान के लिए देन :

सर्वप्रथम यदि यह सोचा जाए कि यह सूरज, चाँद, सितारे, धरती, आकाश, वायुमण्डल आदि किस ने बनाए तो इन्सान कहेगा कि कुदरत ने □ कुदरत, जिस ने यह सब कुछ बनाया है, जिन के कारण इन्सान का जीवन संभव हो सका, उसी कुदरत को ही ईश्वर कहते हैं □ ईश्वर

ने ही सृष्टि की रचना के पश्चात् इन्सान बनाया, उसकी जरूरतों का उचित प्रबन्ध किया □ ईश्वर ने जो कुछ भी बनाया है उसका प्रयोग इन्सान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में करता है □ यदि ईश्वर ने यह सब न बनाया होता तो इन्सान का जीवन संभव हो ही नहीं सकता था □

धरती में आकर्षण शक्ति :

जो कुछ भी दिखाई दे रहा है या नहीं दिखाई दे रहा वह सब नियमों में बंधा हुआ है □ परमशक्ति ने ही हर जीव निर्जीव को नियमों में बांधा है □ परमशक्ति का कोई भी कार्य निरर्थक नहीं होता □ यदि देखा जाए, अगर धरती में आकर्षण शक्ति न हो तो धरती पर कुछ भी नहीं ठहर सकता □ सब कुछ वायुमण्डल में ही उड़ता रहेगा, उस अवस्था में जीवन कैसे संभव हो सकता है ? यह ईश्वर की ही कृपा है कि धरती में आकर्षण शक्ति है और इन्सान का जीवन संभव है □

जल-वायु व खनिज पदार्थ :

सर्वप्रथम जीवों को जीने के लिए हवा, पानी, खुराक इत्यादि की जरूरत होती है □ परमशक्ति ने इस का बड़े ही सुनियोजित ढंग से प्रबन्ध किया है □ धरती की सतह पर लगभग 28% भूमि है और 72% पानी है □ इस से बारिश होती है, सृष्टि चक्र चलता है, इन्सान को खाद्य पदार्थ मिलते हैं □ आज धरती पर कितनी जन संख्या है पर परमशक्ति ने हर चीज़ का उचित प्रबन्ध पहले से ही किया हुआ है । क्या इन्सान यह सृष्टि चक्र चला सकता है ? धरती में खनिज पदार्थ, पेट्रोलियम, बिजली, यह सब परमशक्ति ने पहले से ही पैदा किए हुए हैं, इन्सान ने तो केवल इनकी खोज की है, वह भी जब परमशक्ति ने जरूरत महसूस करवाई तब ही खोज हुई और उसका श्रेय इन्सान को दिया □ यदि इन्सान ही कर्ता है तो इन्सान ने पहले ये खोजें क्यों नहीं कर लीं ? परमशक्ति ने एक सीमा रेखा खींच रखी है कि यह काम इन्सान का है और यह काम परमशक्ति का है □ जैसे धरती में बीज डालना इन्सान का काम है, फल लगाना या न लगाना यह ईश्वर का काम है □ यही कारण है कि इन्सान को अपना किया काम तो दिखाई देता है मगर ईश्वर का किया काम दिखाई नहीं देता □ अत: इन्सान कह देता है कि जो कुछ हो रहा है अपने आप ही हो रहा है □ जबकि न तो अपने आप कुछ बनता है और न ही नियमों में बंधता है, जब तक उसको कोई बनाने वाला व नियमों में बांधने वाला न हो अर्थात् कोई है जिसने ये सब बनाया है, नियमों में बाँधा है □ इन्सान का फर्ज़ है कि वह उसे माने, उसे याद करे तथा उसका शुक्रगुज़ार रहे □

कर्म-फल और पुनर्जन्म :

चाहे जीव है या निर्जीव, सब कुछ नियमों में बंधा है □ उस तरह इन्सान का जीवन भी नियमों में बंधा है अर्थात् जिसका जन्म हुआ है उसने मरना भी है □ हर जीव की एक औसत आयु है जिसके पूरा होने पर जीव मृत्यु को प्राप्त होता है □ इन्सान का जीवन भी नियमों में बंधा है □ इन्सान भी अपनी आयु भोग कर मृत्यु को प्राप्त होता है और फिर जन्म लेता है □ जो उसने कर्म किए हैं उन्हीं कर्मों के आधार पर परमशक्ति इन्सान को उसके माता-पिता, बहन-भाई, पति-पत्नी, बच्चे, रंग-रूप, बुद्धि, तन्दरुस्ती आदि देती है □ जैसे इन्सान के कर्म होते हैं उसी आधार पर उसे माता-पिता, परिवार व अन्य रिश्ते मिलते हैं अर्थात् इन्सान के जीवन का अधिकांश घटनाक्रम इन्सान के पूर्व जन्म के आधार पर घटता है जैसे कोशिश तो बहुत लोग़ करते हैं, कठिन परिश्रम भी करते हैं मगर सब को सफ़लता नहीं मिलती □ सफल केवल वही होते हैं जिन पर ईश्वर की कृपा होती है □ इन्सान के जीवन में सफ़लता-असफलता, सुख-दुःख, लाभ-हानि, यश-अपयश, जय-पराजय आदि सब परमशक्ति की इच्छा से ही होते हैं □ इन्सान ईश्वर को माने या न माने ईश्वर का इन्सान के जीवन में अहम् स्थान है □

इन्सान का सच्चा गुरु

यह तो विज्ञान भी मानता है कि जब इन्सान आस्तित्व में आया तो उसके आने से पहले सब कुछ बन चुका था अर्थात् इन्सान ने यह सब कुछ नहीं बनाया □ जिस ने बनाया है वह चाहता है कि इन्सान उसे याद करे □ इसलिए ईश्वर ने समय-समय पर महान् आत्माओं का चुनाव इन्सानों में से किया और उनको अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधन के रूप में प्रयोग किया □ उनके माध्यम से अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन भी किसी सीमा तक किया □ उन महान् आत्माओं ने जो अनुभव और ज्ञान प्राप्त किया उसे उन्होंने आगे बांटा □ परमशक्ति ने केवल आध्यात्मिक ज्ञान ही नहीं बल्कि इन्सान को एक नेक इन्सान बनना भी सिखाया है □ इन्सान ने जो कुछ भी सीखा है ईश्वर से ही सीखा है □ वास्तव में सब का सच्चा गुरु तो परमशक्ति ही है □ उसी से इन्सान ने सब कुछ पाया और सीखा है जैसे ईश्वर ने सब जीवों की रचना की, उनके जीवन को नियमों में बांधा □ यह तो दिखाई देता है कि माता–पिता अपने बच्चे का पालन पोषण करते हैं मगर यह दिखाई नहीं देता कि वो कौन है जिसने जानवर एवम् इन्सान में ममता डाली। वह परमशक्ति है जो ममतामयी, करुणामयी और भक्त वत्सल है और वही सबका सच्चा गुरु है।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि इन्सान का जीवन ईश्वर की देन है □ ईश्वर की कृपा से इन्सान साँस लेता है, उसी की कृपा से इन्सान को सब कुछ मिला है □ इसलिए इन्सान को चाहिए कि वह ईश्वर के अस्तित्व को माने, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे, अपने जीवन में ईश्वर को प्रथम स्थान दे और सदैव उसका शुक्रगुजार रहे □ कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करने से पहले प्रार्थना करे □ जब कार्य हो जाए तो ईश्वर का धन्यवाद करे □ यदि किसी कारणवश सफ़लता नहीं मिलती तो इन्सान ईश्वर से नाराज़ न हो बल्कि ये सोचे कि ईश्वर जो करता है ठीक ही करता है, वह कभी गलत नहीं होता □ यह असफ़लता उसके कर्मों का ही फल है □ इस से उसका यह जीवन तो सुखी होगा ही अगला जीवन भी सुखमय होगा और वह ईश्वर की कृपा का पात्र भी बनेगा □

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि इन्सान का जीवन ईश्वर के बिना सम्भव ही नहीं □ इसलिए इन्सान को ईश्वर के अस्तित्व को सदा स्वीकार करना चाहिए और कभी भी यह नहीं सोचना चाहिए कि ईश्वर की होंद नहीं है □ ईश्वर ने ही इन्सान को प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ बनाया है । इन्सान का शरीर भौतिक है और उसके शरीर के अन्दर जो जीवात्मा है उसका सम्बन्ध अध्यात्मवाद से है । भौतिक शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खुराक तथा सेहत के नियमों की आवश्यकता है उसी तरह जीवात्मा को सशक्त बनाने के लिए ईश्वर प्रेम की आवश्यकता है । ये सभी कुछ इन्सान के जीवन में ईश्वर के महत्व को ही दर्शाती हैं ।

5
इन्सानियत

इन्सान एक सामाजिक प्राणी है। वह बहुत सी अच्छी या बुरी बातें समाज से ही सीखता है। ईश्वर जो इस सृष्टि का रचयिता है उसने इन्सान को प्राणियों में से सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है। ईश्वर ने इन्सान को बुद्धि तत्व दिया है, सोचने-समझने की शक्ति दी है, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भाषा दी है। अच्छे और बुरे का ज्ञान करवाया है, उसे ही अपना राजदार एवं सांझीदार बनाया है। समाज में अच्छाई एवं बुराई दोनों ही विद्यमान होते है, अन्तर केवल इतना है कि अच्छाई को समाज अच्छी दृष्टि से देखता है और बुराई को इन्सान बुरी दृष्टि से देखता है। उसी तरह इन्सान में भी अच्छे एवम् बुरे गुण विद्यमान होते हैं। समाज अच्छे गुणों वाले इन्सान को अच्छी दृष्टि से देखता है, उसको याद करता है, उसकी प्रशंसा करता है और कहता है कि उसमें इन्सानियत है। अवगुणों वाले व्यक्ति को समाज अच्छी दृष्टि से नहीं देखता और कहता है कि उसमें हैवानियत है। इन्सान को जन्म से लेकर मृत्यु तक कदम-कदम पर दूसरे लोगों से मिलना पड़ता है। उसे हर प्रकार के मेल-जोल को कायम रखने के लिए अलग-अलग नियमों या सिद्धान्तों का सहारा भी लेना पड़ता है। इन्सान को अपने जीवन में वही सिद्धान्त अपनाने चाहिए जो उसके जीवन को आदर्शमय बनाए अर्थात् उसका जीवन दूसरों के लिए आदर्श हो।

इन्सान में इन्सानी मूल्यों की सकारात्मक उपस्थिति इन्सान को सत्यार्थ रूप में दर्शाती है। इन्सान में विचारों की विशालता, सिद्धान्तों की व्यवहारिकता, इन्सान को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाती है। इन्सान का व्यक्तित्व और आचरण ही उसके इन्सानी अथवा नैतिक मूल्यों का मूल्यांकन करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इन्सान में इन्सान होने का भाव, एहसास या दृष्टिकोण और सकारात्मक गुणों का समावेश ही इन्सानियत को दर्शाता है। इन्सानियत धर्म, देश, जाति, वर्ग सबसे परे है। इसलिए कहा जाता है कि इन्सानियत ही इन्सान का वास्तविक धर्म है। वास्तव में इन्सान वही है जिसमें इन्सानियत है।

इन्सानियत क्या है ?

समाज इन्सानियत को इन्सान के सकारात्मक गुणों के संदर्भ में देखता है। इन्सान का व्यक्तित्व, उसका आचरण, उसके इन्सानी तथा नैतिक मूल्य ही उसका वास्तविक मूल्यांकन करते है। इन्सानियत शब्द का अर्थ है व्यक्ति की सोच, विचारधारा, एवं दृष्टिकोण। इन्सानियत का अभिप्राय इन्सान के स्वभाव, आचरण, सोच-विचार, सिद्धान्त एवं इन्सानी गुणों के समावेश से है, जिसे हम इन्सान का व्यक्तित्व भी कह सकते हैं।

इन्सान में इन्सानियत है, इस तथ्य को कैसे निर्धारित कर सकते हैं ? इसका उत्तर है कि इन्सान का व्यक्तित्व, उसका आचरण, चरित्र, दृष्टिकोण, सोच-विचार ही इन्सानियत का आधार होता है। इससे स्पष्ट होता है कि इन्सान की विचारधारा, सिद्धांत, व्यवहार एवं दृष्टिकोण या नज़रिया मिल कर ही इन्सान के व्यक्तित्व को निर्धारित करते है। व्यक्तित्व ही इन्सान की इन्सानियत को प्रकट करता है।

आचरण का अर्थ व्यवहार से लिया जाता है। परन्तु यदि हम इसे इन्सानियत तक ही सीमित कर दें तो भी यह ठीक ही होगा। वास्तव में आचरण व्यवहार एवं सिद्धांत का संयुक्त सुमेल है। आचरण के अन्तर्गत सभी मानवीय मूल्य तथा व्यक्ति के नैतिक गुण आते हैं। इन्सान में नैतिक गुणों का होना, इन्सान के पूर्व जन्म के संस्कारों, जन्म से माता-पिता द्वारा मिले संस्कारों, नैतिक शिक्षा, परिवार व समाज के वातावरण पर भी निर्भर करता है।

सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक आचरण से अभिप्राय यह है कि इन्सान सिद्धांत को जानने वाला हो, उस सिद्धांत को अपने जीवन में व्यवहारिक रूप से लागू करने वाला हो और सभ्य हो। इसके साथ-साथ चारित्रिक गुणों का होना भी अति आवश्यक है। इन्सान दृढ़ चरित्र का अर्थात स्थिर स्वभाव का हो। चरित्र में इन गुणों का होना भी आवश्यक है जैसे सत्य बोलना तथा सत्य का साथ देना, निष्ठावान होना, बड़ों का सम्मान तथा छोटों से प्यार करना आदि।

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ पर आध्यात्मिक ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जाता है। इस धाम की स्थापना स्वयं उस शक्ति ने प्रमाणों सहित की है जो अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है, सृष्टि की रचयिता और पालनकर्ता है, जिसके हाथ में इन्सान का जीवन-मृत्यु, लाभ-हानि, यश-अपयश, सफ़लता-असफलता, सुख-दुःख, खुशी-ग़मी, शान्ति-अशांति है। जो सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है, जिसके पास इन्सान शरीर त्याग कर जाता है, जो कर्मफल दाता है, जिस शक्ति की आराधना ऋषि-मुनि, सन्त-फकीर, देवी-देवता, वीर-पीर और भगवान करते हैं, जिसे लोग़ ईश्वर, अल्लाह, वाहिगुरू, गॉड, राधास्वामी, निरंकार, शिव, ब्रह्म आदि नामों से पुकारते हैं। जो उसे किसी रूप में नहीं मानते लेकिन उसे कुदरत, प्रकृति, नेचर, अदृश्य शक्ति, अनाम शक्ति आदि नामों से पुकारते हैं, उसी शक्ति की घोषणा है कि "मैं अदृश्य से सदृश्य बनी हूँ, यह शरीर मेरा है, मेरा नाम मदन है।" इन्सान उसी शक्ति की सर्वोत्कृष्ट कृति है परन्तु जिसे मानवता, इन्सानियत या मनुष्यत्व की पहचान है वही इन्सान सत्य व्यक्तित्व का स्वामी है। वही ईश्वरीय रचना के महत्व का ज्ञाता है। नैतिक मूल्यों का ह्रास इन्सान को पतन की ओर अग्रसर करता है। ईश्वर ही इन्सान को पूर्ण ज्ञान देकर उसमें इन्सानियत का पुनः नवांकुर प्रदान करता है। श्री मदन धाम में परमशक्ति सदृश्य इन्सानी रूप में स्वयं इन्सानियत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रही है परन्तु साथ-साथ अपने कुछ प्रिय सहायकों, सेवकों एवं भक्तों को बलपूर्वक इन्सानियत के पथ का अनुसरण करवा रही है। परमशक्ति ने यहाँ पर स्पष्ट किया है कि इन्सान के जीवन के नैतिक मूल्यों का आधार क्या होना चाहिए।

सर्वप्रथम इन्सान को ईश्वर के अस्तित्व को मानना या स्वीकार करना है। ईश्वर ने इस सृष्टि में जो कुछ भी बनाया है इन्सान के लिए ही बनाया है। इसलिए इन्सान का भी कर्तव्य बनता है कि वह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करे।

ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करना :-

इन्सान को चाहिए कि वह ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करे कि ईश्वर क्या है ? उसके नियम, गुण, शक्तियाँ क्या हैं ? जब तक इन्सान ईश्वर के गुणों के बारे में नहीं जानता तब तक वह ईश्वर से प्यार नहीं कर सकता। इन्सान यदि किसी को प्यार करता है तो गुणों के आधार पर करता है। इसी तरह जब इन्सान ईश्वर के गुणों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है तो धीरे-धीरे वह ईश्वर से भी प्यार करने लगता है, ईश्वर के बनाए सिद्धान्तों का पालन करने लगता है। तब ईश्वर उस इन्सान पर अपनी कृपा करते हैं और इन्सान को सदमार्ग पर चलाते हैं। इससे इन्सान में विनम्रता आ जाती है जो दूसरों के लिए एक आदर्श होती है।

नेक कर्म करना :-

इन्सान जब जीवन में नेक कर्म करता है तो वह इन्सानियत की राह पर चलता है। कर्म तो इन्सान मन से, वाणी से तथा शरीर से करता है इसलिए इन्सान मन में भी किसी के लिए दुर्भावना न रखे। किसी के प्रति इर्ष्या, द्वेष, जलन, नफ़रत न रखे। किसी का उपहास न उड़ाए। असभ्य भाषा का प्रयोग न करे। किसी को कटु वचन न कहे। वाणी में सदा मिठास हो। सबसे सद्व्यवहार हो। किसी को कुछ कहने से पहले सोचे कि यदि यही कुछ मुझे कहा जाए तो कैसा लगेगा। किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पहले कार्य की सफ़लता के लिए ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करता हो और कार्य हो जाने पर ईश्वर का आभार प्रकट करता हो। किसी के उपकार को कभी भूलता न हो। उसमें अहम् भाव न हो। दूसरों के हित के लिए कार्य करता हो □ सभी महान-आत्माओं और धर्मों का समान दृष्टि से आदर-सत्कार करता हो। इसके साथ-साथ वह अपने दुखों के लिए ईश्वर को दोषी न मान कर उनसे प्रार्थना करे और सुखों के लिए ईश्वर का धन्यवाद करे।

इन्सानी कर्तव्यों का पालन करना :-

इस सृष्टि में ईश्वर से बड़ा कोई भी परोपकारी नहीं, क्योंकि उसने सब कुछ किया ही इन्सान के लिए है। इसलिए इन्सान उसके अस्तित्व को मानते हुए कभी भी उसके उपकार को न भुलाए और उसके प्रति श्रद्धा, विश्वास, लगन, धैर्य और संतोष रखे।

इन्सान का दूसरा कर्तव्य अपने प्रति है कि वह अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखे। यदि उसका अपना स्वास्थ्य ठीक होगा तभी वह अपने दूसरे कर्तव्यों को उचित ढंग से निभा सकता है।

इन्सान का तीसरा कर्तव्य अपने परिवार के प्रति है। वह बच्चों का पालन-पोषण अपने सामर्थ्यानुसार करे तथा अपने माता-पिता व बज़ुर्गों से सहानुभूति रखते हुए उनके बुढ़ापे का सहारा बने।

इन्सान का चौथा कर्तव्य देश तथा समूची मानवता के प्रति है। इन्सान स्वार्थ से ऊपर उठ कर हर इन्सान को इन्सान समझे। देश और कानून के प्रति कोई भी ऐसा कार्य न करे जो देश और मानवता के हित में न हो।

पांचवां कर्तव्य दूसरे इन्सानों के प्रति है जिनके बीच उसने हर समय विचरना है। इन्सान स्वयं का तथा दूसरों का जीवन सुखमय बनाने के लिए उनसे वैसा ही व्यवहार करे जैसा वह अपने लिए उनसे चाहता है। किसी को कुछ कहने से पहले सोचे कि यदि यही शब्द मुझे कहे जाएँ तो मुझे कैसा लगेगा। सभी से प्यार करे। प्यार से ही प्यार पैदा होता है। किसी को भी अपना दुश्मन न माने। यदि कोई उसे अपना दुश्मन मानता भी है तब भी उससे प्यार करे। अपने से छोटों से प्यार करे और बड़ों को मान-सम्मान दे। अपने माता-पिता का आदर-सत्कार करे। मन में किसी के प्रति कुविचार न लाए। किसी की उन्नति से जलन न करे। किसी के प्रति अनैतिक भाषा का प्रयोग न करे। किसी का शोषण न करे। सदा न्याय का साथ दे। नेक कर्म, सद्व्यवहार व सभी से प्यार करे, किसी की मजबूरी का लाभ न उठाए और न ही अपने पद का दुरुपयोग करे।

इन्सान इस धरती का सर्वश्रेष्ठ जीव है। ईश्वर ने इन्सान के लिए सब कुछ बनाया है, इसलिए वे भी चाहते हैं कि इन्सान का जीवन उनके लिए हो और इन्सानी जीवन सुखमय और आनन्दमय हो। ऐसा हो सकता है यदि इन्सान उपरोक्त गुणों को अपने जीवन में ईमानदारी से

क्रियान्वित करे परन्तु ऐसा होता नहीं। ईश्वर ने जब इन्सान बनाया तो उसके अन्दर कुछ प्रवृत्तियाँ पैदा कीं जो संसार को चलाए रखने के लिए आवश्यक हैं जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इत्यादि। वैसे तो यह पाँचों जीवन के विकास का आधार हैं किन्तु जब इन्सान इनका दुरुपयोग करता है, आवश्यकता से अधिक इनका प्रयोग करता है या केवल अपने स्वार्थ हेतु ही इनका प्रयोग करता है तो उपरोक्त प्रवृत्तियाँ विकार का रूप धारण कर लेती हैं। इन्सान अपनी सुंदरता का, धन-वैभव का, बल का तथा अपने यौवन आदि का अहंकार करता है। इन्सान अह्म् वश दूसरों का शोषण करता है, अनुचित लाभ उठाता है। दूसरों की भावनाओं को कुचलकर उनसे खिलवाड़ करता है। दूसरों को तुच्छ मान कर उनकी हँसी उड़ाता है अर्थात जो इन्सान अपने लिए नहीं चाहता वह दूसरों से करता है। ईश्वर को भुला कर स्वयं को ही सब कुछ मानने लगता है, तब इन्सान इन्सानियत को खो देता है भाव नैतिकता से गिर जाता है।

इन्सान का जीवन तो सत्य, न्याय, प्यार और नैतिक मूल्यों की मूर्ति के समान होना चाहिए ताकि लोग़ उसके आदर्श जीवन का उदाहरण दूसरों को दे सकें। वह तभी हो सकता है जब इन्सान मन, वचन, कर्म से स्वच्छ तथा नेक हो। इन्सान को निजी स्वार्थों से ऊपर उठ कर अपनी मंज़िल की ओर बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। यह सब कुछ तभी सम्भव है जब इन्सान पर ईश्वर की कृपा होती है। ईश्वर की कृपा तभी होती है जब इन्सान ईश्वर द्वारा बनाए सिद्धांत पर चलता है और वह सिद्धांत है दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करना जैसा दूसरों से अपने लिए चाहते हो। इसके साथ-साथ नेक कर्म, सद्व्यवहार व सभी से प्यार करें। जब इन्सान उपरोक्त गुणों एवं नियमों को अपने जीवन में अपनाता है वास्तव में वही इन्सान इन्सानियत पर चल रहा होता है और इन्सान कहलाने का वास्तविक हकदार वही होता है।

6

इन्सान दुःखी क्यों ?

कहते हैं यह संसार दुःखों का घर है, कोई भी सुखी नहीं है। कोई सन्तान न होने के कारण, कोई सन्तान के कारण, कोई बीमारी के कारण तथा कोई किसी और परेशानी के कारण दुःखी है। इस संसार में ऐसा कोई भी इन्सान नहीं है जो कह सके कि वह पूर्णतया सुखी है। हर किसी को कोई न कोई दुःख जरूर है। चाहे कोई अमीर है या ग़रीब, जवान है या बूढ़ा, पुरुष है या स्त्री, चाहे वह किसी भी पद पर आसीन हो, चाहे उसे कितने भी सांसारिक ऐशो-आराम प्राप्त हों पर हर किसी के दुःख अलग-अलग प्रकार के हैं, कारण अलग-अलग हैं। हर कोई अपने-आप में दुःखी है। उदाहरण के तौर पर जहां खाना है वहाँ भूख नहीं है और जहां भूख है वहाँ खाना नहीं है। आखिर ऐसा क्यों है ? इस के क्या कारण हो सकते हैं ?

प्रत्येक इन्सान मानसिक शांति, तंदुरुस्ती और खुशहाली चाहता है। वह एक अच्छा रुतबा चाहता है। वह चाहता है कि समाज में उसकी अलग पहचान हो। दुनियाँ की हर सुख-सुविधा उसे प्राप्त हो। लेकिन ज्यों-ज्यों उसे सांसारिक सुख मिलते जाते हैं त्यों-त्यों उसकी इच्छाएँ और भी बढ़ती जाती हैं। इस प्रकार वह धीरे-धीरे अशुभ व अनुचित मांगें करने लगता है जो अनैतिकता पर आधारित होती हैं। परमशक्ति तो हर इन्सान से न्याय ही करती है। हर इन्सान को वही मिलता है जिसके वह योग्य होता है। ईश्वर इन्सान की अशुभ और अनैतिक इच्छाएँ कभी पूर्ण नहीं करते। इन्सान के दुःखी होने के कुछ और भी कारण हैं जो निम्नलिखित हैं :-

1. शारीरिक अपंगता या रोगों के कारण दु:ख

इन्सान को शरीर और बुद्धि उसके पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर मिलते हैं। कई बार इन्सान का शरीर अपंग होता है या उस को ऐसा रोग लग जाता है कि उसके पास सब सुख-सुविधाएँ होते हुए भी वह उनको भोग नहीं सकता। इन्सान कोई वस्तु तो खरीद सकता है परन्तु उसे भोगने का सुख नहीं खरीद सकता। यह भी इन्सान के दु:खी होने का एक कारण है।

2. अनैतिक इच्छाओं के कारण दु:ख :

इन्सान के मन में कई बार ऐसी इच्छाएँ उत्पन्न हो जाती हैं जो समाज, इन्सानियत व सदाचार की सीमाओं से बाहर होती है, जिससे उसका वर्तमान तथा भावी जीवन दु:खी हो जाता है। ऐसी इच्छाएं न तो पूर्ण होती है और न ही वह कुछ और कर पाता है और न उसकी आशा ही टूटती है और न ही पूर्ण होती है। वह न वर्तमान में और न ही भविष्य में जी सकता है। इन्सान का जीवन उस अनैतिक इच्छा के त्रिशंकु पर लटका रहता है। अतः अनैतिक इच्छाओं के कारण इन्सान दु:खी रहता है।

3. योग्यता के अनुसार प्राप्ति न होने के कारण दु:ख

कई बार इन्सान स्वयं को बहुत योग्य समझता है पर उसे उसकी योग्यता के अनुसार सफ़लता नहीं मिलती। उसका सारा जीवन इस त्रासदी में निकल जाता है कि उसके साथ ईश्वर ने अन्याय क्यों किया ? जब वह अपने से कम योग्यता वाले व्यक्ति को सफल देखता है तो उसे समझ नहीं आता कि उसे सफ़लता क्यों नहीं मिली ? इस प्रश्न को सुलझाने में ही उसका जीवन बीत जाता है। यह भी इन्सान के दु:खों का कारण है।

4. स्वयं से संतुष्ट न होने के कारण दु:ख

कई इन्सान ऐसे होते हैं जो सारी जिंदगी भागते ही रहते हैं। उन्हें सफ़लता भी मिलती है पर उन्हें उस सफ़लता से संतुष्टि नहीं मिलती। वे अपने जीवन का लक्ष्य इतना ऊँचा निर्धारित कर लेते हैं कि भले ही वह समाज की दृष्टि में बहुत सफल होते हैं पर स्वयं में वे असंतुष्ट ही रहते हैं। उनका अपने परिवार तथा अपने समीप आने वाले व्यक्तियों के प्रति आचरण बहुत कठोर व क्रोध भरा हो जाता है। वे स्वयं भी दुखी रहते हैं तथा दूसरों को भी दुखी करते हैं। इस प्रकार सब कुछ होते हुए भी वे अकेले ही रह जाते हैं। न तो उन्हें उनके लक्ष्य की प्राप्ति होती है और न ही अपनों का प्यार ही मिलता है। उनका जीवन नर्क के समान व नीरस हो जाता है। अतः वे निराश हो जाते है और उन्हें अपना जीवन व्यर्थ लगने लगता है। इन्सान के दु:खी होने का यह भी एक कारण है।

5. निराशावादी सोच के कारण दु:ख

कई इन्सानों की सोच निराशावादी होती है। वे शीघ्र ही उत्साहित हो जाते हैं और शीघ्र ही निराश भी हो जाते हैं। वे जीवन का निराशावादी पक्ष ही देखते हैं। थोड़ी मुश्किल आने पर घबरा जाते हैं और अपनी चेष्टा बंद कर सब कुछ छोड़ कर बैठ जाते हैं। न ही उन्हें स्वयं पर विश्वास होता है और न ही वे ईश्वर पर विश्वास करते हैं। इस प्रकार उनकी सोच ही उनके दु:ख का कारण बन जाती है।

6. ईर्ष्या-द्वेष के कारण दुःख :

जब व्यक्ति समाज में विचरता है तो बहुत से निर्धन तथा बहुत से धनी लोगों से मिलता है। कुछ इन्सान केवल इसी कारण दुखी रहते हैं कि उनके निकट रहने वाले लोगों के पास सुख-सुविधाएँ क्यों हैं ? उनके अपने पास जो कुछ भी होता है उसके कारण वे सुखी नहीं होते पर जो कुछ नहीं है उसके कारण दुखी होते हैं। जैसे एक इन्सान के पास कार है इसकी तो उसे खुशी नहीं है, उसे दुःख इस बात का है कि पड़ोसी के पास उससे अच्छी कार क्यों है ?

7. लालच के कारण दुःख :

कई इन्सानों को ईश्वर ने सब कुछ दिया होता है परन्तु और अधिक लालच के कारण वे दुखी हो जाते हैं। इच्छा तो पूरी हो सकती है पर लालसा नही, लालसा जितनी पूरी होती है उतनी ही बढ़ती जाती है। आखिर एक दिन इन्सान अपने जीवन का उद्देश्य ही भूल जाता है। यह लालच उसे अपने कर्तव्यों से विमुख कर देता है। इस प्रकार का इन्सान स्वयं भी दुखी होता है व दूसरों को भी दुःख देता है।

8. गरीबी के कारण दुःख :

कई इन्सान जन्म से ही गरीब घर में पैदा होते हैं। कुछ लोग़ किसी दुर्घटना या परिस्थिति वश गरीब हो जाते हैं। इस गरीबी के कारण न वे सही ढंग से जी सकते हैं और न ही मर सकते हैं। चाहे उनकी सभी जरूरतें पूरी हो जाएँ परन्तु मानसिक वेदना उनका जीवन दुखमय बना देती है।

9. अशुभ व अनुचित इच्छाओं के कारण दु:ख :

अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इन्सान कई बार किसी को हानि पहुँचाना चाहता है या इस तरह की इच्छा उसके मन में पैदा हो जाती है जिसके योग्य वह नहीं होता। इस तरह की अशुभ व अनुचित इच्छाएँ इन्सान के दु:ख का कारण बन जाती हैं क्योंकि ऐसी इच्छाएँ यदि पूरी हो जाएँ तो भी दु:ख देती हैं और यदि पूरी न हों तो भी दु:ख देती हैं।

इन्सान के दुखी होने के उपरोक्त जो कारण है, वे सभी इन्सान की विचारधारा के अनुसार हैं। परन्तु वास्तविक कारण इन्सान के कर्म हैं जिनके कारण इन्सान दुखी या सुखी है। अर्थात् सुख कोई वस्तु नहीं है, सुख कोई व्यक्ति नहीं है जिसके मिल जाने से या न मिलने से इन्सान सुखी या दुखी हो जाए। सुख तो एक अहसास है जो ईश्वर की कृपा से मिलता है। उपरोक्त तथ्यों को न समझना सबसे बड़ी अज्ञानता है जो इन्सान को अपनी पहचान करने में बाधा उत्पन्न करती है। यदि इन्सान कर्मफल के सिद्धांत को समझने तथा स्वयं को जानने की, पहचानने की चेष्टा करे कि वह कौन है ? कहाँ से आया है ? उसे कहाँ जाना है, उसके जीवन का उद्देश्य क्या है, वह शरीर में होते हुए भी शरीर से कैसे अलग है ? शरीर तो कर्मफल भोगने का साधन है अर्थात् वह शरीर के माध्यम से ही सुख-दु:ख का अनुभव करता है। जो स्वयं को शरीर से अलग महसूस कर लेता है वह सम भाव रहता है। वह दु:ख में दुखी नहीं होता, सुख में सुखी नहीं होता। जैसे यह घर मेरा है पर मैं घर नहीं हूँ वैसे ही यह शरीर मेरा है पर मैं शरीर नहीं हूँ। इस भेद को पहचान लेना ही स्वयं की पहचान है।

ईश्वर ने इन्सान के लिए नियम बनाया है कि वह दूसरों से ऐसा व्यवहार करे जैसा वह अपने लिए दूसरों से चाहता है। जब इन्सान इस नियम पर नहीं चलता अर्थात् इस नियम को तोड़ता है तो वह दोषी बन जाता है, पर वह कई कार्य अच्छे भी करता है। यही नियम कर्मफल का आधार है। इसी नियम के अन्तर्गत इन्सान को कर्मफल प्राप्त होता है, उसके जीवन में सुख-दु:ख आते हैं। श्री मदन धाम में परमशक्ति ने अपने साकार रूप में किसी समय स्वयं ही प्रश्न किए और स्वयं ही उत्तर दे कर स्पष्ट किया कि इन्सान दुखी क्यों है?

प्रश्न : इन्सान दु:खी क्यों है ?
उत्तर : अज्ञानता के कारण।
प्रश्न : अज्ञानता क्या है ?
उत्तर : स्वयं को न पहचानना ही अज्ञानता है।
प्रश्न : स्वयं को कैसे पहचाना जा सकता है ?
उत्तर : प्रभु कृपा से ही स्वयं को पहचाना जा सकता है।
प्रश्न : प्रभु कृपा किस पर होती है ?
उत्तर : जिस पर प्रभु इच्छा हो जाए उस पर प्रभु कृपा हो जाती है।

इतना कहने के उपरान्त परम शक्ति ने बातचीत बंद कर दी कि इन्सान स्वयं विचार करे कि प्रभु इच्छा किस पर होती है और कैसे हो सकती है ? अब प्रश्न उठता हैं कि प्रभु इच्छा क्या होती है ? जब इन्सान ने कर्मफल ही भोगना है तो प्रभु इच्छा का क्या महत्व है ? क्या प्रभु इच्छा कर्मफल को भी काट देती है ? प्रभु इच्छा क्यों और किस आधार पर होती है ? क्या प्रभु इच्छा पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर होती है या इस जन्म के कर्मों या व्यवहार के आधार पर भी होती है ? इसको स्पष्ट करने के लिए कुछ आधार दिए जा रहे हैं जो कि परमशक्ति जी के श्रीमुख से समय-समय पर दिए गए ज्ञान व अनुभवों का सार हैं। जिनको जानने के बाद इन्सान यदि उन्हें अपने जीवन में लागू करता है तो उस पर प्रभु इच्छा हो सकती है जिससे वह प्रभु कृपा का पात्र बन सकता है।

प्रभु इच्छा के आधार :

1. पूर्व जन्म के संस्कार :

इन्सान जो कुछ भी करता है, सब वर्तमान को आधार बना कर ही करता है। उसकी सोच केवल इस जन्म तक ही सीमित होती है। उसकी पसंद नापसंद उसके इस जन्म के अनुभवों पर ही आधारित होती है। परन्तु ईश्वर त्रिकालदर्शी हैं। उनकी कृपा, उनकी इच्छा इन्सान के पूर्व जन्म के कर्मों का फल भी हो सकती है। जैसे इन्सान अच्छे या बुरे कर्मों का फल अपने आने वाले जन्मों में भोगता है, उसी प्रकार ईश्वर उसके प्रेम और भक्ति का फल भी देते हैं।

2. तप से राज तथा राज से नर्क :

जैसे कि मान्यता है कि जब इन्सान ईश्वर की भक्ति करता है तो उसे राज मिलता है अर्थात् उस इन्सान को सुख-सुविधाएँ, यश-मान तथा पदवी प्राप्त होती है। जब उसे सुख सुविधाएँ, यश-मान, मिलता है तो उसमें अहम् भाव आ जाता है फिर इन्सान अहम् में आकर दुष्कर्म करता है, शोषण करता है, ईश्वर को भूल जाता है तब उसे अगले जन्म में नरक तुल्य जीवन बिताना पड़ता है। अगर कोई इन्सान सब सुविधाएँ होने के बावजूद ईश्वर का शुक्रगुज़ार रहता है, दूसरों के साथ सद्व्यवहार करता है, ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करता है, उस ज्ञान को अपने जीवन में लागू करता है व नेक इन्सान बनने की कोशिश करता है तो ईश्वर उस पर प्रसन्न होते हैं और तब उस पर प्रभु इच्छा हो जाती है।

3. इन्सान का व्यवहार :

इन्सान का जीवन सुख-दु:ख का मिश्रण है जो कि उसके कर्मों का फल है। यदि इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करने की कोशिश करता है जैसा कि वह दूसरों से अपने लिए चाहता है तथा ईश्वर के बताए हुए नियमों पर चलते हुए नेक कर्म, सद्व्यवहार और सब से प्यार करने की कोशिश करता है तो उस पर प्रभु इच्छा हो जाती है। जब प्रभु इच्छा हो जाती है तो फिर ईश्वर उस व्यक्ति को अपनी इच्छा से चलाते हैं। यदि उसमें कोई अवगुण भी हों तो प्रभु उस के अवगुण नहीं देखते और उसे अपनी इच्छा से एक नेक इन्सान बना लेते हैं।

4. ईश्वर की रज़ा में राजी रहना :

प्राय: इन्सान जब सफल होता है तो स्वयं को महत्व देता है अर्थात् अपनी मेहनत, बुद्धिमत्ता व समझदारी को कारण मानता है। जब वह असफल होता है तो ईश्वर को दोषी मानता है और समझता है कि ईश्वर ने उसके साथ अन्याय किया है। जबकि सच्चाई तो यह है कि हर इन्सान को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है। ईश्वर कभी भी किसी के साथ अन्याय नहीं करते। वे तो सत्य और न्याय के प्रतीक है। जब व्यक्ति ईश्वर से प्यार करता है, उसकी रज़ा में राज़ी रहने का प्रयत्न करता है, अपने दु:खों, कष्टों, परेशानियों के लिए अपने कर्मों को ही दोषी मानता है तथा सुखों के लिए सदैव ईश्वर का शुक्रगुज़ार रहता है, वह हर समय उसे याद रखता है, ईश्वर को हमेशा प्रथम स्थान देता है तो ईश्वर उस पर प्रसन्न हो जाते हैं और उस पर प्रभु इच्छा हो जाती है।

5. अपने सांसारिक कर्तव्य निभाते हुए ईश्वर से प्यार करना :

जब कोई इन्सान अपने सांसारिक कर्तव्य निभाते हुए ईश्वर से प्यार करता है, अपने दैनिक जीवन में से ईश्वर के लिए समय निकालता है, ईश्वर का गुणगान करता है, करवाता है, सुनता है, अपनी नेक कमाई में से कुछ ईश्वर के निमित्त लगाता है और ईश्वर के बताए हुए नियमों पर चलते हुए अपने परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करता है तो वह भी प्रभु इच्छा का पात्र बन जाता है।

उपरोक्त कुछ आधार हैं जिन के कारण इन्सान प्रभु इच्छा का पात्र बन सकता है। हर किसी ने कहा है कि ईश्वर बेअंत है, उसकी माया बेअंत है, उसके बारे में कुछ भी निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता कि वह कब क्या कर दे, किसी को क्या दे दे, किसी से क्या ले ले ? परन्तु आज जब परमशक्ति श्री मदन जी के रूप में अपने बारे में ज्ञान दे रहे हैं तथा इन्सान को जीवन जीना सिखा रहे हैं। उनके द्वारा क्रियात्मक रूप में ज्ञान दे कर दर्शाया जा रहा है कि जब किसी पर प्रभु इच्छा हो जाती है तो फिर ईश्वर उस इन्सान का मार्गदर्शन करते हैं तथा उसे बुरे कर्म करने से रोकते हैं। यदि वह फिर भी गलती करता है तो उसे दृष्टांत देते हैं। जब उसे गलती का एहसास होता है तो क्षमा कर उसे राहत प्रदान करते हैं। इस तरह वह दुष्कर्म करने से बचता है। वह ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए उसका शुक्रगुज़ार रहता है, उसकी रज़ा में रहने की कोशिश करता है तथा अपने दु:खों के लिए कभी भी ईश्वर को दोषी नहीं मानता। सुख में ईश्वर का आभारी रहता है। फिर उसे ईश्वर ज्ञान करवा देते हैं कि इन्सान तो अपने कर्मों के कारण ही दु:खी है, हर कोई अपने कर्मों का ही फल भोगता है। ईश्वर उसे पहचान करवाते हैं कि वह कौन है ? उसकी मंज़िल क्या है ? उसके जीवन का उद्देश्य क्या है ? जिस प्रकार इस शरीर की भौतिक इच्छाएँ हैं उसी प्रकार इस शरीर के अंदर जो जीवात्मा है उसकी भी एक खुराक है और वह है, ईश्वर से प्यार तथा

ईश्वर से मिलन, जिससे इन्सान को सच्चा सुख मिलता है। तब वह इन्सान भौतिक आवश्यकताओं पर कम ध्यान देता है और जीवात्मा की खुराक पर अधिक ध्यान देने लगता है। जब ईश्वर उस पर कृपा करते हैं, उसको नेक इन्सान बनाते हैं, अपना प्यार देते हैं, तब उस इन्सान के दुखों, कष्टों व परेशानियों का अंत होता है और उसे प्रभु प्रेम के सच्चे सुख की अनुभूति होती है। परमशक्ति की इच्छा तो इच्छा ही होती है उसके लिए उसे योग्य होना भी आवश्यक नहीं होता है। जब परमशक्ति की इच्छा हो जाती है तो वहाँ पर कोई भी नियम, सिद्धांत, लागू नहीं होता, जिस पर इच्छा हो जाए उस पर कृपा हो जाती है। यदि ईश्वर की इच्छा हो जाए तो वह उसे कर्मफल से मुक्त करके मोक्ष प्रदान करते हैं। यहाँ यह कहना भी आवश्यक है कि किसी भी इन्सान को सदा के लिए मोक्ष पद की प्राप्ति नहीं होती, चाहे वह कोई भी आत्मा क्यों न हो। ईश्वर किसी भी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसे पुनः धरती पर भेज देते हैं।

7

इन्सानी जीवन का उद्देश्य

इन्सान के जीवन का उद्देश्य ईश्वर की प्राप्ति:

उद्देश्य शब्द का अर्थ है लक्ष्य, मकसद। संसार में हर इन्सान के जीवन का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। प्रत्येक इन्सान की इच्छाएँ, स्वभाव, आदतें व रुचियाँ भिन्न भिन्न होने के कारण उनके जीवन का उद्देश्य भी अलग होता है। जब इन्सान पैदा होता है तो ईश्वर ने उसके जीवन का उद्देश्य पूर्व जन्मों के संस्कारों के आधार पर निश्चित किया होता है पर वह इन्सान की समझ से बाहर होता है। वैसे तो हर इन्सान कर्म करता है, पर कर्म ही इन्सान को महान् आत्मा या महापुरुष बनाता है। इन्सान के गुण और जीवन के उद्देश्य का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है :

साधारण इन्सान :

प्राय: इन्सान के जीवन का उद्देश्य रोटी, कपड़ा और मकान की बुनियादी जरूरतों से आरम्भ होता है। फिर इन्सान चाहता है कि वह अपने कार्य-क्षेत्र में उन्नति करे, सफ़लता प्राप्त करे, उसे नेक सन्तान मिले, सन्तान का भविष्य उज्ज्वल हो, आर्थिक खुशहाली हो, सामाजिक रुतबा हो, समय और वातावरण के अनुसार उसकी इच्छाएँ पूर्ण हों और शारीरिक तन्दरुस्ती हो। इन्सान का जीवन इन उद्देश्यों की पूर्ति करने में ही गुजरता है। जब ये पूर्ण नहीं होते तो इन्सान को ईश्वर की आवश्यकता महसूस होती है। इन्सान चाहे ईश्वर को जिस भी रूप में याद करे, उसका उद्देश्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति होता है। इन्सान इन जरूरतों के साथ जन्म लेता है और इन जरूरतों के साथ ही समाप्त हो जाता है पर उसकी इच्छाएँ समाप्त नहीं होतीं।

महान्-आत्मा या महात्मा :

महान् आत्मा का अर्थ औरत या मर्द नहीं बल्कि वह आध्यात्मवादी इन्सान जिसके जीवन का उद्देश्य अपने आत्म स्वरूप को जानना, आत्म ज्ञान प्राप्त करना और ईश्वर प्राप्ति होता है। वे अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए कम और परहित के लिए अधिक जीते हैं। महात्मा ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं तथा दूसरों को ज्ञान देते हैं। यदि परहित के लिए उन्हें अपना जीवन भी कुर्बान करना पड़े तो भी वे डगमगाते नहीं।

महान्-पुरुष या महापुरुष :

महापुरुष उन इन्सानों को कहा जाता है जो अपने निजी हितों से ऊपर उठ कर मानवता के लिए जीते हैं, कमजोर लोगो की सहायता करते हैं, बीमारों के लिए हस्पताल बनवाते हैं, दुखियों के दुःख दूर करने का यथासम्भव प्रयत्न करते हैं, समाज के सुधार के लिए कोशिश करते हैं, वहमों तथा आडम्बरों के सम्बन्ध में लोगों को जागृत करते हैं। दूसरों के लिए जीना व दूसरों के जीवन को सुखमय बनाना ही उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य होता है।

परम-आत्मा या परमशक्ति :

जैसे इन्सान कोई भी कर्म करता है तो उसके पीछे उसका कोई उद्देश्य जरूर होता है उसी तरह परमशक्ति का कोई भी कार्य अर्थहीन नहीं होता। यदि ईश्वर ने इस सृष्टि का सृजन किया है तो इसके

पीछे भी उसका कोई उद्देश्य अवश्य होगा। परमशक्ति ने जो कुछ भी बनाया है इन्सान के प्रयोग के लिए बनाया है पर इन्सान ने जो भी बनाया अपने लिए बनाया है। इन्सान ने जो कुछ भी सीखा है वह ईश्वर से ही सीखा है। परमशक्ति ने प्यार करने के लिए इन्सान की रचना की इसीलिए ईश्वर का दूसरा नाम ही प्यार है। जब इन्सान किसी को प्यार करने लगता है तो उसकी खुशी, पसंद, नापसंद, सुख-सुविधा का ध्यान रखता है। प्यार में अपना सब कुछ सौंप देता है, सब कुछ कुर्बान कर देता है। ईश्वर जो कुछ भी करता है उसके पीछे उद्देश्य प्यार ही होता है, जैसे माता-पिता भले ही अपने बच्चे को मारें, झिड़कें या प्यार करें उसके पीछे बच्चे की भलाई ही होती है, ममता ही होती है। जिस प्रकार एक बच्चे के बीमार होने पर माँ उसे कड़वी दवाई देती है और दूसरे कमजोर बच्चे को अच्छी खुराक देती है। इस में माँ का कोई पक्षपात नहीं होता, उसका प्यार होता है। उसी प्रकार ईश्वर इन्सान को दुःख दे या कष्ट दे, उस के पीछे ईश्वर का प्यार ही होता है। ईश्वर जो भी करता है उस में उनका प्यार ही होता है।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इन्सान हर सम्भव कोशिश करता है पर समय के साथ-साथ उद्देश्य बदलते जाते हैं। बचपन में माता-पिता, बहन-भाई, मित्र-बन्धु, अध्यापक आदि के विचार ही इन्सान के उद्देश्य को निर्धारित करते हैं। जैसे-जैसे इन्सान की सोच विकसित होती है वह अपने दृष्टिकोण से संसार को देखना शुरू कर देता है तो वह अपनी मानसिकता के अनुसार अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारित करता है। वह देखता है कि एक दौड़ लगी हुई है और हर कोई, न चाहते हुए भी दौड़ रहा है पर क्यों दौड़ रहा है ? केवल अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए। इन्सान चुस्ती, चालाकी, हेरा-फेरी, बेईमानी, भ्रष्टाचार क्यों कर रहा है ? जबकि यह सच्चाई है कि एक दिन सभी ने मृत्यु को प्राप्त होना है फिर भी इन्सान दौलत एकत्रित करता है, कोठियां, बंगले बनाता है। क्यों ? हर किसी का उत्तर होगा कि अपने व अपने परिवार के लिए यह सब करना पड़ता है।

इन्सान आदिकाल से ही परिवार के रूप में रह रहा है। परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। माता-पिता हर दुःख सह कर अपने बच्चे को पालते हैं। उसे जीवन जीने का ढंग बताते हैं। हर जायज़-नाजायज़ ढंग से उसे एक कामयाब इन्सान बनाना चाहते हैं क्योंकि इन्सान आशा करता है कि जब वह बूढ़ा हो जाएगा, लाचार बेबस हो जाएगा तब उसकी संतान उसकी देखभाल करेगी, उसे सहारा देगी। इन्सान ऐसा सोचता है क्योंकि उसका जीवन अनिश्चितताओं से भरा पड़ा है, आने वाले पल में क्या होगा इन्सान नहीं जानता। इसलिए उसे एक भय लगा रहता है। उस भय को दूर करने के लिए वह सहारा ढूँढता है, क्योंकि यह सहारा उसे अपनी सन्तान, पति-पत्नी, धन-दौलत में दिखता है। क्या वास्तव में कोई रिश्ता सहारा देता है ? रिश्तों में खोखलापन प्रायः देखने को मिलता है जैसे कई पति-पत्नी अदालतों में लड़ रहे हैं। अनेकों माता-पिता ऐसे हैं जो सन्तान होते हुए भी बेसहारा और लाचार हैं, कोई उन्हें पानी पिलाने वाला नहीं हैं। कई लोग़ धन-दौलत होते हुए भी मौत मांगते हैं पर उन्हें मौत नहीं मिलती। कई ऐसे भाई हैं जो एक दूसरे के खून के प्यासे हैं, एक दूसरे की शक्ल भी नहीं देखना चाहते। पर फिर भी इन्सान जो भी करता है अपने तथा अपने परिवार के लिए करता है।

इन्सान सब पर विश्वास करता है पर उस पर विश्वास नहीं करता जिस ने उसके जन्म लेने से पहले माँ के अंदर दूध पैदा किया, उसके साँस लेने के लिए हवा दी, खाने के लिए अनाज पैदा किया, इतनी सुंदर कायनात बनाई अर्थात इन्सान को जो चाहिए था वह उसके जन्म से पहले ही पैदा किया, उसकी हर जरूरत का उचित प्रबंध किया। जिस प्रकार इन्सान के सांसारिक माता-पिता हैं, उसी प्रकार इन्सान के अंदर जो शक्ति है उसकी रचना करने वाला भी कोई है। इन्सान के जीवन का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति होना चाहिए परन्तु इन्सान उसका अस्तित्व मानने से ही इन्कार कर रहा है, क्यों ?

कई लोगों का मानना है कि ईश्वर नाम की कोई शक्ति नहीं है। यह सब अपने आप ही हो रहा है। इस सृष्टि का सृजन करने वाला कोई नहीं है। यदि इन्सान उसे जानने की कोशिश भी करता है तो ईश्वर की बेअंत माया में उलझ कर रह जाता है। इन्सानी बुद्धि की एक सीमा है जो ईश्वर की बेअंत माया को समझने में असमर्थ है। जैसे कि जानवरों में माता-पिता, बहन-भाई आदि रिश्ते हैं पर जानवरों की बुद्धि इन रिश्तों को समझने में असमर्थ है। उसी प्रकार इन्सान की बुद्धि जानवरों से तो विकसित है पर वह अपने रचयिता से रिश्ते को समझने में असमर्थ है। ईश्वर ही अपनी इच्छा से कुछ इन्सानों को अपनी पहचान करवाता है, अपना अस्तित्व दर्शाता है, उन्हें ज्ञान देता है, तब इन्सान कहता है कि ईश्वर है। जिस इन्सान को ईश्वर का अनुभव नहीं मिलता वह कहता है कि ईश्वर नहीं है। ईश्वर को प्यार करने वालों ने कहा है कि ईश्वर संसार के कण-कण में है, वह इन्सान के अंदर भी है बाहर भी है। वह एक शक्ति है जो सर्वव्यापक है पर वह जड़ नहीं है, निर्गुण नहीं है, वह तो चेतन है, सर्व गुणों का स्वामी है, वह ममतामयी है, करुणामयी है पर उसे आँखों से नहीं देखा जा सकता, उस तक पहुंचा नहीं जा सकता। फिर इन्सान क्या करे जिससे उसे परमशक्ति का अनुभव प्राप्त हो। जिन महान्-आत्माओं से परमशक्ति ने सम्पर्क किया उन्होंने भी विभिन्न ढंगों से इन्सान को ज्ञान दिया। किसी महान् आत्मा ने कहा कि उसे सप्ताह में एक बार ही याद करना चाहिए, किसी ने कहा कि दिन में पांच बार याद करना चाहिए, किसी ने कहा इन्सान को प्रतिदिन अढ़ाई घंटे याद करना चाहिए, कोई कह रहा है ईश्वर श्वास-श्वास, ग्रास-ग्रास याद करना चाहिए। इन्सान जब इन विचारधाराओं के बारे में जानने की कोशिश करता है तो हर संस्था उसे आश्वासन देती है कि जब इन्सान उनकी पूजा-पद्धति के अनुसार ईश्वर को याद करेगा तो ईश्वर उसे अपना अनुभव अवश्य देंगे। यदि इस तरह सब को अनुभव मिलना होता तो आज संसार में एक धर्म होता, एक पूजा-पद्धति होती। इससे यह स्पष्ट होता है ये सब मार्ग ईश्वर की ओर ले जाते हैं परन्तु ईश्वर ने किस को अपना अनुभव देना है, यह उसकी अपनी इच्छा है।

इन्सान के ईश्वर को याद करने के कई उद्देश्य हो सकते हैं। कुछ लोग़ केवल अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए, कुछ लोग़ मन की शांति प्राप्त करने के लिए और कुछ अपना अगला जन्म सुधारने के लिए ईश्वर को याद करते हैं। कुछ लोग़ ऐसे भी हैं जो ईश्वर प्राप्ति करना चाहते हैं। जब इन्सान इस आध्यात्मिक यात्रा की ओर बढ़ता है तो उसके मन में शंकाएँ पैदा होना स्वभाविक है। जिसके मन में शंकाएँ नहीं हैं, प्रश्न नहीं हैं, उसे ढूँढने की आवश्यकता भी नहीं है। शंकाओं का पैदा होना ही इन्सान की आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत होती है। अध्यात्मवाद का अर्थ केवल ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करना, निम्नस्तर की शक्तियों के बारे में ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि ईश्वर से प्यार करना, उसका अनुभव प्राप्त करना है जिसने इस सृष्टि को रचकर नियमों में बांधा है। नीचे कुछ प्रश्न दिए गए है जो आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वालों के मन में अक्सर पैदा होते हैं :

प्रश्न : क्या ईश्वर भी इन्सान से कुछ चाहते हैं ? ईश्वर प्राप्ति इन्सान की जरूरत है या ईश्वर भी चाहता है कि इन्सान उसकी प्राप्ति करने की चेष्टा करे ?

उत्तर : परमशक्ति ने स्वयं श्री मदन धाम की स्थापना की है। यहाँ अध्यात्मवाद से जुड़े हर प्रश्न का उत्तर क्रियात्मक रूप में दिया जाता है। यहाँ परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्रीमुख से ज्ञान दिया है। परमशक्ति ने समय-समय पर महान् आत्माओं से सम्पर्क स्थापित करके उन्हें अपने बारे में ज्ञान दिया, उनके माध्यम से अपने नाम रखवाए और निर्जीव चिह्नों की स्थापना करवाई। परमशक्ति का कोई भी काम अर्थहीन नहीं होता। परम-शक्ति ने जब-जब भी अपना अस्तित्व दर्शाया तो उसका मुख्य उद्देश्य रहा है कि इन्सान उसके अस्तित्व को मानते हुए उससे प्यार करे। जैसे माता-पिता अपने अपने बच्चों का

पालन-पोषण करके अपना फर्ज निभाते हैं। माता-पिता कहें या न कहें वे आशा करते हैं कि उनके बच्चे उनका आदर-सम्मान करें, उनकी आज्ञा में रहें, आपस में प्यार से रहें, जब उन्हें जरूरत हो तो उनकी मदद करें, उनकी देखभाल करें। चाहे इन्सान खुद कैसा भी हो, वह चाहता है कि उसकी सन्तान एक नेक इन्सान बने। परमशक्ति तो प्राय: अदृश्य रहती है। इन्सान उससे मनचाहा रिश्ता बना लेता है। परन्तु आज परमशक्ति इन्सानी रूप में है। परमशक्ति श्री मदन जी जब सम्बोधन करते हैं तो अक्सर कहते हैं "देखो बच्चो, मैं परमशक्ति आप सब से सम्बोधित हो रही हूँ। वैसे तो मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो केवल एक शक्ति हूँ, पर अपने विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए इन्सान बनी हूँ।" भाव परमशक्ति श्री मदन जी आज नर लीला कर रहे हैं। वे इन्सान को जीवन जीने का एक नया और निराला ढंग बता रहे हैं। अब इन्सान का भी फर्ज बनता है कि वह ईश्वर को जाने, पहचाने, उससे नि:स्वार्थ प्यार करे और उसके बताए नियमों -- *" **दूसरों से ऐसा व्यवहार करो जैसा आप दूसरों से अपने लिए चाहते हैं** "* और *" **सब से प्यार करो, चाहे कोई आपको अपना दुश्मन भी मानता हो, तो भी उससे प्यार करो** "* पर चले, उसके बनाए इन्सानों से प्यार करे। परमशक्ति जड़ नहीं चेतन है। इन्सान के प्यार का, विश्वास का, उस पर प्रभाव पड़ता है। इसका अर्थ यह नहीं कि परमशक्ति अपनी प्रशंसा चाहती है बल्कि वह नि:स्वार्थ प्यार करती है और नि:स्वार्थ प्यार चाहती है। जब इन्सान परमशक्ति को प्यार करता है तो परमशक्ति भी उसे प्यार करती है। यदि ऐसा न होता तो न ही भगवान होते और न ही भक्त होते। यदि ये नाम हैं, उनकी पूजा हो रही है और लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण हो रही हैं तो यह इस बात का प्रमाण है कि परमशक्ति चाहती है कि इन्सान उससे प्यार करे व उसकी प्राप्ति करने की कोशिश भी करे। अर्थात परमशक्ति चाहती है कि इन्सान उसके अस्तित्व को माने तथा उससे प्यार करे। पर जब इन्सान सच्चे मन से ईश्वर की ओर बढ़ता है तो ईश्वर उसकी परीक्षा भी लेते हैं। कई बार दु:ख-कष्ट, परेशानी भी देते हैं। यदि इन्सान स्वार्थी हो तो वह पीछे लौट जाता है। परन्तु यदि दृढ़ विश्वासी हो तो ईश्वर उसे अपनी कृपा से सहारा दे कर चलाते हैं। इसीलिए भक्त उन्हें परमदयालु और परमकृपालु भी कहते हैं।

□□□□□□ : क्या इन्सान के जीवन का उद्देश्य परमशक्ति की खोज होना चाहिए ? क्या उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहिए ?

□□□□□ : उपरोक्त प्रश्न के दो भाग हैं ज्ञान प्राप्त करना तथा खोज करनी। साधारण तौर पर ये एक समान ही लगते हैं पर इन के अर्थों में गहरा भेद है जिसको समझने की जरूरत है। ईश्वर की ओर कदम बढ़ाने से पहले इन प्रश्नों के उत्तर इन्सान को मालूम होने चाहिए तभी वह अपनी मंज़िल की ओर बढ़ सकता है। जो ज्ञान महान् आत्माओं ने दिया है वह उनके व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर है। ईश्वर का ज्ञान एक गहरे सागर के समान है जिसमें अनेक धाराएं आ कर समा जाती हैं। उस सागर में से जिसे जो मिला उसने उसी का वर्णन किया। जैसे सब नदियाँ व दरिया सागर में मिल कर एक हो जाते हैं, उसी तरह सब ज्ञान रुपी नदियाँ उस सागर में एक हो जाती हैं। इस तरह रास्ते अनेक हैं, विचारधाराएं अनेक हैं, ईश्वर के अनेक ही रूप हैं और अनेक ही नाम हैं। हर रूप में ईश्वर अपने कुछ भक्तों को दर्शन भी दे रहा है, उनकी प्रार्थनाएं भी सुन रहा है, प्रमाण भी दे रहा है। इसलिए लोगों की श्रद्धा और विश्वास उन रूपों में है। परमशक्ति ने इस बात पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठाया है और श्री मुख से ज्ञान दिया है कि महान् आत्माओं के द्वारा दिए गए ज्ञान को पढ़ना, सुनना ज्ञान प्राप्त करना है। इस ज्ञान को प्राप्त करने से इन्सान के मन में अपने इष्ट के प्रति श्रद्धा बढ़ती है।

ईश्वर की खोज करना बिलकुल ही अलग बात है। ईश्वर की खोज का अर्थ है आत्म ज्ञान प्राप्त करना तथा स्वयं को पहचानना कि मैं कौन हूँ ? मेरा रचयिता कौन है ? मेरा व उसका रिश्ता क्या है ? मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है ? मेरे अंदर कौन बोलता है ? कौन इच्छाएं पैदा करता है ? कौन उन्हें पूरी करता है ? कहा जाता है कि ईश्वर इन्सान के अंदर है। यदि अंदर है तो कहाँ है ? कौन है जो शरीर को छोड़ जाता है ? इन प्रश्नों के उत्तर जानना ही ईश्वर की खोज करना है। ज्ञान प्राप्त करना और खोज करने में वही अन्तर है जो अन्तर किसीके प्यार की कहानी सुनने में तथा किसी से स्वयं प्यार करने में है। जब ईश्वर कृपा करते हैं तो इन्सान को अपने अंदर से ही इन प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं और उसे ही आत्म ज्ञानी कहा जाता है। इन्सान अपने जीवन में भौतिक वस्तुओं के बारे में जानने की कोशिश करता है। अपना समय बिताने के लिए कई संसाधन जुटाता है, पैसा भी खर्च करता है, समय भी व्यर्थ गंवाता है पर उद्देश्य क्या होता है ? उसमें उसे कुछ समय के लिए आनन्द प्राप्त होता है। उसी तरह ज्ञान प्राप्त करना या आत्म ज्ञान प्राप्त करना तथा उसे दूसरों को बाँटना, इन्सान के संताप को कम करता है, सात्विक विचार पैदा करता है, आनन्द और संतुष्टि देता है और उसे एहसास होता है कि उसके जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है ? इसी सम्बन्ध में यहां कुछ आम प्रश्नों उत्तर नीचे दिए जा रहे हैं।

प्रश्न : क्या इन्सान के जीवन का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति होना चाहिए ? यदि कर्मफल ही भोगना है तो फिर ईश्वर प्राप्ति का क्या अर्थ ?

उत्तर : परमशक्ति सर्वसुखदाता है। वह परम दयालु है, परम कृपालु है। पर फिर भी इन्सान दुखी क्यों है ? जो इन्सान के पास है उससे इन्सान संतुष्ट नहीं है परन्तु जो उसके पास नहीं है उसके कारण दुखी है। आम इन्सान शारीरिक तंदरुस्ती, मानसिक शांति और खुशहाली चाहता है। यदि इन्सान को यह सब मिल भी जाएं तो भी वह संतुष्ट नहीं होता क्योंकि उस की इच्छाएँ और ऊंची हो जाती हैं। जब इच्छाएँ पूर्ण नहीं होतीं तो असंतोष पैदा होता है और असंतोष ही निंदा, चुगली, चुस्ती, चालाकी, हेरा-फेरी, दूसरों को नीचा दिखाना, किसी की कमज़ोरी का मजाक उड़ाना आदि के रूप में प्रकट होता है। इन्सान का असंतोष ही उसे नैतिकता से गिरा देता है और वह अपने मूल स्वभाव से दूर हो जाता है। इन्सान का मूल स्वभाव क्या है ? इन्सान का मूल स्वभाव है प्यार करना। इन्सान अकेला नहीं रह सकता। इसीलिए आदिकाल से वह समाज में रहता आ रहा है। इन्सान को किसी साथी की आवश्यकता होती है। अकेले रहना उसके लिए सज़ा है। इन्सान प्यार करना व प्यार पाना चाहता है पर सच्चा प्यार इन्सान को नहीं मिलता जो इन्सान के अंदर असंतोष पैदा कर देता है। जैसे कि प्यार पाने से सुख मिलता है और धोखा मिलने से दुःख होता है। दुःख ही असंतोष बन कर निंदा-चुगली, इर्ष्या-नफ़रत, हेरा-फ़ेरी, दूसरों को नीचा दिखाना, किसी की कमज़ोरी का मज़ाक उड़ाना आदि के रूप में निकलता है। यह असंतोष ही अनैतिक इच्छाएँ पैदा करता है जो उस के दुःखों का कारण बनती हैं। हर इन्सान किसी न किसी से प्यार की, विश्वास की, उम्मीद करता है परन्तु यह विश्वास, निःस्वार्थ प्यार ही इन्सान को नहीं मिलता। इसी कारण समूची मानवता में सब सुख होने के बावजूद भी असंतोष है, निराशा है। इस प्यार की तलाश में इन्सान ईश्वर की शरण में आता है। एक ईश्वर ही है जो इन्सान से निःस्वार्थ प्यार करता है, वह भक्त वत्सल है, ममतामयी है, करुणामयी है, सर्वसुख दाता है, दीन बन्धु है। आज धार्मिक समागमों में तथा संतों, महापुरुषों के प्रवचनों में लाखों की संख्या में लोग़ जाते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि इन्सान ईश्वर का प्यार पाना चाहता है, मन की शांति प्राप्त करना चाहता है। ईश्वर प्राप्ति किसी वस्तु की प्राप्ति नहीं है, किसी व्यक्ति की प्राप्ति नहीं है। ईश्वर की प्राप्ति से भाव ईश्वर के प्यार की प्राप्ति है। जब इन्सान ईश्वर को निःस्वार्थ प्यार करता है तो ईश्वर भी इन्सान को बहुत प्यार करता है। किसी के बताने से, समझाने से या पढ़ने से यह बात समझ नहीं आ सकती। जिस तरह एक छोटे बच्चे को पति-पत्नी के रिश्ते की समझ नहीं

आ सकती, उसी तरह एक अज्ञानी को ईश्वर के रिश्ते की समझ नहीं आ सकती। ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए उससे प्यार करना व उसके प्यार को महसूस करना ही प्राप्ति की शुरुआत है। ईश्वर की प्राप्ति ही सर्वोच्च प्राप्ति है। जिसे ईश्वर का प्यार मिल जाए उससे खुशकिस्मत और कौन हो सकता है !

□□□□□□ : यदि इन्सान ने कर्मफल ही भोगना है तो ईश्वर का प्यार पाने का क्या अर्थ है ?

□□□□□ : श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। परमशक्ति आज इन्सानी रूप में यहाँ विराजमान है। परमशक्ति साकार रूप में अध्यात्मवाद सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर क्रियात्मक रूप में दे रही हैं। उन्होंने श्री मुख से ज्ञान दिया है कि इन्सान कर्मफल भोगने के लिए ही जन्म लेता है। इन्सान के जीवन का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जाए। हर धर्म में इन्सान को मोक्ष प्राप्ति के भिन्न-भिन्न मार्ग बताए गए हैं। परमशक्ति साकार रूप में परिवार में रह कर अपने कर्तव्य निभाते हुए जिंदगी जीने का ढंग बता रही है और क्रियात्मक रूप में बता रही है कि कर्मफल देने के सिद्धांत का आधार है - *"दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करना जैसा आप दूसरों से अपने लिए चाहते हों।"* इन्सान को चाहिए कि वह ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करे, उसके साथ एक रिश्ता कायम करे, उससे प्यार करे, उससे डरे भी एवं अपने कष्टों-परेशानियों के लिए ईश्वर से नाराज़ न होकर उसे दोषी न माने बल्कि प्रार्थना करे। यदि इन्सान ऐसा करता है तो धीरे-धीरे इन्सान की सोच निर्मल हो जाती है। उसके अन्दर ईश्वर का डर रहता है। वह कोई भी कर्म करने से पहले या किसी को कुछ कहने से पहले सोचता है कि यदि मैं उसके स्थान पर होता तो मुझे कैसा लगता ! जिस इन्सान के अन्दर यह डर आ जाता है वह कई बुरे कर्मों से तो बचता ही है, उसके अन्दर असंतोष कम होना शुरू हो जाता है और सात्विक विचार आते हैं। जब इन्सान सच्चे मन से इस नियम पर चलने की कोशिश करता है तो ईश्वर कई बार सूली को भी सूल बना देते हैं। यदि ईश्वर इच्छा हो तो उसे मोक्ष भी प्रदान कर देते हैं। ईश्वर का उद्देश्य इन्सान को नेक बनाना है न कि केवल उसे सज़ा देना। परमशक्ति दयालु है, कृपालु है, अनन्त गुणों की स्वामी है। इन्सान को चाहिए कि वह ईश्वर से प्यार करे।

□□□□□□ : यदि परमशक्ति ने अपनी इच्छा से ही अनुभव देना है तो फिर उसकी प्राप्ति के लिए प्रयास करने का क्या अर्थ है ?

□□□□□ : यदि मानव इतिहास पर दृष्टि डालें तो जितने भी धर्म और मिशन हैं, इतिहास साक्षी है कि उनके अधिकतर संस्थापक वे हुए हैं जिनकी कोई धार्मिक पृष्ठभूमि नहीं थी। वे साधारण इन्सान थे। परमशक्ति ने अपने ही ढंग से उनसे सम्पर्क किया। उनके माध्यम से अपने नियमों, गुणों का प्रदर्शन भी किया। परन्तु कई लोग़ ऐसे भी हैं जो अपना घर-परिवार छोड़ कर जंगलों में चले गए। उन्होंने स्वयं को अनेक यातनाएं दीं, अनेक ढंग अपनाए, अपना सारा जीवन ही ईश्वर की खोज में लगा दिया। परंतुनतोउन्हें उन्हें आवाज़ नहीं आई। इस से यह सिद्ध होता है कि परमशक्ति जड़ नहीं चेतन है पर उसे प्राप्त करने का कोई निश्चित ढंग नहीं है। वह अपनी इच्छा से ही अपना अनुभव देती है।

□□□□□□ : यदि ईश्वर का अनुभव ईश्वर की इच्छा से ही मिलता है तो फिर इन्सान पूजा-पाठ, जप-तप, हवन-यज्ञ, चिंतन-मनन क्यों करता है ? इसका क्या अर्थ है ?

□□□□□ : हर धार्मिक संस्था, मिशन ईश्वर प्राप्ति के अनेक ढंग बताते हैं। इनमें से अधिकतर चिंतन-मनन पर ही बल देते हैं। परन्तु यहाँ पर परम शक्ति ने साकार रूप में अपने श्री मुख से स्पष्ट किया है कि परमशक्ति ही कर्मफल दाता है। उसने हर इन्सान को उसके कर्मों का फल देना है। इन्सान अपने जीवन में जो भी सुख-दुःख भोगता है वह उसके कर्मों का ही फल होता है। इन्सान जो भी कर्म करता है, परमशक्ति उसका फल इन्सान को देती है। यदि इन्सान परमशक्ति से नाराज़ होता है, उसे बुरा-भला कहता है तो उसका भी प्रतिफल मिलता है और यदि इन्सान उस की रज़ा में राज़ी रहता है, उसका शुक्रगुज़ार होता है व उससे निःस्वार्थ प्यार करता है तो उसका भी प्रतिफल मिलता है। परमशक्ति चाहती है कि इन्सान उसे याद करे, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे और उसे प्यार करे। इन्सान ईश्वर को जानने के लिए कई ढंगों का प्रयोग करता है। कई ढंगों द्वारा ईश्वर के प्रति प्यार प्रकट करता है जैसे पूजा-पाठ, जप-तप, भक्ति, पुण्य-दान, सेवा, चिंतन-मनन, हवन-यज्ञ, तीर्थयात्रा आदि। परमशक्ति श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। परमशक्ति श्री मदन जी ने श्री मुख से बताया है कि यदि इन्सान के पास समय हो तो उसे चिंतन-मनन करना चाहिए। सत्संग सुनना, करना और करवाना पुण्य कार्य हैं, परन्तु यदि इन्सान नेक कर्म, सद्व्यवहार तथा सब से प्यार नहीं करता तो सब व्यर्थ हैं। यदि इन्सान दूसरों को अपने जैसा समझता है, किसी को कुछ कहने से पहले सोचता है कि अगर मैं इसके स्थान पर होता तब मुझे कैसा लगता, तो इन्सान कभी किसी का बुरा नहीं करेगा। जब इन्सान ईर्ष्या-द्वेष, जलन-नफ़रत, झूठ-बेईमानी, हेरा-फ़ेरी, चुस्ती-चालाकी आदि छोड़ कर एक नेक इन्सान बनने की कोशिश करता है, नेक कमाई करता है और ईश्वर के बताए नियमों पर चलते हुए अपने कर्तव्य निभाने की कोशिश करता है तो ईश्वर भी उस पर प्रसन्न होते हैं। फिर उस इन्सान को अपनी कृपा से चलाते हैं। उस का मार्गदर्शन भी करते हैं, गलत कार्य करने से भी रोकते हैं और दृष्टांत भी देते हैं तब इन्सान को ईश्वर से प्यार होना शुरू हो जाता है।

इन्सान के जीवन का उद्देश्य तो मोक्ष प्राप्ति ही होना चाहिए जो ईश्वर प्राप्ति से मिलता है। पर हर इन्सान परमशक्ति तक नहीं पहुँच सकता। साधारणतय: इन्सान अपने जीवन में शारीरिक सुख, मानसिक शान्ति, तन्दरुस्ती और खुशहाली चाहता है। यदि इन्सान यह सब चाहता है तो उसे परमशक्ति के बनाए नियमों पर भी चलना पड़ता है। जब इन्सान व्यवहार के नियम पर चलने का प्रयत्न करता है तो ईश्वर भी उसकी मदद करता है, जिससे इन्सान अपने उदेश्य को प्राप्त करता है। अगर इन्सान ईश्वर की प्राप्ति करना चाहता है तो उसे नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करना चाहिए। ईश्वर प्राप्ति के सम्बन्ध में अनेक मत है। हर संस्था अपनी अलग-अलग परिभाषा बताती है। इन्सान को कैसे पता चले कि ईश्वर प्राप्ति का कौन सा मार्ग सही है और उस मार्ग पर चलने पर उसे क्या प्राप्त होगा, उसके क्या लक्षण है ?

पाठकों की सुविधा के लिए नीचे कुछ पड़ाव दिए गए है, जिन्हें पढ़ने के बाद वह आसानी से जान सकेगा कि उसकी मंजिल क्या है ? यहाँ पर यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि ईश्वर को किसी भी निश्चित नियम में नहीं बांधा जा सकता, इसलिए अपवाद हर जगह होते है। यह तो पाठकों की सुविधा के लिए किया गया एक प्रयास है। ईश्वर प्राप्ति के निम्नलिखित पड़ाव माने जा सकते है :

1. जम्हाइयाँ आना :

शुरू में व्यक्ति जब ईश्वर की ओर बढ़ता है तब ईश्वर का स्मरण करते ही व ध्यान लगते ही जम्हाइयाँ आनी शुरू हो जाती हैं। इस का अर्थ है कि ईश्वर उसके आस-पास है, पर इन्सान को वह

दिखाई नहीं दे रहा । ईश्वर तो कण-कण में मौजूद है फिर भी नजर नहीं आता । इस का कारण है कि इन्सान इस योग्य नहीं होता । इस लिए इन्सान को ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करनी चाहिए कि वे उसे अपने योग्य बनाएँ तथा उस पर कृपा करें ताकि वह अपनी मंज़िल की ओर बढ़ सके ।

2. शरीर में सरसराहट का होना तथा आँखों में आंसूओं का आना:

इस अवस्था में जब व्यक्ति ईश्वर का ध्यान करता है तो उसके शरीर में सरसराहट होनी आरम्भ हो जाती है और आँखों में आँसू आने शुरू हो जाते हैं । यह इन्सान के अपने इष्ट के प्रति प्रेम के आँसू होते हैं । कई बार इन्सान को ऐसे लगता है जैसे बिजली का करंट पूरे शरीर में दौड़ने लगा हो । कभी-कभी नींद में भी ऐसे हो जाता है, परन्तु इन्सान को घबराना नहीं चाहिए और जब ऐसा संकेत हो तो ईश्वर की ओर ध्यान करना चाहिए । इस पड़ाव पर कभी-कभी इन्सान को महसूस होता है जैसे कोई दैवी शक्ति उसके शरीर में प्रवेश कर रही है । एक बात सदैव याद रखनी चाहिए कि कोई शक्ति बाहर से प्रवेश नहीं करती । केवल ईश्वरी शक्ति जो जन्म से ही इन्सान के साथ हैं, अपने आप को उस शरीर में उजागर करती हैं । इसलिए इन्सान को उनके प्रति शुक्रगुज़ार होते हुए उनसे प्रार्थना करनी चाहिए।

3. प्रवेशता का होना :

यह आवश्यक नहीं है कि हर कोई इस अवस्था को प्राप्त हो । यह अवस्था अभिशाप भी है व वरदान भी है । इस अवस्था में कुछ विशेष परिस्थितियों में इन्सान का सिर हिलना, बाजुओं या शरीर का हिलना, इन्सान का अस्त-व्यस्त हो जाना साधारण बात है परन्तु यह सब इन्सान के वश में नहीं होता और उसे आवाज़ भी नहीं आती । ईश्वर उसे अनुभव तो देते हैं पर उससे बात नहीं होती । कई बार शारीरिक कष्ट भी होते है जिनके कारण इन्सान अपने परिवार व समाज के लिए परेशानी का कारण बन जाता है । अक्सर लोग़ इसे मानसिक रोग का होना भी मान लेते हैं परन्तु इसके पीछे कई कारण होते हैं : जैसे इन्सान के मन में शंका होना कि यह ईश्वर की कृपा है या उसकी मनोस्थिति है; निम्न स्तर की शक्ति का प्रभाव है या परमशक्ति उसे अपना अनुभव दे रही है । ईश्वर के बारे में अधूरा ज्ञान होना, अपने बारे में शंका होना, स्वयं ही कुछ गलत धारणाएं बना लेना, मन में चंचलता, उमंगें पैदा हो जाना, इच्छाएँ पैदा होना, अपने सांसारिक कर्तव्यों से पीछे हटना आदि भी होते हैं । ईश्वर यह प्रवेशता कई बार प्रेत-आत्माओं, देवी-देवताओं, वीरों-पीरों का अस्तित्व सिद्ध करने के लिए या कर्मफल देने के लिए भी देते हैं । कुछेक व्यक्ति इस अवस्था पर ही स्थिर हो जाते हैं । उनके लिए यह प्रवेशता अभिशाप बन जाती है । यदि कोई इन्सान ईश्वर के नियमों पर चलने की कोशिश करता है और स्वयं को इन विचारों से ऊपर उठाने की कोशिश करता है व ईश्वर के समक्ष बार-बार प्रार्थना करता है तो ईश्वर उनकी शंकाओं और समस्याओं का समाधान करते हैं । उनके मन में जो प्रश्न या शंकाएँ पैदा होती हैं उन्हें अपनी कृपा से दूर कर देते हैं और उन्हें अगले पड़ाव पर पहुंचा देते हैं । जो इन्सान ईश्वर से सच्चा प्यार करते हैं तथा ईश्वर के प्रति समर्पण भाव रखते हैं या जिनके पूर्व संस्कार होते हैं उन पर यह अवस्था आती ही नहीं और अगर आती भी है तो थोड़े समय के लिए आती है । ईश्वर उनमें से कुछेक को माध्यम बना कर उनके द्वारा अपने नियमों, गुणों व शक्तियों का प्रदर्शन भी करते हैं । इस प्रकार यह उनके लिए वरदान सिद्ध होती है ।

4. आवाज़ का आना :

यहाँ से ईश्वर कृपा का ऊँचा स्तर आरम्भ होता है । इस अवस्था में प्रायः इन्सान को अपने अंदर से या बाहर से आवाज़ आनी शुरू हो जाती है । ईश्वर उसे गलत कार्य करने से रोकते हुए सही कार्य करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं । परन्तु कई बार इन्सान अपनी मनोस्थिति के कारण उलझ भी जाता है

क्योंकि अपने अंदर की भावना और ईश्वर की आवाज़ में वह अन्तर नहीं कर पाता। उस वक्त इन्सान को ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करनी चाहिए। आवाज़ आने के भी दो पड़ाव हैं। पहले पड़ाव में इन्सान को जब आवाज़ आती है तो उसकी चेतना लुप्त हो जाती है। इन्सान को बोलते समय पता नहीं होता कि क्या बोला जा रहा है। दूसरे पड़ाव में इन्सान की चेतना को पता तो होता है कि क्या बोला जा रहा है पर वह जो बोल रहा है उस पर उसका नियंत्रण नहीं होता। यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि जो लोग़ प्रवेशता के पड़ाव में से होकर आते है उनकी कही बातें ज्यादातर गलत होती है क्योंकि उनकी अपने प्रति और ईश्वर के सबंध में जो भ्रान्तियां होती हैं वह पूरी तरह से दूर नहीं हुई होती। जो लोग़ सीधा इस स्थिति में आते है उनसे ईश्वर साफ और स्पष्ट बात करते है और उनका उचित मार्गदर्शन भी करते हैं। इस स्थिति में ईश्वर के दर्शन नहीं होते।

5. ईश्वर के दर्शन होना :

इस स्तर पर इन्सान को अपने इष्ट के दर्शन होने लगते हैं अर्थात् जब अपने इष्ट की और ध्यान लगाता है तो उसे बंद या खुली आँखों से दर्शन होते हैं। इन्सान की अपने इष्ट से घंटों बातचीत होती है, पर जब बात होती है तो दर्शन नहीं होते जब दर्शन होते है तो बात नहीं होती। इस स्तर वाला व्यक्ति उतने समय के लिए अपने इष्ट से अभेद हो जाता है। पर इन्सान तो चाहता है कि ईश्वर उसके समक्ष बैठ कर बातें करे।

6. ईश्वर का साक्षात् दर्शन देना :

इस स्तर पर इन्सान अपने इष्ट से अभेद हो जाता है। यह उसके प्यार की चरम-सीमा होती है मगर यह अवस्था बहुत कठिन है। इस अवस्था तक कोई गिना-चुना व्यक्ति ही पुहंच पाता है। इस अवस्था में इन्सान का इष्ट उसके समक्ष बैठ कर बातचीत करता है और जो उससे कहा जाता है वह बिल्कुल ठीक होता है।

उपरोक्त दिए गए पड़ावों का अध्ययन करने के बाद इन्सान आसानी से अंदाजा लगा सकता है कि वह किस पड़ाव तक पहुंचा है और उसकी मंजिल क्या है ? कई बार पहली स्थिति वालों को चौथी या पांचवी स्थिति वाले अनुभव भी मिल जाते है या कभी पांचवी या चौथी स्थिति वालों को पहली या दूसरी स्थिति वाले अनुभव मिल जाते है इससे न तो घबराना चाहिए और न ही उतेजित होना चाहिए अर्थात् वही स्थिति मानी जानी चाहिए जो ज्यादातर महसूस होती हो। यहाँ पर यह कहना जरूरी है कि ईश्वर की प्राप्ति, ईश्वर की कृपा से ही हो सकती है और ईश्वर की कृपा ईश्वर की इच्छा से ही सम्भव है।

समाज में प्रवेशता के बारे में अनेक भ्रांतियां हैं, कोई इसे कसर, हवा का आना, प्रवेशता होना, देवी-देवता का प्रवेश होना, वीर-पीर की मेहर अथवा भूत-प्रेत की पकड़ होना आदि मानते हैं। वास्तव में इन्सान में प्रवेशता की अवस्था में बाहर से कुछ भी प्रवेश नहीं होता। परमशक्ति ही व्यक्ति को कर्मफल देने के लिए या फिर अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए स्वयं को इन्सानी शरीरों में प्रकट करती है। कर्ता हर रूप, हर अवस्था में परमशक्ति ही रहती है। परमशक्ति इन्सान को अपने से दूर रखने के लिए निम्न स्तर की शक्तियों के नाम की प्रवेश्ता को महत्व दे देती है। इन्सान को अनुभव देने के अनेक प्रयोजन होते हैं जैसे :

1. अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु इन्सान का प्रयोग करने के लिए।
2. दुष्कर्मों का फल देने के लिए।
3. पूर्व जन्म के कर्मों का फल देने के लिए।
4. विपरीत परिस्थितियों में सहारा देने के लिए।
5. विपरीत व्यवहार में सुधार लाने के लिए।
6. देवी-देवताओं का अस्तित्व दर्शाने के लिए।
7. असुरी शक्तियां और वीरों-पीरों का अस्तित्त्व सिद्ध करने के लिए।
8. दुष्कर्मों से छुटकारा दिलवाने के लिए।
9. इन्सान को अपना अस्तित्व बताने के लिए।
10. साधारण से महान् आत्मा बनाने के लिए।
11. यह दर्शाने के लिए कि इन्सान के अतिरिक्त भी कोई शक्ति है जिसके आगे सभी बेबस, लाचार और मजबूर होते हैं।

8

मोक्ष प्राप्ति

मोक्ष का अर्थ

सबसे पहले यह जानना ज़रूरी है कि मोक्ष का क्या अर्थ है। मोक्ष का शाब्दिक अर्थ है — मुक्ति, छुटकारा, स्वतंत्रता, निर्वाण, दबाव से अलग होना, बन्धन से छूटना, निज़ात पाना, मुक्त होने की अवस्था, परन्तु अध्यात्मिक दृष्टिकोण से मुक्ति का अर्थ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होना, परमपद, परमगति, ब्रह्मपद, अमरपद, अमरत्व आदि पाना है।

इस सृष्टि में हर चीज़ का जोड़ा है जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, खुशी-ग़मी, यश-अपयश, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, सर्दी-गर्मी, स्वर्ग-नरक और जीवन-मृत्यु । इसी तरह अध्यात्मवाद और भौतिकवाद का भी जोड़ा है। एक के बिना दूसरे का कोई महत्व नहीं है। जो भौतिकवादी हैं उनका मत है कि जो कुछ इन आँखों से दिखाई दे रहा है वही सत्य है, जो दिखाई नहीं देता वह मिथ्या है। जबकि आध्यात्मवादियों का मत है कि जो कुछ इन आँखों से दिखाई दे रहा है वह सब नाशवान है और जो दिखाई नहीं देता वही अजर, अमर, अविनाशी है और वही सत्य है।

आध्यात्मवादी इस बात को मानते हैं कि इस सृष्टि को बनाने वाली कोई शक्ति है जो अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है । इन्सान का जीवन-मृत्यु, लाभ-हानि, यश-अपयश, सफलता-असफलता, सुख-दुःख, खुशी-ग़मी, शांति-अशांति उसी के हाथ में है। वह गिनती में एक है, उसे ही ईश्वर कहा गया है, वही कर्मफलदाता है। कर्मफल पाने के लिए ही इन्सान का पुनर्जन्म होता है और पूर्व कर्मों के आधार पर ही उसे सुख-दुःख, लाभ-हानि, यश-अपयश, कष्ट-परेशानियाँ, बुद्धि, शरीर, माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी इत्यादि मिलते हैं। इन्सानी शक्ति शरीर में आकर कर्मफल भोगती है, इसलिए इन्सानी शक्ति भी शरीर के आवागमन के चक्र से मुक्ति पाने की आवश्यकता महसूस करती है। परन्तु भौतिकवादी ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते। वे उपरोक्त बातों को नहीं मानते, उनका मत है कि यह सब कुछ स्वचलित प्रक्रिया है।

मोक्ष प्राप्ति कैसे सम्भव :

ईश्वर ने सृष्टि में जो कुछ भी बनाया है, इन्सान के लिए ही बनाया है। प्राणियों में इन्सान को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है। उसे सोचने-समझने के लिए बुद्धि प्रदान की, बोलने के लिए भाषा दी, इन्सान को ही ईश्वर ने अपना सांझीदार बनाया। उसे अपने बारे में ज्ञान देने के लिए समय-समय पर महान् आत्माओं को धरा पर भेजा, इन्सान को ही अपना अनुभव करवाया। यदि फिर भी इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है तो उससे बड़ा पापी, कृतघ्न और कोई नहीं है। इस दोष का दण्ड इन्सान को भुगतना ही पड़ता है। इसलिए इन्सान का कर्तव्य है कि वह ईश्वर के अस्तित्व को माने और अपने जीवन के उद्देश्य को जानने का प्रयत्न करे। क्या इन्सान का उद्देश्य बार-बार गर्भ में आना है ? इन्सान का उद्देश्य ईश्वर से प्यार करना तथा जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारा पाना है अर्थात् मोक्ष प्राप्त करना है। दुःखों, कष्टों, परेशानियों से छुटकारा पा कर परम-आनन्द की प्राप्ति करना है। यह तभी सम्भव है यदि इन्सान अपने जीवन में कम से कम 90% सद्कर्म करे, भले ही 10% ऐसे दुष्कर्म भी हो जाएँ जो क्षमायोग्य हों और जीते जी वह कर्मफल दाता तक पहुंच जाए ।

प्राय: इन्सान अपना जीवन वीरों-पीरों या देवी-देवताओं की मान्यता करते हुए ही व्यतीत कर देता है, कुछ इन्सान ही ऐसे होते हैं जो भगवानों तक पहुंच पाते हैं। ईश्वर तक तो कोई गिना-चुना ही पहुंचता है। इस संदर्भ में इतना ही कहना उचित है कि उन देवी-देवताओं, वीरों-पीरों और भगवानों को जब वह इन्सानी रूप में धरा पर थे, ईश्वर ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनका प्रयोग किया और इन्हें इन रूपों में मान्यता प्रदान की। इन्सान का भी कर्तव्य है कि वह उनका आदर-सम्मान करे परन्तु पूजा, भक्ति ईश्वर की ही करे क्योंकि केवल ईश्वर ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है और वही कर्मफल दाता है, भाग्य विधाता है, मोक्ष दाता है, यमराज और धर्मराज भी वही है। उसी के पास इन्सान अपना नश्वर शरीर त्याग कर जाता है। ईश्वर सत्य, न्याय और प्यार का प्रतीक है, इसलिए इन्सान के जीवन का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति ही होनी चाहिए। नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करते हुए ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

जब तक इन्सान अपने जीवन काल में ईश्वर तक नहीं पहुंचता, मोक्ष दाता की शरण में नहीं जाता तथा निम्न स्तर तक ही सीमित होकर रह जाता है तब तक वह मोक्ष पद प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि मोक्ष की प्राप्ति ईश्वर की इच्छा के बिना हो ही नहीं सकती। इसलिए इन्सान का कर्तव्य है कि वह ईश्वर की कृपा का पात्र बने। ऐसा तब ही हो सकता है जब इन्सान सच्चे मन से ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करे, क्योंकि ईश्वर ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है, वही कर्मफलदाता है। वह सत्य, न्याय और प्यार का प्रतीक है। न्यायकारी होते हुए भी वह परम दयालु, परम कृपालु और दया का सागर है। वह चेतन है जड़ नहीं। वह भी हर चीज़ का एहसास करता है। इन्सान का कर्तव्य है कि वह ईश्वर से नि:स्वार्थ प्यार करे। इसके साथ-साथ ईश्वर से डरे और उसका आदर-सम्मान भी करे। डरना इसलिए चाहिए कि कोई ऐसा कर्म न हो जाए जिससे ईश्वर नाराज़ हो जाए, क्योंकि उसकी अप्रसन्नता इन्सान की बर्बादी का कारण बन जाती है। जब इन्सान ईश्वर से नि:स्वार्थ प्यार करता है तब ईश्वर भी इन्सान का मार्गदर्शन करता है और उसे दुष्कर्म करने से रोकता है। धीरे-धीरे इन्सान दुष्कर्मों को छोड़ कर नेक कर्म की ओर बढ़ने लगता है जिससे उसका जीवन सार्थक बन जाता है। जब इन्सान ईश्वर से प्यार करने लगता है तो वह ईश्वर के बताए हुए नियमों पर चलने का प्रयास करने लगता है। जब वह प्रयास करता है तो ईश्वर भी उस पर अपनी कृपा करते हैं ताकि इन्सान उन नियमों पर चल सके। व्यक्ति को अपना जीवन सार्थक बनाने के लिए, जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होने के लिए तथा ईश्वर की प्राप्ति के लिए, ईश्वर के बताए निम्नलिखित नियमों पर चलने का प्रयास करना चाहिए :

1. दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करना जैसा आप अपने लिए दूसरों से चाहते हों।
2. जो कुछ अपने लिए न चाहते हों वह दूसरों से न करो।
3. सदा नेक कर्म, सद्व्यवहार तथा सबसे प्यार करो।
4. किसी को भी अपना दुश्मन न समझो। यदि आपको कोई अपना दुश्मन भी समझता है तब भी उससे प्यार ही करो।
5. ईश्वर से कभी नाराज़ न हो क्योंकि ईश्वर सदैव ठीक ही होते हैं।
6. किसी भी कार्य के लिए ईश्वर को दोषी न मानो। दोष हमेशा इन्सान के कर्मों का होता है।

जो इन्सान उपरोक्त नियमों का पालन सच्चे मन से करता है, वह ईश्वर की कृपा का पात्र बनता है तथा जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है अर्थात् उसे कर्मफल भोगने के लिए पुनर्जन्म नहीं लेना पड़ता है। अन्य इन्सान जन्म-मरण के बन्धन में ही रहते हैं।

क्षम्य अपराध :

व्यक्ति सुबह से रात तक विकारों के वशीभूत या वातावरण व परिस्थितियों के अधीन अनेक भूलें करता है परन्तु जानते हुए या अहम् भाव में आ कर वह कुछ अपराध भी करता है। इस प्रकार किए गए अपराध या भूलें अक्षम्य होती हैं और उनका फल हर अवस्था में भोगना ही पड़ता है। कुछ भूलें या अपराध ऐसे भी होते हैं जो इन्सान अज्ञानतावश या अनजाने में करता है या किसी वातावरण व परिस्थिति के अधीन मजबूरी में करता है या फिर किसी की निःस्वार्थ भलाई के लिए करता है। ऐसे अपराध क्षमा के योग्य होते हैं। जैसे कि पहले भी स्पष्ट किया है कि इन्सान जन्म-मरण के बन्धन से तभी मुक्त होता है जब वह अपने जीवन में 90% सत्कर्म करता है भले ही 10% ऐसे दुष्कर्म भी करता है जो क्षमा योग्य होते हैं। ऐसे कुछ अपराध निम्नलिखित हैं :

1. अनजाने में किए गए अपराध

जब कोई इन्सान जानबूझ कर अपराध नहीं करता बल्कि उससे अनजाने में ही कोई भूल हो जाती है तथा उसे भूल का एहसास होता है तो वह अपनी भूल पर पश्चाताप करता है और क्षमा याचना करता है तथा भविष्य में वैसी भूल न करने का संकल्प करता है तो परमशक्ति उसे क्षमा कर देती है। वैसे तो इन्सान को सही-ग़लत का ज्ञान नहीं है, अपनी तरफ से वह ठीक कार्य करता है परन्तु परमशक्ति की दृष्टि में वह दोष होता है। कई बार इन्सान को दूसरों के कर्म गलत लगते हैं पर हो सकता है कि वे परमशक्ति की दृष्टि में सही हों। कई बार इन्सान की दृष्टि में जो गुण होते हैं, परमशक्ति की दृष्टि में अवगुण होते हैं क्योंकि इन्सान की और परमशक्ति की सोच में बहुत अन्तर है। इन्सान केवल अपने किए गए कर्म को देखता है परन्तु परमशक्ति इन्सान की सोच देखती है कि कर्म किस सोच के आधार पर किया गया है। कोई भी कर्म अपने आप में सही या गलत नहीं होता। सही या गलत तो सोच होती है जिसके आधार पर कर्म किया गया है। जैसे कोई इन्सान किसी धार्मिक स्थान के पास से गुजरता है। वह वहाँ शीश नहीं झुकाता या निरादर करता है। यदि वह अनजाने में यह अपराध करता है कि उसे इस सम्बन्ध में जानकारी नहीं थी तब तो उसका अपराध क्षम्य होता है परन्तु यदि उसने जानबूझ कर या अहम् भाव में ऐसा किया हो तो उसका अपराध अक्षम्य हो जाता है।

2. अज्ञानतावश किए गए अपराध :

जब किसी व्यक्ति को किसी सम्बन्ध में जानकारी न हो और ऐसी स्थिति में उससे भूल हो जाए तो वह भूल क्षम्य होती है। जैसे एक व्यक्ति का व्यवहार तो बहुत अच्छा है, वह किसी की भावना को ठेस नहीं पहुँचाता, किसी का मन भी नहीं दुखाता। उसे यह पता नहीं कि ईश्वर वास्तव में क्या है ? उसकी प्राप्ति कैसे की जा सकती है ? वह ईश्वर के अस्तित्व को तो स्वीकारता है पर कोई उसे जो कुछ भी करने को कहता है वह वैसे ही करता चला जाता है। अगर वह किसी महान् आत्मा का या ईश्वर के धरा पर आने पर अज्ञानतावश विरोध करता है तो वह अपराध क्षमा के योग्य होता है। परमशक्ति श्री मदन जी ने स्पष्ट किया है कि जब तक वे अपनी कही बात का प्रमाण न दे दें तब तक उसका विश्वास न करना भाव जब तक किसी को परमशक्ति ज्ञान नहीं करवाती और वह अज्ञानता के कारण विरोध

करता है तो उसका अपराध क्षम्य होता है। यदि कोई सब कुछ जानते हुए जानबूझ कर अहम् भाव में विरोध करता है तो उसका अपराध अक्षम्य हो जाता है और उसे अपने किए का फल भोगना पड़ता है।

3. मजबूरी में किए गए अपराध :

कई बार इन्सान ऐसी प्रस्थितियों एवम् वातावरण में फंस जाता है और मजबूर हो जाता है और सब कुछ जानते हुए भी गलत करता है। मजबूरी मे किया गया वह अपराध क्षम्य होता है। उदाहरणतय: माता-पिता की आज्ञा या आदेश का पालन करना। जैसे नियम है कि इन्सान को अपने माता-पिता की कमियां को नहीं देखना चाहिए, उनकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए, उनकी हर इच्छा पूर्ण करनी चाहिए आदि। कई बार माता-पिता अपनी मानसिक शांति के लिए या इच्छा पूर्ति के लिए बच्चों को कोई आदेश देते हैं ये आदेश खुशी-ग़मी या समाज में मेल-मिलाप के सम्बन्ध में हो सकते हैं जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक न हों । मजबूरी में किए गए ऐसे अपराध क्षम्य होते हैं।

4. परिस्थिति वश किए गए अपराध:

जब किसी इन्सान के सामने विपरीत परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं जैसे यदि कोई व्यक्ति दुष्ट व्यक्तियों या असामाजिक तत्वों के जाल में फंस जाए, वह या उसका परिवार किसी मुसीबत में फंस जाए या जान जोखिम में आ जाए तो ऐसी परस्थितियों में जो गलती उससे हो जाए तो उसकी गलती क्षमा के योग्य होती है।

5. अधर्म के नाश के लिए किसी भी नीति का प्रयोग:

अधर्मी व्यक्तियों का कार्य दूसरों को दुःख देना, हानि पहुंचाना, अन्याय करना व कमज़ोर लोगों का शोषण करना होता है। ईश्वर का नियम है कि अन्याय करना और अन्याय सहना दोनों ही पाप हैं। यदि आप किसी पर हो रहे अन्याय को देखते हो तो आपको उस अन्याय के विरुद्ध डट जाना चाहिए और सदैव न्याय का साथ देना चाहिए। प्रायः अन्याय ग़रीब, लाचार, बेबस व मज़बूर लोगों के साथ ही होता है, वह चाहे नर हो या नारी, उनकी रक्षा के लिए किसी भी नीति या ढंग का प्रयोग कर लेना चाहिए। वहां सही-ग़लत से ऊपर उठ कर कर्म करना चाहिए। निःस्वार्थ भाव से किए गए कर्म भले ही किसी सीमा तक अनुचित ही क्यों न हों, क्षम्य होते हैं।

6. समूची मानवता की रक्षा हेतु किए गए अपराध :

ईश्वर ने तो केवल इन्सान बनाया है बाकी दीवारें तो इन्सान ने स्वयं ही पैदा की हैं। ईश्वर ने जिन महान् आत्माओं से सम्पर्क किया उन्होंने समूची मानवता के हित व कल्याण के लिए ज्ञान दिया। इन्सान को भी चाहिए कि वह धर्म, जाति, तथा सम्प्रदाय से ऊपर उठ कर समूची मानवता के हित के लिए कार्य करे। हर इन्सान को अपने जैसा समझे। यदि कोई व्यक्ति समूची मानवता के अहित के लिए कोई कार्य करता है अर्थात् जैसे कोई आतंकवाद, अफवाहें, अशांति या भ्रष्टाचार फैलाता है, या कोई और ऐसा कार्य करता है जिससे समूची मानवता में असंतोष व डर पैदा होता है तो उस कार्य को रोकने के लिए या मानवता की रक्षा करने के लिए अपनी कुर्बानी देना कोई दोष नहीं है। ऐसे में अगर कोई अनुचित कर्म भी हो भी जाए तो वह क्षमा योग्य होता है।

7. मानवता की भलाई के लिए किए गए अपराध :

जैसा कि पहले भी बताया गया है कि परमशक्ति का सम्बन्ध इन्सान की सोच के साथ है। कोई इन्सान दूसरों की भलाई के लिए या समाज के हित में कार्य करते हुए गलती कर बैठता है। उसका उद्देश्य मानवता की भलाई करना है, पर उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किए गए कार्य कई बार गलत हो जाते हैं। यदि उसका उद्देश्य निःस्वार्थ है तो तथाकथित अपराध क्षम्य होते हैं।

8. मानवता के अहित के विरोध में किए गए अपराध:

अगर कोई व्यक्ति या समुदाय मानवता के अहित के लिए कार्य कर रहा है जिससे समूची मानवता को हानि हो रही हो तो इन्सान का कर्तव्य है कि वह उसका विरोध करे। विरोध करते हुए यदि उसे कोई नियम भी तोड़ना पड़ता है तो उसके द्वारा किया गया अपराध भी क्षम्य हो जाता है।

9. निःस्वार्थ रहकर किसी इन्सान की भलाई के लिए किया गया अपराध :

कई बार दूसरों की भलाई करते हुए इन्सान से कोई गलतीहो जाती हैं। यदि इस प्रकार के कार्य में उसका अपना कोई स्वार्थ न हो और किसी को कोई हानि न हो तो इस तरह हुए अपराध क्षम्य होते हैं। जैसे कोई किसी को मारना चाहता है तो उस व्यक्ति को बचाने के लिए उसे झूठ का सहारा लेना पड़ता है। ऐसा अपराध क्षम्य होता है क्योंकि ऐसा अपराध स्वार्थ रहित है।

10. आत्म-रक्षा या परिवार की रक्षा हेतु किया गया अपराध :

कई बार इन्सान के सामने ऐसी स्थिति आ जाती है जब वह या उसका परिवार किसी मुसीबत में फंस जाता है। जैसे किसी व्यक्ति पर कोई गिरोह प्राणघाती आक्रमण कर देता है तो आत्म-रक्षा हेतु यदि उससे कोई अपराध हो जाता है तो ऐसा अपराध क्षम्य होता है।

उपरोक्त वर्णनीय विचारों पर इन्सान चल कर अपने भावी जीवन को आदर्शमय व सुखमय बना सकता है। इस के साथ-साथ इनको अपने जीवन में अपनाने से इन्सान मोक्ष की प्राप्ति भी कर सकता है।

परन्तु कुछ ऐसे भी अपराध हैं। जो क्षमा योग्य नहीं हो सकते और उनका फल हर अवस्था में इन्सान को भोगना ही पड़ता है, यहाँ तक की उसको नया इन्सानी जीवन भी नहीं मिल पाता। वे अपराध निम्न लिखत हैं और जिनका वर्णन और व्याख्या "जीवन दर्पण" पुस्तक में दिया गया है।

1. नास्तिक होना अर्थात ईश्वर के अस्तित्व को नकारना।
2. माता-पिता का निरादर एवम् अवहेलना करना।
3 किसी के किए गए उपकार को भूल जाना।
4 विश्वासघात करना।
5 अपनी किसी अप्रियघटना एवम् दुःख के लिए ईश्वर से नारा होना।
6 ईश्वर द्वारा मानता प्राप्त रूपों का निरादर करना।
7 ईश्वर के सम्पर्क के बिना गुरु बन बैठना।
8 किसी के प्रति झूठी गवाही देना।
9 ईश्वर के साकार रूपों का निरादर करना।

9
ईश्वर के दर्शनों से पाप कब, क्यों और कैसे कटते हैं ?

आम धारणा है कि जब किसी इन्सान को परमशक्ति या ईश्वर के दर्शन हो जाते हैं तब उसके सारे दुखों-कष्टों का निवार्ण हो जाता है। आज परमशक्ति का ऐलान है कि

"मैं परमशक्ति अदृश्य से सदृश्य बनी हूँ, यह मेरा शरीर है, मेरा नाम मदन है, आज मैं इन्सानी रूप में धरती पर आई हूँ।"

यहाँ परमशक्ति श्री मदन जी ने हर चीज़ का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया है और दे रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि ईश्वर के दर्शन हो जाने से इन्सान पाक और पवित्र हो जाता है। पर यह किस समय होता है ? किस तरह होता है ? आदि बहुत सारे प्रश्न हैं जो इन्सान को समझने बहुत ज़रूरी हैं, इनका ज्ञान होना बहुत ज़रूरी है। जब इन्सान ईश्वर की निराकार रूप में भक्ति अर्थात् चिंतन-मनन, जप-तप, पूजा-पाठ आदि करता है और उसका मन एक अबोध बच्चे की तरह निर्मल हो जाता है। उसके मन से इर्ष्या-द्वेष, नफरत, वैरभाव मिट जाते हैं। वह हर किसी के साथ सद्व्यवहार और प्यार करता है और उसका मन ईश्वर के प्यार से भर जाता है अर्थात् जब इन्सान ईश्वर के योग्य हो जाता है तो ईश्वर उनके प्यार से प्रसन्न हो कर उसी रूप में जिस रूप में वह उन्हें याद करता है; प्रकट हो कर जो कुछ भी कह देते हैं वही हो जाता है। तब उसके दुःख-कष्ट दूर हो जाते हैं। प्रकट तो परमशक्ति ही होती है पर रूप वह होता है जो इन्सान का इष्ट होता है। वैसे तो इन्सान मूर्तियों या चित्रों में ईश्वर के दर्शन करता है पर सत्य में दर्शन वह होते हैं जब उसको परमशक्ति उसके इष्ट के रूप में प्रकट हो कर दर्शन देती है।

आज जब परमशक्ति ऐलान कर रही है कि श्री मदन मेरा साकार रूप हैं। उनके दर्शन परमशक्ति के दर्शन हैं। इन दर्शनों का महत्व यह होता है कि व्यक्ति परमशक्ति की तरफ बढ़ता है और उसका प्यार लगन और श्रद्धा बढ़ती है। जब इन्सान श्री मदन जी को ईश्वरीय रूप में देखने लगता है, वह इर्ष्या-द्वेष, हेरा-फेरी, नफरत, बेईमानी, झूठ आदि से पीछे हट जाता है। नेक इन्सान बनता है, परमशक्ति के बताए नियमों पर चलने के कोशिश करता है, कभी भी परमशक्ति से नाराज़ नहीं होता। नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करता है तब परम शक्ति की इच्छा उस पर हो जाती है और तब उनकी ही कृपा से वह साकार रूप के चलते, फिरते, उठते, बैठते ईश्वरीय दर्शन भी कर पाता है। फिर प्रश्न पैदा होता है कि यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के दुःख-कष्ट दूर क्यों नहीं होते ? जब कि हर कोई परम शक्ति के इन्सानी रूप के दर्शन कर रहा है। क्या केवल साकार रूप के दर्शनों के साथ ही पाप कट जाते हैं ? यह प्रश्न हर किसी के मन में उठता है। इस प्रश्न को गहराई से समझने की ज़रूरत है। अगर साकार रूप के दर्शन के बावजूद भी कष्ट-परेशानियां दूर नहीं होतीं तो इसके कुछ मुख्य कारण हैं जो नीचे लिखे हैं :

1. जब परमशक्ति निराकार होती है तो इन्सान उसकी भक्ति करता है फिर उसके योग्य बनता है तब परमशक्ति उसको दर्शन देती है। परम शक्ति इन्सानी रूप में पहले उसे शरण में लेते हैं फिर अपनी कृपा से उसकी कमियां दूर करते हैं, अपना अस्तित्व दर्शाते हैं और अपनी पहचान करवाते हैं। जब इन्सान परमशक्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है, उसके पास रह कर उसके गुणों को महसूस करता है, तब उसके मन में साकार रूप के प्रति प्यार पैदा होता है। जैसे-जैसे इन्सान का प्यार बढ़ता है उसको अनुभव भी मिलते हैं तब साकार रूप अपने ईश्वरीय रूप के दर्शन भी उसको देते हैं जिस से उसका मन भी निर्मल होता है और उसके पाप भी कटते हैं।

2. परमशक्ति तो इन्सान पर हमेशा कृपा ही करते हैं। जब इन्सान परम शक्ति के साकार रूप के पास आता है तब वह शारीरिक सुख, मानसिक शांति, तंदरुस्ती और खुशहाली चाहता है पर यह कुदरत के नियम के विपरीत है, क्योंकि ईश्वर की प्राप्ति और दुनियावी सुख कभी एक साथ नहीं मिल सकते। यही कारण है कि जो श्रद्धालू ईश्वर के नज़दीक आते हैं पहले वे दुःख ही उठाते हैं। पर जब ईश्वर की किसी पर इच्छा हो जाती है तो वे उनकी कृपा से सच्चा सुख पाते हैं।

3. एक कारण यह भी है कि यहाँ आने वाले सारे व्यक्ति परम शक्ति के साकार रूप को ईश्वर मानते ही नहीं। कुछ इन्हें महान् आत्मा मानते हैं, कुछ लोग महा-पुरुष और कुछ लोग आज भी बाबा मानते हैं। बहुत कम हैं जो ईश्वर मानते हैं। साकार रूप को जो जिस रूप में मानता है उसे उसी रूप में फल मिलता है। इस कारण इन्सान ईश्वर के नज़दीक आ कर भी ईश्वरीय दर्शन नहीं पा सकता।

4. आमतौर पर इन्सान किसी दुःख तकलीफ के लिए या कष्ट परेशानी के लिए परमशक्ति को दोषी मानता है भाव अपने दु;खों-कष्टों के लिए अपने कर्मों को दोषी नहीं मानता और ईश्वर के साथ छोटी-छोटी बात पर नाराज़ हो जाता है जिसके साथ वह अपने दुखों को और बढ़ा लेता है वह ईश्वर की कृपा का पात्र बनने की बजाय ईश्वर की नाराज़गी ही पाता है। इस तरह के व्यक्ति के पाप साकार रूप के दर्शन मात्र से कैसे कट सकते हैं ? कहने का अर्थ यह है कि जो ईश्वर की रज़ा में राज़ी रहता है वही ईश्वर की कृपा का पात्र बनता है उसके पाप साकार रूप के दर्शन से कटते हैं।

5. श्री मदन धाम के श्रद्धालुओं के दुःखों का एक कारण यह भी है कि श्री मदन धाम अध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। जिस तरह से विधार्थी को शिक्षा देने के बाद उसके परीक्षा ली जाती है। उसी तरह से परमशक्ति आने वाले श्रद्धालुओं को ज्ञान देने के बाद परीक्षा लेते हैं। जिसके कारण भी श्रद्धालुओं को दुःखों-कष्टों का सामना करना पड़ता है। पर जब वह श्री मदन जी की परीक्षा में सफल होतें है तब वह परमशक्ति की कृपा के पात्र बनते हैं और तब परमशक्ति उनके दुःख-दर्द दूर करते हैं।

6. परमशक्ति ने इन्सानी रूप में जिन श्रद्धालुओं को अपनी शरण में लिया है उन्हें अपने श्री मुख से ज्ञान दिया है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य इस जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति पाना है। इन्सान

जब परमशक्ति की शरण में आता है तब तक कई दुष्कर्म या पाप कर चुका होता है इसी तरह उसने पिछले जन्म में भी कई पाप और दुष्कर्म किए होते हैं। जब व्यक्ति परमशक्ति की शरण में आता है तब परम शक्ति उसके यह दुष्कर्म छोटे-मोटे कष्ट दे कर काट देते हैं तथा उसे और दुष्कर्म करने से बचाते हैं जिस के कारण भी इन्सान दुःख-कष्ट भोगता है। जब उसके सारे दुष्कर्म कट जाते हैं तब परमशक्ति उसको मोक्ष भी दे देते हैं।

10

आज्ञा और आदेश

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है । परमशक्ति साकार रूप में इन्सान को क्रियात्मक रूप में अध्यात्मवाद का ज्ञान दे रही है और जीवन जी कर भी दिखा रही है कि इन्सान को जीवन कैसे बिताना चाहिए । उसके जीवन की क्या प्राथमिकताएँ होनी चाहिए और वह किस प्रकार अपने रिश्तों को निभाता हुआ जीवन को सफल व सार्थक बना सकता है । अध्यात्मवाद का सम्बन्ध केवल ईश्वर के नियमों, गुणों व शक्तियों के ज्ञान तक ही सीमित नहीं है । उसका सम्बन्ध तो इन्सान के जीवन के हर पहलू से है अर्थात् इन्सान को जीवन किस ढंग से जीना चाहिए । परमशक्ति ने साकार रूप में अपने श्रीमुख से स्पष्ट किया है कि कर्मफल तो हर इन्सान ने भोगना ही है पर जब इन्सान ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है, सत्संग में जाता है, महान् आत्माओं से ईश्वर के बारे में ज्ञान सुनता है तब उसे ईश्वर से प्यार होना शुरु हो जाता है । फिर वह ईश्वर को पाना चाहता है परन्तु उसके विकार उसे उलझा देते हैं, उसे समझ नहीं आने देते कि ईश्वर का प्यार वह कैसे प्राप्त करे । वह ऐसा कौन सा कार्य करे जिससे वह ईश्वर का प्यार पा सके । परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्रीमुख से उदाहरण सहित स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार माता-पिता के दो बच्चे हैं, दोनों ही उनके लिए समान हैं । एक बच्चा उन्हें प्रथम स्थान देता है अर्थात् कोई भी कार्य करने से पूर्व उनकी आज्ञा लेता है व उनका आशीर्वाद प्राप्त करता है । जब माता-पिता उसे कोई काम कहते हैं तो वह उसे बिना किसी किन्तु-परन्तु किए पूरा करता है । दूसरा बच्चा न तो उनका मान-सम्मान करता है, न उनसे पूछ कर कोई कार्य करता है और न ही उनके विचारों को सम्मान देता है, केवल अपनी मनमानी करता है । माता-पिता उससे कैसे प्रसन्न हो सकते हैं । वह भले ही वह उनकी सम्पत्ति का भागीदार बन जाए लेकिन उनके प्यार का पात्र नहीं बन सकता । उसी प्रकार ईश्वर से इन्सान का नाता पिता और सन्तान के नाते जैसा है । हर इन्सान ने पिछले जन्म में जो अर्जित किया है उसका फल तो पाना ही है चाहे वह ईश्वर के अस्तित्व को माने या न माने । परन्तु ईश्वर का प्यार वही पा सकता है जो ईश्वर को अपने जीवन में प्रथम स्थान देता है । हर महत्वपूर्ण कार्य करने से पहले आज्ञा लेता है, आशीर्वाद लेता है तथा जब वह कार्य हो जाता है तो उनका शुक्रगुज़ार होता है, यदि वह ऐसा न करे तो वह परमशक्ति की दृष्टि में दोषी होता है । जब ईश्वर उसे कोई आदेश देते हैं तो वह अपनी सोच से ऊपर उठ कर उसका पालन करता है । ईश्वर उसी व्यक्ति को आदेश देते है जिस पर उन्हें विश्वास होता है कि वह उनके आदेश की अवहेलना नहीं करेगा । ऐसा व्यक्ति ही ईश्वर के प्यार का पात्र बनता है ।

आज जब परमशक्ति साकार रूप में है, इन्सान अपने दु:खों, कष्टों, परेशानियों के लिए साकार रूप के आगे प्रार्थना करता है तो उसे कई बार आज्ञा लेनी पड़ती है कई बार आदेश लेना पड़ता है, दोनों ही ईश्वर अपने श्रीमुख से देते हैं । दोनों का पालन करना इन्सान के लिए आवश्यक है । आम इन्सान इन्हें एक ही समझता है पर इनमें गहरा भेद है । इस भेद को समझना अति आवश्यक है । इस भेद को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित संक्षिप्त विवरण दिया गया है :

आज्ञा :-

इन्सान के जीवन में ऐसे कई अवसर आते हैं जब वह किसी कार्य को करना चाहता है। इसके लिए वह ईश्वर से आज्ञा लेता है अर्थात् प्रार्थना करता है कि ईश्वर उसको उस काम में सफ़लता के लिए आशीर्वाद दें। जब इन्सान मन में भावना, इच्छा या आशा ले कर ईश्वर के आगे प्रार्थना करता है तो वह चाहता है कि ईश्वर उसे उस काम के लिए आज्ञा दे दें जिससे उसे सफ़लता मिले और उसका जीवन सुखमय हो। कई बार जब ईश्वर उसे आज्ञा नहीं देते तो इन्सान उनसे नाराज़ भी हो जाता है अर्थात् आज्ञा में इन्सान की पूरी इच्छा होती है और इन्सान चाहता है कि उसे आज्ञा मिल जाए। यहाँ इन्सान ईश्वर की सोच से अधिक अपनी सोच को महत्व देता है जिस कारण ईश्वर उसकी भावना के अनुसार उसे आज्ञा दे भी देते हैं। कई बार उसे सफ़लता नहीं मिलती और यदि मिल भी जाती है तो वह काम उसके लिए समस्या बन जाती है। तब इन्सान ईश्वर को कोसता है कि मैंने तो ईश्वर से आज्ञा लेकर काम किया था फिर मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ है ? ईश्वर ने मेरे साथ अन्याय किया है या ईश्वर से आज्ञा लेने का क्या लाभ हुआ ? इन्सान स्वभाव से ही स्वार्थी है। यदि सफल हो जाता है तो स्वयं को महत्व देता है और यदि असफल होता है तो दोष ईश्वर को देता है या अपनी किस्मत को कोसता है। जब इन्सान साकार रूप के समक्ष अपने भावों को व्यक्त करता है और विनम्र प्रार्थना करता है कि मेरी तुच्छ सोच से ऊपर उठ कर मेरा मार्गदर्शन करें, तब ईश्वर जो उचित होता है उसकी ही आज्ञा देते हैं। फिर उस कार्य में सफ़लता भी मिलती है। यदि वे किसी काम से मना करते हैं तो वह भी इन्सान के लिए शुभ ही होता है क्योंकि ईश्वर तो त्रिकालदर्शी हैं। वे आने वाले समय के बारे में जानते हैं। ईश्वर इन्सान के लिए वही करते हैं जो उचित व शुभ होता है।

आदेश :-

जैसे भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का जोड़ा है। उसी प्रकार भौतिकवाद में भी मालिक-नौकर, माता-पिता व बच्चों का जोड़ा है। इसी प्रकार अध्यात्मवाद में गुरु-शिष्य का, भगवान-भक्त का जोड़ा है। मालिक नौकर को, माता-पिता बच्चों को, गुरु अपने शिष्यों को तथा भगवान अपने भक्तों को आदेश देते हैं। आदेश में प्रार्थी की अपनी इच्छा नहीं होती। जिस को आदेश मिलता है उसे बिना झिझक ज्यों का त्यों पूरा करना होता है। इसमें आदेश देने वाले की अपनी इच्छा होती है। यद्यपि ये सभी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं होते, इनके आदेश स्वार्थ पर आधारित हो सकते है, परन्तु इनके आदेश का पालन इन्सान को करना ही चाहिए। ऐसा करने से मानसिक शांति व परस्पर प्यार बना रहता है।

परमशक्ति आज साकार रूप में विराजमान है। परमशक्ति ही यहाँ बात करती है। वह आदेश देते हैं। उनका कोई भी आदेश अर्थहीन नहीं होता। उसका कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। कई बार इन्सान को उनका आदेश अच्छा नहीं लगता। इन्सान उस आदेश का पालन करने में आनाकानी करता है। यदि व्यक्ति को लगता है कि बात उसके हित में है तो वह उसे मानता है, अन्यथा सुन कर भी अनसुना कर देता है, अपनी मनमानी करता है, फलस्वरूप जब कोई अप्रिय घटना होती है तो वह परमशक्ति को दोष देता है। इस तरह एक और गलती कर देता है, ऐसे व्यक्ति से परमशक्ति विमुख हो जाती है। आदेश के सम्बन्ध में कोई तर्क या शंका नहीं करनी चाहिए। उसका पालन आँखें बंद करके बिना किसी किन्तु-परन्तु के कर देना चाहिए। क्योंकि ईश्वर त्रिकालदर्शी हैं इसलिए उनका आदेश भी उनकी सोच के अनुरूप होता है। इन्सान को चाहे अच्छा लगे या बुरा जो आदेश हो जाए उस पर अमल करना जरूरी होता है, परमशक्ति यदि किसी को कोई आदेश देती है तो उसमें शंका नहीं रहती। जो कोई उसके आदेश की पालना करता है, सदा सुखी रहता है। जिसे परमशक्ति कोई आदेश दे, वह भाग्यशाली

होता है लेकिन जो आदेश को टाल दे उस जैसा बदनसीब नही हो सकता है। क्योंकि ईश्वर जो भी करते हैं इन्सान के भले के लिए ही करते हैं।

स्वार्थ इन्सान की स्वभाविक विशेषता है। कोई भी काम करने से पहले वह अपने स्वार्थ को सामने रखता है। जब तक उसका स्वार्थ पूर्ण होता रहता है तब तक वह काम करता है। जब स्वार्थ पूरा नहीं होता तब उसकी उस कार्य में रुचि भी कम हो जाती है। उसी तरह इन्सान चाहे ईश्वर के किसी भी रूप को माने, उसमें उसका स्वार्थ ही छिपा होता है। जहां उसका स्वार्थ पूरा हो जाता है वहीं उसकी आस्था बन जाती है। इन्सान को उस रूप से प्यार भी होता है। उसको इस बात से कोई सरोकार नहीं होता कि उसकी मनोकामना किसने पूर्ण की है। जब उसकी मनोकामना पूर्ण नहीं होती, उसका प्यार व श्रद्धा कम हो जाती है। ऐसे लोग़ कम ही होते हैं जो अपने स्वार्थों से ऊपर उठ कर ईश्वर से प्यार करते हैं। जब कोई इन्सान ईश्वर से स्वार्थ रहित प्यार करता है तो ईश्वर उसे अपना अस्तित्व बताते हुए उसे दर्शन देते हैं, उसका मार्गदर्शन भी करते हैं और आदेश भी देते हैं। परमशक्ति के सच्चे भक्त की पहचान यही है कि वह उनके आदेश को खुशी-खुशी स्वीकार करे, उसकी पालना करे और लाभ-हानि, यश-अपयश का विचार न करे।

हर रूप में कर्ता परमशक्ति ही है, वही हर रूप में कार्य करती है। जिस समय किसी इन्सान को निराकार रूप में कोई आदेश होता है तो यदि सम्भव हो उसे साकार रूप से स्पष्टीकरण लेना चाहिए। यदि सम्भव न हो तो ईश्वर के आगे निम्नलिखित प्रार्थना करनी चाहिए :

" हे परमपिता, जो आदेश आपने दिया है मुझे नहीं पता कि वह मेरी भावना है या आपका आदेश है। मैं एक साधारण इन्सान हूँ, विकारों के अधीन हूँ, मुझ पर कृपा करते हुए मेरा मार्गदर्शन करें और मुझे शक्ति प्रदान करें ताकि मैं आपके द्वारा दिए गए आदेश का पूरी ईमानदारी से पालन कर सकूं। आप अपनी कृपा से ही इस कार्य को पूर्ण करवाएं।"

यदि इन्सान अपने आप को महत्व न दे कर ईश्वर को महत्व देता है तो ईश्वर भी उसको भटकने नहीं देते बल्कि सदमार्ग पर ही चलाते हैं। यदि इन्सान कोई भी कार्य करने से पूर्व अपने इष्ट के समक्ष प्रार्थना करता है, ईश्वर को अपने अंग-संग मान कर कार्य करता है तो ईश्वर उसकी सहायता भी करते हैं और उसे सफ़लता भी देते हैं। चाहे आज्ञा ली जाए या आदेश हो परन्तु उद्देश्य यही होना चाहिए कि परमशक्ति को महत्व दिया जाए। आज परमशक्ति इन्सानी रूप में है। इन्सानी रूप में हर चीज़ का प्रभाव पड़ता है। उनकी प्रसन्नता व नाराज़गी इन्सान के जीवन को प्रभावित करती है। जो इन्सान सदैव ईश्वर को याद रख कर उसे प्रथम स्थान देता है, दूसरों के साथ व्यवहार करने से पहले ईश्वर को तथा उसके नियम को याद करता है, उसकी शिक्षाओं को याद करता है तो ईश्वर उस पर प्रसन्न होते हैं। जिस पर ईश्वर प्रसन्न हो जाते हैं, उसके दुष्कर्म भी काट देते हैं चाहे उसके कर्म कैसे भी हों, क्योंकि ईश्वर का उद्देश्य केवल सज़ा देना ही नहीं, ईश्वर तो इन्सान को नेक ही बनाना चाहते हैं। ईश्वर इन्सान को प्यार करना सिखाना चाहते हैं। इन्सान जब एक नेक इन्सान बनने की कोशिश करता है तो ईश्वर उसे संसारी सुख भी देते हैं, मानसिक शांति भी देते हैं। परमशक्ति का आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र खोलने का उद्देश्य इन्सान को अपना अस्तित्व बताना एवम् उसे नेक इन्सान बनाना ही है। इस लिए इन्सान को उनके आगे प्रार्थना करनी चाहिए और अपनी सोच को महत्व न दे कर उनसे आज्ञा या आदेश लेकर ही कोई कार्य करना चाहिए। इस प्रकार इन्सान सफल और सार्थक जीवन बिता सकता है।

11
परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप में धरा पर ! कैसे ?

परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप लेकर धरा पर कैसे है ? इससे पहले यह जान लेना ज़रूरी है कि क्या परमशक्ति का अस्तित्व है ? यदि है तो वह क्या है ? नास्तिक लोग़ परमशक्ति या ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते। उनका मानना है कि ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं है। संसार में जो कुछ भी हो रहा है वह स्वचलित प्रक्रिया है। इस सम्बन्ध में इतना ही कहना है कि विज्ञान भी यह मानता है कि इन्सान, जो धरती का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, उसके धरा पर आने से पहले ही यह सूर्य, चाँद, सितारे, वायुमण्डल, ग्रह, जीव-निर्जीव इत्यादि बन चुके थे। स्पष्ट है कि इनको बनाने और नियमों में बांधने वाला इन्सान नहीं हो सकता, क्योंकि वह तो धरती पर पैदा ही बाद में हुआ। आखिर कोई न कोई तो इस सृष्टि की रचना करने वाला और नियमों में बांधने वाला है। उसे ही ईश्वर या परमशक्ति कहा गया है।

जिस तरह शरीर के अंदर एक शक्ति है जो शरीर का संचालन करती है परन्तु दिखाई नहीं देती लेकिन जिसके अस्तित्व से इन्कार भी नहीं किया जा सकता, ठीक उसी तरह इस सृष्टि का संचालन करने वाली भी एक शक्ति है। वह शक्ति अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। वह सृष्टि के कण-कण में होते हुए भी दिखाई नहीं देती। उस अदृश्य शक्ति को ही परमशक्ति, ईश्वर, अल्ला, वाहिगुरु, गॉड, राधास्वामी, निरंकार आदि नाम दिए गए हैं। उसी शक्ति को कुदरत, प्रकृति या नेचर कहा जाता है। ईश्वर के होने का यह एक स्पष्ट प्रमाण है।

परमशक्ति या ईश्वर क्या है ?

इस सृष्टि को रचने वाली एक शक्ति है जिसे परमशक्ति या ईश्वर कहा गया है। वह शक्ति न नर है न नारी है, वह तो एक शक्ति है, जो अनादि, अनन्त और इन्सान के लिए प्रायः अगम्य व अगोचर है, वही सर्वोच्च है। वह सर्वरूपिणी है अर्थात् हर रूप में वह स्वयं ही कार्य करती है। जीव-निर्जीव को बनाने वाली, नियमों में बांधने वाली एवं जीवों की पालनकर्ता और संहारकर्ता केवल वही शक्ति है। वही शक्ति सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है तथा वही कर्मफलदाता है। वह सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है। वह न्यायकारी होते हुए भी परम दयालु और कृपालु है। वह आनन्द की दाता, सुखों की भंडार, शरणागत् की रक्षक, पाप नाशिनी एवम् मुक्ति दाता है। वह इन्सान के अंदर भी है और सृष्टि के कण-कण में भी विद्यमान है। जब वह शक्ति अदृश्य से सदृश्य बनती है तो वह सर्वगुण सम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी, अजय और अपने आप में पूर्ण होती है, लेकिन उस समय वह गम्य और गोचर होती है क्योंकि उस समय इन्सान उस तक पहुँच सकता है और उसके दर्शन भी कर सकता है।

परमशक्ति या ईश्वर अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए कि इस सृष्टि को रचने वाला, पालन करने वाला और संहार करने वाला कोई है, तब वह महान्-आत्माओं के माध्यम से या फ़िर अपना कोई निर्जीव चिह्न या सजीव रूप निर्धारित करके उनके माध्यम से अपने नियमों, गुणों व शक्तियों का किसी सीमा तक प्रदर्शन करती है। वह शक्ति युगों-युगों के बाद अपनी इच्छा से स्वयं इन्सानी रूप में भी धरती पर आती है। उस समय ही वह क्रियात्मक रूप में सिद्ध करती है कि इन्सान का यश-अपयश, सुख-

दुःख, खुशी-ग़मी, लाभ-हानि, सफलता-असफलता, जीवन-मृत्यु इत्यादि उसी के हाथ में हैं। उसी शक्ति की घोषणा है कि वह अदृश्य से सदृश्य बनी है। वह इन्सानी रूप लेकर धरती पर आई है। उसका अपना शरीर है जिसका नाम श्री मदन है। वह साकार रूप में माणकपुर दरबार में विद्यमान है।

परमशक्ति ने गत् 26 वर्षों में अपने धरा पर आने के अनेक प्रमाण क्रियात्मक रूप में दिए हैं। अनेक बातों को क्रियात्मक रूप में प्रमाणित भी किया है और अनेक बातों का खण्डन भी किया है। जैसे कहा भी गया है कि ***हे ईश्वर! तू बेअंत तेरी माया बेअंत, तेरा भेद किसी ने नहीं पाया।*** अब देखना है कि आने वाले समय में ईश्वर क्या प्रमाणित करते हैं।

ईश्वर ने अपने धरा पर आने के पिछले 26 वर्षों से जो क्रियात्मक प्रमाण दिए हैं वे निम्नलिखित हैं :-

1. परम शक्ति के साकार रूप श्री मदन जी का कोई गुरु या आराध्य नहीं है। जब परमशक्ति धरा पर आती है तो उसका कोई गुरु या आराध्य नहीं होता क्योंकि वह तो स्वयं ही सबकी गुरु एवं आराध्य (इष्ट) है। इन्सान ने जो कुछ भी सीखा है परमशक्ति से ही सीखा है। इसलिए साकार रूप का न तो कोई गुरु है और न ही कोई इष्ट। यदि श्री मदन जी का कोई गुरु या आराध्य होता तो वे स्वयं भी उसकी पूजा करते और आने वाले श्रद्धालुओं से भी उसकी पूजा करवाते परन्तु ऐसा नहीं है। इससे यह प्रमाणित होता है कि श्री मदन ही परमशक्ति हैं और परमशक्ति ही श्री मदन है।

2. श्री मदन जी किसी की पूजा नहीं करते अपितु वे स्वयं ही सभी के पूजनीय हैं। श्री मदन जी ने जब भी अध्यात्मवाद में जिनके नाम है उनके सबंध में जब भी किसी रूप के बारे में ज्ञान दिया तो सब से पहले स्वयं उसका पूजन किया पर हर बार पूजा करने के बाद कष्ट हुआ। इसके अतिरिक्त जब भी श्री मदन जी किसी अन्य धार्मिक स्थान पर गए तो वहाँ भी नतमस्तक नहीं हो सके। यदि उन्होंने ऐसा किया भी तो उन्हें कष्ट उठाना पड़ा। इस प्रकार क्रियात्मक रूप में स्पष्ट किया गया कि परमशक्ति जो सबकी पूजनीय है वह भले अदृश्य हो या साकार रूप में धरा पर हो, किसी के आगे नत् मस्तक नहीं होती अपितु उसके समक्ष सबको झुकना पड़ता है।

3. आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र स्वयं परमशक्ति ही साकार रूप में खोल सकती है। संसार में अनेकों ही आध्यात्मिक शिक्षा के केन्द्र हैं जहां परमशक्ति के बारे में अर्थात् रूहानी ज्ञान मौखिक रूप में दिया जाता है। आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र उसे कहते है जहां आध्यात्मिक ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जाए। श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है, यहाँ परमशक्ति श्री मदन जी हर भूमिका निभा कर क्रियात्मक रूप में ज्ञान दे रहे हैं। समाज में अध्यात्मवाद से सम्बंधित जो भी द्वन्द हैं उस पर से पर्दा उठा कर वास्तविकता को सामने लाया जा रहा है ताकि कोई शंका न रहे। यहाँ सच्चाई का पूर्ण ज्ञान अनोखे ढंग से दिया जा रहा है जो कि परमशक्ति का साकार रूप ही दे सकता है।

4. कार्य-प्रणाली शुरू होने के 10 वर्ष बाद परमशक्ति ने घोषणा की कि, ***" मैं अदृश्य से सदृश्य बनी हूँ । यह मेरा शरीर है और मेरा नाम मदन है ।"*** इस घोषणा के बाद परमशक्ति श्री मदन जी ने प्रमाणों सहित अपने परिवार, माता, पत्नी, बेटी, बहन के नाम पर धामों की स्थापना की एवं श्री मदन धाम में प्रमाणों सहित अपने परिवार के सदस्यों के नाम पर पूजा स्थलों की स्थापना करके पूजनीय स्थानों को मान्यता दी क्योंकि परमशक्ति का परिवार साधारण नहीं हो सकता । इसके साथ ही परिसर में साधारण व्यक्तियों को देवी-देवताओं, वीरों-पीरों के रूप में स्थान देकर मान्यता दी और क्रियात्मक रूप में सिद्ध करके बताया कि हर रूप में परमशक्ति ही कर्ता है । वह वीरों-पीरों. देवी-देवताओं, भगवानों का चुनाव इन्सानों में से ही करती है, उनका मान-सम्मान भी करवाती है । केन्द्रों की स्थापना करके श्री मदन जी ने केन्द्र-संचालकों के माध्यम से श्रद्धालुओं के साथ बातचीत करके तथा आने वाले व्यक्तियों की मनोकामनाएं पूर्ण करके सिद्ध किया कि परमशक्ति ही श्रद्धालुओं को उन केन्द्रों पर भेजती है और उनकी मनोकामनाएं भी स्वयं ही पूर्ण करती है । उनके रूपों में श्रद्धालुओं को दर्शन देती है । वास्तव में वह ही कर्ता है । इस बात से यह सिद्ध होता है कि परमशक्ति ही श्री मदन है और श्री मदन ही परमशक्ति है ।

5. परमशक्ति की घोषणा है, "मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ जो अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जन्म लेकर इन्सानी रूप में धरा पर आई हूँ । यह शरीर मेरा है और मेरा नाम मदन है ।" इस घोषणा को क्रियात्मक रूप में दर्शाने के लिए कार्य-प्रणाली शुरू की गई है । इस कार्य-प्रणाली में कुल देवता से लेकर परमशक्ति तक का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया गया एवम् दिया जा रहा है । परमशक्ति ही धरा पर है, इसे क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने के लिए श्री ज्योति जी को कष्ट देकर प्रमाणों सहित दरबार की दूसरी मंज़िल पर प्रथम पूजनीय श्री ज्योति शक्ति स्थल की स्थापना की गई । उसके पश्चात् दरबार की तीसरी मंज़िल पर माता रूपवती जी को असहनीय कष्ट देने के पश्चात् आदि शक्ति स्वरूपा माता रूपवती स्थल की स्थापना की गई । फिर श्री मदन जी को असहनीय कष्ट देने के पश्चात् दरबार की चौथी मंज़िल पर श्री मदन स्थल की स्थापना की गई और सिद्ध किया कि जब परमशक्ति साकार होती है तो वही शिव या ब्रह्म कहलाती है जो आज श्री मदन बनी है । उस से ऊपर अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर, सर्वोच्च शक्ति स्थल स्थापित किया गया, पर उसकी स्थापना के बाद ही श्री मदन जी को नब्ज़ रुकने का असहनीय कष्ट शरू हो गया । इस स्थल पर 127 मोड़ आए, परमशक्ति के जो भी निर्जीव चिह्न समाज में प्रचलित हैं एक-एक करके उन सब को स्थपित करने का प्रयास किया गया पर सफ़लता नहीं मिली । हर बार श्री मदन जी को नब्ज़ रुकने का कष्ट बढ़ता ही गया । जब श्री मदन जी को परमशक्ति के स्थान पर विराजमान करके 50 दिन पूजन किया उस दौरान उन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ । अन्ततः परम शक्ति ने आदेश किया कि इस स्थल को गिरा दिया जाए क्योंकि जब परम शक्ति ही साकार बनी है तो फिर निराकार में कौन है । इस तरह क्रियात्मक रूप में सिद्ध किया गया कि परम शक्ति ही श्री मदन बनी है और श्री मदन ही परम शक्ति है ।

6. श्री मदन जी किसी भी कार्य को करने के लिए शरीर का प्रयोग नहीं करते । उनके केवल संकल्प मात्र से ही सारे कार्य पूरे हो जाते हैं । वह किसी को कुछ देने के लिए अपने मन में

संकल्प ही करते हैं और किसी को गलत काम करने से रोकने के लिए भी संकल्प ही करते हैं । उन्हें शरीर का प्रयोग करने की जरूरत नहीं पड़ती । ऐसा केवल वही कर सकता है जो सर्वशक्तिमान तथा सर्वसमर्थ हो और वह केवल परमशक्ति है जो आज श्री मदन जी के रूप में साकार हुई है ।

7. श्री मदन जी यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को इस बात पर बल देते हैं कि उन्हें पूजा-पाठ, जप-तप, हवन-यज्ञ, सुमिरन, चिंतन, मनन की जरूरत नहीं । उन्हें केवल ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए नेक कर्म, सद्व्यवहार, सबसे प्यार करना, ईश्वर की कार्यप्रणाली में सहयोग देना तथा उनके दिखाए मार्ग पर चलना ही काफ़ी है । ऐसा या तो नास्तिक व्यक्ति कह सकता है या वह कह सकता है जो स्वयं परमशक्ति का साकार रूप हो ।

8. श्री मदन जी हर आने वाले श्रद्धालु को सच्चाई के मार्ग पर बलपूर्वक चलाते हैं और गलती होने पर कष्ट देकर या दृष्टांत देकर उसका अनुभव करवाते हैं । गलती मान लेने पर जब उसे क्षमा कर दिया जाता है तो उसे राहत मिलती है । इससे यह प्रमाणित होता है कि कोई है जो हर पल उसके साथ है, उसे देख रहा है, जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है । वह कर्मफल दाता है । उसका उद्देश्य व्यक्ति को केवल कष्ट देना ही नहीं बल्कि उसे एक नेक इन्सान बनाना है । ऐसा अनुभव किसी एक या दो व्यक्तियों को नहीं अपितु श्री मदन धाम में आने वाले हर श्रद्दालु को कभी न कभी जरूर मिला है । यह कोई मनोस्थिति नहीं है, अपितु सच्चाई है । शायद ही कोई ऐसा बदनसीब होगा जिसे ऐसा अनुभव न मिला हो । जिस किसी को भी ऐसा अनुभव मिला है वह सहज ही समझ जाता है कि श्री मदन जी परमशक्ति हैं और परमशक्ति ही श्री मदन है ।

9. परमशक्ति का सिद्धांत है कि हर किसी से प्यार करो तथा किसी को भी अपना दुश्मन न समझो । यदि कोई आपको अपना दुश्मन भी समझता है तो भी उससे प्यार ही करो । अपने द्वारा दिए गए ज्ञान को सबसे पहले उन्होंने अपने ऊपर व अपने परिवार पर लागू किया और फिर श्रद्धालुओं को ऐसा करने के लिए कहा । हर नियम, हर सिद्धांत को केवल मौखिक रूप में नहीं अपितु अपने जीवन पर लागू करके दिखाया । उसी प्रकार श्री मदन जी ने अपने पास आने वाले हर श्रद्धालु या विरोधी को केवल प्यार ही किया है । जो लोग़ उन्हें अपना दुश्मन भी मानते हैं श्री मदन जी ने उन्हें भी प्यार करके दिखाया है । उन्होंने मानवता को आडम्बरों से रहित सम्पूर्ण जीवन शैली दी जो कि एक आम इन्सान के लिए आदर्श जीवन है । ऐसा केवल परमशक्ति का साकार रूप ही कर सकता है ।

10. श्री मदन जी आने वाले किसी भी श्रद्धालु की मांग या इच्छा किसी भी शर्त पर पूरी नहीं करते अपितु यहाँ श्रद्धालु का प्यार व विश्वास ही काम करता है । उन्होंने श्रद्धालुओं की वही मांग पूर्ण की है जो शुभ और उचित हो, कानून के अन्तर्गत तथा नैतिकता पर आधारित हो । श्री मदन जी केवल उसको ही अपना अनुभव देते हैं जो परमशक्ति का अस्तित्व मानते हैं या जिनके पूर्व जन्म के संस्कार या भक्ति है । यह बात परमशक्ति के साकार रूप की ओर ही इशारा करती है ।

11. इस दरबार में परमशक्ति का कोई भी निर्जीव चिह्न या मूर्ति स्थापित नहीं हो सकी क्योंकि जब परमशक्ति धरती पर आती है तो केवल उसका ही स्थान सर्वोच्च होता है और वह ही सबकी पूजनीय होती है। इसे क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने के लिए चौथे स्थल पर सब से पहले ब्रह्म रूप का चित्र लगाकर एक महीना पूजन किया गया। इस दौरान श्री मदन जी की नब्ज़ रुक-रुक कर चलती रही और वे कई-कई घंटे बेहोश रहे, फिर ब्रह्म के साथ शिव का चित्र लगा कर एक महीना पूजन किया गया। ऐसा करने से कष्ट और बढ़ गया और बेहोशी का समय भी बढ़ गया। जब बार-बार प्रार्थना की गई तो परमशक्ति का आदेश हुआ कि दोनों स्वरूपों के मध्य में श्री मदन जी का स्वरूप लगा कर श्री मदन जी को साक्षात् रूप में विराजमान कर के पूजन किया जाए। जब ऐसा किया गया तो श्री मदन जी को कोई कष्ट न हुआ और न ही वे बेहोश हुए। पर एक महीने के बाद फिर उन्हें उसी प्रकार का कष्ट हो गया। पुनः जब प्रार्थना की गई कि इसके पीछे क्या कारण है तो परमशक्ति ने आदेश दिया कि शिव और ब्रह्म के स्वरूप वहाँ से उठा दिए जाएँ लेकिन डर के मारे ऐसा नहीं किया गया। उस रात श्री मदन जी को बेहोशी भी हुई व असहनीय एवम् रौंगटे खड़े कर देने वाला कष्ट हुआ। आखिर रात के बारह बजे चित्र उठाने पड़े। इसके बाद ही उन्हें राहत मिली। इससे क्रियात्मक रूप में सिद्ध हुआ कि परमशक्ति जब अदृश्य होती है तो वह न नर होती है न नारी होती है, वह केवल शक्ति होती है। जब वह सदृश्य बनती है तो वह ब्रह्म कहलाती है, ब्रह्म को ही शिव कहा गया है। आज वही शक्ति श्री मदन बनी है। इसी लिए श्री मदन धाम में श्री मदन स्थल ही सर्वोच्च स्थान है। उससे ऊपर पारब्रह्म स्थल स्थापित करने की बहुत कोशिश की गई पर ऐसा नहीं हो सका। इससे यही सिद्ध होता है कि परमशक्ति ही श्री मदन है और श्री मदन ही परमशक्ति हैं।

12. श्री मदन जी को याद करने पर, परमशक्ति का रूप मान कर उनके आगे सच्चे मन से माथा टेकने पर आने वाले श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, उनके दुःख-कष्ट, परेशानियां दूर होते हैं और उनसे से राहत मिलती है। बहुत से लोगों को श्री मदन जी अपना अनुभव करवा कर उनके साथ सम्पर्क स्थापित करके आवाज़ भी देते हैं। उनको श्री मदन जी के दर्शन भी होते हैं। कुछ लोगों के माध्यम से ज्ञान भी दिया जाता है एवं दूसरे लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण की जाती हैं। यह कार्य केवल परमशक्ति का ही हो सकता है जो आज साकार रूप में है।

13. ऐसे रूप जिनकी आज समाज में मान्यता हो रही है उनकी भूमिका निभा कर उनके बारे में क्रियात्मक ज्ञान दिया जा रहा है कि वास्तव में सच्चाई क्या है। श्री मदन जी ने 38 प्रकार के देवी-देवताओं, वीरों-पीरों, भगवानों तथा समाज में पूजनीय अन्य रूपों की भूमिका निभा कर पहले तो उनका अस्तित्व सिद्ध किया, फिर परमशक्ति रूप में सिद्ध किया कि कोई भी अपने आप में कुछ नहीं है। केवल परमशक्ति ही हर रूप में कर्ता है जो न नर है न नारी है, वह तो एक शक्ति है। श्री मदन जी ने यह सारा ज्ञान क्रियात्मक रूप में सिद्ध कर के दिखाया है और सच्चाई पर से पर्दा उठाया है। ऐसा केवल परमशक्ति का साकार रूप ही कर सकता है।

14. **17 जुलाई, 1985 को परमशक्ति श्री मदन जी ने स्वयं को कुल देवता के रूप में प्रकट किया। 21 दिसम्बर, 1992 को कहा गया कि आज से श्री मदन जी त्रिलोकी नाथ हैं। 4 फरवरी, 2001 को कहा गया कि आज परमशक्ति अपनी सारी शक्तियाँ श्री मदन जी को दे रही है। ये दिन कई वर्षों तक मनाए गए पर बाद में प्रमाणों सहित बंद कर दिए गए एवम् कहा गया कि न तो परमशक्ति 17 जुलाई को धरा पर आई, न ही 21 दिसम्बर को श्री मदन जी त्रिलोकी नाथ बने और न ही 4 फरवरी को परमशक्ति ने अपनी शक्तियाँ श्री मदन जी को दीं। परमशक्ति तो 22 अक्तूबर, 1947 को जन्म ले कर धरा पर आई है। आध्यात्मिक शिक्षा का क्रियात्मक ज्ञान देने के लिए पहले उपरोक्त दिन प्रमाणों सहित मनाए गए और परमशक्ति 22 अक्तूबर, 1947 से ही धरती पर है, इसे क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने के लिए प्रमाणों सहित 17 जुलाई, 21 दिसम्बर, 4 फरवरी के दिनों को मनाना बंद कर दिया गया।**

15. **परमशक्ति ने धरती पर जन्म लेने के लिए माता–पिता को साधन के रूप में प्रयोग किया। इस लिए श्री मदन जी उनका आदर सम्मान करते हैं। दूसरी तरफ श्री मदन जी उनको आशीर्वाद भी देते हैं क्योंकि वह परमशक्तिके भक्त थे, उनकी कई जन्मों की भक्ति के फलस्वरूप उनको साधन के रूप में प्रयोग किया और उनके घर में जन्म लिया। इससे यह सिद्ध होता है कि परमशक्ति ही धरा पर है क्योंकि कोई भी शरीरधारी अपने माता-पिता को आशीर्वाद नहीं दे सकता।**

ऊपर दिए सभी प्रमाण होने के बावजूद भी कुछ बातें शंका पैदा करती हैं कि श्री मदन जी सर्वशक्तिमान हैं :

- **यदि श्री मदन जी सर्वशक्तिमान है तो वह लाचार बेबस क्यों हैं ?**
- **यदि श्री मदन जी परमशक्ति का इन्सानी रूप हैं तो उनके परिवार को शारीरिक कष्ट और मानसिक परेशानियाँ क्यों हैं ?**
- **यदि श्री मदन जी सर्वज्ञ हैं तो अंजान होने का नाटक क्यों करते हैं ?**
- **यदि श्री मदन जी सर्वशक्तिमान हैं तो यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को कष्ट परेशानियाँ क्यों हैं और उनसे कही हर बात सत्य क्यों नहीं होती ?**
- **श्री मदन धाम में कोई स्थल बना कर गिराया क्यों जाता है और किसी स्थल पर निर्जीव चिह्न स्थापित करके उठाए क्यों जाते हैं ?**
- **यदि श्री मदन जी परमशक्ति का इन्सानी रूप हैं तो उन पर आयु का प्रभाव क्यों है ?**
- **यदि श्री मदन जी परमशक्ति हैं तो वह एक साधारण इन्सान जैसे क्यों लगते है ?**
- **क्या परमशक्ति इतने कम लोगों के लिए ही धरा पर आई है ?**
- **यदि श्री मदन जी परमशक्ति है तो दरबार का सद्राम क्यों नहीं हो रहा ?**
- **जो लोग साकार रूप, परिवार एवम् दरबार का विरोध कर रहे है उन्हें उनके दुष्कर्मों का फल क्यों नहीं मिल रहा है ?**

उपरोक्त शंकाएँ केवल उन व्यक्तियों के मन में पैदा होती हैं जिनको कार्य-प्रणाली का केवल बाहरी ज्ञान होता है। यदि कार्य-प्रणाली का गहरा अध्ययन किया जाए तो इन शंकाओं के निम्नलिखित कारण उभर कर सामने आते हैं जिनको समझने से प्रत्येक शंका का समाधान हो जाता है :-

1. अध्यात्मवाद के बारे में क्रियात्मक रूप में ज्ञान देना :-

अध्यात्मवाद का क्रियात्मक रूप में ज्ञान देने का अर्थ है आत्मा, महान् आत्मा, परम आत्मा तथा उस अदृश्य शक्ति के बारे में ज्ञान करवाना जो दिखाई तो नहीं देती पर अपने अस्तित्व का अनुभव करवाती है। उस शक्ति के बारे में ज्ञान तो सदियों से दिया जा रहा है पर श्री मदन धाम में उसके बारे में क्रियात्मक रूप में ज्ञान देने के लिए एवं अध्यात्मवाद में जो भी द्वन्द हैं उन पर से पर्दा उठाने के लिए कई ढंग अपनाए जाते हैं। उनमें से एक ढंग अपने-आप को या उस व्यक्ति को, जिससे कोई बात सम्बंधित हो, कष्ट देकर दर्शाना है। फिर कारण बताकर राहत देनी व सच्चाई बतानी कि वास्तविकता क्या है ? क्रियात्मक रूप में ज्ञान देने के लिए कई बार कई कुछ बनाया जाता है तथा कई कुछ मिटाया भी जाता है। यह सब दर्शाने के लिए कई बार श्री मदन जी स्वयं भी कष्ट लेते हैं। जिस कारण यह लगता है कि श्री मदन जी और उनका परिवार कष्टों में है। वह बेबस तथा लाचार हैं, जबकि सच्चाई का ज्ञान देने के लिए ही यह सब कुछ किया जाता है।

2. निश्चित व्यक्तियों को ही ज्ञान देकर शरण में लेना :-

श्री मदन धाम में ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जाता है जैसे कि विज्ञान के विद्यार्थियों को क्रियात्मक रूप में ज्ञान दिया जाता है। इसलिए उनकी गिनती निश्चित व कम रखी जाती है क्योंकि उन्हें हर चीज़ क्रियात्मक रूप में कर के बताई जाती है। फिर उन्हें वह सब कुछ स्वयं करने के लिए कहा जाता है। इसी तरह गत् 26 वर्षों से उतने ही लोग़ बुलाए गए जितने लोगों का निजी सम्पर्क श्री मदन जी से हो सके क्योंकि आध्यात्मिक शिक्षा का ज्ञान देने के लिए श्रद्धालुओं की संख्या का निश्चित होना आवश्यक था। श्री मदन धाम में बहुत लोग़ आए पर उन्हें कुछ भी समझ नहीं आने दिया गया क्योंकि परमशक्ति की घोषणा है कि वह अदृश्य से सदृश्य हुई है। इसी घोषणा को सिद्ध करने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा के प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई है। अध्यात्मवाद के हर पक्ष को सिद्ध करके बताया गया है कि वास्तविकता क्या है। केवल उस व्यक्ति को ही अनुभव या प्रमाण दिए गए जिसके पूर्व जन्म के संस्कार थे या जिन पर श्री मदन जी की इच्छा हो गई। श्रद्धालुओं की संख्या को सीमित रखने के लिए श्री मदन जी को लाचारी व बेबसी का प्रदर्शन करना पड़ता है। यदि श्री मदन जी ऐसा न करें तो यहाँ श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ सकती है। यदि श्री मदन जी का सम्पर्क श्रद्धालुओं से नहीं रहेगा तो क्रियात्मक रूप में ज्ञान कैसे दिया जा सकता है। अभी तक जो व्यवस्था श्री मदन जी ने की है उसके लिए श्रद्धालुओं की संख्या सीमित रखना आवश्यक है क्योंकि श्रद्धालुओं को कष्ट होने स्वाभाविक हैं। उनका कारण जानना भी जरूरी है। यदि वे श्री मदन जी से मिलेंगे, कारण पूछेंगे तब ही समाधान होगा। अभी तक कष्ट देकर, कष्ट का कारण बता कर ही क्रियात्मक ज्ञान दिया गया है।

3. केवल स्वार्थी लोगों को ही अपने पास इकट्ठे न करना :-

श्री मदन धाम की स्थापना एक उद्देश्य को लेकर हुई है और उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन लोगों को ही ईश्वर ने अपने पास बुलाया है जो उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए योगदान दे सकें। इसलिए श्री मदन जी ने उन लोगों को ही अपनी शरण में लिया है जिनके पूर्व जन्म के संस्कार हैं और जो अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठ कर श्री मदन जी से प्यार करें। श्री मदन धाम में आध्यात्मिक ज्ञान देने के साथ-साथ भौतिक इच्छाएँ भी पूर्ण की जाती हैं। जो व्यक्ति ईश्वर के पास केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही आते हैं, ईश्वर उनकी इच्छा तो पूर्ण कर देते हैं, परन्तु उन्हें अपने से दूर कर देते हैं और वे व्यक्ति दोबारा आते भी नहीं। जिनको ईश्वर ने अपने पास रखना होता है, उनकी इच्छाएँ तो पूर्ण करते हैं पर साथ ही साथ उन्हें अपना अनुभव देकर अपनी पहचान भी करवाते हैं। आज तक जो भी अनुभव प्राप्त हुए हैं उनके आधार पर यही कहा जा सकता है कि जब भी किसी स्थान से बहुत ज्यादा स्वार्थी व्यक्तियों की भीड़ आनी शुरू हो जाती है तो वहाँ कोई न कोई ऐसी अप्रिय घटना घटित हो जाती है जिससे आम लोगों में कई तरह की शंकाएँ पैदा हो जाती हैं और उनमें से बहुत से लोग़ आना छोड़ देते हैं तथा उनमें से केवल दो-चार व्यक्ति ही टिक पाते हैं।

4. भक्तों के विश्वास की परख करना :-

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। जिस प्रकार विद्यार्थी को शिक्षा देने के बाद उस की परीक्षा ली जाती है, उसी प्रकार श्री मदन जी आने वाले श्रद्धालुओं को ज्ञान देने के बाद कई बार उनकी परख भी करते हैं। इस परख के लिए उनकी सोच के विपरीत वातावरण बनाए जाते हैं, उन्हें उलझाया भी जाता है, भटकाया भी जाता है। जब किसी की इस प्रकार परख होती है, वह इन्सान स्वयं को इस वातावरण में असुरक्षित महसूस करता है तो उसके मन में कई तरह की शंकाएँ उत्पन्न होती हैं। इस तरह श्री मदन जी अपने भक्त की परीक्षा लेते हैं। यह ज्ञान देने का उनका अनोखा ढंग है। इसलिए कई बार श्री मदन जी सब कुछ जानते हुए भी अनजान बन जाते हैं व सर्वसमर्थ होते हुए भी लाचारी, बेबसी का प्रदर्शन करते हैं।

5. इन्सानी रूप में होने के कारण दो रूपों (साधारण व विशेष) का प्रदर्शन करना :-

परमशक्ति आज इन्सानी रूप में धरती पर है, इसलिए उसका परिवार भी है तथा और भी ऐसे व्यक्ति हैं जिनके साथ उन्हें रहना होता है । उनके साथ सदा ईश्वर बन कर नहीं रहा जा सकता क्योंकि उनके साथ साधारण बातें भी करनी होती हैं, रिश्ते भी निभाने होते हैं, सांसारिक कर्तव्य भी पूरे करने होते हैं। परमशक्ति आज इन्सानी रूप में है। वह इन्सान को जीवन जीना सिखा रही है। इसीलिए श्री मदन जी ने दो रूप अपना रखे हैं – एक साधारण और दूसरा विशेष। जब श्री मदन जी ने कोई आदेश नहीं देना होता या कोई विशेष बात नहीं करनी होती तब वे साधारण रूप में ही बात करते हैं परन्तु जब कोई आदेश देना होता है या कोई विशेष बात करनी होती है तो वे विशेष रूप में करते हैं क्योंकि वे अपनी पहचान उसको ही करवाते हैं जिसे करवाना चाहते हैं। श्री मदन जी ने अपने समीप आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बहुत सीमित रखी है क्योंकि अध्यात्मवाद को क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने के लिए श्रद्धालुओं की संख्या सीमित रख कर ही सच्चाई का ज्ञान दिया जा सकता है। इसके लिए उन व्यक्तियों को साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है जिस कारण उनका निजी सम्पर्क श्री मदन जी के साथ होना आवश्यक हो जाता है। यह भी एक कारण है कि श्री मदन जी को लाचारी, बेबसी व मजबूरी दर्शानी पड़ती है।

6. इन्सानी रूप में निश्चित समय तक रहना :-

जिस प्रकार कोई इन्सान किसी नए कार्य का आरम्भ करने से पहले उसकी योजना बनाता है कि कब क्या करना है। उस कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक प्रबन्ध करता है फिर उस कार्य को शुरू करता है। उसी प्रकार परमशक्ति श्री मदन जी ने यह कार्य प्रणाली शुरू की है तो उन्होंने सब कुछ पहले से ही निश्चित किया हुआ है। हर चीज़ को नियमों में बाँध कर स्वयं को समय के बन्धन में बांधा हुआ है। जब तक उन्होंने साधारण इन्सानी रूप में रहना है तब तक उन्होंने स्वयं को लाचार और बेबस दर्शाना है।

7. इन्सानी रूप में होने के कारण उन पर देश, कानून और समाज के नियम लागू होते हैं। इसलिए उनके अन्तर्गत अपनी कार्य-प्रणाली चलाना :-

जब कोई महान् -आत्मा, भगवान इन्सान बन कर धरा पर आते हैं तो उन्हें किसी देश का नागरिक बनना पड़ता है। वहाँ उन पर उस देश के कानून लागू होते हैं परमशक्ति भी जब शरीर धारण करती है तो उन्हें भी देश और कानून के नियमों में रह कर अपना जीवन बिताना पड़ता है। परमशक्ति श्री मदन जी ने भी अपनी कार्य-प्रणाली प्राकृतिक नियमों और देश के कानून के अन्तर्गत ही चलाई है। इसीलिए श्री मदन जी श्रद्धालुओं की वही इच्छा पूर्ण करते हैं जो देश व कानून के अन्तर्गत हो और नैतिकता पर आधारित हो।

8. परमशक्ति इस समय शारीरिक रूप में हैं, इसलिए शरीर पर आयु का प्रभाव पड़ता है :-

आम तौर पर परमशक्ति के बारे में धारणा है कि वह अजर, अमर, अविनाशी है। उन पर किसी चीज़ का प्रभाव नहीं पड़ता और वह जन्म लेकर धरती पर नहीं आती। इसीलिए उन्हें निराकार कहा जाता है। निराकार रूप में इनको कोई भौतिक आवश्यकताएँ नहीं होतीं। श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। श्री मदन जी इन बातों पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठा रहे हैं। परमशक्ति जब इन्सानी रूप में धरती पर आते हैं तो वह एक आम व्यक्ति की तरह जीवन जी कर बिताते हैं। उनकी भौतिक आवश्यकताएं भी होती हैं तथा वे इन्सानों की भांति निश्चित समय के लिए धरती पर आते हैं। अपने उद्देश्य को पूरा करने के उपरांत ओझल हो जाते हैं। इस प्रक्रिया में वह बचपन से लेकर बुढ़ापे तक की हर अवस्था को पार करते हुए इन्सान को रूहानी ज्ञान क्रियात्मक ढंग से देते हैं। उनके द्वारा किए गए प्रदर्शन प्राकृतिक होते हैं। इसलिए श्री मदन जी पर आयु का प्रभाव होना स्वभाविक है।

12
श्री मदन धाम व दूसरे धार्मिक स्थानों में अन्तर

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ पर परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप में आध्यात्मिक ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है। अब प्रश्न यह है कि श्री मदन धाम तथा संसार में जो दूसरे धार्मिक स्थान हैं उनमें क्या अन्तर है ? आप सभी जानते है कि संसार में अनेकों धार्मिक स्थान हैं पर उनमें भी अन्तर है। कुछ धार्मिक स्थान ऐसे हैं जो स्थानीय लोग़ों ने ईश्वर का गुणगान करने के लिए बनाए हैं। उन स्थानों पर स्थानीय लोग़ ही आते हैं, परन्तु वहाँ पर दूर-दूर से लोग़ नहीं आते है। कुछ धार्मिक स्थान ऐतिहासिक होते हैं। उन स्थानों को परमशक्ति अपने किसी मान्यता प्राप्त रूप के माध्यम से अथवा किसी को स्वप्न में दर्शन देकर अपना स्थान बनवाने के लिए आदेश देती है या फिर महान् आत्माओं को धरती पर भेजकर तथा उन्हें अपना अनुभव देकर उनके माध्यम से उन धार्मिक स्थानों की स्थापना करवाती है। उन धार्मिक स्थानों पर लोग़ दूर-दूर से आते हैं पर समीप के लोग कम ही आते हैं। ऐसे स्थान भी ऐतिहासिक बनते हैं यदि उनका कोई निजी इतिहास हो।

श्री मदन धाम की स्थापना न तो यहाँ के लोग़ों ने और न ही किसी महान् आत्मा ने की है। श्री मदन धाम की स्थापना परमशक्ति ने इन्सानी रूप में धरा पर आकर स्वयं की है। यहाँ पर परमशक्ति ने घोषणा की है कि वह अदृश्य से सदृश्य बनी है और उसका नाम श्री मदन है अर्थात् श्री मदन धाम की स्थापना स्वयं परमशक्ति ने की है और वह स्वयं अपने बारे में सत्य का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है। अत: अन्य धार्मिक स्थानों व श्री मदन धाम में अन्तर होना स्वभाविक ही है। इस अन्तर को निम्नलिखित विवरण द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है :

श्री मदन धाम	दूसरे धार्मिक स्थान
1. परमशक्ति की घोषणा है कि वह इन्सान बनी है, उसका नाम श्री मदन है। वही उसका अपना शरीर है। ईश्वर गिनती में एक है तथा वह इन्सान बन कर साकार रूप में धरती पर आता है। इस आधार पर ही श्री मदन धाम की कार्यप्रणाली चल रही है। परमशक्ति ने श्री मदन धाम की स्थापना स्वयं की है और वह स्वयं ही यहाँ की कार्यप्रणाली चला रही है। वह किसी की भी सिफारिश, सलाह या हस्तक्षेप करना पसंद नहीं करती। हर कार्य उनकी इच्छा के अनुसार ही होता है।	1. समाज में जो दूसरे धार्मिक स्थान हैं उनकी स्थापना या तो वहाँ के लोगों के द्वारा की जाती है या फिर परमशक्ति महान् आत्माओं के द्वारा करवाती है। जिन महान् आत्माओं को परमशक्तिके दर्शन हुए उन्होंने कहा कि परमशक्तिसाकार है तथा जिन्हें दर्शन नहीं हुए उन्होंने कहा कि परमशक्ति निराकार है। उन धार्मिक स्थानों की कार्यप्रणाली वहाँ के संस्थापक या फिर प्रबंधक कमेटी की इच्छा से चलाई जाती है। उन स्थानों पर परमशक्ति स्वयं पर्दे के पीछे रह कर कार्य करती है और यश उसके माध्यम को मिलता है। उन धार्मिक स्थानों पर परमशक्ति को भिन्न-भिन्न रूपों में माना जाता है।

2. श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है । यहाँ पर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या सीमित रखी गई है क्योंकि यहाँ पर हर चीज़ का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जा रहा है। यह ज्ञान किसी धार्मिक ग्रंथ या पुस्तक का वाचन करके नहीं दिया जा रहा है अपितु परमशक्ति श्री मदन जी अपने श्रीमुख से ज्ञान दे रहे हैं और अध्यात्मवाद में जो द्वंद्व हैं उन पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठा रहे हैं । इसलिए यहाँ समय-समय पर कार्यप्रणाली में परिवर्तन होता रहा है । यहाँ यह स्पष्ट किया गया है कि परमशक्ति ही हर रूप में कर्ता है।	2. उन धार्मिक स्थानों पर ज्ञान मौखिक रूप में दिया जाता है जो कि शास्त्रों और धार्मिक ग्रंथों पर आधारित है । इसलिए वहाँ पर श्रद्धालुओं की संख्या असीम होती है तथा श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ाने के लिए हर सम्भव प्रयास भी किये जाते है । उन धार्मिक स्थानों पर एक बार जो प्रथा शुरू हो जाती है उसमें आमतौर पर परिवर्तन नहीं किया जाता है । जिसके स्थान पर किसी की मनोकामना पूर्ण हो जाती है उसी को कर्ता मान लिया जाता है। यहाँ पर कर्ता कौन है भ्रम ही बना रहता है।
3. परमशक्ति श्री मदन धाम कोई गुरु गद्दी नहीं है, यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के गुरु तथा इष्ट दो नहीं अपितु एक है, जिसके बारे में गुरु ज्ञान देते हैं यहाँ पर वही सर्वज्ञ, सर्व-व्यापक, सर्व-शक्तिमान परमशक्ति अपने बारे में स्वयं ज्ञान दे रही है।	3. दूसरे धार्मिक स्थानों पर जाने वाले लोग गुरुओं के इशारों पर चलते हैं, वहाँ पर गुरु तथा इष्ट प्राय: अलग-अलग होते हैं, महान् आत्माएं अपने इष्ट की भक्ति करती हैं और आने वाले श्रद्धालुओं को भी उन्हीं की भक्ति करने की प्रेरणा देते हैं।
4. श्री मदन धाम में परमशक्ति स्वयं साकार रूप में विद्यमान है इसलिए यहाँ पर परमशक्ति का कोई भी निर्जीव चिन्ह स्थापित नहीं हो सका और न ही कोई स्थान रिक्त है। हर स्थान पर परिवार के सदस्यों और साधारण इन्सानों के चित्र हैं। इन तस्वीरों के आगे माथा टेकने से लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं	4. दूसरे धार्मिक स्थानों पर ईश्वर को अधिकतर निर्जीव चिह्नों के रूपों में माना जाता है या उन स्थानों पर देवी-देवताओं, वीरों-पीरों, भगवानों की मूर्तियाँ होती है , जिनके माध्यम से परमशक्ति श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूर्ण करती है या कई स्थान ऐसे भी है जहां पर कोई चिन्ह या मूर्ति नहीं है।
	5. संसार के हर धार्मिक स्थान पर पूजा-पाठ,

तथा दु:खों-कष्टों से राहत भी मिलती है । 5. श्री मदन धाम में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए पूजा-पाठ, जप-तप, हवन-यज्ञ आदि की कोई आवश्कता नहीं केवल ईश्वर को याद रखते हुए नेक कर्म, सद्व्यवहार और सबसे प्यार करने पर बल दिया जाता है और यही शिक्षा दी जाती है कि दूसरों से ऐसा व्यवहार करो जैसा आप दूसरों से अपने लिए चाहते हो ।	जप-तप, चिंतन-मनन, हवन-यज्ञ, तीर्थ यात्रा तथा व्रत आदि धारण करने की प्रेरणा दी जाती है और इसको ही ईश्वर प्राप्ति का उत्तम ढंग माना जाता है । अधिकतर नाम सुमिरन पर ही बल दिया जाता है।
6. श्री मदन धाम में यह बात प्रमाणित की गई है कि ईश्वर का कोई स्थाई रूप नहीं है और न ही वह कहीं पर स्थाई रूप में विराजमान है। वह तो सृष्टि के कण-कण में माया रूप में मौजूद है । जब ईश्वर स्वयं इन्सानी रूप में धरा पर आते हैं तो वही ईश्वर का स्थाई रूप होता है और वह रूप तब तक रहता है जब तक ईश्वर पुनः इन्सानी रूप में धरती पर नहीं आ जाते।	6. ईश्वर को इस लोक से अलग किसी निश्चित स्थान पर दर्शाया जाता है जहां पर बैठ कर वह सृष्टि का संचालन करते हैं। इस लिए सभी ऊपर की तरफ इशारा करते हैं। इस संदर्भ में हर धर्म की भिन्न-भिन्न धारणाएं हैं । अधिकतर संस्थाओं का विचार है कि वह स्वयं धरती पर नहीं आता हैं अपितु अपने माध्यम भेज कर अपना अस्तित्व दर्शाता है।
7. श्री मदन धाम में जिसे भी शरण में लिया जाता है उसके लिए दरबार के नियमों पर चलना आवश्यक होता है । ऐसा न करने पर उसे दृष्टांत दिया जाता है। क्षमा मांगने पर राहत भी मिलती है। इस तरह परमशक्ति श्रद्धालुओं को बलपूर्वक अपने नियमों पर चलाती है□	7. दूसरे धार्मिक स्थानों पर जाने वाले व्यक्तियों को मौखिक रूप में शिक्षा दी जाती है और उस पर चलने की प्रेरणा दी जाती है। हर धर्म के भिन्न-भिन्न नियम और सिद्धांत हैं जो उन धार्मिक स्थानों का आधार हैं।
8. परमशक्ति आज इन्सानी रूप में धरा पर है। वह किसी भी धर्म की स्थापना नहीं करती है उसकी दृष्टी में धर्म और मजहब की दीवारों से ऊपर उठ कर हर इन्सान को इन्सान समझना ही सच्चा धर्म है। परमशक्ति ने प्राकृतिक सात रंगों का	8. समाज विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों में बंटा हुआ है और हर धर्म अपने इष्ट को ही सर्वश्रेष्ठ मानता है जबकि सभी मानते हैं कि ईश्वर एक है । इसलिए धार्मिक स्थानों के एक, दो, तीन या पांच रंगों के ध्वज हैं जो भिन्न-भिन्न शक्तियों और विचारधाराओं के प्रतीक हैं।

ध्वज फहरा कर अपनी पूर्णता को दर्शाया है	

उपरोक्त के अतिरिक्त जो कुछ श्री मदन धाम में किया जा रहा है उसे समाज मान्यता नहीं दे रहा है क्योंकि यहाँ पर परमशक्ति ने स्वयं साकार रूप में आने की घोषणा की है और स्वयं ही कार्यप्रणाली चला रही है और यहाँ परमशक्ति अपने साकार रूप, परिवार, सेवकों और सहायकों से सम्बंधित दिन मना रही है। यह कार्यप्रणाली आम इन्सान की समझ से परे है। जो रीति रिवाज आज कुरीतियां बन चुके हैं, उनको समाज मान्यता देता है लेकिन परमशक्ति उनका खंडन करती है। कुछ महान् आत्माओं द्वारा भी समय-समय पर उनका खण्डन किया गया है भाव समाज में जो हो रहा है उसे परमशक्ति मान्यता नहीं दे रही, क्योंकि वह रीति-रिवाज़ सदियों पुराने तथा सच्चाई से परे हैं। समाज में धर्म गुरु भी वही कुछ करवाते हैं, जो समाज में पहले से प्रचलित होता है। उन स्थानों पर उनके इष्ट से सम्बंधित त्यौहार मनाए जाते है ।

इस सृष्टि में आज तक इन्सान ने जो कुछ भी सीखा है वह परमशक्ति से ही सीखा है। वह ही इन्सान का सच्चा गुरु है और वह ही आज श्री मदन धाम में इन्सान को अपने साकार रूप में अपने ही बारे में ज्ञान दे रहें हैं। उपरोक्त दिए गए विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री मदन धाम और दूसरे धार्मिक स्थानों में क्या अंतर है पर यह स्पष्ट नहीं होता है कि यह अंतर क्यों है ? इसलिए इतना ही कहना है कि जो कुछ भी समाज कर रहा है वह सदियों पुरानी धारणाओं पर आधारित है। कोई नहीं जानता कि यह धारणाएं किस ने बनाईं, क्यों बनाईं और इसके पीछे क्या उदेश्य था ? परमशक्ति ने अपने साकार रूप में स्पष्ट किया है कि परमशक्ति ही समय-समय पर महान् आत्माओं को धरती पर भेजती है, उनको अपने बारे में ज्ञान करवाती है और उनको प्रेरणा देकर सच्चाई की राह पर चलाती है। जब भी समाज अपनी राह से भटकता है तो सही राह दिखाने के लिए किसी महान् आत्मा को धरती पर भेजा जाता है तब वह महान् आत्मा और अपने नज़दीक आए लोगों को समय, देश व उनके मानसिक स्तर के अनुसार ईश्वर के बारे में ज्ञान देती है और उनको जीवन जीने की नई राह दिखाती है। समाज को चलाने के लिए कई नए रीति-रिवाज़ बनाए जाते हैं या शुरू किए जाते हैं जो उस समय, स्थान और परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं। धीरे-धीरे उन रीति-रिवाजों को धर्म और ईश्वर के साथ जोड़ दिया जाता है। जब किसी रीति-रिवाज़ के साथ इन्सान की आस्था जुड़ जाती है तो वह सामाजिक नियम धर्म का हिस्सा बन जाते हैं भले ही उनका ईश्वर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता। समय के साथ-साथ यह रीति-रिवाज़ समाज पर बोझ बन जाते हैं। इन्सान इनको ढोने के लिए मजबूर हो जाता है। कोई भी इनको बदलने की कोशिश नहीं करता। परमशक्ति श्री मदन जी ने अध्यात्मवाद के ज्ञान के साथ ही इन वह्मों और भ्रमों पर से पर्दा उठाया और सच्चाई बताई कि धर्म की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। यह समय और काल के अनुसार बदलती रहती है। जो नियम, सिद्धांत, जीवन जीने की नई राह, नई सोच श्री मदन जी ने दी है वह आज के इन्सान और उसके रहन-सहन के अनुकूल है जो एक आम इन्सान के जीवन को सरल और सार्थक बनाती है। श्री मदन जी ने सदियों पुराने चले आ रहे रीति-रिवाजों से इन्सान को छुटकारा दिला दिया है। केवल वही करने के लिए कहा है जो ज़रुरी है।

क्या कारण है जो समाज कह रहा है उसको परमशक्ति श्री मदन जी मान्यता नहीं दे रहे और जो परमशक्ति श्री मदन जी कह रहे हैं उसे समाज मान्यता नहीं दे रहा है

ईश्वर की सोच त्रिकालदर्शी होती है जब कि इन्सान तो अपने वर्तमान को भी अच्छी तरह से नहीं जानता, वह ईश्वर या उनकी कार्यप्रणाली को किस तरह समझ सकता है। समझ तो केवल उसे ही आती है जिस को वह आप समझाते हैं। जो श्री मदन जी करते हैं उसके बारे में समाज पूरी तरह से नहीं जानता, कि ऐसा करने का उद्देश्य क्या हैं, समाज को इसका क्या लाभ होगा। अभी श्री मदन जी ने कुछ गिने-चुने श्रद्धालुओं को ही अपनी शरण में लिया है जिस कारण समाज में इस दरबार के बारे में आधी और अधूरी जानकारी ही है। इसलिए लोगों के मनों में इस दरबार के बारे में गलत धारणा है जो इस दरबार के नियमों व सिद्धांतों को मान्यता न देने का कारण है। श्री मदन जी ने अभी तक अपनी कार्य-प्रणाली को बहुत सीमित रखा है। अभी सार्वजनिक तौर पर प्रमाण देने बाकी हैं इसीलिए जो श्री मदन धाम में हो रहा है समाज के लोग उसको मान्यता नहीं दे रहे। कोई कुछ कह रहा है, कोई कुछ कह रहा है और जो समाज कर रहा है उसको परमशक्ति श्री मदन जी मान्यता नहीं दे रहे, क्योंकि वह सच्चाई से परे हैं। यही कारण है कि श्री मदन धाम और दूसरे धार्मिक स्थानों में अन्तर है।

13
श्री मदन धाम में गुरुदीक्षा या नामदान क्यों नहीं ?

इस प्रश्न को समझने से पहले यह जानना ज़रूरी है कि परमशक्ति श्री मदन धाम क्या है ? उसके उद्देश्य क्या हैं ? यहाँ कार्य-प्रणाली कौन चला रहा है ? श्री मदन जी कौन हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर समझ आने पर ही यह समझ आ सकता है कि श्री मदन धाम में गुरुदीक्षा या नाम दान क्यों नहीं दिया जाता है।

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है । यहाँ आध्यात्मिक शिक्षा क्रियात्मक रूप में दी जाती है। यह न तो रोगों के इलाज का स्थान है, न ही तांत्रिक विद्या का स्थान है और न ही यह गुरुगद्दी है। तो फिर यह क्या है ? यहाँ पर आध्यात्मिक शिक्षा क्रियात्मक रूप में दी जाती है। शिक्षा तो और धार्मिक संस्थाएं भी दे रही है पर वहाँ आध्यात्मिक शिक्षा मौखिक रूप में दी जाती है और यहाँ आध्यात्मिक शिक्षा क्रियात्मिक रूप में दी जाती है । जैसे विज्ञान के विद्यार्थियों को क्रियात्मक रूप में करके सिखाया जाता हैं फिर उनको अपने आप करने के लिए कहा जाता है उसी तरह से श्री मदन धाम में आध्यात्मिक शिक्षा क्रियात्मक रूप में दी जाती है। श्री मदन धाम और दूसरे धार्मिक स्थानों में क्या अंतर है यह एक अलग अध्याय में स्पष्ट किया गया है।

परमशक्ति ने ऐलान किया है कि ***" मैं न तो नर हूँ, न ही नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ । मैं अदृश्य से सदृश्य बनी हूँ यह शरीर मेरा है, मेरा नाम मदन है, यह मेरा धाम है ।"*** इस घोषणा के अनुसार वह शक्ति, जो अनादि, अनंत, अगम्य, अगोचर, सर्वोच्च, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और सब शक्तियों का स्रोत है, कह रही है कि वह आज इन्सान बन कर धरती पर आई है। परमशक्ति ने अपनी इस घोषणा को सिद्ध करने के लिए इस धाम की स्थापना की है और परमशक्ति ही इस दरबार में अपनी कार्यप्रणाली चला रही है और इस कार्यप्रणाली के अंतर्गत ही कुछ लोगों को ही शरण में लिया गया है। परमशक्ति श्री मदन जी उन लोगों को अध्यात्मवाद के बारे में क्रियात्मक रूप में ज्ञान दे रहें हैं और उनकी शुभ और उचित मांगे भी पूरी कर रहे हैं । परमशक्ति जो भी अपना सिद्धांत बताते हैं, उस सिद्धांत पर इन्सान को बलपूर्वक चलाते हैं । परमशक्ति ने प्रमाणों सहित धामों की स्थापना की है और केन्द्र खोले हैं। परमशक्ति ने साधारण इन्सानों को केन्द्र संचालक मनोनीत कर के उनको केन्द्र संचालकों के रूप में मान्यता दी है और उसके बाद उन साधारण इन्सानों के माध्यम से लोगों को ज्ञान भी दे रहे हैं और लोगों की इच्छाएं भी पूर्ण हो रही हैं। परमशक्ति श्रद्धालुओं को श्री मदन जी के रूप में भी दर्शन देते हैं और जो कुछ दर्शन दे कर कहा जाता है वह पूरा भी होता है अर्थात् परमशक्ति ने जो घोषणा की है उस घोषणा को क्रियात्मक रूप में पूरा कर रही है। श्री मदन जी नहीं कह रहे हैं कि वह परमशक्ति या ईश्वर हैं अपितु परमशक्ति कह रही है कि वह आज इन्सान बनी है। वह कौन है जो इन्सान को दर्शन दे सकता है ? कौन किसी के माध्यम से बात-चीत कर सकता है ? कौन किसी इन्सान को आशीर्वाद दे कर उसके माध्यम से आने वालों की मनोकामना पूर्ण कर सकता है ? यह सब वही कर सकता है जो सर्वशक्तिमान है, सारी शक्तियों का स्रोत है। आज वह इन्सानी रूप में है भाव परमशक्ति ही श्री मदन जी हैं, श्री मदन जी ही परमशक्ति हैं।

यह पहले भी स्पष्ट किया गया है कि इस सृष्टि में हर चीज़ का जोड़ा है जैसे कि देवी देवताओं के श्रद्धालु होते हैं, गुरु के शिष्य होते हैं, भगवान के भक्त होते हैं वे सब अपने पास आने वालों

को ईश्वर का अस्तित्व दर्शाते हैं पर इनके ढंग अलग-अलग हैं। इनके पास आने वालों की उम्मीदें भी अलग-अलग होती है। इनके मापदण्ड भी अलग-अलग हैं और उनकी प्राप्ति भी अलग-अलग ढंगों से होती है।

देवी-देवताओं, वीरों-पीरों से आशय उन व्यक्तियों से है जिनका प्रयोग परमशक्ति अपना अस्तित्व और सर्वोच्चता सिद्ध करने के लिए करती है। उनके पास लोग अपनी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए आते हैं। जिस स्थान पर लोगों की ज्यादा इच्छाएँ पूर्ण होती हैं, उस स्थान की उतनी ही अधिक मान्यता होती है। वहाँ जाने वालों की गिनती भी उतनी ही अधिक होती है।

भगवान और भक्त का प्रेम का रिश्ता है। भक्त अपने भगवान या इष्ट के साथ नि:स्वार्थ प्यार करते हैं। भक्त अपने इष्ट का ही हो कर रह जाता है। ज्ञान और भक्ति का कोई मेल नहीं है। ज्ञान दिमाग़ का काम है भक्ति मन की खुराक है। ज्ञान तर्क चाहता है पर भक्ति किसी तर्क को नहीं मानती। एक भक्त के लिए भगवान ही सब कुछ होता है। भगवान की प्राप्ति ही उसकी मंजिल होती है। भक्त को परिभाषाओं के साथ, रूपों के साथ, साकार, निराकार के साथ कोई मतलब नहीं होता। वह अपने इष्ट को ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान मानता है। यही कारण है कि आज लगभग 500 ऐसे नाम हैं जिनके साथ भगवान शब्द लगाया जा रहा है, जिनकी मूर्तियों को ईश्वर का रूप मान कर पूजा-भक्ति हो रही है। उनको प्रमाण भी मिलते हैं व लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं।

गुरु अपने शिष्य को अध्यात्मवाद के गूढ़ ज्ञान के बारे में बताता है और भक्ति मार्ग पर भी चलाता है इस लिए गुरु को ज्ञान और भक्ति का सुमेल कहा जाता है। गुरु और शिष्य का जोड़ा है। गुरु शब्द दो अक्षरों के मेल से बना है। गु गुणातीत से और रु रूपातीत से बना है। गुणातीत से अर्थ है जो अनुभव तो होता है पर दिखाई नहीं देता इसलिए उसके होने या न होने में द्वंद रहता है। रूपातीत से अर्थ है जिस का कोई रूप हो, जिसको देखा जा सके। जो निराकार को साकार करता है, अँधेरे में से निकाल कर रौशनी में लाता है, वह गुरु है □ जैसे एक कमरे में अँधेरा है, उसके अंदर बहुत कुछ है पर नज़र नहीं आता, इसलिए होने या न होने का द्वंद है। यह इन्सान की नज़र की सीमा है। यदि कोई उस कमरे में रोशनी कर दे तो सब कुछ नज़र आने लग जाएगा और द्वंद समाप्त हो जाएगा। जो है वह सामने आ जाएगा दिखाई देने लगेगा। वैसे तो इन्सान को सांसारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए कई तरह के गुरु बनाने पड़ते हैं। उसी तरह से इन्सान अध्यात्मवाद में भी गुरु बनाता है, क्योंकि अज्ञान रूपी अँधेरे को दूर करने के लिए गुरु का होना ज़रुरी है। परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्री मुख से बताया है कि इन्सान का सच्चा गुरु तो परमशक्ति ही है पर हर इन्सान का परमशक्ति से संपर्क नहीं होता। इसलिए इन्सान को गुरु धारण करना चाहिए। पर गुरु वह होना चाहिए जिसका परमशक्ति के साथ संपर्क हो, क्योंकि सच्चा ज्ञान तो वही दे सकता है जिसको स्वयं आत्मिक ज्ञान हो और जो अपने शिष्य का मार्ग दर्शन कर सके, अध्यात्मिक मार्ग पर अपने शिष्य की मदद करे। वह स्वयं ईश्वर से मिला हो और अपने शिष्य को भी ईश्वर से मिला सकता हो। जिस तरह सांसारिक शिक्षा के □□ए कई तरह के गुरु होते हैं उसी तरह से अध्यात्मवाद में भी कई तरह के गुरु होते हैं, जो कई तरह से अपने शिष्य को ज्ञान करवाते हैं और आगे बढ़ाते हैं। समाज में प्रचलित धारणाओं के अनुसार गुरुओं की निम्नलिखित श्रेणियाँ हैं :

दीपक गुरु

दीपक गुरु उसको कहा जाता है जो अपने शिष्य को ज्ञान देता है और अपने शिष्य को अज्ञान के अँधेरे से निकल कर रोशनी में लाता है। जिस तरह से एक दीपक से हज़ार दीपक जलाए जा सकते हैं उसी तरह गुरु अपने शिष्य के अंदर ज्ञान का प्रकाश करता है। स्वयं ईश्वर प्राप्ति की कोशिश करता है और अपने शिष्य को भी ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताता है।

चन्दन गुरु

चन्दन गुरु उसको माना जाता है जो अपने शिष्य को ईश्वर का अनुभव इस तरह से करवाता है जैसे चन्दन के वृक्ष के नज़दीक जितने भी वृक्ष होते हैं उनमें से चन्दन की ही खुशबू आने लगती है। उसी तरह चन्दन गुरु के नज़दीक रहने से उसके शिष्य को भी ईश्वर के अनुभव होने लग जाते हैं। उनके अंदर आध्यात्मिकता प्रकट हो जाती है।

पारस गुरु

पारस गुरु उनको माना जाता है जो अपने शिष्य को उसी तरह ज्ञान करवा कर ईश्वर की प्राप्ति करवाते हैं जैसे पारस किसी धातु को सोना बना सकता है। माना जाता है कि पारस गुरु के स्पर्श मात्र से ही शिष्य के अंदर आध्यात्मिक ऊर्जा पैदा हो जाती है। जो प्रगति शिष्य कई सालों की मेहनत से करता है, पारस गुरु के स्पर्श मात्र से ही एक पल में हो जाती है।

भृंगी गुरु

भृंगी एक ऐसा जीव है जिसकी अपनी संतान नहीं होती पर किसी जीव को उठा कर ले आता है। उसको पालता है, पल-पल उस जीव को डंक मारता है और अंत में वह जीव एक दिन भृंगी ही बन जाता है। जैसे माँ एक बच्चे को जन्म देती है उस तरह से भृंगी गुरु भी अपने शिष्य को नया जन्म देता है भाव अपना रूप ही बना देता है।

उपरोक्त जो भी वर्णन किया गया है यह वे मान्यताएं हैं जो समाज में गुरु के बारे में प्रचलित हैं। इसलिए गुरु के बारे में धारणा है कि एक गुरु अपने शिष्य को अपनी इच्छा से ही ईश्वर की प्राप्ति करवा सकता है। अगर यही वास्तविकता होती तो एक ही गुरु के सारे शिष्य ईश्वर की प्राप्ति कर लेते क्योंकि शिष्य चाहे कैसा भी क्यों न हो, कोई भी गुरु नहीं चाहता कि उस का कोई शिष्य अपनी मंजिल से वंचित रह जाए। अगर गुरु अपने सामर्थ्य से ही ईश्वर की प्राप्ति करवा सकता, तो गुरु अभ्यास करने को क्यों कहते ? नाम की कमाई करने या नाम जपने के □□ए क्यों कहते। सच तो यह है कि गुरु तो केवल ईश्वर के अस्तित्व को मान कर उस की रज़ा में राज़ी रहने की प्रेरणा देते हैं। कर्मफल तो हर इन्सान को भोगना ही पड़ता है। करने वाला और करवाने वाला तो वह आप ही है, इन्सान के बस में कुछ नहीं है। इन्सान के जीवन में सुख-दुःख उसके कर्मों का फल है। जब ईश्वर की इच्छा हो जाती है तो वह स्वयं ही इन्सान को अपना अस्तित्व बताते हैं, अपनी पहचान करवाते हैं, अपनी भक्ति करवाते हैं। इसलिए कोई गुरु अपने शिष्य को नाम दान देता है, कोई दीक्षा देता है, कोई भगवे कपड़े पहना कर समाज छोड़ कर सन्यास ग्रहण करने को कहता है भाव अनेक ही ढंग हैं जो समाज में बताए जा रहे हैं। हर धार्मिक संस्था किसी न किसी ढंग से पूजा-पाठ, जप-तप, सिमरन आदि की विभिन्न विधियाँ बताती हैं। वास्तव में हर रूप में कर्ता तो परमशक्ति ही है। वही हर रूप में इन्सान को कर्मफल देती है। वही देवी-देवताओं के माध्यम से लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण करती है, वही भगवानों को मान्यता देती है,

उनके रूपों में दर्शन देती है, उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करती है। उसी तरह परमशक्ति ही गुरु के माध्यम से उसके शिष्यों की मनोकामनाएं पूर्ण करती है, उनको मंजिल तक पहुंचाती है। दिखाई तो गुरु ही देते हैं इसलिए गुरु के बारे में यह धारणा है कि समर्थ गुरु ही अपने शिष्य को ईश्वर की प्राप्ति करवा सकता है पर सच्चाई यह है कि जिस गुरु ने अपने आप को महत्व न दे कर परमशक्ति को महत्व दिया, परमशक्ति ने भी महत्व स्वयं न लेकर महत्व उन गुरुओं को ही दिया है। कर्ता परमशक्ति ही रहती है पर महत्व उन महान् आत्माओं को देती है।

परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्री मुख से ज्ञान दिया है कि इस दरबार में आने वाले श्रद्धालुओं की परमशक्ति ही गुरु है और वही उनकी इष्ट है। श्री मदन धाम में पूजा-पाठ, जप-तप, चिंतन-मनन पर बल न देकर केवल नेककर्म, सद् व्यवहार और सभी से प्यार करने के लिए कहा जाता है। श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। परमशक्ति श्री मदन जी ने अध्यात्मवाद की कुछ भूमिकाएं निभा कर अध्यात्मवाद का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया है। उन्होंने **1987** से **1991** तक गुरु की भूमिका निभा कर गुरुदीक्षा भी दी, नाम दान भी दिया और शिष्य भी बनाए पर कुछ समय के बाद प्रमाणों सहित बंद कर दिया और बताया कि परमशक्ति जब इन्सानी रूप में आती हैं तो किसी को दीक्षा या नामदान नहीं देती। वह तो इन्सान को अपनी शरण में लेकर अपने इच्छा से चलाती है। परमशक्ति तो कर्मफल दाता है। वह तो हर किसी को कर्मफल देने वाले हैं, उनका सम्बन्ध तो हर किसी के साथ है चाहे उस को कोई माने या न माने, कर्मफल तो हर किसी ने भोगना ही है। परमशक्ति का सम्बन्ध किसी विशेष धर्म, वर्ग या सम्प्रदाय के साथ नहीं होता, उनका सम्बन्ध तो सारी मानवता के साथ होता है। जो भी इन्सान परमशक्ति को जिस भावना से, जिस रूप में, जिस मनोरथ के साथ याद करता है, परमशक्ति उसकी वह भावना पूरी करती है, उस को उस रूप में दर्शन देती है और उसका मनोरथ पूरा करती है। परमशक्ति का किसी के साथ कोई रिश्ता नहीं है पर जो इन्सान जिस रिश्ते से परमशक्ति को याद करता है तो परमशक्ति उसी रिश्ते के साथ उसको अनुभव देती है अर्थात् वह गुरु भी है, माँ भी है, पिता भी है, स्वामी भी है, सखा भी है, वह अनंत गुणों की स्वामी है। वह स्वयं को केवल गुरु शिष्य के सम्बन्ध में कैसे बांध सकती है। कुछ लोग ईश्वर को केवल अपनी सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के □□ए याद करते हैं, कुछ लोग मानसिक शांति और अगले जन्म को संवारने के लिए ईश्वर को याद करते हैं, कुछ लोग ईश्वर की प्राप्ति के लिए उसे याद करते हैं।

गुरु का सम्बन्ध केवल अपने शिष्यों तक ही सीमित होता है जबकि परमशक्ति का सम्बन्ध पूरी मानवता के साथ है। गुरु किसी को प्रेरणा से ही चला सकता है जब कि परमशक्ति इस तरह के हालात बना देती है कि जो परमशक्ति चाहती है इन्सान को वही करना पड़ता है। गुरु किसी भी बात को क्रियात्मक रूप में सिद्ध नहीं करते, जबकि परमशक्ति सर्वशक्तिमान है, वह जो चाहे सिद्ध कर सकती है। गुरु अपने शिष्य को ईश्वर के बारे में ज्ञान देते हैं पर ईश्वर के साथ प्यार करना नहीं सिखा सकते, क्योंकि प्यार करना सिखाया नहीं जा सकता, प्यार समझाया नहीं जा सकता पर परमशक्ति जिस को चाहे अपना अनुभव देकर उसके मन में अपने प्रति प्यार पैदा कर कर देती है। आज परम शक्ति श्री मदन जी के शरीर में बोलती है, वही यहाँ आने वालों का सच्चा गुरु और इष्ट हैं। श्री मदन धाम में परमशक्ति श्री मदन जी आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र खोल कर अपने अनन्त गुणों, नियमों और शक्तियों का क्रियात्मक रूप में ज्ञान भी दे रहे हैं और आने वाले श्रद्धालुओं की दुःख-तकलीफें भी दूर कर रहे हैं जो गुरु शिष्य की भूमिका में स्पष्ट हो पाना असंभव है।

अन्त में यही कहना है कि गुरु-शिष्य, देवी-देवता श्रद्धालु, भगवान-भक्त का जोड़ा है। इसी प्रकार ईश्वर और इन्सान का जोड़ा है। ईश्वर कर्म फल दाता है इन्सान अपने किए कर्मों का फल भोगने के लिए ही जन्म लेता है। इस लिए हर इन्सान का परमशक्ति से नाता है चाहे वो उसे माने या न माने। परमशक्ति जब साकार होती है तो वह न तो नाम दान देती है और न ही गुरुदीक्षा देती है। परमशक्ति आशीर्वाद ही देती है जिसे पाकर इन्सान को अपने मनोरथ की प्राप्ति होती है।

14
कुल देवता से परमशक्ति तक कौन क्या है ?

इस सृष्टि में जो कुछ भी दिखाई देता है या जो कुछ दिखाई नहीं देता पर जिसका अनुभव होता है या जो इन्सानी जीवन को प्रभावित करता है उन सब का ही अस्तित्व है। जिसका नाम है उसका अस्तित्व भी है। हर जीव का नाम उसके गुणों एवं कार्य के अनुसार ही होता है। भौतिकवाद में जो लोग खेतीबाड़ी का काम करते हैं, उन्हें किसान कहते हैं। लोहे का कार्य करने वाले को लोहार कहते हैं। लकड़ी का कार्य करने वाले को बढ़ई कहते हैं। स्कूली शिक्षा देने वाले को अध्यापक कहते हैं। इसी तरह डॉक्टर, इंजीनियर, कैमिस्ट, नेता, अभिनेता आदि नाम उनके कार्यों या गुणों के आधार पर होते हैं। इन सभी के कार्य क्षेत्र भी भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे कहावत है कि जैसा काम वैसा नाम। इसी प्रकार अध्यात्मवाद में बहुत सी अदृश्य शक्तियाँ हैं, जिनका इन्सान को अनुभव होता है और उनका इन्सान के जीवन पर प्रभाव भी पड़ता है। उन शक्तियों के अलग-अलग नाम हैं और उनके नाम के साथ अलग-अलग विशेषण भी लगे हुए हैं।

संसार में सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी इन्सान है। इन्सानों की भी श्रेणियाँ हैं जैसे पहली श्रेणी में दुष्ट, चाण्डाल, हैवान, शैतान आदि आते हैं। दूसरी श्रेणी साधारण इन्सानों की है जिसमें अच्छे, बुरे, तीव्र बुद्धि, मन्द बुद्धि वाले होते हैं। तीसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जो सदा दूसरों की भलाई में ही आनन्द की अनुभूति करते हैं। वे अपने लिए कम, दूसरों के लिए अधिक जीते हैं। इसी प्रकार अध्यात्मवाद में भी कुछ नाम हैं, जिनके बारे में ज्ञान होना आवश्यक है कि कौन क्या है ? उनके नाम के आगे भी उनके गुणों के आधार पर ही विशेषण लगते है।

1. कुल देवता

हर इन्सान की कुल का देवता होता है, जिसे केवल एक कुल या वंश ही मानता है। कुल देवता के माध्यम से परमशक्ति या ईश्वर उस कुल की छोटी-मोटी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। यह अध्यात्मवाद का सबसे निम्न स्तर है।

2. भूत-प्रेत एवम् भटकती रूहें

ऐसे इन्सान जो अपने जीवन में घिनौने कार्य करते हैं, फलस्वरूप विपरीत परिस्थितियों में उलझ कर तथा अपने जीवन से दु:खी होकर आत्महत्या कर लेते हैं। वे परमशक्ति की दृष्टि में दोषी होते हैं। उनका अपराध अक्षम्य होता है। परमशक्ति उनको तब तक नया जन्म नहीं देती जब तक उनकी निश्चित आयु जो उन्होंने जीते जी पूरी करनी थी वह पूरी नहीं हो जाती। उनकी चेतन शक्ति या रूह तब तक भटकती ही रहती है उन्हें ही भूत-प्रेत कहा जाता है। उन रूहों का भी शरीर होता है जो मायावी होता है। वह मायावी शरीर उन्हें परमशक्ति देती है। वे रूहें अपने-अपने मायावी शरीर में भटकती रहती हैं। रूहें भी चाहती हैं कि उन्हें नया जन्म मिले क्योंकि आनन्द की प्राप्ति तो शरीर में रह कर ही हो सकती है। इसलिए वे आनन्द की पूर्ति के लिए बलपूर्वक अन्य इन्सानों का शरीर धारण कर लेती हैं और उस शरीर को अपनी इच्छानुसार चलाती हैं। जिस इन्सान के शरीर को भटकती हुई रूहें धारण करती हैं, यह उस इन्सान के दुष्कर्मों का ही फल होता है।

3. क्षेत्रीय देवता

कुछ देवता ऐसे होते हैं जिनकी मान्यता केवल सीमित क्षेत्र में ही होती है। वहाँ पर केवल क्षेत्रीय लोग़ ही जाते हैं और परमशक्ति ही उनकी मनोकामना क्षेत्रीय देवताओं के माध्यम से पूर्ण करती है।

4. उच्चकोटि के देवता

कुछ देवी-देवता उच्चकोटि या उच्चस्तर के होते हैं। उनकी मान्यता बहुत बड़े क्षेत्र में होती हैं। उन स्थानों पर जाने वालों की मनोकामनाएँ अधिक पूर्ण होती हैं और उन स्थानों पर दूर-दूर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

5. देवी-देवता – श्रद्धालु

जो व्यक्ति अपने जीवनकाल में भगवानों और उच्चकोटि की शक्तियों की पूजा करते हैं, घोर साधना करते हैं और जब उनका इष्ट उनकी भक्ति से प्रसन्न हो जाता है तब उनको वह ऋद्धि-सिद्धि का वरदान दे देता है जिसे परमशक्ति पूर्णकर देती है। उन व्यक्तियों के माध्यम से लोगों की भलाई होती है। उन व्यक्तियों के मरणोपरांत उन्हें देवी-देवता का दर्जा प्राप्त होता है। परमशक्ति उनका यश-मान बनाए रखने के लिए और उनकी भक्ति का फल देने के लिए उनके नाम के स्थान बनवा कर वहाँ पर आने वाले लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण करती है।

श्रद्धालु :—

देवी-देवताओं की मान्यता करने वालों, उनमें श्रद्धा रखने वालों को श्रद्धालु कहा गया है। जो कहीं भी, किसी में भी श्रद्धा रखता है, वह उसका श्रद्धालु कहल ाता है।

6. वीर-पीर

वीर-पीर का जोड़ा है। लोगों की दृष्टि में ये दोनों एक हैं परन्तु ऐसा नहीं है। वीर का अर्थ है - बहादुर। वे व्यक्ति बहादुर होते हैं जो "दैत्य शक्ति" का जप-तप, पूजा-पाठ करते हैं। उनकी भक्ति हठ पर आधारित होती है जैसे शरीर को तापना, कष्ट सहन करना इत्यादि के आधार पर वे अपने इष्ट को प्रसन्न करने का प्रयास करते है। भक्ति पूर्ण होने पर वे ऋद्धि-सिद्धि का वरदान प्राप्त करतें हैं परन्तु वे रिद्धि-सिद्धि का प्रयोग प्राय: दूसरों के अहित के लिए करते हैं। दूसरों का अहित करके वे आनन्द की प्राप्ति करते हैं। यदि किसी पर प्रसन्न हो जाएं तो उसे माला-माल भी कर देते हैं। यदि किसी पर रुष्ट हो जाएं तो उसका सर्वनाश भी कर देते हैं। दूसरों से बलपूर्वक अपनी पूजा करवाते हैं और प्राय: छल का प्रयोग करते हैं। अपना नाम, रूप बदल कर देवताओं के नाम पर भी अपनी पूजा करवाते हैं और उन्हें अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्रयोग करते हैं।

पीर वैसे तो पहुंचे हुए व्यक्ति को कहते हैं परन्तु उसमें भी अहम् भाव आ जाता है। इसलिए इनके कार्य भी वीरों जैसे ही हो जाते हैं। इसी कारण उनका नाम {वीर-पीर} इकट्ठा आता है दोनों में अन्तर केवल इतना है कि "वीर" छल का सहारा लेते हैं जबकि "पीर" छल का सहारा नही ं लेते और अपने बलबूते पर ही कार्य करते हैं। ये ज्ञान भी देते हैं और लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण करते हैं। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि वास्तव में हर रूप में कर्ता तो परमशक्ति ही होती है। वह स्वयं पर्दे के पीछे रहकर इन रूपों में कार्य करती है।

प्रश्न है कि परमशक्ति ऐसे कार्य क्यों करती है ? इसका उत्तर है कि जो कार्य परमशक्ति अपने रूप में करना उचित नहीं समझती है वह कार्य परमशक्ति इन रूपों को धारण करके करती है। हर इन्सान को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है और कर्मफल केवल कर्मफलदाता ही दे सकता है जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान होता है। वह गिनती में एक है और वह परमशक्ति है। परमशक्ति ही कर्मफल देने के लिए इन रूपों को धारण करती है।

7. साधु-सन्त

समाज में आमतौर पर साधु और सन्त में अन्तर नहीं समझा जाता। उनके लिए दोनों एक समान हैं, परन्तु इनमें भी अन्तर है। साधु उन व्यक्तियों को कहा गया है जो गृहस्थ जीवन को त्याग कर ईश्वर की भक्ति करते हैं, सरल स्वभाव के होते हैं और दूसरों की सेवा में समय व्यतीत करने का प्रयास करते हैं। भले ही वे अपना गृहस्थ जीवन त्याग देते हैं परन्तु उनके अपने जीवन का निर्वाह गृहस्थियों पर ही निर्भर रहता है। पुराने समय में ये घर-बार छोड़ कर जंगलों में चले जाते थे और वहाँ पर ये आश्रमों में रह कर गुज़ारा करते थे। भगवे ं वस्त्र धारण करते थे तथा सन्यासी कहलाते थे परन्तु वर्तमानकाल में ये आमतौर पर गृहस्थियों के आस-पास ही रहते हैं। इस कारण इनके स्वभाव में भी चिड़चिड़ापन आ जाता है।

सन्त पुरुष भी सरल स्वभाव के होते हैं। यह ज़रूरी नही है कि कोई व्यक्ति गृहस्थ जीवन त्याग कर जंगलों में जाए तभी वह सन्त बन सकता है। व्यक्ति गृहस्थ में रह कर भी सन्त बन सकता है। सन्त व्यक्ति का सम्बन्ध भगवे ं पहरावे या माला इत्यादि से नहीं है। उसका सम्बन्ध तो व्यक्ति के गुणों से होता है। क्योंकि सन्त-पुरुष अधिकतर गृहस्थ व समाज में रहते हैं, इसलिए उन पर इन्सानी विकारों का प्रभाव भी रहता है। परन्तु गृहस्थ में रह कर भी समाज सेवा तथा परहित कार्य करते हैं। देखने में तो सभी इन्सान एक समान लगते हैं परन्तु गुणों के आधार पर ही साधु और सन्त की पहचान होती है।

8. महात्मा-महापुरुष

महात्मा, महापुरुष शब्द सुनने में एक समान ही लगते हैं। आमतौर पर समाज में महात्मा और महापुरुष को एक समान ही समझा जाता है, परन्तु जब नाम अलग-अलग हैं तो उनमें अन्तर भी अवश्य होगा। महात्मा का अर्थ है, महान् आत्मा और ये गिनी-चुनी होती हैं। इनमें अच्छे गुण अधिक और अवगुण बहुत कम होते हैं। ये विकारों से पूरी तरह रहित तो नहीं होतीं हैं परन्तु विकारों का सदुपयोग करती हैं। ये अधिकतर दूसरों के लिए जीते हैं। महान्-आत्माएं सरल स्वभाव, शांति-प्रिय और सद्व्यवहार करने वाली होती हैं। इनका सम्पर्क कर्मफल दाता से होता है और किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही धरती पर भेजी जाती हैं। इन्हें समाज का विरोध व आरोप भी सहन करने पड़ते हैं। महान्-आत्माएं जन-कल्याण और समाज-सुधार के लिए अपना जीवन समर्पित कर देतीं हैं। महान्-आत्माएं आस्तिक होती हैं और ये ईश्वर से निःस्वार्थ प्यार करती हैं। ये धरा पर जिस उद्देश्य के लिए भेजी जाती हैं ये वही कार्य करती हैं। ये अपनी इच्छा से कुछ नहीं करतीं। ये जो चाहती हैं वह होता नहीं, होता वही है जो ईश्वर इनसे चाहते हैं। गुणों के आधार पर ही इनके नाम के आगे विशेषण लगते हैं जैसे ऋषि-मुनि, गुरु, वीर-पीर, देवी-देव, भगवान आदि। ये सभी महान् आत्माएं कहलाती है।

विशेष गुणों के आधार पर ही किसी व्यक्ति के नाम के साथ महान् शब्द लगता है। जो समाज कल्याण को ही अपने जीवन का उदेश्य मानता हो ऐसे पुरुष को ही पुरुषों में महान् अर्थात् महापुर ुष कहा जाता है। महापुरुष भी ईश्वर को किसी न किसी रूप में मानते हैं, लेकिन महात्मा की तरह महापुरुष का ईश्वर के साथ सीधा संपर्क नहीं होता है इसी लिए उनका दर्जा महात्मा के बराबर नहीं होता। जो व्यक्ति स्वार्थवश ईश्वर का पूजा-पाठ, जप-तप करता है उसकी तुलना में महापुरूष की निःस्वार्थ समाज सेवा उत्तम होती है।

9. ऋषि-मुनि

आदि काल से ही इन्सान के मन में प्रश्न उठते रहे हैं कि क्या इस सृष्टि को बनाने वाला कोई है ? यदि कोई है तो वह कौन है, वह स्वयं कहाँ से आया है, उसने यह सब कुछ किस लिए बनाया है, उसने इन्सान की रचना किस लिए की है तथा वह इन्सान से क्या चाहता है। जैसे कि पहले भी स्पष्ट किया गया है कि इस सृष्टि में हर चीज़ का जोड़ा है, इसी तरह अध्यात्मवाद और भौतिकवाद का भी जोड़ा है। आध्यात्मवादी मानते हैं कि इस सृष्टि को चलाने वाली कोई शक्ति है जो इन आँखों से दिखाई नहीं देती है अर्थात् वह अदृश्य है लेकिन इन्सान के जीवन पर उसका प्रभाव पड़ता है। जो इन्सान अध्यात्मवाद के रहस्यों की खोज में लगे, ऋषि-मुनि कहलाए। भौतिकवादी व्यक्तियों की विचारधारा इससे विपरीत है, उनका विचार है कि जो कुछ इन आँखों से दिखाई देता है उसका ही अस्तित्व है, वही सत्य है तथा जो दिखाई नहीं देता वह असत्य है।

ऋषि :-

उस अदृश्य शक्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए जिन्होंने उसकी भक्ति की, समाधि लगाई तथा जप-तप करके उसके बारे में अनुभव एवं आत्म ज्ञान प्राप्त करके तथा उसे लिखित रूप देकर जिन्होंने समाज को ज्ञान दिया, ऋषि कहलाए। धार्मिक ग्रंथ, वेद-शास्त्र, पुराण आदि सभी इन्हीं की देन हैं। ऋषि शब्द से आशय है दर्शन करने वाला, तत्वों की साक्षात् अनुभूति करने वाला। भारतीय साहित्य में 'ऋषि' की उपाधि ऐसे व्यक्तियों को दी गई है जिन्होंने योग तथा तपस्या के बल पर अपने अंत:कर्ण का इतना विस्तार कर लिया हो कि परमतत्व स्वयं उनके हृदय में प्रकट हो गया हो।| मान्यता है कि ऐसे ही व्यक्ति वेदों के दृष्टा थे।

मुनि :-

जिन्होंने उस अदृश्य शक्ति का चिंतन-मनन किया, अपनी पूजा-पाठ और भक्ति से उस अनाम शक्ति को प्रसन्न किया, उसकी कृपा के पात्र बने, अपने जीवन में जो भी अनुभव या ज्ञान उस अनाम शक्ति के बारे में प्राप्त किया, उसे मौखिक रूप में समाज को दिया और उसे आस्तिक बनाने का प्रयास किया, वही मुनि कहलाए। बहुत कम मुनि देव हुए हैं जिन्होंने अपने अनुभव या अपना ज्ञान लिखित रूप में पेश किया है। वेदों में मुनि शब्द का उल्लेख ऐसे सन्यासी से है जिसके केश लम्बे हैं और जो अलौकिक शक्ति रखता हो। सामान्यत: मुनि शब्द का उल्लेख राग-द्वेष रहित सन्तों और ऋषियों के लिए होता है। यति, तपस्वी, भिक्षु, श्रमण आदि इन्हीं के नाम हैं।

गीता के अनुसार सुख-दु:ख, राग-भय और क्रोध से रहित बुद्धि वाले व्यक्ति मुनि कहलाते हैं।

महाभारत के अनुसार जो साधक मौन व्रत का पालन करता है, वह मुनि बनता है।

उपनिषदों के अनुसार अध्ययन, यज्ञ, व्रत और श्रद्धा से ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करने वाले को मुनि कहते हैं।

जैन ग्रंथ ऐसे महर्षियों को मुनि बताते हैं जिनकी आत्मा संयम में स्थिर है, जो सांसारिक वासनाओं से रहित हैं और जीवों की रक्षा करते हैं।

10. गुरु-शिष्य

सृष्टि का संतुलन बनाए रखने के लिए ईश्वर ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है, एक के बिना दूसरे का कोई महत्व नहीं है, जैसे दिन-रात, सर्दी-गर्मी, सुख-दु:ख, लाभ-हानि, शान्ति-अशान्ति, जीव-निर्जीव, स्त्री-पुरुष, अध्यात्मवाद-भौतिकवाद, जीवन-मृत्यु, ईश्वर-इन्सान आदि। इसी तरह गुरु-शिष्य का भी जोड़ा है।

गुरु :-

गुरु का शाब्दिक अर्थ है — अध्यापक, शिक्षा देने वाला, प्रशिक्षक, मार्गदर्शक, पथ-प्रदर्शक, रहबर, रहनुमा और अध्यात्मवाद में गुरु का अर्थ है जो अपने शिष्य को अज्ञान के अन्धकार से

निकाल कर ज्ञान रूपी प्रकाश प्रदान करे। गुरुओं की भी श्रेणियाँ हैं। एक वह गुरु हैं जो इन्सान को स्कूली शिक्षा देता हैं। एक वह भी गुरु हैं जो व्यक्ति को तकनीकी प्रशिक्षण देता हैं। □□□□□□□□□□□□ में वास्तविक गुरु वह होता है जो स्वयं ईश्वर तक पहुंचा हो या जिसका ईश्वर से सम्पर्क हो या फिर जिसके शरीर में ईश्वर स्वयं बातचीत करते हों। गुरु का दर्जा भगवान से नीचे होता है चाहे उस के शिष्यों की संख्या कितनी भी हो जाए। संसार में अनेकों ही ऐसे लोग़ हैं जो न तो अध्यात्मवाद के विषय में कुछ जानते हैं और न ही उनका कभी ईश्वर से सम्पर्क हुआ होता है। केवल अपने स्वार्थ हेतु वे गुरु बन बैठते हैं। कुछ गुरु ऐसे भी हैं जो व्यक्ति को वीर-पीर, देवी-देव या भगवान तक का ही ज्ञान देकर उनके ही जप-तप, सिमरन आदि करने के लिए प्रेरित करते हैं। जो गुरु का अपना इष्ट होता है वह उसी की पूजा करवाता है। जैसे समाज में एक धारणा भी है कि जब तक व्यक्ति अपने जीवन में अध्यात्मवाद के लिए कोई गुरु धारण नहीं करता अर्थात् नाम-दान नहीं लेता है, तब तक उसकी गति नहीं होती। इसलिए व्यक्ति गुरु-दीक्षा लेने के लिए ऐसे गुरुओं के चक्कर में फंस जाता है। ये गुरु ईश्वर के सम्बन्ध में तो कुछ जानते नहीं। अत: लोगों को निम्न स्तर की शक्तियों के नाम पर ही गुरु-दीक्षा देते हैं। ये स्वयं तो डूबते ही हैं, साथ-साथ अपने शिष्यों, सेवकों को भी ले डूबते हैं। ऐसे गुरु लोगों को उजाले की ओर ले जाने की बजाए उन्हें अन्धकार की ओर ले जाते हैं।

अध्यात्मवाद में सच्चा गुरु या पूर्ण गुरु वह होता है जिसका सम्पर्क ईश्वर से हो, जिसे ईश्वर अनुचित कार्य करने से रोके। जब तक गुरु को ईश्वर के बारे में ज्ञान नहीं होगा तब तक वह अपने शिष्य को ईश्वर के बारे में ज्ञान कैसे करवा सकता है। इसलिए सच्चा गुरु वही है जो इन्सान को उसकी वास्तविक मंज़िल के बारे में ज्ञान करवाए और उस मंज़िल को पाने के लिए उसका मार्गदर्शन भी करे। जीवन को सार्थक बनाने के लिए इन्सान का अपने जीवन काल में कर्मफल दाता तक पहुंचना ही वास्तविक मंजिल है, क्योंकि केवल वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान होता है और वह गिनती में एक ही होता है, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करना, उससे प्यार करना तथा उसके नियमों पर चलते हुए अपना जीवन बिताना ही आदर्श जीवन कहलाता है। परन्तु यह तभी सम्भव हो सकता है जब इन्सान को पूर्ण गुरु मिल जाए। ऐसे लोगों की संख्या बहुत ही कम होती है जिन्हें पूर्ण गुरु मिलता है। वास्तव में सभी का सच्चा गुरु परमशक्ति ही है तथा वही सबकी इष्ट भी है लेकिन परमशक्ति हर किसी से संपर्क नहीं करती है। वह तो उसी के साथ संपर्क करती है जो उसकी बात को सत्य मान कर चले, उसके बताए हुए नियमों पर चले तथा सभी से प्यार और सद्व्यवहार करे। जो गुरु इन्सान को अंधकार की ओर ले जाते हैं अर्थात् उन्हें ईश्वर के बारे में ज्ञान न देकर निम्न स्तर की शक्तियों तक सीमित रखते हैं वे ईश्वर की दृष्टि में दोषी होते हैं और उनका यह दोष अक्षम्य होता है अर्थात् इसके लिए उन्हें दण्ड भोगना ही पड़ता है।

शिष्य :-

जो अपने गुरु से शिक्षा प्राप्त करता है उसका शिष्य कहलाता है। शिक्षा चाहे भौतिकवाद की हो या अध्यात्मवाद की, उसके लिए गुरु का होना आवश्यक होता है। शिष्य अपने गुरु का अनुयायी होता है। वह अपने गुरु की आज्ञा में रहकर और उसके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सफल बनाने की कोशिश करता है। वास्तव में शिष्य वही होता है जो गुरु के आदेश का पालन इमानदारी से करता है, सच्चे मन से उसकी सेवा करता है और उसके द्वारा दी गई शिक्षा का अनुसरण करता हुआ अपने गुरु के नाम को भी र◌ोशन करता है।

11. भगवान-भक्त

आमतौर पर समाज में भगवान, ईश्वर और परमात्मा को एक ही मानते हैं पर इनमें भी अन्तर है । ईश्वर अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है जो सृष्टि का रचयिता और पालनकर्ता है, जिसकी आराधना ऋषि-मुनि, सन्त-फ़कीर, देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान सभी करते हैं । ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान होता है । वही कर्मफल दाता है तथा वह गिनती में एक है ।

भगवान :-

भगवान अपने आप में कुछ नहीं होते, वे केवल ईश्वर के माध्यम होते हैं । भगवान का दर्जा गुरुओं से ऊपर होता है लेकिन भगवान गुरुदीक्षा नहीं देते । जिस प्रकार गुरुओं के शिष्य होते है उसी प्रकार भगवान के भक्त होते है । भगवान एक से अधिक भी हो सकते हैं । भगवान शब्द भाग्यवान से बना है, भगवान वह मान्यता प्राप्त रूप होता है जिसके शरीर को परमशक्ति धारण करती है तथा किसी सीमा तक उसके माध्यम से अपने गुणों, नियमों और शक्तियों का प्रदर्शन करती है । जिस शरीर का प्रयोग ईश्वर अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए करे उससे बड़ा भाग्यवान और कौन हो सकता है ? लगभग **500** नाम ऐसे हैं जिनके साथ भगवान शब्द लगा है जैसे भगवान श्री राम, भगवान श्री कृष्ण, भगवान श्री महावीर आदि । भगवान धरा पर केवल ईश्वर द्वारा निर्धारित कार्य करने के लिए भेजे जाते हैं और कार्य पूरा होने के पश्चात् धरती से प्रस्थान कर जाते हैं । भगवान किसी को कर्मफल देने या किसी का कर्मफल काटने में असमर्थ होते हैं क्योंकि कोई भी भगवान सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान नहीं होता । ये तीनों गुण केवल परमशक्ति में ही होते हैं, भगवान अपनी इच्छा से कुछ नहीं करते अपितु सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर छोड़ देते हैं । जिस प्रकार साधारण इन्सान देवी-देवताओं की पूजा करते हैं उसी प्रकार भगवान परमशक्ति को महत्व देते हैं । ईश्वर उन्हें संसार में अजय सिद्ध करते हैं । उनके माध्यम से किसी सीमा तक ईश्वरीय गुणों का प्रदर्शन भी होता है और चमत्कार भी होते हैं । भगवान धरती पर इन्सानी रूप में ही आते हैं । इस सम्बन्ध में इतना स्पष्ट करना है कि वास्तव में भगवान उसे ही कहा जाता है जब ईश्वर स्वयं इन्सानी रूप में धरा पर आते हैं । परमशक्ति का सम्बन्ध सारी सृष्टि से होत ा है । वह तो भगवानों की भी पूजनीय है । वास्तव में भगवान एक ही होता है जो सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है, शक्ति अदृश्य है तथा भगवान उसका सदृश्य रूप होता है ।

भक्त :-

जो इन्सान अपने इष्ट का आज्ञाकार, वफ़ादार और सेवादार होता है, अपने इष्ट से निःस्वार्थ प्यार करता है, भक्त कहलाता है । भगवान के भक्त होते हैं । भक्त अपने इष्ट से कभी भी गिला-शिकवा नहीं करत ा । वह हमेशा अपने मालिक की रज़ा में रहत ा है । उसका उद्देश्य केवल अपने स्वामी को प्रसन्न करना होता है । भक्त की कभी पूजा नहीं होती, उसका केवल आदर-सम्मान होता है । जैसे भगवान श्री राम जी के भक्त वीर हनुमान और तुलसीदास जी हुए । भगवान श्री कृष्ण जी के भक्त ों में से मोरध्वज, मीरा जी, सूरदास और सुदामा जी हुए हैं। भगवान शिव के भक्त वीरभद्र जी, बाबा बालकनाथ एवं नारद जी हुए । इसी तरह भगवान श्रीहरि जी के भक्त प्रहलाद और भक्त ध्रुव हुए । इन सभी भक्तों ने अपने स्वामी से निःस्वार्थ प्यार किया ।

12. ईश्वर-इन्सान

ईश्वर :-

ईश्वर वह असीम शक्ति है जिसे शब्दों में परिभाषित नहीं किया जा सकता लेकिन उसके सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप में कहा जा सकता है कि इस सृष्टि को रचने वाली एक शक्ति है जो न नर है न नारी है। परमशक्ति अनादि, अनन्त है और इन्सान के लिए प्रायः अगम्य, अगोचर रहती है। वह सभी शक्तियों की स्रोत है। वह सर्वरूपिणी तथा सर्वभ ुवन वन्दनीय है। जीव-निर्जीव को रचने वाली और उन्हें नियमों में बांधने वाली है। वह जीवों की पालनकर्ता व संहारकर्ता है। वह सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है। वह न्यायकारी होते हुए भी परम दयालु और कृपालु है। वह सुखों की भण्डार और आनन्द की दाता है। उसी के हाथ में इन्सान का सुख-दुःख, यश-अपयश, लाभ-हानि, सफलता-असफलता, खुशी-ग़मी और जीवन-मृत्यु है। पूजा के योग्य केवल परमशक्ति ही है जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। वही जानती है कि उसे कौनसा व्यक्ति कहाँ पर याद कर रहा है, चिंतन-मनन कर रहा है। जो व्यक्ति अन्य रूपों की पूजा करते है जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं होते है उनकी पूजा का फल भी परमशक्ति ही देती है जब वह शक्ति अदृश्य से सदृश्य बनती है, तब वह सर्वगुण सम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी, पूर्ण और अजय होती है। सदृश्य रूप में उसे शिव कहते है, सदृश्य रूप में होते हुए भी वह कार्य अदृश्य रूप में करते है। उसी शक्ति को ही ईश्वर, अल्ला, वाह िगुरु, गॉड, राधा स्वामी, निरंकार, कुदरत, नेचर आदि कहा गया है। वह शक्ति निराकार होते हुए भी साकार है और साकार होते हुए भी निराकार है।

इन्सान :-

ईश्वर ने हर चीज का जोड़ा बनाया है। इसी तरह ईश्वर और इन्सान का भी जोड़ा है। इन्सान ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है। ईश्वर के बिना इन्सान हो ही नहीं सकता है लेकिन यदि सृष्टि मे सभी कुछ हो, पर इन्सान न हो, तो ईश्वर का भी कोई महत्त्व नहीं हो सकता है। परमशक्ति भी इन्सान के साथ ही अपना सम्पर्क करती है। ईश्वर ने उसे ही सब प्राणियों का सरताज बनाया है, उसे ही बुद्धि तत्व दिया है, ईश्वर को जानने की शक्ति प्रदान की है और अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा भी प्रदान की है। इन्सान को ही ईश्वर ने अपना सांझीदार, राज़दार बनाया है और उसको ही अपने बारे में ज्ञान करवाया है। इन्सान कर्मफल भोगता है जबकि ईश्वर कर्मफल दाता है। इन्सान विकारों के अधीन कार्य करता है जबकि विकार ईश्वर के अधीन होते हैं। ईश्वर ने सृष्टि में जो कुछ भी बनाया है इन्सान के लिए ही बनाया है और इन्सान को केवल अपने लिए बनाया है। परमशक्ति सब की जन्म दाता है, वह उन्हें महत्व देती है जो उसे प्यार करते है, उसकी सोच के साथ अपनी सोच मिला कर चलते है, वह उनकी सहायता और रक्षा भी करती है। इसलिए इन्सान का कर्तव्य है कि वह ईश्वर के अस्तित्व को माने, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे, उससे प्यार करे, दु:ख के समय उनसे प्रार्थना करे और सुख के वक्त उनका शुक्रगुज़ार रहे। इन्सान का कर्तव्य है कि वह जीवन में हर कार्य के लिए प्रथम स्थान ईश्वर को दे और उसकी कृपा का पात्र बने, जिससे उसका वर्तमान जीवन तथा भावी जीवन सफल हो सके।

13. शिव-शक्ति

समाज में प्रायः शिव को पुरुष रूप में और शक्ति को स्त्री रूप में देखा और माना जाता है । आमतौर पर इन्सान शिव को उस रूप में देखता है जो रूप चित्रों या कैलंडरों में दर्शाया गया है और शक्ति को अष्ट-भुजी रूप में देखता है, जबकि शिव का शाब्दिक अर्थ है, कल्याणकारी और शक्ति उसका प्रचण्ड रूप है । श्री मदन धाम अध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है । यहाँ परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप में अध्यात्मवाद का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है और सच्चाई पर से पर्दा उठा रही है । माणकपुर दरबार में परमशक्ति ने क्रियात्मक रूप में सिद्ध किया है कि शिव और शक्ति दो नहीं अपितु एक हैं । शिव किसी व्यक्ति का नाम नहीं है अपितु शक्ति का ही नाम है, शक्ति की पूजा शिव रूप में ही होती है । जब परमशक्ति निराकार या अदृश्य होती है तो वह शक्ति होती है जैसे कि परमशक्ति अपने सम्बोधन में भी स्पष्ट करती है कि ***"मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ, पर युगों-युगों के पश्चात् अपनी इच्छा से नर रूप में धरा पर आती हूँ ।"*** इस से यह स्पष्ट होता है कि वही शक्ति निराकार होती है पर जब वह नर रूप में धरती पर आती है तब वह अपने गुणों का प्रदर्शन करती है और शिव कहलाती है । उस समय साकार रूप के शरीर में शक्ति का समावेश होता है, शरीर ही शक्ति की पहचान होता है तथा परमशक्ति साकार रूप की माया बनकर कार्य करती है ।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि शिव-शक्ति दो नहीं अपितु एक हैं पर रूप दो हैं जैसे पानी तरल है, जब तापमान बढ़ता है तो वह भाप बन जाता है और जब तापमान शून्य से नीचे गिर जाता है तो वह ठोस बर्फ़ का रूप धारण कर लेता है । वास्तव में तीनों रूपों में वह पानी ही है । जब तरल है तब भी पानी है, जब वाष्प रूप (भाप) में है तब भी पानी है और जब ठोस रूप (बर्फ़) में है तब भी पानी ही है अर्थात् उसका मूल रूप पानी ही है । इन तीनों रूपों में उसके भौतिक गुण ही बदलते हैं परन्तु रासायनिक गुण वही रहते हैं । इसी तरह शिव और शक्ति के भी क्रमशः साकार और निराकार रूपों के गुणों में परिवर्तन आता है परन्तु सिद्धांत वही रहते हैं ।

14. ब्रह्म और पारब्रह्म

शिव और शक्ति की तरह समाज में ब्रह्म और पारब्रह्म के अस्तित्व को भी अलग-अलग मानते हैं । उनका मत कि ब्रह्म से आगे पारब्रह्म होता है । समाज की इस धारणा को भी श्री मदन धाम में क्रियात्मक रूप में सिद्ध किया गया है कि ये दो नहीं अपितु एक हैं । परमशक्ति की घोषणा है कि वह अदृश्य से सदृश्य बनी है । उसका अपना शरीर है और उसका नाम मदन है । इसका अर्थ है कि श्री मदन जी परमशक्ति के साकार रूप हैं । जब शक्ति अदृश्य होती है तो वह पारब्रह्म कहलाती है और जब वह सदृश्य बनती है तो वह ब्रह्म कहलाती है, इस बात को सिद्ध करने के लिए निराकार शक्ति का स्थान दरबार की पांचवी मंजिल पर बनवाया गया था । उस स्थान पर जा कर श्री मदन जी पौने चार वर्ष तक पूजन करते रहे और उतना समय उन्हें नब्ज़ रुकने का असहनीय कष्ट होता रहा । जब श्री मदन जी को पारब्रह्म के स्थान पर विराजमान करवा कर उनका पूजन करवाया गया तो उन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ । पूजन पचास दिन तक होता रहा और उन पचास दिनों में श्री मदन जी को नब्ज़ रुकने का कष्ट नहीं हुआ । परन्तु जब फिर उन्होंने निराकार शक्ति का पूजन शुरू किया तो उन्हें फिर वही असहनीय कष्ट सहन करना पड़ा । अंत में परमशक्ति का आदेश हुआ कि पांचवें स्थल को गिरा दिया जाए क्योंकि जब अदृश्य शक्ति स्वयं सदृश्य रूप में धरा पर आई है तो निराकार और साकार रूप में कोई अन्तर नहीं रहता

अर्थात् जब पारब्रह्म स्वयं ब्रह्म बना हो तो उस समय पारब्रह्म का अलग अस्तित्व नहीं रहता। उस समय महत्व ब्रह्म का ही होता है।

15. आदिदेव शिव — महाप्रभु

आरम्भिक काल में जब मानव जाति असभ्य थी, सामाजिक ढांचा न होने के बराबर था, मानव की अपनी कोई पहचान नहीं थी और न ही उसे जीने का ढंग आता था। उस समय परमशक्ति ने मनुष्य को सभ्य बनाने के लिए, अपनी पहचान करवाने के लिए तथा जीने का ढंग बताने के लिए स्वयं "आदिदेव" या "आदिदेव शिव" के रूप में धरती पर अवतरण किया। आदिदेव के आने से पहले मानव जाति को भगवान और पूजा पद्धति के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं था। समाज में रहकर आदिदेव ने लोगों के समक्ष उन ईश्वरीय गुणों, सिद्धांतों और शक्तियों का प्रदर्शन किया जो उस समय मानव जाति के लिए आवश्यक थे। "आदिदेव" किसी को भी वरदान देने में सक्षम थे।

जब लोगों ने "आदिदेव" द्वारा ईश्वरीय गुणों, शक्तियों और सिद्धान्तों का प्रदर्शन देखा तो वे उनसे प्रभावित हुए। इसीलिए वे लोग़ आदिदेव को उच्चस्तरीय व्यक्तित्व मानने लगे। दैवी शक्तियों के प्रदर्शन के कारण "आदिदेव" इन लोगों में पूजनीय बन गए। जो इन्सान उस समय "आदिदेव" के सम्पर्क में आए, उन्हें देवी या देवता कहा गया और "आदिदेव शिव" को "महादेव" माना गया।

धीरे-धीरे जब सामाजिक ढांचा बदलने लगा, मानव जाति की पहचान होने लगी और मानव सभ्य बनने लगा तो जो ज्ञान उसने "आदिदेव" से प्राप्त किया था। वह उस पर चलने लगा तथा उसने अपने जीवन के ढंग में भी परिवर्तन कर लिया। इस तरह धीरे-धीरे मानव जाति असभ्य से सभ्य बन गई। सभ्य समाज आदिदेव को महाप्रभु के नाम से पुकारने लगा अर्थात् आदिदेव शिव, प्रभु या महाप्रभु उस अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च शक्ति के साकार रूपों के नाम हैं, जिसने इस सारी सृष्टि की रचना की, जिसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।

16. ब्रह्मा, विष्णु, महेश

हिन्दू समाज में ब्रह्मा, विष्णु और महेश नाम बहुत प्रचलित हैं। उनका मत है कि ब्रह्मा जी इस सृष्टि के रचयिता हैं, भगवान विष्णु जी पालनकर्ता हैं, त्रिलोकीनाथ हैं। भगवान महेश के सम्बन्ध में समाज का मत है कि वह जटाधारी हैं। समाज में उनको भगवान शिव भी कहते हैं। वे इस सृष्टि के संहारकर्ता भी माने जाते हैं। इस के अतिरिक्त यह धारणा भी है कि उस अदृश्य शक्ति ने अपनी इच्छा से एक ही समय तीन नर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश पैदा किए। ब्रह्मा को सृष्टि की रचना का, विष्णु जी को जीवों के पालन का और महेश जी को जीवों के संहार करने का कार्य सौंपा।

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ परमशक्ति स्वयं नर रूप में आध्यत्मिक शिक्षा का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है। यहाँ परमशक्ति ने समाज के उपरोक्त मत का खंडन करते हुए स्पष्ट किया है कि ये तीनों परमशक्ति के ही गुणात्मक नाम हैं। जब सभी कहते हैं कि सृष्टि का मालिक एक है तो तीन कैसे हो सकते हैं। परमशक्ति ने स्पष्ट किया है कि ये सब ऋषियों–मुनियों की कल्पना है और ब्रह्मा, विष्णु, महेश नाम की कोई चीज़ नहीं है, यदि ये होते तो अन्य धर्मों में भी इनका वर्णन होता। सारी सृष्टि में सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान केवल एक है और वह परमशक्ति है, वही अदृश्य है, वही सदृश्य है। उस के अतिरिक्त कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं है।

परमशक्ति ही जन्मदाता है, पालनकर्ता है और संहारकर्ता भी है। यह तीनों गुण परमशक्ति के ही हैं। पर ऋषियों-मुनियों ने समाज को ज्ञान देने के लिए इन तीनों गुणों के भिन्न-भिन्न पात्र दर्शाए ताकि समाज उस सर्वशक्तिमान के उपरोक्त तीनों गुणों को जान सके।

शक्ति, महाशक्ति, परमशक्ति के स्वरूप

निराकार शक्ति	*अदृश्य रूप*	*सदृश्य या साकार रूप*		
शक्ति	*आत्मा*	*पुर◌ुष*	*गुरु*	*देव*
महा शक्ति	*महा आत्मा*	*महा पुरूष*	*महा गुरु*	*महा देव*
परमशक्ति	*परमआत्मा*	*परम पुरुष*	*परम गुरु*	*परम देव*

उपरोक्त विवरण की संक्षिप्त व्याख्या नीचे दी गई है :

परमशक्ति ही हर रूप में कर्ता है। वह अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। उपरोक्त सब उसी की रचना और रूप हैं पर गुण सभी के अलग-अलग हैं।

शक्ति :

शक्ति तो हर जीव में व्याप्त हैं, जो प्राय: मूक दर्शक रह कर ही कार्य करती है। वह नर-नारी अर्थात् स्त्री-पुरुष का रूप धारण करती है। जब वह शरीर में होती है तो उसे ही आत्मा कहा जाता है। जिनमें वह शक्ति मूक दर्शक रह कर ही कार्य करती है। प्राय: ऐसे लोग़ स्वार्थी होते हैं और अपने परिवार तक ही सीमित रह कर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। वे विकारों के अधीन हो कर ही कर्म करते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य भौतिक सुखों की प्राप्ति ही होता है। इनमें से ही अधिकांश लोग़ देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। जो लोग़ देवी-देवताओं की पूजा करवाते हैं, समाज में उन्हें गुरु कहते हैं पर उनका न तो परमशक्ति से सम्पर्क होता है और न ही वे परमशक्ति तक पहुंचे होते हैं। वे देवी-देवताओं तक ही सीमित रहते हैं। जो लोग़ देवी-देवताओं की पूजा करते हैं उन में से ही कुछ लोगों पर देवी-देवताओं की मेहर हो जाती है। कुछ समय बाद लोग़ उनको ही देवी-देवताओं के रूप में मान्यता दे देते हैं।

महाशक्ति

यह परमशक्ति का दूसरा रूप है। यह महान् आत्मा बन कर शरीर में आते हैं। इनको ही महापुरुष, ऋषि-मुनि, भगवान, रसूल आदि कहा जाता है। उनमें या तो परमशक्ति बात करती है या वह उनकी बुद्धि पर नियंत्रण करके स्वेच्छा से कार्य करवाती है। इनमें से ही कुछ महागुरु बनते हैं जिनका सम्पर्क परमशक्ति के साथ होता है और वे अपने पास आने वालों को ज्ञान देकर परम आत्मा, परम पुरुष, परम गुरु की पूजा, भक्ति करवाते हैं। महान् आत्माओं में से ही परमशक्ति ही महादेव, महेश्वर, भगवान और रसूल के रूप में मान्यता देती है। वे सब महान् गुणों के स्वामी होते हैं। ये अपने लिए कम और दूसरों के लिए अधिक जीते हैं। ये ईश्वर पर विश्वास करते हुए नेक कर्म, सद्व्यवहार और सबसे प्यार करने की कोशिश करते हैं। ये विकारों से पूरी तरह मुक्त तो नहीं होते पर विकारों का सदुपयोग करते हैं।

परमशक्ति

वैसे तो परमशक्ति असीम है, उसे सीमा में नहीं बांधा जा सकता, फिर भी उसके सबंध में संक्षिप्त रूप में कहा जा सकता है कि वह अनादि, अनन्त, और सर्वोच्च है, वह प्राय: इन्सान के लिए अगम्य, अगोचर रहती है और वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है। वह किसी को भी किसी भी रूप में मान्यता दे सकती है। परमशक्ति जब किसी व्यक्ति का शरीर धारण करती है या मान्यता देती है तो उस शरीर में वह परम आत्मा बन कर विद्यमान रहती है और उसे अपनी इच्छा से चलाती है। उस शरीर को परम पुरुष, परम देव, परम गुरु, सत्गुरु या सद्गुरु माना जाता है। परमशक्ति उस शरीर के माध्यम से अपने कुछ नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करती है। इन रूपों में परमशक्ति ही कार्य करती है। ये सारी परमशक्ति की ही रचनाएँ हैं। वास्तव में परमशक्ति ही हर रूप में कर्ता है।

वास्तव में जब परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप में धरती पर आती है तो वह शरीर सर्वगुण सम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी, पूर्ण और अजय होता है। वास्तव में वही पूर्ण-परमेश्वर, ब्रह्म, परमपुरुष, परमदेव, परमगुरु, एवम् सद्गुरु होता है।

अध्यात्मवाद में कुल-देवता से परमशक्ति तक जितने भी नाम हैं श्री मदन धाम में परमशक्ति श्री मदन जी ने इन सब की भूमिका निभा कर क्रियात्मक रूप में सिद्ध किया है कि इनकी पूर्व जन्मों की

पूजा, भक्ति के आधार पर परमशक्ति ने ही इनके नाम रखे हैं तथा इनको यश-मान दिया है। वास्तव में ये सब अपने आप में कुछ नहीं हैं। किसी के पास भी कोई शक्ति नहीं होती। कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं होता। केवल परमशक्ति ही इन रूपों में काम करती है जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। वही श्रद्धालुओं को उनके स्थानों पर भेजती है, वही उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करती है तथा उन रूपों में श्रद्धालुओं को दर्शन भी देती है।

यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि इनका अस्तित्व है भी और नहीं भी। जो इन में विश्वास रखते हैं, उन पर इनका प्रभाव पड़ता है, उनके लिए इनका अस्तित्व हैं। जो इनमें विश्वास नहीं रखते उन पर इनका प्रभाव नहीं होता। उनके लिए इनका कोई अस्तित्व नहीं है।

सत्य तो यह है कि उपरोक्त वर्णित सभी रूप किसी न किसी समय धरती पर आए। उन्होंने कष्ट-परेशानियाँ सहन कीं, ईश्वर की भक्ति भी की और परमशक्ति के उदेश्य की पूर्ति के लिए योगदान भी दिया। शरीर त्यागने के बाद वे मोक्ष पद को प्राप्त होते हैं और जब तक वे मोक्ष में रहते हैं वे जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त रहते हैं परन्तु परमशक्ति ने उनका अस्तित्व रखा हुआ है। इसके तीन मुख्य कारण हैं जो निम्नलिखित हैं :

1. उनके नाम रखने के लिए उनको यश-मान दिया।
2. परमशक्ति सभी को अपने तक नहीं पहुँचने देती, इसलिए सधारण इन्सान के लिए पड़ाव रखे गए हैं।
3. इन्सान को कर्मफल देने के लिए भी उनके रूपों तथा नामों का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार परमशक्ति उनके नाम रखती है इसीलिए उनका अस्तित्व है। वास्तव में उनका अपना कोई अस्तित्व नहीं है । इन्सान का कर्तव्य है कि वह परमशक्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करे। जब इन्सान को ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि उसको बनाने वाला कोई है, कर्मफल देने वाला कोई है तो उसे ईश्वर के साथ प्यार हो जाता है । वह उससे डरता भी है और उससे प्यार भी करता है।

15

परमशक्ति का अस्तित्व सिद्ध क्यों नहीं किया जा सकता ?

संसार में देवी-देवताओं, वीरों-पीरों, भगवानों के अनेक धार्मिक स्थान हैं । तांत्रिकों के अनेक स्थान हैं । इस संसार में हर इन्सान किसी न किसी समस्या में फंसा रहता है । क्योंकि इन्सान स्वार्थी है अतः जहां उसका स्वार्थ पूर्ण होता है, वहीं उसकी आस्था बन जाती है। किसी की मनोकामना देवी-देवताओं के पास जाने से पूर्ण होती है, किसी की मनोकामना वीरों-पीरों के स्थान पर जा कर पूर्ण होती है, किसी की भगवानों के स्थान पर जाने से पूर्ण होती है । कुछ ऐसे लोग़ भी हैं जिनकी समस्या का हल तांत्रिकों के पास जाकर होता है । जिसकी मनोकामना जहां पूर्ण होती है उसकी आस्था-विश्वास वहीं बन जाता है ।

इन धार्मिक स्थानों पर कुछ ऐसे व्यक्ति भी पदासीन हैं जो इस बात का दावा करते हैं कि उनके पास कोई दैवी शक्ति है । कुछ लोगों के माध्यम से चमत्कार भी होते हैं । उनके माध्यम से लोगों की समस्याएं कुछ हद तक हल भी होती हैं पर संसार में ऐसे इन्सान भी हैं जो इन बातों पर विश्वास नहीं करते । उनका कहना है कि यदि किसी के पास दैवी शक्ति है तो वह सिद्ध कर के दिखाए परन्तु आज तक कोई भी इन्सान अपनी इच्छा से दैवी शक्ति के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सका । कोई यह सिद्ध क्यों नहीं कर सका कि उसके पास दैवी शक्ति है ? इसके कारण निम्नलिखित हैं :

1. परमशक्ति सदैव ही अपना अलग अस्तित्व बनाए रखती है :

परमशक्ति ही इस सृष्टि की रचयिता है। उस ने ही समय-समय पर महान्-आत्माओं को धरती पर भेजा और उनके माध्यम से अपने नियमों और गुणों का प्रदर्शन किया, परन्तु परमशक्ति ने अपना अस्तित्व सदैव अलग बनाए रखा क्योंकि वह महान्-आत्माएं अपने जीवन में लाचार, बेबस रहीं, उन्हें अनेक तरह की कष्ट परेशानियों का सामना करना पड़ा। आज उनके नाम हैं, लोग़ उनकी पूजा करते हैं परन्तु उन्होंने भी कहा है कि " तू बेअंत तेरी माया बेअंत तेरीयाँ तू ही जाने " अर्थात् परमशक्ति ने अपना पूर्ण भेद किसी को भी नहीं दिया।

2. परमशक्ति के सिवा कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं है:

परमशक्ति के सिवा कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं है और न ही परमशक्ति अपने यह गुण किसी को देती है क्योंकि इन्सान चाहे कितना भी महान् क्यों न हो जा उस पर विकारों का प्रभाव पड़ता है। परमशक्ति के सिवा कोई भी इन शक्तियों का सदुपयोग नहीं कर सकता। यदि परमशक्ति की इच्छा हो जाए तो वह शरीर का प्रयोग करके किसी सीमा तक उसके द्वारा अपनी शक्तियों का प्रदर्शन कर देती है। इसीलिए इन्सान उस महान् आत्मा को ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान मानने लगते हैं। वही महान्-आत्मा किसी समय लाचार बेबस लगती है। अगर एक से ज्यादा सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान हो जाएं तो अध्यात्मवाद में अराजकता फ़ैल जाएगी। इसलिए परमशक्ति अपनी इच्छा से ही अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करती है।

3. कोई भी इन्सान अपनी इच्छा से परमशक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता :

आज तक जितनी भी महान् आत्माएं धरा पर आईं परमशक्ति ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें प्रयोग किया। चाहे उनके द्वारा अनेक चमत्कार भी हुए, लोगों ने उन्हें ही ईश्वर का रूप मान लिया। परन्तु जब तक वे धरती पर रहे लाचार, बेबस ही रहे। परमशक्ति ने उतना ही प्रदर्शन किया जितना जरूरी था अर्थात् परमशक्ति ने ही उनका प्रयोग अपनी इच्छा से किया।

4. परमशक्ति अपनी शक्तियां किसी को नहीं देती :

इन्सान विकारों के अधीन है। ईर्ष्या, द्वेष, नफ़रत आदि का प्रभाव भी इन्सान पर पड़ता है। इसलिए परमशक्ति किसी शरीर के माध्यम से अपने नियमों, शक्तियों का प्रदर्शन तो करती है परन्तु जो व्यक्ति किसी से भी ईर्ष्या, द्वेष, जलन नफ़रत न करता हो, न ही बदले की भावना रखता हो, न ही उसमें किसी के प्रति वैर विरोध हो, वह किसी का बुरा न सोचता हो, अपने पराए का भेद न रखता हो, जिसमें क्रोध की भावना न हो और न ही वह किसी को भी अपना दुश्मन मानता हो, उसमें सहनशीलता हो, नेक कर्म, सद्व्यवहार तथा सबसे प्यार करता हो, दूसरों से वैसा ही व्यवहार करता हो जो अपने लिए दूसरों से चाहता हो, ईश्वर से नि:स्वार्थ प्यार करता हो, उसका गुणगान करता हो, उसकी रज़ा में रहने वाला हो, वह हर कार्य प्रभु की इच्छा पर इस विश्वास से छोड़ता हो कि ईश्वर जो करता है ठीक ही करता है, वह किसी भी कार्य के लिए अपने को महत्व न देकर केवल ईश्वर को ही कर्ता मानता हो और सदा ही अपने जीवन में ईश्वर को प्रथम स्थान पर रखता है, तो ईश्वर उस इन्सान पर अपनी कृपा करते हैं। ईश्वर, जिसे परमशक्ति भी कहा गया है, जो सभी शक्तियों की स्रोत एवं स्वामिनी है, अपनी इच्छा से उन इन्सानी शरीरों के माध्यम से अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करती है। परमशक्ति स्वयं पर्दे के पीछे रह कर उन प्रदर्शनों का श्रेय उस इन्सानी शरीर को देती है। परन्तु अपनी शक्तियाँ किसी को भी स्थाई

रूप से नहीं देती क्योंकि इन्सान होता तो विकारों के अधीन ही है। विकारों के अधीन होने के कारण वह किसी से निष्पक्ष हो कर न्याय नहीं कर सकता, न ही शक्तियों को संभाल सकता है तथा न ही उनका सदुपयोग कर सकता है। इसीलिए परमशक्ति अपनी शक्तियाँ किसी इन्सान को नहीं देती।

5. किसी भी इन्सान के पास ऐसी कोई दैवी शक्ति नहीं होती, जिसका प्रयोग वह अपनी इच्छा से कर सके :

किसी व्यक्ति के पास कोई शक्ति नहीं होती, केवल परमशक्ति ही इन्सान की भक्ति और प्यार के आधार पर उसके माध्यम से प्रदर्शन करती है। इसलिए कई बार उस व्यक्ति के द्वारा कही हुई बात सत्य हो जाती है और ऐसा लगता है कि उसके पास कोई दैवी शक्ति है। कई बार उसकी बात पूरी नहीं भी होती। चाहे कोई माध्यम आशीर्वाद दे, प्रार्थना करे, मंत्र का उच्चारण करे, झाड़ फूंक करे, पर शत प्रतिशत वह बात सार्थक या ठीक नहीं होती। जिस पर जितनी कृपा होती है उतना ही उसके द्वारा कही हुई बात सार्थक होती है, अर्थात उसके पास अपनी कोई दैवी शक्ति नहीं होती।

6. परमशक्ति किसी की भी चुनौती स्वीकार नहीं करती:

परमशक्ति अपनी इच्छा से अपना अनुभव देती है । यदि परमशक्ति ने अपनी पहचान न करवाई होती तो न ही भगवान होते, न ही भक्त होते और न ही धार्मिक स्थान होते । परमशक्ति के अस्तित्व दर्शाने के परिणामस्वरुप ही यह सब हुआ है । कितनी ही महान् आत्माएं हुई हैं जिनके माध्यम से परमशक्ति ने असम्भव से असम्भव कार्य भी पूरे कि परन्तु यदि माध्यम अहम् भाव में आकर कहे कि मैं ऐसा कर सकता हूँ या फिर कोई व्यक्ति उसे चुनौती दे कि वह ऐसा पुन: करके दिखाए तो परमशक्ति न तो चुनौती स्वीकार करती है और न ही उस आधार पर कार्य करती है । यदि परमशक्ति ऐसा करने लग जाए तो परमशक्ति का अनुभव प्राप्त करना तो बहुत सरल है । इसलिए उसके होने या न होने का द्वंद बना रहता है ।

7. परमशक्ति अपनी इच्छा से ही अपना अस्तित्व सिद्ध करती है:

परमशक्ति अपना अस्तित्व केवल अपनी इच्छा से ही दर्शाती है । कितने ही लोग परमशक्ति की तलाश में निकले परन्तु उनमें से अधिकतर को निराशा ही हाथ लगी । कई बार इन्सान की कोई इच्छा भी नहीं होती पर परमशक्ति उसके साथ संपर्क स्थापित कर लेती है और अपना अस्तित्व दर्शा देती है । परन्तु कोई इन्सान अपनी इच्छा से परमशक्ति के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सकता

8. परमशक्ति अपना अस्तित्व प्राकृतिक ढंगों से दर्शाती है :

परमशक्ति उसे ही अपना अनुभव देती है जो उसके अस्तित्व में विश्वास रखता हो। शक्ति तो केवल शक्ति है। आज तक परमशक्ति को किसी ने धरा पर आए हुए नहीं देखा। परमशक्ति जब स्वयं अदृश्य से सदृश्य बन कर धरा पर आती है केवल तब ही वह अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन क्रियात्मक रूप में करके अपना □□□□□□□□□ सिद्ध करती है। परमशक्ति अपने नियमों में रह कर प्रमाण भी देती है। उसके सभी प्रदर्शन प्राकृतिक होते हैं।

यही मुख्य कारण हैं कि आज तक कोई भी परमशक्ति के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सका। परमशक्ति ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है। इसी तरह नास्तिक और आस्तिक का जोड़ा है। जिसे परमशक्ति अनुभव दे देती है, उसका विश्वास जहाँ बना देती है वह वहीं स्थिर हो जाता है। उसका विश्वास, श्रद्धा, प्यार उस जगह, उस रूप के साथ हो जाना स्वाभाविक है, पर जिसकी इच्छा पूरी नहीं होती उसको यह सब पाखंड, अर्थहीन, बेमतलब लगता है। जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते उनके हजारों ही प्रश्न होते है, हजारों ही तर्क हैं कि ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं है, सब कुछ अपने आप ही हो रहा है। पर जो ईश्वर को मानते हैं, उनके अपने ही प्रश्न हैं और अपने ही तर्क हैं। जिस को परमशक्ति अनुभव दे दे, उसके लिए परमशक्ति है। जिसको अनुभव न दे उसके लिए नहीं है। क्या परमशक्ति ही किसी को नास्तिक या आस्तिक बनाती है ? नीचे कुछ कारण दिए गए □□□ जिनके फलस्वरूप इन्सान आस्तिक या नास्तिक बनता है।

1. वातावरण और परिस्थितियां :

इन्सान के आस्तिक या नास्तिक होने में वातावरण और परिस्थितियों का बहुत योगदान होता है जैसे माता-पिता के संस्कार, शिक्षा और घरेलू हालात भी इन्सान को आस्तिक या नास्तिक बनाते हैं। ज़्यादातर इन्सान माता-पिता की शिक्षा और जो वे करते हैं, उनके प्रभाव में ही जीवन गुज़ार देता है। जो माता पिता ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं और उनका विश्वास दृढ़ होता है, तो उनके बच्चे भी ईश्वर में विश्वास करने वाले होंगे। जो माता पिता नास्तिक होते हैं या अस्थिर मानसिकता वाले होते हैं उनके बच्चे भी नास्तिक और अस्थिर मानसिकता वाले ही होंगे। इसी तरह इन्सान के मन पर संगति और हालात का प्रभाव पड़ता है। अगर इन्सान की संगत धार्मिक व्यक्तियों से है या उसका रोज़गार या दिनचर्या इस तरह का है जहाँ उस को ईश्वरीय या धार्मिक वातावरण में रहना पड़ता है तो भी इन्सान आस्तिक बन जाता है। उसके विपरीत जिस इन्सान की संगति नास्तिक व्यक्तियों के साथ है या उसका रोज़गार या दिनचर्या इस तरह के वातावरण में है जहाँ नास्तिक या नास्तिक विचारधारा का प्रभाव है तब भी इन्सान नास्तिक बन जाता है।

2. कर्मफल का सिद्धांत:

ईश्वर का कर्मफल देने का सिद्धांत है कि "*दूसरों से वैसा ही व्यवहार करो जैसा कि आप अपने लिए दूसरों से चाहते हो* " इन्सान अपने जीवन में कुछ अच्छे और कुछ बुरे कर्म करता है, इसलिए उसका जीवन सुख दुःख का मिश्रण होता है। परमशक्ति कर्मफल दाता है। जब इन्सान को कर्मफल के आधार पर दुःख मिलता है तब वह कई जगह भटकता है, पर जब उसको राहत नहीं मिलती तो उसका विश्वास ईश्वर के ऊपर से उठ जाता है और वह नास्तिक बन जाता है। उसके विपरीत जिसके पूर्व जन्म के कर्म अच्छे होते है, चाहे वह ईश्वर को नहीं मानते, उसको जीवन साथी ऐसा मिल जाता है या ऐसी संगत मिल जाती है, जिससे उसके मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा बन जाती है। जब कभी उसके जीवन में दुःख आता है, तब चाहे वह अनमने भाव से भी प्रार्थना करता है, उसकी प्रार्थना सुनी जाती है। जिसके साथ ही उसकी श्रद्धा दृढ़ विश्वास में बदल जाती है भाव वह नास्तिक से आस्तिक बन जाता है।

3. प्रभु इच्छा :

प्रभु इच्छा से भी इन्सान नास्तिक से आस्तिक बन जाता है। जैसे एक इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता पर उसकी बुद्धि, निडरता, ईमानदारी, नम्रता, सभी को प्यार करने की आदत को देखते हुए ईश्वर अपनी इच्छा से भी इन्सान को आस्तिक बना देते हैं। उसको इस तरह के अनुभव देते हैं कि उसको ईश्वर के अस्तित्व को मानना ही पड़ता है। उसी तरह जब इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को तो मानता है पर मन, वचन और कर्म से दुष्कर्म करता है, ईश्वर के बताए नियमों की परवाह नहीं करता तब ईश्वर उसको अपने से दूर कर देते हैं, जिस कारण इन्सान दुष्कर्म करता जाता है। अत: नास्तिक बन जाता है।

16
परमशक्ति अपनी सर्वोच्चता सदैव बनाए रखती है

जैसा कि आप सब जानते हैं कि श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है, यहाँ आध्यात्मिक शिक्षा का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जा रहा है। इस दरबार की स्थापना परमशक्ति ने स्वयं की है जो सृष्टि की रचयिता, पालनकर्ता और संहारकर्ता है। जिसके हाथ में इन्सान का जीवन-मृत्यु, लाभ-हानि, मान-अपमान, सफलता-असफलता, खुशी-गमी और सुख-दुःख है, जो कर्मफल दाता है, जिसके पास इन्सान ने शरीर छोड़ कर जाना है, जिसकी आवाज़ सुन कर जन्म-जन्म के पाप कट जाते हैं, वही शक्ति है जो इन्सान के अंदर भी है बाहर भी है, कण-कण में मौजूद है, वह ही सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है।

सत्य पर चलना ईश्वर का धर्म है, सभी के साथ न्याय करना उनका कर्म है और सभी से प्यार करना उनका नियम है।

जिसकी आराधना ऋषि-मुनि, संत-फकीर, देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान करते हैं, जिसे लोग ईश्वर, अल्लाह, वाहिगुरु, गॉड, राधास्वामी, निरंकार, शिव, ब्रह्म आदि नामों से पुकारते हैं। जो उस शक्ति को स्त्री रूप में मानते हैं वे उसे माँ दुर्गा, अम्बे, जगदम्बे, जगत जननी, जगदीश्वरी, महेश्वरी, महा-माया आदि नामों से पुकारते हैं। जो उसे किसी भी रूप में नहीं मानते वे उसको कुदरत, प्रकृति, अदृश्य शक्ति, नेचर, अनजान शक्ति और अनाम शक्ति आदि नामों से पुकारते हैं।

समाज में भी बहुत से भ्रम हैं। कोई कहता है कि ईश्वर है, कोई कहता है कि ईश्वर नहीं है। जो कहते हैं कि ईश्वर है, उनमें भी बहुत मतभेद हैं। कोई कहता है वह साकार है, कोई कहता है निराकार है और कोई कहता है कि वह निराकार होते हुए भी साकार और साकार होते हुए भी निराकार है। ईश्वर को साकार रूप में मानने वालों में भी मतभेद हैं। कोई उसे ब्रह्म, कोई राम, कोई शिव, कोई कृष्ण अथवा कोई यीशु भी मानते हैं। जो जिस रूप को मानता है वह दूसरे रूपों का खण्डन कर देता है। ईश्वर को निराकार रूप में मानने वाले भी उसको अनेक रूपों में मानते हैं जैसे बिंदु, चिराग, शिवलिंग, ओम्, एक ओंकार □ कोई उसको कैंडल के रूप में मानता है □ जो जिस रूप में मानता है वह उसको ही सर्वोच्च कहता है।

वास्तव में सर्वोच्च कौन है और क्यों है ? और वह सर्वोच्चता कैसे बनाए रखता है ?

जब कुछ भी नहीं था तब भी वह अदृश्य शक्ति मौजूद थी। उसी अदृश्य शक्ति ने, जो अनादि और अनन्त है, इस सृष्टि की रचना की। जीव, निर्जीव बना कर उनको नियमों में बाँधा। जब सब कुछ बन कर तैयार हो गया, उसके बाद इन्सान अस्तित्व में आया। इन्सान और हर जीव नियमों में बंधा हुआ है, जैसे बाल अवस्था, बचपन, जवानी, अधेड़ और बुढ़ापे की अवस्था में से गुज़रना □ निश्चित समय तक हर जीव के शरीर का विकास होना और फिर रुक जाना □ यह सब कुछ सुनियोजित ढंग से नियमों में बंधा हुआ है। इसका अर्थ है कि यह सब कुछ बनाने वाला और नियमों में बान्धने वाला इन्सान नहीं है। इसलिए इन्सान सर्वोच्च नहीं हो सकता। इसका अर्थ है कि जो कुछ भी सृष्टि में बना है वह

इन्सान ने नहीं बनाया जबकि इन्सान प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है । इस से सिद्ध होता है कि इन्सान सर्वोच्च नहीं है । तो फिर सर्वोच्च कौन है ?

सर्वोच्च वही अदृश्य शक्ति है जिसने इस सारी सृष्टि की रचना की है, उसको ही सर्वोच्च शक्ति या परमशक्ति कहा गया है जिसके लिए कुछ भी असंभव नहीं । इससे यह स्पष्ट है कि परमशक्ति ने जीव-निर्जीव की रचना के बाद इन्सान की रचना की और उसे अपना अनुभव करवाया । अनुभव के आधार पर इन्सान ने जितनी श्रद्धा, लगन, विश्वास और भक्ति की, उसके अनुसार इन्सानों में से ही सर्वोच्च शक्ति ने किसी को देवी-देवता, किसी को वीर-पीर, किसी को भगवान, किसी को शक्ति और किसी को महाशक्ति बना दिया । इसका अर्थ है कि परमशक्ति के अतिरिक्त कोई भी सर्वोच्च नहीं है । परमशक्ति के अतिरिक्त सब उसकी रचना है और रचना कभी भी रचयिता से बड़ी नहीं होती । उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि सर्वोच्च केवल परमशक्ति है ।

अब प्रश्न है कि जो सर्वोच्च है वह अपनी सर्वोच्चता कैसे बनाए रखता है ?

एक साधारण सी बात है कि जो सर्वोच्च होता है वह कभी नहीं चाहता कि कोई उसके आदेश या आज्ञा का उलंघन करे । इसी तरह परमशक्ति भी अपनी सर्वोच्चता बनाए रखने के लिए अपनी आज्ञा और आदेश का उलंघन नहीं चाहती □ जो इन्सान परमशक्ति की कही हुए बात को नहीं मानता, शक्ति चाहे निराकार में हो या साकार में, अर्थात आदेश किसी माध्यम के द्वारा दिया गया हो या स्वयं दिया हो, तो उसे कष्ट परेशानियों का सामना करना पड़ता है । महाभारत में श्री कृष्ण जी ने कौरवों को केवल पांच गांव पाण्डवों को देने के लिए कहा था, ताकि युद्ध की स्थिति को टाला जा सके □ पर कौरवों ने भगवान श्री कृष्ण जी की कही हुई बात को नहीं माना और इसका नतीजा कौरवों को भुगतना पड़ा □ युद्ध में असफलता का मुंह देखना पड़ा और उसके साथ-साथ सारा राज-पाट हाथों से निकल गया । इसी तरह भगवान श्री राम जी ने अपने दूत के हाथ सन्देश भेजा कि लंकापति रावण आदर सहित सीता उन्हें सौंप दें □ वह लंकापति रावण को माफ कर देंगे और लंका पर चढ़ाई नहीं करेंगे □ पर लंकापति रावण ने अहम् में आकर भगवान श्री राम जी के सन्देश को ठुकरा दिया □ फलस्वरूप रावण को युद्ध का सामना करना पड़ा और उसके सारे रिश्तेदार काल का ग्रास बने और उसको असफलता का मुंह देखना पड़ा ।

आज परमशक्ति का ऐलान है कि वह निराकार से साकार बनी है, यह शरीर उसका है और उसका नाम मदन है । पहले भी परमशक्ति स्वयं धरती पर आती रही है पर उसका इतिहास कहीं नहीं मिलता । अपने साकार रूप में परमशक्ति ने अलग-अलग केन्द्रों की स्थापना करवाई है और केन्द्र संचालक नियुक्त किए हैं जिनके माध्यम से परमशक्ति वहाँ आने वाले श्रद्धालुओं से संबोधित होती है । साकार रूप में भी जब कोई श्रद्धालु उनकी आज्ञा या आदेश का पालन नहीं करता तो उसका नतीजा ठीक नहीं निकलता भाव उस व्यक्ति को दुखों-कष्टों का सामना करना पड़ता है । जब तक वह अपनी गलती के लिए पश्चाताप करते ंकिसी माध्यम के द्वारा ही दिया गया हो, उसे राहत नहीं मिलती । सदृश्य रूप में परमशक्ति ने स्पष्ट किया है कि मैं कभी भी नहीं चाहती कि कोई मेरी आज्ञा या आदेश का उलंघ्घन करे । जिसने ऐसा किया उसको सजा भुगतनी ही पड़ी ।

अपनी सर्वोच्चता को बनाए रखने के लिए परमशक्ति ने कर्मफल देने का अधिकार केवल अपने पास रखा है क्योंकि परमशक्ति के अलावा कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं होता। इसलिए इन्सान के द्वारा किए गए कर्मों का फल केवल परमशक्ति ही देती है। देवी-देव, वीर-पीर, भगवान किसी सीमा तक इन्सान की सांसारिक मनोकामनाएं तो पूरी कर सकते है◌ं पर इन्सान के द्वारा किए गए कर्मों का फल नहीं दे सकते। कर्मफल दाता केवल परमशक्ति ही होती है।

परमशक्ति ही इन्सानों में से देवी-देव, वीर-पीर, और भगवानों का चयन करती है। ऐसा परमशक्ति के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता क्योंकि कर्मफल दाता केवल वही है। परमशक्ति इन्सानों द्वारा की गई भक्ति श्रद्धा, प्यार, विश्वास, लगन और सद्कर्म का फल देने के लिए उन्हें साधारण से महान् आत्मा बनाती है। आज भी परमशक्ति सदृश्य रूप में साधारण इन्सानों में से ही देवी-देव, वीर-पीर आदि रूपों में स्थान दे कर महान् बना रही है और क्रियात्मक रूप में सिद्ध कर रही है कि उसके अतिरिक्त कोई भी किसी को देवी-देव, वीर-पीर और भगवान नहीं बना सकता भाव अपनी सर्वोच्चता को बनाए रखने के लिए यह अधिकार भी केवल अपने पास ही रखा है।

समय समय पर जितनी भी महान् आत्माएं या माध्यम धरती पर आए वह चाहे देवी देव, वीर-पीर, भगवान, रसूल, पैगम्बर आदि हैं, सभी को परमशक्ति ने बेबस, लाचार और मजबूर रखा, क्योंकि वास्तव में कर्ता केवल परमशक्ति ही है। वह अपनी इच्छा से जिस का जितना महत्व रखना चाहे उतना ही उसके माध्यम से प्रदर्शन करती है। इस तरह संसार में जितनी भी महान् आत्माओं के या अन्य माध्यमों के स्थान हैं वहां हर इन्सान को जा कर लाभ नहीं होता। किसी को किसी स्थान पर जा कर लाभ होता है, किसी को किसी स्थान से लाभ होता है। इसके अलावा जितनी भी महान् आत्माओं का परमशक्ति से संपर्क रहा, परमशक्ति ने अपनी माया का पूर्ण भेद किसी को भी नहीं दिया। इसलिए उन महान् आत्माओं को अंत में यही कहना पड़ा कि "हे ईश्वर ! तू बेअंत, तेरी माया बेअंत, तेरीयां तू ही जाने।" परमशक्ति ने आज तक किसी भी माध्यम के द्वारा अपने बारे में पूर्ण ज्ञान नहीं दिया और न ही कोई माध्यम ईश्वर को क्रियात्मक रूप में सिद्ध कर सका है। जितना भी ईश्वर ने उनको अनुभव दिया उन्होंने उतना ही मौखिक रूप में ज्ञान दिया तथा अपने अनुभव को कलमबद्ध किया।

उपरोक्त विवरण सिद्ध करता है कि कैसे परमशक्ति अपनी सर्वोच्चता हमेशा बनाए रखती है। उसका मुख्य कारण है कि केवल परमशक्ति ही अनादि-अनंत, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है उसके अलावा सब कुछ उसकी रचना है □ रचना कभी □□ सर्वोच्च नहीं हो सकती। उसको किसी न किसी के आगे झुकना ही पड़ता है और जो रचयिता है वह किसी के आगे नहीं झुकता, उसकी रचना को ही उसके आगे झुकना पड़ता है।

17

इन्सान आस्तिक से नास्तिक और नास्तिक से आस्तिक क्यों और कैसे ?

प्राय: देखने में आया है कि कुछ इन्सान आस्तिक से नास्तिक बन जाते हैं, कुछ नास्तिक से आस्तिक बन जाते हैं। उसके पीछे क्या कारण है कि इन्सान के अंदर यह परिवर्तन होता है। इसको समझने से पहले यह समझना ज़रुरी है कि नास्तिक कौन है और आस्तिक कौन है ? समाज में ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाले को आस्तिक कहा जाता है और जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता है वह नास्तिक है। श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। परमशक्ति श्री मदन जी अध्यात्मवाद के हर पहलू का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रहे हैं। परमशक्ति ने संसार में हर चीज़ का जोड़ा बनाया है। उसी तरह से आस्तिक और नास्तिक का भी जोड़ा बनाया है। वास्तव में नास्तिक होना या आस्तिक होना अधिकतर पूर्व जन्म के कर्मों पर आधारित होता है। जिस को परमशक्ति अनुभव दे देती है, वह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार कर लेता है। जिस को परमशक्ति अपना अस्तित्व नहीं दर्शाती वह नास्तिक बन जाता है। जो परमशक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करता है वह आस्तिक है पर इसमें भी कुछ श्रेणियाँ हैं, स्तर हैं, क्योंकि प्रत्येक की आस्था विश्वास अलग-अलग हैं, इष्ट भिन्न-भिन्न हैं, पूजा पद्धती अलग-अलग है पर ये सभी आस्तिक माने जाते हैं।

कुदरत या नेचर रूप में मानना:

जो लोग़ मानते हैं कि इस सृष्टि को रचने वाली कोई शक्ति ज़रूर है जिसने इस ब्रह्मण्ड की रचना की है वह कुदरत है, नेचर है, जो कुछ भी हो रहा है वह कुदरत के ही करिश्मे हैं वे नेक कर्म करते हैं, अपना जीवन सरल ढंग से जीते हैं किसी का दिल नहीं दुखाते, अपने परिवार की देखभाल ठीक ढंग से करते हुए अपने फ़र्ज़ पूरे करते हैं। मानवता की भलाई में विश्वास रखते हैं और दूसरों को वहमों, भ्रमों और आडम्बरों से बाहर निकलाने का यत्न करते हैं।

देवी देवों या वीरों पीरों को मानना:

इस संसार में असंख्य लोग हैं जो अज्ञानतावश या अपने माता-पिता के संस्कारों के कारण देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। उनको ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान मानते हैं। उन भोले-भाले लोगों को पता ही नहीं होता कि इनके आगे भी कोई है जिसकी उनके इष्ट भी अराधना करते हैं। उनका जीवन इनकी पूजा पाठ तक ही सीमित रहता है।

भगवानों, महान् आत्माओं और गुरुओं के रूप में मानना:

परमशक्ति अनन्त गुणों की स्वामी है। उसकी माया बेअंत है जो इन्सान की बौधिक सीमा से परे है। उसे शब्दों में कहा नहीं जा सकता, विचारों से समझा नहीं जा सकता। इसलिए ज़्यादातर इन्सान ईश्वर को भगवानों के रूप में याद करते हैं या उन महान् आत्माओं के रूप में याद करते है जिन्होंने धर्मों की स्थापना की, समाज को नई दिशा दी, जीवन जीने की राह बताई, गुरु बनकर ईश्वर के गुणों नियमों का ज्ञान दिया। इन्सान ईश्वर को उन रूपों में याद करके और उनसे प्यार करके ईश्वर की निकटता

और ईश्वर के गुणों को महसूस करता है । परमशक्ति भी उन महान् आत्माओं के प्यार और भक्ति के अनुसार लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण करती है, उनका विश्वास, श्रद्धा, प्यार अपने इष्ट के प्रति बनाती है।

इन्सान◌ो◌ं की उपरोक्त दी गई श्रेणियों को आस्तिक कहा जाता है । जो इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को किसी रूप में भी स्वीकार करता है वह आस्तिक ही है क्योंकि कर्ता तो हर रूप में परमशक्ति ही है परन्तु वास्तव में आस्तिक वह है जो परमशक्ति तक पहुँच जाता है । परमशक्ति तो अदृश्य है उसे आँखों से नहीं देखा जा सकता पर इन्सान उसकी पूजा करना चाहता है । साधु सन्यासी तो निराकार का चिंतन-मनन कर सकते हैं पर गृहस्थी लोगों के लिए चिंतन-मनन करना, पूजा-भक्ति करना, ध्यान को केंद्रित करना बहुत कठिन होता है । इसलिए गृहस्थी लोगों को ध्यान को केंद्रित करने के लिए कोई न कोई रूप चाहिए होता है ।

ऊपर जो भी श्रेणियाँ दी गई हैं उनकी पूजा, भक्ति फलदायक तो है, पर ये सब आराध्यदेव तो हो सकते हैं पर इष्ट नहीं हो सकते । सब की इष्ट तो परमशक्ति है । देवी-देवता, भगवान, महान् आत्माएं, गुरु आदि किसी न किसी विचारधारा का प्रतीक हैं वह भी उस परमशक्ति की आराधना करते रहे हैं । परमशक्ति ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनका प्रयोग किया इसलिए उनका महत्व रखना भी ज़रुरी है । इसलिए इन्सान का भी फ़र्ज़ है कि वह उस कर्ता की पहचान करे, उसके गुणों शक्तियों को जाने, उससे प्यार करे, फिर रूप चाहे कोई हो, अगर इन्सान परमशक्ति के गुणों का ध्यान करके उसके मान्यता प्राप्त रूप को याद करता है तो वह परमशक्ति को ही याद करता है । परमशक्ति ने इन्सान की सहूलियत के लिए अपनी पूजा के लिए चार रूपों को मान्यता दी है ।

1. निर्जीव चिह्नों को अपने रूप में मान्यता देनी ।
2. सजीव रूप में मान्यता देनी ।
3. इन्सानी शरीर धारण करके मान्यता देनी ।
4. इन्सानी रूप में स्वयं आना ।

परमशक्ति जो भी करती है इन्सान के हित में ही करती है। परमशक्ति ने जो भी बनाया है इन्सान के लिए बनाया है □ इसलिए उसके अस्तित्व को मानना और जो मिला है उसके लिए दाता का शुक्रगुज़ार होने वाला ही वास्तव में आस्तिक है ।

वास्तव में नास्तिक कौन है ?

जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता वही नास्तिक है □ क्योंकि ईश्वर ने इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले ही उसकी ज़रूरत का हर प्रबन्ध सुनियोजित ढंग से किया । उसकी खुराक, हवा, पानी, वातावारण, मौसम, ऋतुओं आदि का प्रबन्ध किया और उन्हें नियमों में बांधा । क्या इन में से किसी भी चीज़ के कम या ज्यादा होने से इन्सान का जीवन संभव हो सकता है । कौन है जिसने इन्सान के लिए सब कुछ बनाया ? जीव के पैदा होने से पहले उसकी माँ में दूध पैदा किया है । सारी सृष्टि के जीवों के अन्दर मोह ममता डाली, प्यार की भावना पैदा की । इन्सान को बुद्धि, भाषा, लिपि, मिलजुल कर समाज में रहने की भावना दी । सारी सृष्टि बनाई, नियमों में बांधी । जिसने यह सब किया है क्या उसके उपकारों को भूलना चाहिए ? जो किसी के किए उपकारों को भूल जाए उसे कृतघ्न कहा जाता है । जो इन्सान उस सबसे बड़े दाता को ही भूल जाए और कहे कि यह सब तो अपने आप ही हो रहा है तो उससे बड़ा कृतघ्न और कौन हो सकता है ? ऐसा इन्सान नास्तिक है ।

वास्तव में नास्तिक वह है जो अपने दुखों और कष्टों के लिए ईश्वर को दोषी मानता है। परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्री मुख से ज्ञान दिया है कि इन्सान जो कर्म करता है उसका फल पाने के लिए जन्म लेता है और इन्सान के जीवन में जो भी सुख दुःख आते हैं उसके आधार पर ही आते हैं। इसलिए जब इन्सान उसके अस्तित्व को तो मानता है पर अपने दुखों के लिए ईश्वर को दोषी मानता है, उसको बुरा-भला कहता है तब वह एक और अपराध कर रहा होता है। इसलिए इस तरह के इन्सान भी नास्तिक ही होते हैं।

वह इन्सान भी नास्तिक है जो अपने स्वार्थों के पूरा न होने पर ईश्वर को दोषी मानते हैं और अपनी किस्मत को कोसते हैं। कुछ लोग इस तरह के होते हैं जो कर्मफल या पुनर्जन्म को नहीं मानते, उनका मानना है कि न ही कोई कर्मफल है न ही अगला जन्म है वे केवल वर्तमान में ही विश्वास करते हैं, वह इन्सान भी नास्तिक हैं। कर्मफल भोगने के लिए पुनर्जन्म होना है, कर्मफल दाता ने ही कर्मफल के आधार पर पुनर्जन्म देना है। कर्म, कर्मफल, कर्मफल दाता, पुनर्जन्म, जीवन की ही कड़ियाँ हैं। एक को भी न मानना नास्तिकता है।

आस्तिक व्यक्ति नास्तिक क्यों बनता है?

1. जब इन्सान ईश्वर को पाने के लिए अपने कदम आगे बढ़ाता है तो उसके मार्ग में कई रुकावटें आती हैं, क्योंकि हर इन्सान ईश्वर के पास नहीं पहुँच सकता। मुश्किलें सिर्फ उनके सामने ही आती हैं जो ईश्वर प्राप्ति की इच्छा रखते हैं। जब इन्सान को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है त ो वह हताश निराश हो जाता है और ईश्वर से बेमुख होने लगता है।

2. जब इन्सान ईश्वर को पाने के लिए आगे बढ़ता है तो ईश्वर भी उस व्यक्ति की परीक्षा लेते हैं कि इन्सान का विश्वास कहाँ तक है। इसलिए ईश्वर उसके सामने विपरीत परिस्थितियां पैदा कर देतें हैं। अपने तक पहुँचाने के लिए ईश्वर, इन्सान को हर तरह से मिट्टी में मिला देते हैं। जब इन्सान शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक तौर पर मिट्टी में मिलने लगता है तो उसका विश्वास डोल जाता है, क्योंकि हर इन्सान ईश्वर की परीक्षा में सफल नहीं हो सकता।

3. ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखने वाला व्यक्ति जब श्रद्धा, विश्वास, लगन के साथ ईश्वर का जप-तप करने लगता है और अपना जीवन ईश्वर के सिद्धान्तों पर चल कर ही व्यतीत करता है। वह किसी से इर्ष्या, द्वेष, नफरत नहीं करता, पर इसके बावजूद भी अगर ईश्वर उसको अपना अनुभव नहीं करवाते तो भी इन्सान घबरा जाता है क्योंकि इन्सान नि:स्वार्थ कुछ नहीं करता। जब इन्सान का स्वार्थ पूरा नहीं होता तो उसकी दिलचस्पी कम होने लग जाती है। जब इन्सान का मनोरथ पूरा होता नज़र नहीं आता तब आस्तिक व्यक्ति का विश्वास भी डोल जाता है और अंत में व्यक्ति नास्तिक हो जाता है।

4. इन्सान अपनी पहुँच और अपने सामर्थ्य से ज्यादा पाने का लालच रखता है पर मिलता उतना ही है जितना उसके भाग्य में होता है। जब इन्सान सख्त मेहनत करता है, साहस और ईमानदारी से आगे बढ़ने की कोशिश करता है पर उसको सफलता नहीं मिलती, तो वह ईश्वर के सम्मुख बार-बार प्रार्थना करता है और ईश्वर से सहायता की उम्मीद करता है, पर जब उसको सहायता नहीं

मिलती, उसको लगता है कि कोई है ही नहीं, जो उसके प्रार्थना सुने। व्यक्ति निराश हो जाता है और ईश्वर से विमुख हो जाता है।

5. हर व्यक्ति को कर्म फल भोगना पड़ता है। परमशक्ति का नियम है कि वह इन्सान को उसके द्वारा किए गए हर कर्म का फल देती है चाहे वह दुष्कर्म हों या सद्कर्म हों। इन्सान अपने जीवन में कुछ नेक कर्म करता है, कुछ दुष्कर्म करता है। इसलिए उसका जीवन सुख और दुःख का मिश्रण होता है। जब इन्सान जीवन में दुष्कर्मों का फल भोगता है तो उसे कठिनाइयों, दुश्वारियों, परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इन्सान इन सबसे राहत पाने के लिए ईश्वर को याद करता है और उन सभी स्थानों पर जाता है जहां पर उसको अपेक्षा होती है और वह सब कुछ करता है जिससे उसे लगता है कि उसे कठिनाइयों से राहत मिलेगी। परन्तु जब ऐसा नहीं होता तो इन्सान का धीरे–धीर विश्वास उठने लगता है। इसके अतरिक्त उसके द्वारा पूर्व जन्म में किए गए कर्मों के आधार पर परमशक्ति इन्सान का नया जीवन निश्चित करती है। उसके माता-पिता, बहन-भाई, पति-पत्नी, बच्चे, पारिवारिक वातावरण और वह परिवार आस्तिक होगा या नास्तिक होगा, इन सब बातों का प्रभाव भी इन्सानी जीवन पर पड़ता है और वह व्यक्ति आस्तिकता से नास्तिकता की ओर बढ़ जाता है।

6. मनोबल के आधार पर इन्सान तीन तरह के होते हैं। एक वह जो कठिन कार्य देख कर शुरू ही नहीं करते। दूसरे वह जो शुरू तो करते हैं पर जब रास्ते में बाधाएँ, रुकावटें, परेशानियां आती हैं तो वह घबरा कर वह कार्य छोड़ देते हैं। इस तरह के लोग अध्यात्मवाद में भी जब निराश हो जाते हैं तो वह नास्तिक बन जाते हैं। तीसरी किस्म के वह लोग़ होते हैं जो ईश्वर पर विश्वास करते हुए अपना कर्म करते हैं, बाधाओं ,परेशानियों से घबराते नहीं। ऐसे व्यक्ति ही मंजिल को प्राप्त करते हैं।

7. वो व्यक्ति जो केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ईश्वर की ओर बढ़ते हैं। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ही प्रार्थना करते हैं पूजा अर्चना करते हैं। मगर जब उनका स्वार्थ पूरा नहीं होता तो इस तरह के लोग़ नास्तिक बन जाते है। ईश्वर के होने या न होने का मापदण्ड केवल इच्छाओं की पूर्ति नहीं होता। ईश्वर अपनी इच्छा से ही इन्सान की मनोकामना पूर्ण करते हैं, कष्ट परेशानियों में राहत देते हैं।

नास्तिक से आस्तिक कैसे बनता है:

प्राय: देखने में आता है कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, विश्वास, लगन बहुत होती है परन्तु उनके जीवन में कुछ हालत ऐसे बन जाते हैं, घटनाएँ ऐसे घट जाती हैं कि वह ईश्वर से विमुख हो जाते हैं भाव नास्तिक हो जाते हैं। उसी तरह से कुछ ईश्वर का विरोध करते हैं, उनके अस्तित्व को नहीं मानते पर उनके जीवन में इस तरह के हालत बन जाते हैं, ऐसी घटनाएं घट जाती हैं कि वह नास्तिक से आस्तिक और कई बार आस्तिक से महान् बन जाते है। नीचे कुछ कारण दिए गये हैं जिनके कारण इन्सान नास्तिक से आस्तिक बन जाता है

पूर्व जन्म के संस्कार :

परमशक्ति का यह नियम है कि हर इन्सान को कर्मफल भोगना ही पड़ता है चाहे इन्सान परमशक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करे या न करे। पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर ही इन्सान को सफलता-असफलता, सुख-दुःख, यश-अपयश, लाभ-हानि, घर-परिवार, हालात, वातावरण एवं परस्थितियाँ आदि मिलते हैं। इसी तरह इन्सान का आस्तिक होना भी पूर्व जन्म के संस्कारों पर आधारित होता है। एक इन्सान जो नास्तिक है पर उसके पूर्व जन्म की भक्ति के कारण ईश्वर उसे अपना अनुभव देकर आत्म ज्ञान भी करवा देते हैं फलस्वरूप इन्सान नास्तिक से आस्तिक बन जाता है।

परिस्थितियाँ और हालात :

जैसे कि कहा जाता है कि इन्सान परिस्थितियों का गुलाम है अर्थात् हालात ही इन्सान को नास्तिक या आस्तिक बनाते हैं। इन्सान के जीवन में ऐसे हालात बन जाते हैं, जैसे एक इन्सान मुसीबत में भी फंस जाता है। उसको कोई रास्ता नज़र नहीं आता है फिर कोई उसको सलाह देता है कि ईश्वर के आगे विनती करने से उसकी प्रार्थना ज़रूर सुनी जाएगी। जब इन्सान की प्रार्थना सुनी जाती है और वह मुसीबत में से बाहर निकल आता है। तब उसके मन में ईश्वर के प्रति विश्वास होना स्वाभाविक ही है।

महान् आत्माओं की प्रेरणा:

संसार में समय-समय पर महान् आत्माएं इन्सान को ईश्वर का सन्देश और ज्ञान देती रहती हैं। कई बार इन्सान उन महान् आत्माओं के व्यक्तिगत जीवन से प्रभावित हो कर भी ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार कर लेता है। उनसे ज्ञान प्राप्त करता है और अपने जीवन को सफल बनाता है। जैसे पूर्ण गुरु का मिलना, पूर्ण गुरु अपनी कृपा से ही इन्सान को नास्तिक से आस्तिक बना देता है।

संगति और साथियों का प्रभाव:

कई बार इन्सान को जीवन में इस तरह का साथी मिल जाता है जिसकी आदतें, सोच, विचार, संस्कार आदि इन्सान को इतना प्रभावित करते हैं कि उसके प्रवाह में इन्सान की सोच ही बदल जाती है । जैसे किसी की पत्नी या करीबी दोस्त ऐसा भी मिल जाता है जो दृढ़ विश्वासी, संयमी, ईश्वर को प्यार करने वाला और प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है तब कई बार इन्सान उसके नज़दीक रहने से ही आस्तिक बन जाता है । जैसे कि वर्णन किया गया है कि इन्सान पर संगति और वातावरण का प्रभाव पड़ता है । यदि इन्सान का साथ अच्छे और धार्मिक व्यक्तियों से होता है तो उस पर धार्मिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है जिसके कारण उसके मन में धीरे–धीरे परिवर्तन होने लगता है और वह आस्तिकता की और बढ़ता है ।

ईश्वर-इच्छा के कारण:

जब इन्सान ईश्वर को कुदरत के रूप में मानता है उसका विरोध नहीं करता । वह मानवता के हित में तथा दूसरों के भले के लिए कर्म करता है । वह नेक कमाई करता है, किसी का दिल नहीं दुखाता, सभी से प्यार करने की कोशिश करता है । उसके पूर्व जन्म के कर्म चाहे जैसे भी हों, अगर प्रभु इच्छा हो जाए तो ईश्वर किसी न किसी ढंग से इन्सान को अपना अस्तित्व दर्शा कर उसे आस्तिक बना देते हैं तथा उसके स्वभाव, रूचियों, और आदतों में भी परिवर्तन कर देते हैं ।

महान् आत्माओं की कार्य-प्रणाली में सहायक होना :

ईश्वर तो ज्यादातर अदृश्य रहते हैं □ वह अपना आस्तित्व सिद्ध करने के लिए महान् आत्माओं को धरा पर भेजते है □ उन महान् आत्माओं के कार्य को पूरा करने के लिए सेवादारों, सहायकों और श्रद्धालुओं को भी उनके पास भेजते हैं । परमशक्ति ही लोगों को उन महान् आत्माओं के द्वारा प्रमाण देकर और उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करके अपना अस्तित्व सिद्ध करती है । इस तरह कुछ नास्तिक लोग़ भी आस्तिक बन जाते हैं ।

अंत में यही कहना है कि हर चीज का जोड़ा है □ एक के बिना दूसरे का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि एक के गुण दूसरे के विपरीत होते हैं । ईश्वर ने जो कुछ भी बनाया है उचित है । ईश्वर ने हर चीज का सन्तुलन बनाए रखने के लिए ही जोड़ा बनाया है । इस लिए यह सब ईश्वर-इच्छा पर ही निर्भर करता है । परमशक्ति ने ही सृष्टि का कार्य सुचारू ढंग से चलाने के लिए हर चीज का जोड़ा बनाया है और बनाए रखना आवश्यक भी है ।

18
परिवर्तन कुदरत का नियम क्यों और कैसे?

यह तो हम सब जानते ही हैं कि जो कुछ भी हम देख रहे हैं वह परिवर्तनशील है अर्थात् कुछ भी स्थाई नहीं है । हर जीव निर्जीव की एक निश्चित उम्र होती है । समय के अनुसार उसमें परिवर्तन आता है और फिर परिवर्तन के बाद एक नया सृजन होता है।

पर यह परिवर्तन क्यों होता है ? इसलिए सब से पहले यह जानना ज़रुरी है कि कुदरत या प्रकृति क्या है ? परिवर्तन क्या है ? उसका क्या अर्थ है ? क्या महत्व है ? परिवर्तन का क्या उद्देश्य है ? उसका कार्यक्षेत्र क्या है ? यह कैसे होता है ? क्या यह अपने आप हो रहा है या कोई कर रहा है ? जब हम गहराई से इसका अध्ययन करते हैं तो सहज ही समझ में आ जाता है कि कोई है जो यह परिवर्तन कर रहा है । उसी को ही कुदरत, नेचर, ईश्वर, अल्लाह, गॉड, वाहिगुरु, निरंकार, राधा-स्वामी आदि नामों से पुकारा जाता है ।

कुदरत क्या है ?

कुदरत एक ऐसी अदृश्य शक्ति है जो दिखाई तो नहीं देती, पर महसूस की जा सकती है । जो काम इन्सान की सोच, समझ, सामर्थ्य से दूर होने के बावजूद भी हो जाए तो उस कार्य को कुदरती तौर पर होना कहा जाता है । जिसने धरती, सूर्य, चाँद, सितारे, आकाश, जीव-निर्जीव, दृश्य-अदृश्य वस्तुएँ बनाईं और नियमों में बांधी उसे ही कुदरत कहा जाता है । जैसे तरह-तरह की वनस्पति का पैदा होना, दिन-रात का बदलना, ऋतुओं का बदलना आदि कार्य इन्सान नहीं कर सकता तो फिर वह कौन है जो यह सब करता है ? उसको ही विज्ञान ने कुदरत या प्रकृति कहा है । आध्यात्मवादी उसे एक शक्ति मानते हैं जिसने यह सब कुछ बनाया है क्योंकि अपने आप तो कुछ नहीं बनता है और न ही नियमों में बंधता है । यह सब कुछ नियमों में बंधा है और नियमों के अधीन ही काम हो रहा है । जिसने भी इसको नियमों में बांधा है उसे ही कुदरत, प्रकृति, परमशक्ति या ईश्वर कहा जाता है । विज्ञान और अध्यात्मवाद में मतभेद है । विज्ञान का मत है कि एक शक्ति से ही यह सब बना है पर वह चेतन नहीं है, वह जड़ है, परन्तु आध्यात्मवादी मानते हैं कि ईश्वर एक शक्ति है जो निराकार है पर वह जड़ नहीं चेतन है । उसने अपनी इच्छा से ही सृष्टि की रचना की है । वह शक्ति ही समय और इन्सान की ज़रूरत के अनुसार परिवर्तन करती है । किसी नतीजे पर पहुँचने से पहले यह जानना ज़रुरी है कि परिवर्तन या बदलाव क्या है ।

परिवर्तन किसे कहते हैं ?

कुदरत ने अपने और इन्सान के कार्यक्षेत्र में एक सीमा रेखा खींच रखी है। जो काम इन्सान की पहुँच से बाहर हैं, वह काम कुदरत करती है । जैसे धरती के अंदर उपजाऊ शक्ति है, खनिज पदार्थ हैं, पैट्रोलियम है, तरह-तरह की वनस्पतिआँ है, नदियाँ हैं, पहाड़ हैं, क्या यह किसी इन्सान ने बनाए हैं ? इसका उत्तर है नहीं, तो फिर प्रश्न पैदा होता है यह सब किसने बनाए है ? विज्ञान का मत है यह सब एक बहुत बड़े परिवर्तन का नतीजा है। समय और परिस्थितियों में जो भी उल्ट फेर या बदलाव होता है उसको ही परिवर्तन कहा जाता है। हर तरह के परिवर्तन में कुछ ना कुछ नवीनता होना उसका स्वाभाविक गुण है। नवीनता के कारण ही एक रोचकता हमेशा बनी रहती है । परिवर्तन सृष्टि पर हर तरफ से प्रभाव डालता है। परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जो कुदरत का स्वाभाविक गुण है। परिवर्तन की गति

और गुणवता में हमेशा भिन्नता पाई जाती है। परिवर्तन के होने से ही कुदरत के महत्व और ज़रूरत का पता चलता है। परिवर्तन ही इन्सान को नित्य नई खोज करने के लिए उत्साहित करता है। कुदरत के परिवर्तनों का नीचे दिए गए अनुसार वर्गीकरण किया जा सकता है।

भौतिक परिवर्तन (Physical Changes) :

वह परिवर्तन जो पृथ्वी के अंदरूनी और बाहरी वातावरण और जन-जीवन को प्रभावित करता है, वह भौतिक परिवर्तन होता है।

आवर्ती परिवर्तन (Regular Changes) :

वह परिवर्तन जो एक निश्चित समय और निश्चित नियम के अनुसार लगातार जारी रहता है, उनको आवर्ती परिवर्तन कहा जाता है। इन परिवर्तनों में एक पल का भी हेर-फेर नहीं हो सकता अगर एक पल का भी हेर-फेर हो जाए तो बहुत उलट फेर हो सकता है। कुदरत ने इन नियमों को लागू किया है जैसे धरती के अपनी धुरी के गिर्द घूमने से दिन और रात का होना। इसी तरह से समुद्र में आने वाले बड़े ज्वार पूर्णिमा या अमावस्या को ही आते हैं। इसी तरह इस सौरमण्डल के ग्रह और उपग्रह एक निश्चित गति में गतिमान हैं, उनकी गति के साथ ही सृष्टि चक्र सुचारू रूप से चलता है।

ऋतु परिवर्तन (Weather Changes) :

धरती का जो हिस्सा सूर्य के ठीक सामने होता है जिस पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, वहां गर्मी का मौसम होता है और जिस हिस्से में सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं, उस हिस्से में सर्दी का मौसम होता है, जबकि भूमध्य रेखा पर हमेशा गर्मी और ध्रुवों पर हमेशा बर्फ जमी रहती है। यह सब परिवर्तन धरती के सूर्य के गिर्द निश्चित गति से चक्कर लगाने के कारण होता है। इसी तरह सूर्य की किरणों द्वारा समुद्र के पानी का वाष्पीकरण होना, भिन्न-भिन्न वायु दबाव वाली आर्द्र वायु राशियों के मिश्रण का पहाड़ों से टकराना और बादलों के रूप में वर्षा होने का कारण बनता है। कुदरत के इस अदभुत नियम के कारण ही इस धरती पर जीवन चक्र निरंतर चलता रहता है।

प्राकृतिक आपदाओं और महामारियों के कारण परिवर्तन (Natural Calamities) :

प्राकृतिक आपदाओं और महामारियों से भाव है भूचाल का आना, जवालामुखी का फटना, बाढ़ का आना, अकाल पड़ना, चक्रवाती तूफान, सुनामी का आना और प्लेग, हैज़ा, स्वाईन फ्लू, मलेरिया आदि बीमारियों का फैलना। इन प्राकृतिक आपदाओं और महामारियों के कारण धरती पर बड़े-बड़े परिवर्तन आते रहे हैं। इनके द्वारा परमशक्ति धरती पर संतुलन स्थापित करती है अर्थात प्राकृतिक आपदाओं और महामारियों द्वारा कुदरत, खेती की पैदावार और जन-संख्या में संतुलन स्थापित रखती है। यह परिवर्तन होने भी ज़रुरी होते हैं और कुदरत निश्चित समय पर यह परिवर्तन किसी न किसी ढंग से करती है। इससे पैदावार और जन-संख्या का संतुलन बना रहता है।

जलवायु परिवर्तन (Climatic Changes):

ऋतुओं के परिवर्तन को मौसम का परिवर्तन कहा जाता है परंतु किसी जगह के कुदरती, स्थाई वातावरण को जलवायु कहा जाता है। जैसे मैदानी इलाके का जलवायु गर्म है, पहाड़ी इलाके का जलवायु ठंडा है। परंतु जलवायु में भी परिवर्तन आते हैं पर इनकी गति बहुत धीमी होती है। कई सदियों के बाद यह परिवर्तन बहुत बड़े पैमाने पर दिखाई देने लगते हैं जैसे वायु में प्रदूषण होने के कारण कार्बन डाई आक्साइड का बढ़ना , उससे हरित गृह प्रभाव (Green House Effect)का होना, उससे भूतल पर तापमान का लगातार (Global Warming)बढ़ना, उससे ग्लेशियरों का पिघलना, उससे समुद्र तल का ऊँचा होना, उससे तटीय भू भागों का समुद्र में समा जाना आदि।

सांस्कृतिक परिवर्तन (Cultural Changes):

इन्सान के जीने के ढंग और उस में आए बदलावों को सांस्कृतिक परिवर्तन कहा जाता है । आदिमानव से लेकर आज के मानव के जीवन के सफर में क्या क्या परिवर्तन आए हैं उनका संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया गया है :

सामाजिक परिवर्तन (Sociological Changes):

इन्सान एक सामाजिक प्राणी है उसको समाज के वर्तमान स्वरूप तक पहुँचने के लिए बहुत से परिवर्तनों में से गुज़रना पड़ा है। शुरू-शुरू में इन्सान आदिमानव के रूप में रहता रहा । उसका रहन-सहन जानवरों की तरह था पर समय के साथ-साथ उसकी बुद्धि का विकास हुआ तो उसने झुण्डों में रह कर अपना बचाव किया । समय के साथ यह ज़रुरतें रिश्तों में बदलीं, रिश्ते परिवारों में बदले और परिवारों ने कबीलों का रूप लिया। इन्सान को मिल-जुल कर रहना भी कुदरत ने ही सिखाया क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं और शक्तियों के सामने इन्सान असमर्थ था। उनका सामना करने के लिए इन्सान को सांझी सोच और सांझे विकास की ज़रूरत थी । जैसे-जैसे कुदरत अपने परिवर्तन करती रही, मानव की ज़रूरतें और सोच विकसित होती रही । वह गुफाओं में से निकल कर झुग्गियों और गांवों में रहने लगा । उसको रहने के लिए और खेती के लिए पानी की ज़रूरत थी इसलिए जितनी भी सभ्यताओं का विकास हुआ है वह नदियों के किनारे पर ही हुआ है, इन्सान पत्थर युग, धातु युग, कृषि युग का सफर पूरा करके इस आधुनिक युग में पहुंचा है । समय-समय पर जैसे इन्सान की सोच ने विकास किया, उसकी ज़रूरतें बढ़ीं, उसके साथ ही कुदरत ने नई-नई खोजें करवा कर इन्सान के जीवन को सुखमय किया । जब भी समाज अपनी राह से भटका कुदरत ने समय-समय पर किसी समाज सुधारक या धार्मिक नेता को भेज कर, इन्सान को जीवन जीने का ढंग बताया और इन्सान के रहन-सहन, खान-पान, सोच में परिवर्तन किया ।

शैक्षणिक परिवर्तन (Educational Changes):

इन्सान ने अपने जीवन में जो भी सीखा है वह कुदरत से ही सीखा है । कुदरत ही पक्षियों को उड़ना सिखाती है, पानी के जीवों को तैरना सिखाती है । इन्सान ने इन पक्षियों से उड़ना सीखा, पानी के जीवों से तैरना सीखा, जानवरों से शिकार करना, अपने परिवार का पालन-पोषण और रक्षा करना सीखा, समय के साथ-साथ ही शिक्षा देने के ढंग, तरीकों में परिवर्तन आता गया । शिक्षा के आदान-प्रदान के कारण ही इन्सान सारे जीवों पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने में सफल हुआ है । पहले शिक्षा बोलकर कहानियों के रूप में दी जाती थी, फिर लिपि और क्रियात्मक रूप में दी जाने लगी । शिक्षा देने

वाले व्यक्ति को गुरुदेव की उपाधि दी गई । इससे यह अनुमान लगता है वह लोग अपने जीवन में ज्ञान को कितना महत्व देते थे जैसे कि हिंदू समाज में ज्ञान देने वाले व्यक्ति को पूजनीय स्थान दिया गया । इस तरह ज्ञान की उपयोगिता के कारण ही सामाजिक नीतियों का निर्माण हुआ । आध्यात्मिक ज्ञान, व्यवहारिक ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, खेतीबाड़ी सम्बन्धी ज्ञान आदि अनेक परिवर्तन हुए ।

राजनैतिक परिवर्तन (Political Changes):

वास्तव में सभ्यता के परिवर्तन का ही नतीजा है कि सामाजिक चेतना के विकास के बाद शैक्षिक और बौधिक परिवर्तन हुए। उसके बाद ही नियमों को संगठित करके उनको समाज पर लागू करने की ज़रूरत महसूस हुई अर्थात् जब इन्सान कबीलों में रहने लग पड़ा तो सामूहिक ज़रूरतों को पूरा करने और सामूहिक निर्णय लेने के लिए कुछ नियमों की ज़रूरत महसूस हुई, उन नियमों को लागू करने के लिए किसी न किसी ताकत, किसी सत्ता की ज़रूरत महसूस हुई, यह विचारधारा समय के साथ धार्मिक और राजनैतिक नेताओं के रूप में बदल गई, किसी जगह धार्मिक नेता ही राजनैतिक नेता बने, किसी जगह राजनैतिक और धार्मिक नेता अलग-अलग रहे पर एक दूसरे को प्रभावित ज़रूर करते रहे । इस तरह राजनीति का जन्म हुआ जो समय के साथ जागीरदार प्रथा, राजा प्रथा, सामंतवाद, प्रजातंत्र, लोकतंत्र, समाजवाद आदि परिवर्तनों में गुजर कर वर्तमान अवस्था में पहुंची है । मौजूदा अवस्था पर पहुँचने के लिए इन्सान को अनेकों संघर्षों में से गुजरना पड़ा। एक व्यवस्था को बदलने के लिए कई-कई पीढ़ियों को संघर्ष करना पड़ा, कुर्बानियां देनी पड़ी, जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए हैं उनके पीछे राजनैतिक परिवर्तन ही मूल आधार रहे है ।

आर्थिक परिवर्तन (Economical Changes):

मानव जीवन कबीलों से समाज और समाज से राज के रूप में स्थापित हो चुका था । इसलिए उसको व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। जिस के अनुसार समय-समय पर नीचे लिखे परिवर्तन हुए ।

1. वस्तुओं का लेन देन भाव अनाज के बदले में जरूरत की अन्य वस्तुओं का लेन-देन आदि ।
2. वस्तुओं के बदले सोने चांदी की मोहरों का लेन-देन ।
3. वर्तमान समय की मुद्रा व्यवस्था ।ए
4. वर्तमान समय में हर राष्ट्र का अपनी मुद्रा को सुदृढ़ बनाना ।
5. मुद्रा सफीती को घटाना।

मानवीय जीवन और सोच में परिवर्तन:

इन्सान का प्रारम्भिक जीवन शिकार करने और अपने परिवार तक सीमित था पर प्रकृति ने समय के साथ-साथ उसके जीवन और सोच में भी परिवर्तन किया है । उसको मिल कर रहने की आवश्यकता का एहसास करवाया और दूसरों के बारे में सोचने का ढंग सिखाया । जब तक व्यक्तिगत सोच नहीं बदलती तब तक किसी भी समाज और समुदाय का विकास नहीं हो सकता क्योंकि सोच ही इन्सान को हैवान बनाती है सोच ही इन्सान को महान् बनाती है । इसलिए कुदरत ने समय के साथ ही इन्सान के जीवन और सोच को भी बदला है । कई बार इन्सान के जीवन में इस तरह की घटनाएँ घटती

हैं जिनके कारण इन्सान के जीवन में परिवर्तन हो जाता है, उस इन्सान की आदतों, स्वभाव, रुचियों और सोच में बदलाव आ जाता है जिसके कारण उसका कर्म भी बदल जाता है। वैसे तो इन्सान के जीवन में जो कुछ भी घटता है उसके किए कर्मों का ही फल होता है । पर फिर भी समाज में इस तरह के अनेक उदाहरण हैं । जैसे महान् कवि कालिदास, अंगुलिमाल महान् ऋषि बाल्मीकि, स्वामी रामतीर्थ, महात्मा गाँधी आदि अनेक इस तरह के इन्सान हुए हैं जिनके जीवन में इस तरह की घटनाएं घटी जो उनको परमार्थ के रास्ते पर ले गईं और उन्हें महान् इन्सान बना दिया ।

धार्मिक परिवर्तन (Spiritual & Religious Changes):

इन्सान जब भी किसी की पूजा करता है उसके दो आधार होते हैं – डर और स्वार्थ। जब भी इन्सान को डर लगता है, उस डर को दूर करने के लिए इन्सान किसी का सहारा चाहता है । दूसरे, जहां इन्सान का स्वार्थ और ज़रूरतें पूरी करने में उसकी पहुँच खत्म होती है तो इन्सान उस स्वार्थ को पूरा करने के लिए आसरा ढूंढता है । यह दोनों कारण ही इन्सान को धार्मिक बनाते हैं । जैसे-जैसे इन्सान का बौद्धिक विकास होता गया उसके पूजा के स्वरुप और ढंग बदलते रहे पर उद्देश्य वही रहा । इस बदलाव को ही धार्मिक परिवर्तन कहा गया है । जब भी ज्ञान अज्ञान में बदल जाता है, धर्म अधर्म में बदल जाता है अर्थात् धर्म में गिरावट आ जाती है, उस समय भिन्न-भिन्न भूखण्डों में समय और परिस्थितियों के अनुसार धर्म में बदलाव होते रहे हैं । धार्मिक परिवर्तन हमेशा नई विचारधाराओं के पैदा होने के कारण होते हैं, जो पुराने रीति-रिवाजों और पाखण्डों का तर्क सहित खण्डन करते हैं । जिस तरह इन्सान की दृष्टि की सीमा है, उस सीमा के बाद उसको दिखाई नहीं देता पर इसका मतलब यह नहीं है कि उस सीमा से परे कुछ नहीं है । उसी तरह मानव के इतिहास की भी सीमा है । इस समय इन्सान का लिखित इतिहास केवल 5000 वर्ष पुराना है । जब इतिहास की तरफ देखते हैं तो पता चलता है कि इन्सान के धार्मिक जीवन में कितने परिवर्तन हुए हैं ।

पहला परिवर्तन: प्राकृतिक रूपों की पूजा

जैसे-जैसे सभ्यता का विकास हुआ इन्सान ने अपने रहने, खाने-पीने का प्रबन्ध किया और वह कबीलों में रहने लगा। वह प्राकृतिक शक्तियों और आपदाओं से डरने लगा तथा उसे ऐसा अनुभव हुआ कि यदि मैं इनकी पूजा करूं तो मेरा बचाव हो सकता है या जिससे उसके अपने स्वार्थों का पूरा होने की आस हुई उसने उसकी पूजा करनी शुरू कर दी। इतिहास बताता है कि भारत, चीन, अरब, यूनान, रोम आदि में इन्सान सब से पहले किसी न किसी ढंग से अग्नि, सूर्य, चाँद, धरती, पवन, वर्षा आदि को देवता मान कर उनकी पूजा करता रहा है।

दूसरा परिवर्तन: देवी देवताओं की मान्यता और मूर्ति पूजा:

यह भी धारणा है कि कुदरत में जो चीज़ें दिखई देती हैं जैसे सूर्य, चाँद, धरती, आकाश, हवा, पानी, अग्नि आदि देवी देवता हैं। इन को प्रसन्न करके अपना स्वार्थ पूरा किया जा सकता है या उस के प्रकोप से बचा जा सकता है। इसलिए मूर्तियों का श्रृंगार और सामूहिक पूजा-स्थल का निर्माण होना शुरू हुआ जिस के बाद कर्म-काण्ड और पूजा-अर्चना शुरू हुई। यूनान, रोम, चीन, अरब, मिस्र में भी इसी तरह पूजा होती रही है। इतिहास बताता है शिवलिंग की पूजा भी आर्य सभ्यता से ही संसार में चली आ रही है। जहां-जहां भी आर्य सभ्यता गई वहां आज भी किसी न किसी रूप में शिवलिंग की पूजा हो रही है।

तीसरा परिवर्तन: निराकार रूप की पूजा

वेदों की रचना के बाद ही एक ईश्वरवाद और आत्मज्ञान का आरम्भ हुआ। ईश्वर को निराकार मान कर ईश्वर की पूजा और स्तुति की शुरुआत हुई। इस समय मध्य एशिया में मूसा ने निराकार ईश्वर को यहोवा का नाम दिया और उस के दस निर्देश (Ten commandments) अपनी कौम को दिए व देवी देवताओं की पूजा का खण्डन किया। केवल एक ईश्वर *'यहोवा'* को याद करने और उसी को मानने की शिक्षा दी।

चौथा परिवर्तन: नास्तिकवाद और ज्ञान की उत्पति :

जब ऋषियों मुनियों ने एक ईश्वर का विचार दिया तो उस के बाद इन्सान के मन में ईश्वर को जानने की, उसके बारे में खोज करने की इच्छा जागी। इसी जिज्ञासा ने ईश्वर के बारे में तरह-तरह की विचारधाराओं को जन्म दिया। कपिल ऋषि के अनुसार ईश्वर सिद्ध नहीं होता इस लिए ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है, जीव और प्रकृति ही अनादि है। द्वैतवाद में ईश्वर को अनदि कहा गया है और जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह भी अनादि है। अद्वैतवाद से भाव है इस सृष्टि को रचने वाला केवल एक ब्रह्म है जिस ने अपनी इच्छा से इस सृष्टि की रचना की है। उसकी माया सर्वव्यापक है, जीव-निर्जीव उसकी रचना हैं। वह ही रक्षक, पालनकर्ता और संहारकर्ता है। नास्तिकवाद की विचारधारा के कारण जितने भी धर्म प्रचलित हुए वह सब ज्ञान प्रधान धर्म थे। बुद्धमत और जैनमत ने कर्म और कर्मफल को ही माना। इसी तरह शंकराचार्य जी ने अद्वैत मत और रामानुज जी ने विष्णु को सृष्टिकर्ता मान कर वैष्णव मत की शुरुआत की। लगभग 600 ईसा पूर्व कन्फूशियस ने चीन में व्यवहार और सामाजिक न्याय का सिद्धांत और एक नयी विचारधारा समाज को दी। यूनान में अरस्तु ने आत्मा की अमरता और एक ईश्वरवाद की विचारधारा दी। इस काल में धरती के हर भूखण्ड में ज्ञान का प्रकाश हुआ और इन्सान को अपने रचयिता के बारे में ज्ञान हुआ जिस के साथ इन्सान के मन में उसके स्वरुप को जानने, उसके दर्शन करने की लालसा पैदा होने लगी। जिसने आने वाले समय में भक्ति लहर की नींव रखी गई।

पांचवा परिवर्तन: भक्ति लहर और साकार की पूजा

कुदरत ही समय के साथ इन्सान को अंगुली पकड़ कर नई दिशा की तरफ ले जाती है। कुदरत इन्सान के मन में विचार पैदा करती है उसको सोचने के लिए और खोज करने के लिए प्रेरित करती है। आज जो खोजें हो रही हैं यह 1000 साल पहले क्यों नहीं हुईं। कुदरत भी इन्सान को ज़रूरत महसूस करवाती है फिर खोज करवाती है। जब इन्सान को यह पता लग गया कि इस सृष्टि को बनाने वाला कोई है तो इन्सान ने उस को देखने की और उससे प्यार करने की ज़रूरत महसूस की। उस समय बुद्ध के अनुयायियों ने बुद्ध की मूर्ति बना कर उस को ज्ञान काया का नाम देकर पूजा करनी शुरू की। जैन मत को मानने वालों ने तीर्थन्करों की मूर्तियां बना कर उनकी पूजा की, हिंदू धर्म में शास्त्रों और पुराणों की रचना हुई और ब्रह्मा, विष्णु, महेश की पूजा शुरु हुई। ईश्वर को भगवान मान कर उसकी पूजा-भक्ति की लहर ने अध्यात्मवाद का स्वरुप ही बदल दिया और अवतारवाद की विचारधारा हिंदू धर्म में स्वीकार की गई। भक्त कबीर, भक्त रविदास, भक्त नामदेव, मीराबाई, पीपाजी, धन्ना भक्त आदि ने ज्ञान और भक्ति का सुमेल करके एक नई सोच दी अर्थात इन्सान को ईश्वर है या नहीं है के भंवर से बाहर निकाल कर ईश्वर से प्रेमाभक्ति और सेवा का मार्ग बताया। इसी तरह मध्य एशिया में यीशु जी ने भक्ति, सेवा, करुणा और ईश्वर प्रेम का सन्देश दिया। यीशु जी के इस सन्देश में पूरा पश्चिम जगत बह गया । ईसाई यीशु को ईश्वर का बेटा और उसका ही रूप मान कर उससे ही प्यार करते हैं। हज़रत

मोहम्मद जी ने खुदा को इन्सान की समझ से परे बताया और उस को समझने, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करने से ज्यादा महत्व उसकी स्तुति और प्रार्थना को दिया। आज सभ्य और सुशिक्षित समाज में लोग मूर्ति पूजा कर रहे हैं, कुछ देवी देवताओं को मान रहे हैं, कुछ लोग भगवानों की पूजा कर रहे हैं, और कुछ लोग महान् आत्माओं की पूजा कर रहे हैं। कुछ लोग ईश्वर को निराकार मानते हैं पर उसके प्रतीक चिन्ह बना कर ईश्वर को याद कर रहे हैं जैसे शिवलिंग, ज्योति, कैंडल, चिराग, बिन्दु आदि। कहने से तात्पर्य है कि इबादत के अनेक ही ढंग हैं, अनेक ही धार्मिक संस्थाएं हैं, अनेक ही विचारधाराएं हैं जिनमें समय समय परिवर्तन होता रहा।

उपरोक्त धार्मिक परिवर्तनों का अध्ययन करने से इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि जब परिवर्तन की अँधेरी चलती है तो कोई धर्म, कोई विचारधारा अछूती नहीं रहती। हिंदू धर्म में अवतारवाद की विचारधारा जोर पकड़ने के कारण आरतियों तथा अन्य पूजा पद्धतियों का विकास हुआ। ईसाई धर्म यीशु को ही परमेश्वर मान कर उनके आगे प्रार्थना और उनसे प्रेम करने लगा। जो विचारधाराएं या समाज समय के अनुसार नहीं बदलते समय उनके निशान ही मिटा देता है। हर विचारधारा को, समाज को, कुदरत के इस खेल के आगे झुकना ही पड़ता है और इसे ही परिवर्तन कहा जाता है।

विज्ञान का मत है कि यह धरती अरबों वर्ष पहले अस्तित्व में आई थी। इस दौरान मानव जाति बहुत से पड़ावों में से निकल कर वर्तमान अवस्था में पहुंची है। इस दौरान कितनी ही सभ्यताएं बनी होंगी और नष्ट हुई होंगी। इतिहास बताता है कि 5000 साल पहले मिस्र, रोम, यूनान, सिंधु घाटी, तक्षशिला आदि सभ्यताएं हुई हैं जिनका लिखित इतिहास तो नहीं मिलता पर उनके निशान आज भी मौजूद हैं। इस तरह अनेकों ही सभ्यताएं होंगी जो समय के साथ ही नष्ट हो गई होंगी। यह परिवर्तन समय के साथ होता रहा है और होता रहेगा क्योंकि परिवर्तन कुदरत का नियम है।

अब प्रश्न पैदा होता है कि यह परिवर्तन कौन करता है ? क्या यह परिवर्तन अपने आप होता है या कोई है जो यह परिवर्तन कर रहा है ? अगर कोई है तो उसका क्या उद्देश्य है और वह ऐसा क्यों कर रहा है ? परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्रीमुख से ज्ञान दिया है कि परमशक्ति ज़्यादातर निराकार ही रहती है। वह जड़ नहीं चेतन है। वह हर बात महसूस करती है जैसे जब इन्सान नींद में होता है तो उसका शरीर कोई हरकत नहीं करता पर उसके मन में विचारों का प्रवाह चलता रहता है। इसमें शरीर का कोई सरोकार नहीं होता पर इन्सान उस समय सुख-दुःख, लाभ-हानि, यश-अपयश, सब कुछ महसूस करता है, वह डरता है, प्यार करता है, खुश होता है, दुखी होता है। क्या उस समय उस को शरीर की ज़रूरत होती है ? उसी तरह ईश्वर निराकार होते हुए भी मानवीय संवेदनाओं को महसूस करते हैं।

ईश्वर की कार्यप्रणाली को एक उदहारण दे कर समझाया जा सकता है। जैसे एक बहुत बड़ा ज़मींदार अपने बाग की देखभाल के लिए कुछ कर्मचारी नियुक्त करता है पर कुछ समय के बाद उनकी शिकायतें आ जाती हैं। कुछ कारणों से वहां का प्रबंध ठीक नहीं चलता तो वह ज़मींदार कुछ नए निर्देश देकर कोई नया कर्मचारी भेजता है। पर फिर कुछ समय के बाद वह कर्मचारी भी असफल हो जाता है। जिमींदार समस्या को ग़ौर से देखता है और किसी नए कर्मचारी को नए निर्देश देकर भेजता है तथा और भी बदलाव करता है। पर हर कर्मचारी कुछ समय बाद असफल हो जाता है। जिमींदार को और भी काम हैं, उसको अपने बाग से प्यार तो है और उसका काम बाग की बेहतरी के लिए प्रबन्ध करना है। इसलिए वह समय-समय पर परिवर्तन करता है, और हर ज़रूरत का उचित प्रबन्ध करता है

क्योंकि उसका कर्म परिवर्तन करना है । सर्वशक्तिमान ईश्वर उस जिमींदार की तरह है । जब भी इन्सान अपनी राह से भटकता है, अपने रचयिता को भूलता है या मौजूदा स्रोत इन्सान की ज़रूरत पूरी नहीं करते तब ईश्वर इन्सान की बेहतरी और उसकी ज़रूरत पूरी करने के लिए महान् आत्माओं को अपना काम देकर धरती पर भेजते है । उनको ज़रुरी निर्देश भी देते हैं, उनको कार्य भी सौंपते हैं । वे जो भी करते हैं उसके निर्देश के अनुसार ही करते हैं । उसकी रज़ा में राज़ी रहते हुए अपना फ़र्ज़ पूरा करते हैं । उनको मान-यश मिलता है, लोगों का विरोध भी मिलता है, इल्ज़ाम भी लगते हैं अर्थात् आज समाज में जिन महान् आत्माओं के नाम हैं, कुछ लोग उनको मान देते हैं, कुछ लोग उनके कार्यों की, उनकी विचारधाराओं की आलोचना करते हैं । परन्तु वह मालिक स्वयं सफलता-असफलता, लाभ-हानि, यश-अपयश से परे है । सफलता-असफलता, लाभ-हानि, यश-अपयश आदि तो इन्सान के लिए होते हैं, वह जो भी करता है, ठीक ही करता है, उसका किया कोई भी काम गलत नहीं होता । इन्सान को लगता है कि यह जो कुछ भी जो रहा है ग़लत है, इसकी क्या ज़रूरत थी पर गहराई से देखने पर पता चलता है यह सब तो ज़रुरी था । जैसे एक इन्सान वर्षा होने पर कह देता है, इस की क्या ज़रूरत थी बाढ़ आ जाती है, जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है । यह तो उस इन्सान की अज्ञानता है । ईश्वर जो भी करता है पूरी सृष्टि को ध्यान में रख कर करता है । ईश्वर का काम इतना सहज और सरल ढंग से होता है कि इन्सान को लगता है यह सब अपने आप हो रहा है, पर वह होता समस्त इन्सानियत की बेहतरी के लिए है । जब भी ज़रूरत होती है लोग पुकार उठते हैं, किसी को कोई रास्ता दिखाई नहीं देता, दु:ख तकलीफें बढ़ जाती हैं, गरीबों का जीना दूभर हो जाता है । जैसे कहते हैं कि दु:खी की पुकार पत्थरों का सीना चीर देती है । तब युग परिवर्तन होता है एक नए समाज का निर्माण होता है। कोई ठंडी हवा का झोंका बन कर आता है और देखते ही देखते दुनिया के रंग-मंच पर एक नाटक होने लग जाता है, पात्र अपना खेल खेलते हैं । एक नया समाज अस्तित्व में आ जाता है, नए सपने जन्म लेते हैं, नई विचारधारा बनती है । यह कुदरत का ही खेल है, जिसे परिवर्तन कहते हैं।

वर्तमान समय में अनेकों ही धर्म, मिशन, धार्मिक और सामाजिक संस्थाएं हैं जो इन्सान के सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए कार्यशील हैं, हर किसी का अपना कार्यक्षेत्र है, अपना मकसद है, अपने नियम, सिद्धांत हैं । यह संस्थाएं ईश्वर ने ही प्रेरणा दे कर स्थापित करवाई हैं ।

परमशक्ति ने अपनी एक नई लीला श्री मदन धाम में शुरू की है । परमशक्ति आज श्री मदन जी के श्रीमुख से आध्यात्मिक ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है । पिछले 27 वर्षों से परमशक्ति स्वयं यहाँ कार्यप्रणाली चला रही है और यह कार्यप्रणाली निरन्तर परिवर्तनों में से गुज़र रही है । 17 जुलाई 1985 को इस दरबार की कार्यप्रणाली बड़े ही नाटकीय ढंग से शुरू हुई । उस दिन यह दर्शाया गया कि श्री मदन जी पर कुल देवता लक्ष्मणयति की मेहर हो गई है। इस दौरान यहाँ भूतों-प्रेतों से पीड़ित लोग आने लगे । कुछ देर बाद बाबा बालक नाथ तथा अन्य क्षेत्रीय देवताओं का प्रवेश श्री मदन जी के शरीर में दिखाया गया । 38 प्रकार के देवी-देवताओं के रूप में प्रदर्शन किया गया । उन सब रूपों में बातचीत की गई और उनकी मन्नतें लेकर व्यक्तियों को राहत दी गई । पहले इनके अस्तित्व को सिद्ध किया गया फिर महामाया के रूप में इनका आना प्रतिबंधित कर दिया गया । केवल मुनि देव नारद को ही आने की आज्ञा दी गई । उसके बाद यह बताया गया कि सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान केवल एक है जो निराकार है और वह है आदि शक्ति । सात साल श्री मदन जी के श्रीमुख से आदि शक्ति रूप में बातचीत होती रही । उसके बाद आदि शक्ति ने कहा मैं भी किसी के अधीन हूँ । वह हैं ब्रह्म। मैं आपको आपके पिता के पास ले जा रही हूँ ।

ब्रह्म की भूमिका में बताया गया कि ब्रह्म से आगे है पार-ब्रह्म। पार-ब्रह्म से भाव है वह शक्ति जो अनादि, अनंत, अगम्य, अगोचर, सर्वोच्च है जिस को परमशक्ति कहा जाता है। वह शक्ति जिस ने इस सृष्टि की रचना की, नियमों में बांधा है, वह जड़ नहीं चेतन है। वही अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय-समय पर महान् आत्माओं को धरती पर भेजती है और युगों-युगों के बाद स्वयं भी शरीर धारण करके इन्सानी रूप में धरती पर आती है। जब वह शरीर धारण करती है तब ही वह शिव या ब्रह्म कहलाती है। उस समय वह उस शरीर के द्वारा अपने नौ गुणों का प्रदर्शन करती है अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अंतर्यामी, पूर्ण और अजय आदि नौ गुणों का प्रदर्शन जिस शरीर के द्वारा होता है उस को ही शिव या ब्रह्म कहा जाता है। उसको ही परमशक्ति का साकार रूप या इन्सानी रूप कहा जाता है।

परमशक्ति द्वारा पिछले 27 वर्षों में दिए ज्ञान के आधार पर कहा जा सकता है परिवर्तन कुदरत का स्वभाविक गुण है। इसलिए वह ही समय-समय पर परिवर्तन करती है। जैसे शैतानी आत्मा का गुण है कि वह दूसरों को दुःख, कष्ट, परेशानियाँ देकर आनन्द महसूस करती है। साधारण इन्सान अपने और अपने परिवार के लिए ही सोचता है और केवल वही कार्य करता है जिस में उस का स्वार्थ पूरा होता है। उसमें ही उसको संतुष्टि मिलती है। महान् आत्माएं, महान् पुरुष अधिकतर दूसरों के भले और सुधार के लिए ही काम करते हैं। इन्सान को ज्ञान देना, दुष्कर्मों से रोकना, अच्छे कामों के लिए प्रेरित करना, लोगों की भलाई के लिए कार्य करना, भाव वे अपने लिए कम और दूसरों के लिए ज्यादा जीते हैं। उनको इसमें ही संतुष्टि मिलती है। यह महान् आत्माओं का स्वाभाविक गुण होता है। भगवान या परमात्मा, जो भी करते हैं वह परहित के लिए ही करते हैं। परोपकार करना उनका स्वभाविक गुण है, भगवान किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए धरती पर आते हैं, अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हर नीति का प्रयोग करते हैं, भगवान दूसरों को आदर्श जीवन जीने का ढंग सिखाते हैं और अपना उद्देश्य पूरा करके चले जाते हैं।

परमशक्ति, कुदरत, ईश्वर, अल्लाह, गॉड, वाहिगुरु, राधा स्वामी, निरंकार जो कि एक ही शक्ति के नाम हैं, जो उसके भक्तों ने रखे हैं। वही कर्मफल दाता है। हर कोई अपने किए कर्मों का ही फल पा रहा है। यदि कोई अमीर है, गरीब है, दुःखी है, सुखी है, सफल है, असफल है, बीमार है, तंदरुस्त है, भाव जो कुछ भी दिखाई देता है वह अच्छा है या बुरा है इन्सान के कर्मों का ही फल है। परमशक्ति हर इन्सान के अंदर भी है, बाहर भी है, पर वह मूकदर्शक रह कर सब कुछ देखती रहती है। वह किसी के कर्म करने में दखल नहीं देती। वह केवल न्यायकारी नहीं है अपितु वह दयालु भी है, कृपालु भी है। ईश्वर भी अपना काम करते हैं, वह है परिवर्तन। कर्मफल तो व्यक्तिगत होता है। यह परिवर्तन इतने सहज और सरल ढंग से होता है कि लगता है, कि जो कुछ भी हो रहा है इसको संचालित करने वाला कोई नहीं है, न ही कोई प्रार्थना सुनने वाला है। उसको याद करने की, उससे प्यार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। पर समय-समय पर इस तरह की घटनाएं घटती हैं जिनके कारण इन्सान सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि यह कौन कर रहा है ? उसका क्या उद्देश्य है ? आज विज्ञान ने यह जान लिया है कि वर्षा कैसे होती है, हवा कैसे चलती है, सूर्य की रौशनी कैसे तपिश देती है, ऋतुएं कैसे बदलती हैं, दिन रात कैसे बनते हैं। कभी यह सब भेद इन्सान की समझ से बाहर थे, इन्सान समझता था कि कोई देवी-देवता इनका संचालन कर रहा है पर आज इन्सान जानता है कि यह सब नियमों में बंधे हुए हैं और नियमों के अनुसार ही कार्य करते हैं। आज भी बहुत सारे प्रश्न हैं जिनको विज्ञान जानने की कोशिश कर रहा है। कुछ पहेलियाँ हैं जिनको सुलझाने की कोशिश कर रहा है। परमशक्ति स्वयं ही इन्सान के मन में विचार

पैदा करती है, अपने बारे में और अपने नियमों के बारे में ज्ञान करवाती है। अध्यात्मवादी अपने साथ हुई किसी हुई घटना के कारण को कर्मफल समझ कर, किसी हुई गल्ती को जानने की कोशिश करते हैं अपितु वैज्ञानिक उस घटना के भौतिक कारणों को जानने की कोशिश करते हैं।

आओ विचार करें कि परमशक्ति परिवर्तन क्यों करती है ? उसका क्या उद्देश्य हो सकता है ?

अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए:

परमशक्ति अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए ही महान् आत्माओं को धरती पर भेजती है और उनके साथ सम्पर्क स्थापित करके उनके माध्यम से अपने गुणों का प्रदर्शन करती है। जब भी समाज किसी दुविधा में फंसता है उस वक्त परमशक्ति का सन्देश ले कर नई विचारधारा के साथ कोई महान् आत्मा प्रकट होती है। उसके विचार ही नियमों का समूह बनते हैं जो फिर धर्म का रूप ले लेते हैं। उस महान् आत्मा को पता नहीं होता कि परमशक्ति उस के साथ क्या खेल खेल रही है ? उसके जीवन में घटनाएं घटती हैं तथा वक्त और हालात उसको महान् बना देते हैं। इसलिए ही महान् आत्माएं जिनका ईश्वर के साथ सम्पर्क हुआ उन्होंने कहा है "तू बेअंत, तेरी माया बेअंत, तेरियां तू ही जाणे" पर आज उनके नाम हैं। करोड़ों की गिनती में उनके श्रद्धालु हैं। लोग उनको ही ईश्वर या ईश्वर का रूप मान कर पूज रहे हैं। जबकि उन महान् आत्माओं ने दुःख-कष्ट, परेशानियां सह कर भी ईश्वर का गुणगान किया, अपने आप को तुच्छ बता कर, उस अदृश्य ताकत को सर्वशक्तिमान कहा, सुखों का सागर कहा, कृपालु, दयालु, ममता का सागर, प्यार की मूरत कहा। उनके सन्देश के फलस्वरूप ही मानव समाज ईश्वर के अस्तित्व को मानता आ रहा है। लोग ईश्वर को उन महान् आत्माओं के रूप में याद करते हैं, उनसे प्यार करते हैं। परमशक्ति उन महान् आत्माओं के रूप में भक्तों को दर्शन देती है क्योंकि महान् आत्माओं ने स्वयं यश न लेकर यश परमशक्ति को दिया। परमशक्ति ने भी स्वयं यश न लेकर यश उन महान् आत्माओं को दिया। परमशक्ति समय के साथ-साथ परिवर्तन करती है और अपना अस्तित्व हमेशा बनाए रखती है। आज विज्ञान के युग में भी अनेक महान् आत्माएं हैं जिनके माध्यम से चकित कर देने वाले प्रदर्शन हो रहे हैं। क्या विज्ञान की खोजों ने, साक्षरता ने, ईश्वर के अस्तित्व को खत्म कर दिया ? आज इस युग में भी ईश्वर को मानने वालों की कमी नहीं।

निरन्तरता व नवीनता बनाए रखने के लिए:

परमशक्ति या कुदरत जो भी काम करती है नियमों में रह कर ही करती है। इन्सान अपने पूर्ण जीवन काल में देखता है कि परमशक्ति के हर काम में निरन्तरता बनी रहती है, जैसे सर्दी के बाद गर्मी, रात के बाद दिन। यह सब काम प्राकृतिक ढंग से होते जाते हैं। पर परमशक्ति निरन्तरता को बनाए रखने के अतिरिक्त नवीनता के लिए भी परिवर्तन करती है। जैसे कभी सर्दी बहुत ज्यादा हो जाती है कभी गर्मी बहुत ज्यादा हो जाती है, कभी दिन बड़े हो जाते हैं कभी रातें बड़ी हो जाती हैं। इस तरह परमशक्ति अपनी निरन्तरता से नवीनता भी लाती है। परमशक्ति के जितने भी काम हैं उनमें समानता तो है पर उस में नवीनता भी बनी रहती है।

रोचकता बनाए रखने के लिए

परमशक्ति ने इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले ही उसकी हर ज़रूरत का प्रबन्ध किया। परन्तु इन्सान नवीनता चाहता है। अगर केवल दिन ही होता या केवल रात ही होती, भाव कोई परिवर्तन ही न होता तो इन्सान का जीवन नीरस ही होता। परमशक्ति उस के जीवन में रोचकता बनाए रखने के लिए परिवर्तन करती है। नई-नई खोजें करवाती है, जल-वायु एवं वातावरण में परिवर्तन करती है।

उत्सुकता बनाए रखने के लिए

प्रकृति जब भी परिवर्तन करती है तो इन्सान की समझ में नहीं आता जिस से उसके मन में जिज्ञासा बनी रहती है, उत्सुकता रहती है। वह चाहे आध्यात्मवादी है या भौतिकवादी है उसके अंदर उस परिवर्तन का कारण जानने की, उसको समझने की इच्छा पैदा होती है। यह जिज्ञासा ही इन्सान को खोज करने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। ज्ञानी एवं जिज्ञासु व्यक्ति ही समाज और देश के लिए सोचते हैं।

निराशा समाप्त करने के लिए

जब इन्सान अपने जीवन से, समाज के वातावरण से निराश होता है, कुछ लोग इन हालातों से तंग आ कर अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर लेते हैं पर कुछ दृढ़ विश्वासी हालात का सामना करते हैं, संघर्ष करते हैं। प्रकृति उनकी मदद करती है और ऐसे दृढ़ विश्वासी लोग ही समाज में क्रांति लाते हैं, बदलाव लाते हैं, एक नए समाज का सृजन करते हैं। परमशक्ति जब भी कोई परिवर्तन करती है तो वह स्वयं सामने नहीं आती क्योंकि वह तो ज़्यादातर निराकार रहती है। वह अपने कार्य के लिए किसी व्यक्ति को चुनती है, उसके मन में विचार पैदा करती है, उसको बेचैन करती है, उसके सामने इस तरह के हालात पैदा कर देती है कि उसको वह कार्य करना ही पड़ता है। विपरीत हालातों में भी उसको डोलने नहीं देती। वह व्यक्ति अपने जीवन में चाहे लाचार बेबस रहे पर लोगों की नज़र में वह महान् होता है। जैसे महात्मा गाँधी अपनी जीवनी में लिखते हैं कि ईश्वर ने इस तरह के हालात बना दिए कि उनको वह कार्य करने ही पड़े। मदर टेरेसा की जीवनकथा में बताया गया है कि वह दार्जिलिंग से वापस आ रहीं थी कि उनके अंदर से ही ईश्वर ने उनको सेवा का कार्य शुरू करने की प्रेरणा दी। उस प्रेरणा के कारण ही उन्होंने चर्च छोड़ कर एक नई संस्था की शरुआत की। परमशक्ति ही इन्सान को साधन बना कर उसके मन में प्रेरणा देकर उनसे ऐसे कार्य आरम्भ करवाती है जो इन्सान सोच भी नहीं सकता पर वह कार्य युगों-युगों तक मानव जीवन को प्रभावित करते रहते हैं। इन्सान की सोच तो बहुत सीमित है यद्यपि परमशक्ति की सोच बहुत विशाल है। इन्सान के जीवन की निराशा को दूर करने के लिए ही परमशक्ति परिवर्तन करती है। परिवर्तन से ही नए सपने जन्म लेते हैं, नई आशा पैदा होती है और इन्सान निराशा के अँधेरे से बाहर निकलता है।

सर्वोच्चता बनाए रखने के लिए

परमशक्ति सदैव अपनी सर्वोच्चता बनाए रखती है। जब भी इन्सान ईश्वर को भुला कर स्वयं को कर्ता समझने लगता है, धर्म अधर्म में बदल जाता है, नैतिकता अनैतिकता में बदल जाती है, ताकतवर गरीब का शोषण करने लगता है, न्याय जाति, वर्ग और व्यक्ति को देख कर बदला जाता है। तब परमशक्ति परिवर्तन करती है, वह सुधार नहीं करती, सुधार करना तो महान् आत्माओं का काम होता है। इस लिए परमशक्ति किसी महान् आत्मा को भेजती है। उस के माध्यम से ज्ञान दिया जाता है, लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं, पर परमशक्ति अपना पूर्ण भेद किसी को नहीं देती और न ही किसी महान् आत्मा के माध्यम से अपने समस्त गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करती है। परमशक्ति तो कर्मफल दाता है, परमशक्ति इन्सान को कर्म करते समय कभी नहीं रोकती केवल मूक दर्शक रहती है। इन्सान कर्म करने में स्वतन्त्र है इसलिए वह कर्म के अनुसार कर्मफल भोगता है। पर परमशक्ति भी चेतन है जड़ नहीं, जब मानव के दु:खों की पराकाष्ठा हो जाती है और सब ईश्वर को पुकारते हैं तो ईश्वर सामूहिक प्रार्थना सुनता है और जो करता है वही परिवर्तन कहलाता है। जैसे जब यहूदी समुदाय मिस्र में

सदियों की गुलामी से तंग आ गया तो ईश्वर ने मूसा को मसीहा बना कर भेजा, मुगल शासकों से गरीब लोग तंग आ गए तो परमशक्ति ने गुरु गोबिंद सिंह जी से खालसा पंथ की नींव रखवाई। परमशक्ति अपनी सर्वोच्चता बनाए रखने के लिए समय-समय पर परिवर्तन करती रहती है।

स्थिरता बनाए रखने के लिए

जब भी कोई विचारधारा, रीति-रिवाज़, सामाजिक ढांचा, कानून व्यवस्था या राजनैतिक सत्ता समय के साथ कुरीतियों का शिकार हो जाती है तो समाज में अस्थिरता आ जाना स्वाभाविक है। अस्थिरता को दूर करने के लिए उस विचारधारा, कानून व्यवस्था, राजनीतिक सत्ता में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन अस्थिरता को दूर करके मानव जीवन को स्थिर और सुखमय बनाने के लिए ज़रुरी होता है।

संतुलन बनाए रखने के लिए

जैसे कि आप सब जानते हैं कि प्रकृति ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, जीवन-मृत्यु, साकार-निराकार, सर्वगुण-निर्गुण, अच्छा-बुरा, गुण-अवगुण, स्त्री-पुरुष, नास्तिक-आस्तिक आदि। इसी तरह दोनों में संतुलन बनाने के लिए भी परमशक्ति परिवर्तन करती है। भौतिकवादी हो या अध्यात्मवादी सारे भूमण्डल में प्रकृति की एक संतुलित प्रक्रिया है। जब किसी विचारधारा का ज़रूरत से ज्यादा प्रभाव हो जाए अर्थात दूसरी विचारधाराओं को समाप्त करने लगता है तब परमशक्ति व्यापक स्तर पर या निम्न स्तर पर परिवर्तन करती है। जैसे कर्मकाण्ड और ब्राह्मणवाद का प्रभाव बढ़ गया तो जड़वाद या नास्तिकवाद (सांख्य दर्शन) का जन्म हुआ। जब बुद्ध मत, जैन मत, चार्वाक मत का प्रभाव बढ़ा तो परमशक्ति ने महान् आत्माओं द्वारा चार धामों और 12 ज्योतिर्लिंगों की स्थापना करवाई। जब पूरा विश्व अपने-अपने धर्मों के लिए धर्म युद्धों में गर्क हो रहा था उस वक्त परमशक्ति ने ही महान् आत्माओं से भक्ति लहर आरम्भ करवाई और पूरे विश्व में अमन और शांति का सन्देश दिया। इस प्रकार परमशक्ति ने संतुलन स्थापित किया।

धरती के किसी हिस्से पर जब भी भौतिकवाद ज्यादा प्रभावशाली हो जाता है और अध्यात्मज्ञान का नाश होने लगता है, नैतिकता का पतन होने लगता है और सामाजिक असंतुलन और गृह-युद्ध की स्थिति बन जाती है तब परमशक्ति संतुलन बनाने के लिए परिवर्तन करती है और यह परिवर्तन बहुत ज़रुरी होता है। परिवर्तन करना केवल परम शक्ति/कुदरत का ही काम है। परिवर्तन कोई इन्सान या महान् आत्मा अपनी इच्छा से नहीं कर सकती, परिवर्तन किया नहीं जाता अपितु हो जाता है। परिवर्तन की विशेषता यह है कि जब यह होता है तब पता नहीं लगता पर जब हो जाता है तब पता लगता है कि परिवर्तन हो गया है।

अनिश्चितता बनाए रखने के लिए

परमशक्ति जो भी करती है इन्सान के लिए ही करती है। परमशक्ति ने ही इन्सान से सम्पर्क स्थापित किया और अपने बारे में ज्ञान दिया पर अपना पूरा भेद किसी को नहीं दिया। किसी ने उसे निराकार कहा है, किसी ने साकार कहा है। आज तक कोई भी निश्चित तौर पर नहीं कह सका कि परमशक्ति/कुदरत क्या है। जब भी इन्सान कुदरत के भेदों को जानने की कोशिश करता है, उस तक पहुँचने की कोशिश करता है, परमशक्ति कुछ ऐसा कर देती है कि इन्सान उलझ कर रह जाता है अर्थात्

जीवन के बाद मृत्यु होनी है यह सच्चाई है पर कब होनी है यह निश्चित नहीं है। इसी तरह परमशक्ति अनिश्चितता बनाए रखने के लिए भी परिवर्तन करती है। जैसे भूचाल, तूफान, सुनामी, बाढ़ आदि। इन प्राकृतिक आपदाओं के सामने इन्सान लाचार और बेबस है क्योंकि इनका पता ही नहीं कि यह कब आ जाएं। परमशक्ति अपना अस्तित्व और सर्वोच्चता हमेशा बनाए रखती है इसलिए अनिश्चितता बनाए रखना बहुत आवश्यक है। इस तरह परमशक्ति अनिश्चितता बनाए रखने के लिए भी परिवर्तन करती है।

सारांश

उपरोक्त जो विचार हैं उनका भाव यह निकलता है कि जब भी इन्सान विज्ञान की चकाचौंध में स्वयं को कर्ता समझने लगता है और अपने रचयिता को भूल जाता है उस समय परमशक्ति अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए, अपनी सर्वोच्चता सिद्ध करने के लिए, निर्माण और विनाश करने के लिए परिवर्तन करती है। जैसे एक साधारण इन्सान के कर्म का उद्देश्य अपने और अपने परिवार की ज़रुरतों को पूरा करना, महान् आत्माओं के कर्म का उद्देश्य समाज की भलाई और सुधार करना होता है, उसी तरह कुदरत के कर्म का उद्देश्य अपनी बनाई रचना की ज़रुरतें पूरी करना और जो भी उसके लिए उचित होता है वह करना होता है। इसलिए ही उसको कल्याणकारी भी कहा जाता है। उस कल्याणकारी ताकत को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा जाता है।

जब इन्सान में से इन्सानियत खत्म हो जाती है, विज्ञान प्रकृति के नियमों से खिलवाड़ करने लगता है तब प्रकृति के नियमानुसार धरती अपना धुरा बदलती है परिणामस्वरूप भूतल पर परिवर्तन होता है। भूतल परिवर्तन से कुछ समय पहले वह कुदरत/परमशक्ति युगों-युगों के बाद स्वयं भी इन्सान बन कर धरती पर आती है। उस समय परमशक्ति अपने बारे में वास्तविकता का ज्ञान क्रियात्मक रूप में करवाती है और इन्सान को अपना अस्तित्व दर्शाती है। इसके बाद एक नए युग का शुभारम्भ होता है।

19
ईश्वर एक है तो मत-मतान्तर क्यों ?

संसार में अलग-अलग धर्म, सम्प्रदाय, मिशन अथवा संस्थाएं हैं। जो जिसमें आस्था रखता है उसे ही सर्वोच्च मानता है। यह भ्रम या द्वंद आदिकाल से ही मानव सभ्यता के साथ निरंतर पल्लवित होता रहा है। जैसे कहावत है कि "आवश्यकता आविष्कार की जननी है" अर्थात् जब सर्दी अधिक पड़ती है तब ही गर्म कपड़ों की आवश्यकता महसूस होती है। इसी तरह देश, काल व परिस्थितियाँ किसी नई विचारधारा को जन्म देती हैं। अल्ग अल्ग विचारधार ाएं या मत धीरे-धीरे परिपक्व हो कर मतान्तर का कारण बनते हैं।

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है कि विभिन्न विचारधाराओं या मतों की उत्पत्ति वहाँ के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के अनुरूप होती है। प्रत्येक मत या विचारधारा की उत्पत्ति वहाँ की आवश्यकताओं के अनुसार भी होती है।

मतान्तर के कारण :

1. प्राकृतिक वातावरण :-

किसी भी क्षेत्र के निवासीओं की विचारधारा, जीवन शैली तथा संस्कृति को सर्वप्रथम वहाँ का वातावरण प्रभावित करता है। प्राकृतिक वातावरण दो प्रकार से मनुष्य को प्रभावित करते है :-

क) क्षेत्रीय जलवायु :- किसी भी क्षेत्र की जलवायु मनुष्य के स्वभाव तथा धार्मिक विचारधारा को प्रभावित करती है। मरुभूमियों में जन्म लेने वाले धर्मों तथा विचारों की कट्टरता का भी यही कारण है।

ख) धरातलीय बनावट :- वैसे तो धरातलीय बनावट तथा जलवायु दोनों तथ्य एक दूसरे के पूरक हैं। यह दोनों मिलकर ही प्राकृतिक वातावरण का निर्माण करते हैं। धरातलीय बनावट को मुख्य रूप से चार भागों में बांटा गया है।

i) पर्वत
iii) मैदान
iii) पठार
iv) तटीय प्रदेश

पर्वतीय क्षेत्रों के निवासी कर्मशील होते हैं। उनके धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों पर शक्ति-पूजा का प्रभाव अधिक होता है। इसी प्रकार मैदानी क्षेत्रों के निवासी कुशाग्र एवं कृषि आधारित जीवन जीते हैं। इसलिए उनके धार्मिक उत्सव अधिकतर कृषि से सम्बंधित होते हैं।

2. सांस्कृतिक वातावरण :-

किसी भी मत या धर्म के प्रसार के लिए वहाँ की स ंस्कृति का विशेष योगदान रहता है। सांस्कृतिक वातावरण धार्मिक विचारों को गति एवं प्रभाव प्रदान करत ा है। जैसे जापान अपनी जनसंख्या की खाद्य आपूर्ति (अनाज) 40% तक कर पाता है। इसलिए भले ही वहाँ पर बौद्ध धर्म की

प्रमुखता है, इसके बावजूद उनका मुख्य भोजन मछली है। इसी तरह ज्वालामुखी क्षेत्र होने के कारण जापान के प्राचीन फ्यूजीयामा ज्वालामुखी पर्वत को पूज्य मान ा जाता हैं।

इसी प्रकार उत्तर भारत के ब्रज प्रांत में गोवर्धन पर्वत परिक्रमा प्रसिद्ध धार्मिक कार्य एवं उत्सव माना जाता है।

3. शैक्षणिक वातावरण :-

मनुष्य के किसी भी विचार को, उसके द्वारा अर्जित की गई शिक्षा एवं ज्ञान, दोनों प्रभावित करते हैं। समय-समय पर ऐसे महापुरुष धरती पर आए, जिन्होंने स्कूल एवं विश्व विद्यालय खोल कर धार्मिक रूढ़ियों को दूर करके अपने मत का प्रचार करने का प्रयत्न किया। यह भी कालान्तर में मत-मतान्तर का कारण बना।

4. आर्थिक कारण :-

खाने के लिए रोटी, पहनने के लिए कपड़ा और रहने के लिए मकान, व्यक्ति की यह तीन प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं। एशिया में आर्थिक स्थिति के खराब होने के कारण लोगों को प्रलोभन देकर समय समय पर धर्मान्तरण कराए गए। आज भी व्यक्ति आर्थिक तंगी से मुक्त होने के लिए नई विचारधारा को खुशी से अपनाता है।

5. राजनैतिक कारण :-

राज्य की नीतियां तथा प्रशासन भी धार्मिक विचारधारा को प्रभावित करता है। जब-जब किसी शासक ने किसी धर्म को अपना राजधर्म घोषित किया तो उस के प्रचार और प्रसार बढ़ने के कारण अनुयायी स्वत: बढ़ते गए। भारत में सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म अपनाने के साथ सम्पूर्ण एशिया में बौद्ध धर्म प्रभावी हो गया। इसी तरह ब्रतानिया के शासन के कारण भारत में इसाई धर्म का प्रचार हुआ।

6. वैज्ञानिक कारण :-

जैसे-जैसे विज्ञान ने उन्नति की, नई-नई खोजें की, आविष्कार किए, इन्सान स्वयं को कर्ता मानने लगा। 'ईश्वर है' इस पर से उसका विश्वास उठने लगा और धीरे-धीरे वह नास्तिकता की ओर बढ़ने लग ा। यह भी मत-मतान्तर का एक कारण बना। परन्तु 21वीं सदी के आरम्भ के साथ-साथ विज्ञान का युग आरम्भ हुआ। मानव चन्द्रमा पर पहुँच कर नई दुनियां बनाने का दावा करने लगा। विभिन्न आविष्कारों के पश्चात् सदी के महान्तम् वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने कहा कि कोई शक्ति है जो सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड को क्रियान्वित कर सन्तुलन में रखे हुए है।

7. व्यक्तिगत कारण :-

कोई भी विचार या मत इन्सान को तब सर्वाधिक प्रभावित करता है जब वह स्वयं उसे अनुभव करता है। जैसे किसी व्यक्ति की कोई मनोकामना किसी मज़ार, मूर्ति, दरगाह या किसी व्यक्ति विशेष के आगे माथा टेकने से पूर्ण हो जाती है तो वह उसी का अनुयायी हो जाएगा। इसी तरह जब आस्था अपनी चरम सीमा पर होती है तब यह मतान्तर का ठोस कारण बन जाती है।

इसी तरह व्यक्ति अपने गुण, र ुचि के अनुसार जो कर्म करता है ये सब मान्यताओं के अनुयायी होने के लिए उत्तरदायी है।

यहाँ यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि व्यक्ति के पूर्व जन्म के संस्कार, उसकी योग्यता, गुण, रुचि तथा स्वभाव को पूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। इस के साथ-साथ एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि यदि परमशक्ति की इच्छा किसी व्यक्ति पर हो जाए तो वह व्यक्ति की योग्यता, गुण, संस्कार, अच्छाई, बुराई सभी कुछ नज़र अंदाज़ कर देती है। परन्तु परमशक्ति की इच्छा का भी आधार होता है, वह है व्यक्ति द्वारा ईश्वर से किया गया नि:स्वार्थ प्यार, श्रद्धा, विश्वास, लगन और उसकी रज़ा में राज़ी रहना। परमशक्ति उस इन्सान को सभी निम्न पड़ावों में से निकाल कर अपने तक पहुंचा देती है और उसका माध्यम के रूपमें प्रयोग करके उसके द्वारा संसार को अपने बारे में ज्ञान भी देती है। वह ज्ञान भी कालान्तर में मत-मतान्तर का कारण बनता है।

परमशक्ति ने जिनको भी माध्यम बना कर धरा पर भेजा और समाज में उनके द्वारा अपने बारे में ज्ञान दिया, उन सभी का कहना है "सबका मालिक एक है"। उनके द्वारा यह भी कहा गया " एक नूर से सब जग उपजिया " अर्थात् ईश्वर एक है और उसी से सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई है। वह अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। उसी ईश्वर ने सब जीवों में इन्सान को सर्वश्रेष्ठ बनाया और सभी प्राणियों का सरताज बनाया है। उसे ही बुद्धि तथा सोचने समझने की शक्ति दी है।

ईश्वर ने अपना कर्तव्य निभाते हुए समय-समय पर महान् आत्माओं को धरती पर भेजकर उनके द्वारा इन्सान को अपने बारे में ज्ञान करवाया परन्तु परमशक्ति ने वह ज्ञान देश-काल तथा वहाँ के वातावरण के अनुसार अलग-अलग दिया। यह ही मत-मतान्तर का वास्तविक कारण है। उन महान् आत्माओं का महत्व रखने के लिए ईश्वर ने उनके द्वारा अपना नया रूप, नया चिह्न तथा नया नाम रखवाया। जैसे ईश्वर, अल्लाह, गॉड, राधा-स्वामी, निरंकार, एक ओंकार, ओम्, शिवलिंग, ज्योति, बिन्दु, चिराग, कैंडल आदि। ईश्वर ने इन्हीं नामों, रूपों तथा चिह्नों के अन्तर्गत अपने भक्तों की मनोकामनएं भी पूर्ण की और दर्शन भी दिए। इसी तरह ईश्वर ने समय-समय पर कुछ महान् आत्माओं को धरा पर भेज कर उनके द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी सीमा तक अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन किया। संसार में उन महान् आत्माओं का महत्व रखने के लिए उनके स्थान भी स्थापित करवाए, उन स्थानों का महत्व रखने के लिए वहाँ पर जाने वाले लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण कीं तथा उनके रूपों में भक्तों को दर्शन भी दिए। जिनकी मनोकामना जहां-जहां पर पूर्ण हुई, वहाँ-वहाँ उनकी आस्था बनती गई। जो उन महान् आत्माओं के अनुयायी बने, उन्होंने उस महान्-आत्मा के धरा से जाने के बाद अलग-अलग सम्प्रदाय, मिशन तथा धर्म स्थापित कर लिए। इस तरह ईश्वर के अलग-अलग रूप तथा नाम प्रचलित हो गए जो बाद में मत-मतान्तर के कारण बने।

20

परम शक्ति और परम आत्मा / भगवान में अन्तर

समाज में ईश्वर, परम शक्ति, भगवान, परम आत्मा आदि को एक ही समझा जाता है ज्यादातर उनमें कोई भेद नहीं किया जाता | श्री मदन धाम मानकपुर आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है | यहाँ परम शक्ति श्री मदन जी के शरीर में बोलती है | परम शक्ति ने जो ज्ञान दिया है उसके अनुसार इस सृष्टि को रचने वाली, नियमों में बांधने वाली और इसे चलाने वाली एक ताकत है वह न नर है न नारी है वह तो एक शक्ति है | उसे ही परम शक्ति कहा गया है | जब कुछ भी नहीं था तब भी परम शक्ति थी और उस शक्ति ने ही जीव-निर्जीव पैदा किए तथा उन्हें नियमों में बांधा | वह अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर, सर्वोच्च, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है | वह समस्त शक्तियों में परम है, इस लिए वह परम शक्ति है |

परम आत्मा सभी आत्माओं में सर्व-श्रेष्ठ होती है | वह भी परम शक्ति की एक रचना है और वह परम शक्ति द्वारा निश्चित की जाती है। वह परम शक्ति के नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करत◌ी है। एक धरती पर एक ही परम आत्मा होती है | वह जो भी करती है परम शक्ति की इच्छा से ही करती है | वास्तव में वे ही भगवान होते हैं | स्पष्ट है कि परम शक्ति और □□□ □□□□□ पर्यायवाची शब्द नहीं हैं | फिर इनमें क्या अन्तर है ? इसे निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया गया है |

परम शक्ति	परम आत्मा / भगवान
1. परम शक्ति रचयिता है, उसने ही सृष्टि की रचना की है और उसे नियमों में बांधा है।	1. परम आत्मा / भगवान, परम शक्ति की सर्वश्रेष्ठ रचना है और परम शक्ति के नियमों में बंधी है।
2. परम शक्ति ज्यादातर अदृश्य रहती है इस लिए उस पर देश व समाज के कानून और नियम लागू नहीं होते।	2. परम आत्मा सदृश्य होते हैं। इन्सानी रूप में होने के कारण वह किसी देश के नागरिक भी होते हैं, इस लिए परम आत्मा पर देश व समाज के कानून और नियम लागू होते हैं।
3. परम शक्ति अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है, वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है।	3. परम आत्मा रचना है अर्थात् उसका आदि है यदि आदि है तो अंत भी होगा। वह अगम्य से गम्य और अगोचर से गोचर होती है। वह सर्वोच्च नहीं लेकिन सर्वश्रेष्ठ होती है।
4. परम शक्ति का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण सृष्टि है और उसका सबंध समस्त जीवों और निर्जीवों से है।	4. परम आत्मा का सबंध केवल एक धरती के इन्सानों से होता है।
5. परम शक्ति सर्वरूपणी है और हर रूप में वही कार्य करती है। कोई उसे जिस रूप में याद करता है वह उसे उसी रूप में दर्शन देती है और उस व्यक्ति की मनोकामना पूर्ण करती है।	5. परम आत्मा सर्वरूपणी तो नहीं होती परंतु उसके माध्यम से □□□ □□□□□ निम्न शक्तियों के रूपों की भूमिका निभा सकती है। वह स्वयं परम शक्ति का मान्यता प्राप्त रूप होत◌ी है। उनके रूप का ध्यान करने से भी परम शक्ति प्रसन्न होती है।
6. परम शक्ति समस्त शक्तियों का स्रोत है। परम शक्ति समस्त शक्तियों का प्रयोग अपनी इच्छा से करती है तथा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जीव-निर्जीव का प्रयोग कर लेती है।	6. परम आत्मा परम शक्ति की शक्तियों का प्रयोग परम शक्ति की इच्छा से ही करते हैं। वह अपनी इच्छा से कुछ नहीं करते सब कुछ परम शक्ति की इच्छा पर छोड़ देते हैं। परम शक्ति ही उनके मान-सम्मान का ध्यान रखती है।
7. परम शक्ति, सत्य, और प्यार की प्रतीक है। सत्य उसका धर्म है, न्याय उसका कर्म है तथा प्यार उसका नियम □□।	7. परम आत्मा का व्यवहार सत्य, न्याय और प्यार पर आधारित होता है परन्तु वह परम शक्ति के उद्देश्य की पूर्ति के लिए हर नीति का प्रयोग कर लेते हैं।
8. परम शक्ति कर्मफल दाता है। वह हर किसी के साथ न्याय करती है चाहे उसे कोई माने या न माने। परम शक्ति के नियम हर किसी पर समान रूप से लागू होते हैं।	8. परम आत्मा न्याय-प्रिय होते भी दयालु और कृपालु होते हैं। वे जो भी करते हैं जन-कल्याण हेतु करते हैं।
9. परम शक्ति हर कार्य अपनी इच्छा से करती है।	9. परम आत्मा हर कार्य परम शक्ति की इच्छा पर छोड़ देते हैं।
10. परम शक्ति की भक्ति होती है। जब परम शक्ति इन्सान की भक्ति से प्रसन्न होती है तो उसे वरदान	10. परम आत्मा की पूजा होती है। जब इन्सान अपने प्यार, सेवा व लगन से परम आत्मा को

भी दे देती है |	प्रसन्न कर लेता है तब परम शक्ति इन्सान की उचित और शुभ मनोकामना पूर्ण करती है |
11. परम शक्ति मोक्ष दाता है | वही कर्मफलदाता व भाग्यविधाता है |	11. परम आत्मा दयालु, कृपालु, भक्त वत्सल, ममतामयी, करुणामयी तथा प्रेम की मूर्ति होते हैं |
12. परम शक्ति हर शरीर में विद्यमान है पर वह मूक दर्शक रहती है किसी को कर्म करने से नहीं रोकती | इन्सान जो भी कर्म करता है उसका प्रति फल उसे अगले जन्म में देती है | कई शरीरों में परम शक्ति अपने आप को उजागर कर देती है | उन्हें अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनी इच्छा से प्रयोग करती है |	12. परम आत्मा के शरीर में परम शक्ति सदैव विद्यमान रहती है | परम आत्मा अपने नज़दीक आने वाले व्यक्तियों को बलपूर्वक सदमार्ग पर चलाते हैं | गलती करने पर दृष्टांत देकर सदमार्ग प्रदान करते हैं | इन्सान की सेवा, लगन व प्यार का प्रभाव परम आत्मा पर पड़ता है | उनकी प्रसन्ता और नाराजगी का प्रभाव पड़ता है क्योंकि परम शक्ति उनके मान-सम्मान का ध्यान रखती है |
13. परम शक्ति ज्यादातर अदृश्य ही रहती है पर सौवें संगम युग में स्वयं इन्सानी रूप में आती है | तब भूतल पर परिवर्तन होता है और नए युग का आरम्भ होता है |	13. परम आत्मा हर संगम युग के उपरान्त आते हैं | युग परिवर्तन होता है अधर्म का नाश होता है, धर्म की स्थापना होती है | अज्ञानता का नाश होता है तथा ज्ञान का प्रकाश होता है |
14. परम शक्ति इन्सानों में से उनके पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर देवी-देवता, वीर-पीर, भगवानों का चुनाव करती है | उनको मान्यता देती है | उनके माध्यम से समीप आने वाले लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण करती है ताकि उनका मान-सम्मान बना रहे |	14. परम आत्मा परम शक्ति के उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने सहयोगी और सहायकों का चुनाव करते हैं | बाद में परम शक्ति उन्हें देवी-देवताओं, वीरों-पीरों के रूप में मान्यता देती है |
15. □□□ □□□□□ सृष्टि की रचयिता है । उसे नियमों में बांधती है और सभी कार्य करने में सक्षम है ।	15. □□□ □□□□□ की इच्छा से □□□ □□□□□ □□ हाथ में हर इन्सान का यश-अपयश, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, सुख-दुःख, खुशी-गमी, शान्ति-अशान्ति होती है।
16. परम शक्ति हर इन्सान को कर्मफल देती है | उसका कर्मफल देने का आधार "दूसरों से ऐसा व्यवहार करो जैसा व्यवहार आप अपने लिए दूसरों से चाहते हैं " नियम है |	16. परम आत्मा आदर्श जीवन जी कर दिखाते हैं | वह किसी को अपना दुश्मन नहीं समझते |
17. परम शक्ति हर कार्य संकल्प मात्र से पूरा कर लेती है |	17. परम आत्मा के शरीर में परमशक्ति विद्यमान रहती है | उनके अधिकतर कार्य परमशक्ति उनके संकल्प मात्र से पूरे कर देती है पर उन्हें अपनी कार्य सिद्धि के लिए शरीर का प्रयोग भी करना पड़ता है |

ईश्वर, इन्सान और इन्सानियत

सत्य की ओर एक कदम

- ❖ सृष्टि का हर्ता कर्ता धर्ता सब का मालिक है
- ❖ जो सब का मालिक है वही ईश्वर है
- ❖ ईश्वर का इन्सान के लिए नियम ही इन्सानियत है
- ❖ जिसमें इन्सानियत है वही इन्सान है

लेखक

श्री प्यारे लाल

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं।

लेखक व प्रकाशक :
प्यारे लाल
प्रबंधक
श्री मदन धाम, माणकपुर।

गांव : मेदा माजरा,
डाकखाना : प्रताप नगर,
नंगल डैम, रूप नगर (पंजाब)
पिन : 140125

11 सितम्बर 2012 .
प्रथम संस्करण : 3000 प्रतियाँ
मूल्य : 40 रुपये

समर्पण

मैं इस पुस्तक को परम पूजनीय
श्री ज्योति शक्ति जी के शुभ-जन्म

दिवस के अवसर पर अपने इष्ट परम शक्ति के साकार रूप पूर्ण परमेश्वर श्री मदन के कमल चरणों में सादर समर्पित करता हूँ।

प्यारे लाल

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या

i. दो शब्द

ii. प्रस्तावना

21. ईश्वर है तो कैसे ?

22. ईश्वर क्या है ?

23. ईश्वर एक है, कैसे ?

24. इन्सान और उस के जीवन में ईश्वर का महत्व

25. इन्सानियत

26. इन्सान दुःखी क्यों ?

27. इन्सान के जीवन का उद्देश्य: ईश्वर प्राप्ति और उसके पड़ाव

28. मोक्ष प्राप्ति और क्षम्य अपराध ?

29. ईश्वर के दर्शनों से पाप कब, क्यों और कैसे कटते हैं ?

30. आज्ञा और आदेश

31. परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप में धरा पर ! कैसे ?

32. श्री मदन धाम व दूसरे धार्मिक स्थानों में अन्तर

33. श्री मदन धाम में गुरुदीक्षा या नाम दान क्यों नहीं

34. कुल देवता से परमशक्ति तक कौन क्या है ?

35. परमशक्ति का अस्तित्व सिद्ध क्यों नहीं किया जा सकता ?

36. परमशक्ति अपनी सर्वोच्चता सदैव बनाये रखती है

37. आस्तिक से नास्तिक और नास्तिक से आस्तिक क्यों और कैसे ?

38. परिवर्तन : कुदरत का नियम, क्यों और कैसे ?

39. ईश्वर एक है तो मत-मतान्तर क्यों ?

दो शब्द

श्री मदन धाम माणकपुर आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है । यहाँ पर परमशक्ति इन्सानी रूप में आ कर आने वाले श्रद्धालुओं को अपने बारे में स्वयं ज्ञान दे रही है और अपनी दिव्य शक्ति से उस ज्ञान पर चला भी रही है । अत: उनसे बढ़ कर उच्चकोटि का पथ-प्रदर्शक और कौन हो सकता है, क्योंकि परमशक्ति की ही घोषणा है कि "मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ लेकिन इस समय एक इन्सान बनी हूँ। यह शरीर मेरा है, मेरा नाम मदन है।" माणकपुर दरबार में परमशक्ति के साकार रूप "पूर्ण परमेश्वर श्री मदन जी" अपने श्रीमुख से अध्यात्मवाद का सच्चा ज्ञान दे रहे हैं। उसके साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों, वहम-भ्रमों व आडम्बरों पर से भी पूरी तरह से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठा रहे हैं।

श्री मदन धाम माणकपुर से प्राप्त होने वाले ज्ञान की अद्बितीय विशेषता यह है कि हर बात क्रियात्मक रूप में सिद्ध करके सिखाई जाती है । इस प्रकार का प्रशिक्षण शायद ही कभी देखने और सुनने में आया हो । जो व्यक्ति स्वयं को यहाँ का श्रद्धालु मानता है, उसे यहाँ से प्राप्त किए गए ज्ञान को अपने जीवन में अपनाना पड़ता है। यदि कोई श्रद्धालु इसे अपनाने में आनाकानी करता है तो परमशक्ति अपनी ईश्वरीय शक्ति से उसे अपनी राह पर बलपूर्वक चलाने की क्षमता रखती है।

आज के युग में ईश्वर के बारे में इन्सान के मन में बहुत सी भ्रान्तियाँ हैं। परमशक्ति श्री मदन जी उन सभी भ्रांतियों पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठा रहे हैं। मैंने इस पुस्तक में श्री मदन जी द्वारा दिए गए ज्ञान को ही संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की है ताकि पाठकगण इसका लाभ उठा सकें। ईश्वर है या नहीं है एक द्वंद्व बना रहा है। इन्सान के बारे में भी हर किसी की सोच अलग-अलग है । जैसे हर इन्सान की शक्ल और आवाज़ अलग-अलग है ठीक उसी तरह हर इन्सान की रुचियाँ, स्वभाव, आदतें, सोच अलग-अलग होने के कारण उनका कर्म भी अलग-अलग है। कर्म के कारण ही इन्सान हैवान, शैतान या महान् बनता है।

इस पुस्तक में मैंने कोशिश की है कि ईश्वर, इन्सान और इन्सानियत के बारे में जो भ्रान्तियाँ या द्वंद्व हैं उनको दूर किया जा सके । परमशक्ति श्री मदन जी ने यहाँ पर जो भी क्रियात्मक रूप में ज्ञान दिया है उसका सारांश ही यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। यह ज्ञान इन्सान को एक नेक इन्सान बनाने में काफी सीमा तक सहायक हो सकता है । यह बातें मैंने सर्वोच्च शक्ति के इन्सानी रूप श्री मदन जी के कमल चरणों में बैठ कर, सुन कर, सीख कर, अनुभव करके वर्णन की है । मैं पूर्ण परमेश्वर श्री मदन जी का अति आभारी हूँ जिन्होंने ने मुझे अपनी शरण के योग समझते हूए ,इस दरबार का कार्य-भार सोंपा है। इस के अतिरिक्त मैं श्री सुभाष आर्य, यशपाल सिंह डडवाल, गुरबखश सिंह और मनदीप जी का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के लेखन कार्य और ढांचा तैयार करने में अपना पूर्ण सहयोग दिया है।

आशा है कि पाठकगण इस पुस्तक का गहन अध्ययन करके अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करेंगे । इसके साथ-साथ अपने जीवन को आदर्शमय बनाने हेतु ढंग और नियमों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए "जीवन दर्पण" पुस्तक का अध्ययन करें।

प्यारे लाल

माणकपुर

तिथि : 11 सितम्बर, 2012.

गांव : मेदा माजरा, डाकखाना : प्रताप नगर

नंग ल डैम, रूप नगर (पं जा ब)

पिन :14 012 5

प्रस्तावना

संसार में जितने भी लोग़ अध्यात्मवाद से जुड़े हुए हैं उनमें से कुछ लोगों की धारणा है कि संसार को चलाने वाली केवल एक ही शक्ति है। वही शक्ति कोई न कोई रूप बना कर, कहीं न कहीं अगम्य लोक में बैठ कर सृष्टि का संचालन कर रही है। वे उसे अनादि, अनन्त, अजन्मी और सर्वोच्च मानते हैं। उनकी यह धारणा भी परिपक्व है कि ईश्वर साकार रूप में कहीं न कहीं स्थायी रूप में विद्यमान है परन्तु वह इन्सान बन कर धरती पर कभी नहीं आता। वही रूप अपनी माया से सारी सृष्टि का संचालन कर रहा है परन्तु वह किसी को दिखाई नहीं देता।

सर्वोच्च शक्ति समय-समय पर महानात्माओं को अपने साधन के रूप में धरा पर भेज कर किसी सीमा तक अपने नियमों और गुणों का उनके द्वारा प्रदर्शन करती रही है।

वर्तमान काल में उसी शक्ति ने, जो कि सर्वोच्च और परम है, जिसके ऊपर कोई शक्ति है ही नहीं, स्वयं माणकपुर दरबार में घोषणा की है कि वह अब इन्सानी रूप में धरती पर आ चुकी है। आज उसका एक रूप, एक नाम और निश्चित मुकाम भी है। परमशक्ति के धरा पर आने के एक से अनेक प्रयोजन हो सकते हैं जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण यही है कि इन्सान को क्रियात्मक रूप में प्रमाण देकर यह सिद्ध करना कि उसका कोई भी स्थायी रूप कहीं भी नहीं है लेकिन वह कोई भी कोई भी रूप बना कर धरती पर आ सकती है, आती रही है और अब आ चुकी है। जब इन्सान उसे भूल कर, उससे विमुख हो कर और उसके बनाए हुए नियमों की खुले आम धज्जियां उड़ाता है तथा अपने आप को ही कर्ता समझता है, तब उसे समय-समय पर इन्सानी रूप में धरा पर आना पड़ता है। अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन वह पूर्ण रूप से किसी भी साधन द्वारा नहीं करती। मानवता के मन में यह धारणा बनाए रखना कि उसका अस्तित्व सृष्टि की रचना से पहले भी था, अब भी है और आगे भी रहेगा, उसका मुख्य उद्देश्य है।

उसके धरा पर आने के मुख्य उद्देश्य अपना अस्तित्व सिद्ध करना, क्रियात्मक रूप में आध्यात्मिक शिक्षा का ज्ञान देना और विश्व-बन्धुत्व की स्थापना करना है।

यहाँ यह बताना भी अति आवश्यक है कि पूर्ण परमेश्वर श्री मदन जी की शरण में आने से पहले मैं न तो किसी का उपासक था और न ही किसी का विरोधी। हालातों के वशीभूत होकर मैं श्री मदन धाम आया और पूर्ण परमेश्वर श्री मदन जी ने अपनी कृपा से मुझे अपना अनुभव कराया। साक्षात्कार होने के बाद मैंने उनके चरण कमलों में बैठ कर अध्यात्मवाद के सम्बन्ध में जो कुछ भी सीखा, अनुभव किया या देखा उसका ही वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। ईश्वर क्या है, उसके गुण, नियम, शक्तियाँ क्या हैं, वो एक है तो कैसे, ईश्वर और इन्सान का आपसी सम्बन्ध क्या है इनके बारे में संक्षिप्त रूप से ज्ञान दिया गया

है । इन्सान क्या है, उसके जीवन का उद्देश्य क्या है, इन्सान के ईश्वर के प्रति क्या कर्तव्य हैं, वह एक नेक इन्सान कैसे बन सकता है आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है । इन्सान को इन्सान समझना भाव इन्सानियत ही मनुष्य का सच्चा धर्म है । इन्सानित के मूल आधार क्या हैं इसका वर्णन भी इस पुस्तक में किया गया है ।

श्री मदन धाम अध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है । यहाँ सृष्टि का स्वामी, जो सबका मालिक है, क्रियात्मक रूप में ज्ञान दे रहा है । परमशक्ति द्वारा दिए गए ज्ञान के आधार पर ही इस पुस्तक में श्री मदन धाम और दूसरे धार्मिक स्थानों में अन्तर, परमशक्ति इन्सानी रूप में धरा पर कैसे, इन्सान दुखी क्यों, इन्सान के जीवन का उद्देश्य और ईश्वर प्राप्ति के पड़ाव, मोक्ष प्राप्ति और अक्षम्य अपराध, ईश्वर के दर्शन मात्र से ही जन्म-जन्म के पाप कट जाते हैं-कब, क्यों और कैसे, आज्ञा और आदेश, कुल देवता से परमशक्ति तक कौन क्या है, श्री मदन धाम में गुरुदीक्षा क्यों नहीं दी जाती, परमशक्ति का अस्तित्व सिद्ध क्यों नहीं किया जा सकता, आस्तिक से नास्तिक और नास्तिक से आस्तिक क्यों और कैसे, परमशक्ति अपनी सर्वोच्चता सदैव बनाए रखती है, कुदरत का नियम परिवर्तन क्यों और कैसे, ईश्वर एक है तो मत-मतान्तर क्यों इत्यादि विषयों पर क्रियात्मक रूप में जो ज्ञान परमशक्ति के श्रीमुख से प्राप्त किया है, उसका ही इस पुस्तक में वर्णन किया गया है ।

यह ज्ञान इन्सान को एक नेक इन्सान बनाने में काफी सीमा तक सहायक हो सकता है ये सभी बातें मैंने स्वयं सर्वोच्च शक्ति के इन्सानी रूप श्री मदन जी के कमल चरणों में बैठ कर, सुन कर, सीख कर और अनुभव करके वर्णन की हैं ।

तिथि : 11 सितम्बर 2012. प्यारे लाल,

प्रबंधक,

श्री मदन धाम माणकपुर ।

1
ईश्वर है तो कैसे ?

सब कुछ बन जाने के बाद ही इन्सान धरती पर प्रकट हुआ। ज़ाहिर है कि यह सब कुछ बनाने में इन्सान का कोई योगदान नहीं तो फिर वह कौन है जिसने यह सब कुछ बनाया ? इन्सान इस धरती पर सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। विज्ञान के चमत्कारों से आज इन्सान में यह धारणा बनती जा रही है कि ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं है, पर विज्ञान भी इस बात से सहमत है कि इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले ही सृष्टि की रचना हो चुकी थी। जीव–निर्जीव अर्थात पर्वत, नदियाँ, समुद्र, वनस्पति, पानी के जीव, धरती पर विचरने वाले जीव, पशु-पक्षी, सूर्य, चाँद, जलवायु, वायुमंडल आदि सब अस्तित्व में आ चुके थे। इस से प्रमाणित होता है कि इन सबको बनाने वाला कोई और है, वही ईश्वर है।

जीव–निर्जीव, सूर्य–चन्द्रमा, सितारे-ग्रह और इन्सानी जीवन नियमों में बंधा हुआ है जैसे सूर्य का उदय और अस्त होना, ग्रहों का नियमित गति से चक्कर लगाना, पौधों का उगना, निश्चित समय में उस का विकास होना और उस पर फूलों और फलों का लगना आदि। इसी तरह इन्सान का पैदा होना, शिशु अवस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था का होना, निश्चित समय पर इन्सान के कद का बढ़ना बंद हो जाना और फिर बुढ़ापे का आना, बच्चे के जन्म लेते ही माँ के शरीर में दूध का आना, हर जीव का पैदा होना और मरना, निर्जीव का भी खत्म हो जाना आदि। धरती में आकर्षण शक्ति का होना, अगर धरती में पर्याप्त आकर्षण शक्ति न होती और जीवन रक्षक वायु-मण्डल न होता तो क्या इन्सानी जीवन संभव हो सकता था ? धरती में उपजाऊ शक्ति का होना और धरती में ही खनिज पदार्थ, तेल, पेट्रोलियम, कोयला, लोहा, चांदी, ताम्बा आदि का होना। प्रश्न है कि इन सब को नियमों में बांधने वाला कौन है ? धरती के अंदर उन पदार्थों को पैदा करने वाला कौन है ? इन्सान तो इनके बारे में ठीक ढंग से जान भी नहीं सका है। उन सब को नियमों में बाँधने वाला और धरती के अंदर इनको पैदा करने वाला इन्सान तो नहीं हो सकता, फिर वह कौन है ? वह ही ईश्वर है।

हर जीव के शरीर के अंदर रक्त-संचार प्रणाली, श्वास प्रणाली, पाचन प्रणाली मौजूद होती हैं, इसी तरह इन्सानी शरीर में भी यह प्रणालियाँ होती हैं जैसे कि सांस का निश्चित गति से चलना, खाने के बाद खाने का पाचन होना, शरीर में रक्त का संचार निश्चित गति से होना। प्रश्न है कि इन प्रणालियों का संचालन कौन करता है ? इन्सान चाहे भी तो इनका संचालन अपनी इच्छा से नहीं कर सकता। फिर इनका संचालन कौन करता है ? जो शक्ति संचालन कर रही है वही ईश्वर है।

इन्सानी जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ और वातावरण बन जाते है जब इन्सान सब कुछ होते हुए भी लाचार, बेबस, मजबूर हो जाता है, जो वह करना चाहता है कर नहीं पाता जो नहीं चाहता वह हो जाता है। क्या इन्सान चाहता है कि वह जीवन में दुःख पाए, उसे कारोबार में असफलता मिले, उसका अपयश हो, पर इन्सान को अपने जीवन में इन परिस्थितियों में से गुजरना पड़ता है। इससे तो यही सिद्ध होता है कि कोई और है जिस के आगे इन्सान बेबस, लाचार और मजबूर होता है और जिस के हाथ में इन्सान की सफलता-असफलता, यश-अपयश, सुख-दुःख, लाभ-हानि है। वही ईश्वर है।

ईश्वर के सम्बन्ध में अनेक धार्मिक ग्रंथ, शास्त्र, आदि लिखे गये हैं । ऋषियों, मुनियों, सन्तों और महान् आत्माओं ने भी ईश्वर के बारे में ज्ञान दिया है परन्तु मौखिक रूप में । क्रियात्मक रूप में ईश्वर का ज्ञान केवल वही दे सकता है जो सब कुछ है, जिसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं, वह इन्सान नहीं हो सकता । जो अपनी इच्छा से कोई भी रूप धारण कर सकता है, वह ही ईश्वर है ।

यह सब जानते है कि अध्यात्मवाद में जो भी देवी-देवता, वीर-पीर, भगवानों के नाम हैं वे सब कभी न कभी शरीर रूप में धरती पर आए थे अर्थात् वे सब इन्सान थे । प्रश्न है कि किसने इन्हें मान्यता दी, किसने प्रदर्शन किया जिस आधार पर उनके नामों के साथ विशेषण लगे । इन्सानों में से देवी देवताओं का चयन वही कर सकता है जिसके लिए कुछ भी असंभव नहीं, जो सर्वज्ञ है, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है वह इन्सान नहीं है । जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है, वही ईश्वर है ।

जैसे शरीर के अन्दर एक शक्ति है, जो शरीर का संचालन करती है पर दिखाई नहीं देती और जिस के अस्तित्व से इन्कार भी नहीं किया जा सकता, ठीक उसी तरह इस सृष्टि का संचालन करने वाली भी एक शक्ति है जो अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है और वह इस सृष्टि के कण-कण में होते हुए भी दिखाई नहीं देती । उस अदृश्य शक्ति को ही परम शक्ति, ईश्वर, अल्लाह, वाहिगुरु, गॉड, राधा-स्वामी, निरंकार आदि नाम दिए गए हैं । उसको ही कुदरत, प्रकृति, नेचर कहा गया है । ईश्वर के अस्तित्व के सर्वविदित यह कुछ स्पष्ट प्रमाण है ।

2
ईश्वर क्या है ?

ईश्वर न नर है न नारी, वह तो एक शक्ति है, जो अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है । केवल वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है । जीव-निर्जीव को बनाने वाली, उन्हें नियमों में बांधने वाली, जीवों की पालन कर्ता और संहार कर्ता केवल वही है । वही शक्ति सर्वरूपणी है अर्थात् हर रूप में वह स्वयं ही कार्य करती है । वही कर्मफल दाता है । वह सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है । वह न्यायकारी होते हुए भी परम दयालु है । वह आनन्द की दाता, सुखों का भण्डार, शरणागत् की रक्षक, पाप कटेश्वर और मुक्तेश्वर है।

ईश्वर अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए कभी-कभी महान् आत्माओं के द्वारा अपना निर्जीव चिह्न या सजीव रूप निर्धारित करके उनके माध्यम से अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करता है । वह शक्ति जिस को ईश्वर कहा गया है, बहुत लम्बे समय के बाद अपनी इच्छा से स्वयं ही इन्सानी रूप में धरती पर आती है । उस समय ही वह क्रियात्मक रूप

में प्रमाणित करती है कि इन्सान का यश-अपयश, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, सुख-दुःख, खुशी-गमी, शान्ति-अशान्ति, जीवन-मृत्यु आदि उसी के हाथ में है।

ईश्वर भी चेतन है जड़ नहीं। उन्हें भी हर इन्सानी घटनाक्रम का एहसास होता है जिसका उन पर प्रभाव भी पड़ता है। ईश्वर भी इन्सान से कुछ चाहते हैं क्योंकि उन्होंने जो कुछ भी बनाया है इन्सान के लिए ही बनाया है, वह भी चाहते है कि इन्सान उनके अस्तित्व को माने और उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करे, उनसे निःस्वार्थ प्यार करे और सदा उनका शुक्रगुज़ार रहे। जो इन्सान उनको नर रूप में मानते हैं वह उनको परमपिता परमात्मा, ईश्वर, अल्लाह, वाहिगुरु, राधा-स्वामी, निरंकार, आदि नामों से याद करते हैं। जो इन्सान उनको नारी रूप में मानते हैं वह उनको जगत-जननी, जगदम्बे, अम्बे, अम्बिका, जगदीश्वरी, जगन्माता, जगदम्बिका, परमेश्वरी, योगमाया, महामाया, मायामाई, महेश्वरी आदि नामों से याद करते हैं। जो इन्सान उसको किसी भी रूप में नहीं मानते वह उन्हें कुदरत, प्रकृति, नेचर, अगम्य शक्ति, अनाम शक्ति, अनजान शक्ति आदि नामों से पुकारते हैं। उपरोक्त दिए सभी नाम एक ही शक्ति के हैं।

ईश्वर ने अपने और इन्सान के कार्यक्षेत्र की सीमाएँ निश्चित की हुई हैं। जो काम इन्सान के कार्यक्षेत्र से बाहर होता है या जो काम इन्सान की शक्ति से बाहर हो वह काम ईश्वर स्वयं करते हैं। ईश्वर कभी भी इन्सान के कार्यक्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करते हैं। ईश्वर ने अपना फ़र्ज़ निभाते हुए इन्सान की हर जरूरत को पूरा करने का प्रबन्ध पहले ही कर दिया था। जैसे जल-वायु, अग्नि, धरती, आकाश, सूर्य, चाँद, सितारे, ग्रह, उपग्रह, धरती में उपजाऊ शक्ति, खनिज पदार्थ, तेल, कोयला, लोहा, चांदी, ताम्बा, पेट्रोलियम आदि। धरती पर हल चलाना, अनाज पैदा करना, बीज बीजना, धरती में से खनिज पदार्थ निकलना इन्सान का काम है। बीजों से पौधों को पैदा करना, उसका विकास करना, वर्षा करना ये सब ईश्वर के काम हैं।

ईश्वर ने इन्सान को अपने बारे में ज्ञान करवाने के लिए समय-समय पर महान् आत्माओं को धरती पर भेजा है। देश, काल और समय की परिस्थितियों के अनुसार उनके द्वारा अपने बारे में ज्ञान भी करवाया ताकि इन्सान यह जान सके कि इस सृष्टि को कोई चलाने वाला है, नियमों में बांधने वाला है। वही कर्म फल दाता, भाग्यविधाता, मोक्षदाता है, वही यमराज है, वही धर्मराज है, वही सत्य, न्याय और प्यार का प्रतीक है। उस के पास ही इन्सान अपना नाशवान शरीर त्याग कर जाता है। संक्षिप्त में इतना ही कहना है कि ईश्वर और इन्सान के कार्यक्षेत्र की अपनी-अपनी सीमाएं हैं। ईश्वर ने इन्सान के प्रति अपने कर्तव्य निभाए हैं जो कुछ भी बनाया है इन्सान के प्रयोग के लिए ही बनाया है।

3
ईश्वर एक है, कैसे ?

सभी कहते हैं कि सबका मालिक एक है, यह भी कहा गया है कि एक नूर से सब जग उपजा, भाव इस सृष्टि को बनाने वाला कोई है जो गिनती में एक है। अब प्रश्न है कि जो सब का मालिक है जो इस सृष्टि का निर्माता है, गिनती में एक है तो संसार में अनेक रूपों में पूजा क्यों हो रही है ? संसार में कोई देवी-देवताओं के रूप में पूजा करता है, कोई वीरों-पीरों के रूप में, कोई भगवानों के रूप में और कोई ऋषि-मुनिओं और गुरुओं की मान्यता करता है। जो जिसकी मान्यता करता है वह उसको ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान मानता है। अब इन्सान प्रार्थना तो उस रूप के सामने अपने मन में करता है और समझता है कि जिसके आगे वह प्रार्थना कर रहा है वह उसकी प्रार्थना सुन रहा है। जब उसकी मनोकामना पूरी हो जाती है तो वह यही सोचता है कि जिसके आगे उसने प्रार्थना की है उसने ही उसकी मनोकामना को पूरा किया है। इन्सान का विश्वास इसलिए भी पक्का हो जाता है क्योंकि जब इन्सान से कोई निरादर या भूल हो जाती है तब उसे कष्ट, परेशानी का सामना करना पड़ता है तब उसका विश्वास और भी दृढ़ हो जाता है। क्या देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान, संत-गुरु, ऋषि-मुनि आदि सारे सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान हैं ? अगर ये सारे सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान हों तो क्या होगा ? फिर तो सारे कर्मफल दाता बन जाएंगे और ईश्वर की कार्यप्रणाली में अराजकता फ़ैल जाएगी। सत्य तो केवल यही है कि ये लोग कभी न कभी धरती पर इन्सानी रूप में आए थे। इन सब ने, जो सबका मालिक है, उसकी भक्ति की, उससे

निःस्वार्थ प्यार किया, उसके प्रति श्रद्धा, विश्वास और लगन रखी । उस ताकत ने उन्हें उपरोक्त रूपों में मान्यता प्रदान की और उनका महत्व बनाए रखने के लिए उन के लिए स्थानों की स्थापना करवाई और उन स्थानों में जाने वाले लोगों की मनोकामनाओं को पूर्ण किया । उनके रूपों में लोगों को दुःखों, कष्टों, परेशानियों से राहत दी भाव उस ताकत ने स्वयं परदे के पीछे रहकर उनको यश दिया । उनके भक्तों के पास भी वही ताकत, जिस को ईश्वर, अल्लाह, वाहिगुरु, गॉड, राधास्वामी, निरंकार कहा है, आप स्वयं उनका रूप बना कर दर्शन देने गई । इसलिए पूजा अनेक रूपों में हो रही है और इसलिए ईश्वर को सर्वव्यापी भी कहा गया है क्योंकि हर रूप में वह स्वयं ही कार्य करती है ।

ईश्वर ही कर्मफल दाता है, भाग्यविधाता है क्योंकि केवल वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान हैं । ईश्वर के अतिरिक्त अध्यात्मवाद में जितने भी नाम हैं, उनमें से कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं है । ईश्वर ही माया रूप में जग के कण-कण में व्यापक है और वह गिनती में एक है । वास्तविकता तो केवल यह है कि ईश्वर एक है, उसके रूप अनेक हैं और वही हर रूप में कार्य करते हैं ।

4
इन्सान

इन्सान का शाब्दिक अर्थ है मनुष्य, आदमी, मानव । प्रश्न यह है कि इन्सान किसको कहते हैं ? यह जो शरीर है क्या इसको इन्सान कहा गया है ? अगर इसको इन्सान कहा गया है तो यह शरीर जब प्राण छोड़ देता है तो इसको मुर्दा क्यों कहा जाता है। अगर देखा जाए तो यह शरीर चर्बी, हड्डियां, नसें, खून, अंतड़ियाँ, फेफड़े, गुर्दे, मास और चमड़ी का मिश्रण है, क्या यह सब मिलकर इन्सान कहलाते हैं ? यह सब चीज़ें तो पशु-पक्षियों और जानवरों के शरीर में भी मौजूद होती हैं, फिर इन्सान क्या है ?

इन्सान सब प्राणियों में से ईश्वर द्वारा रची हुई सर्वश्रेष्ठ रचना है। ईश्वर ने इन्सान को सारे प्राणियों का सरताज बनाया है। इन्सानी ढांचे का निर्माण इतने सुंदर ढंग से किया गया है कि इन्सान अपना काम स्वतन्त्र ढंग से कर सके। इन्सान को ही बुद्धि तत्व दिया है जिससे वह अच्छे-बुरे की पहचान कर सके, इस के साथ ही विचारों को प्रकट करने के लिए भाषा दी है। यहाँ प्रश्न पैदा होता है, ईश्वर क्या है इस को पिछले अध्याय में स्पष्ट कर दिया गया है। संक्षेप में इतना ही कहना है कि ईश्वर वह ताकत है जो न नर है न नारी है, वह तो अनादि, अनंत, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है वही कर्मफल दाता है, उसने ही सृष्टि बनाकर नियमों में बाँधी है। उसने जो कुछ भी इस सृष्टि में बनाया है वह इन्सान के लिए ही बनाया है । अंत में उसने इन्सानी चेतन शक्ति को शरीर देकर अपने लिए उसका निर्माण

किया, उसी ताकत ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है जैसे कि दिन-रात, सर्दी-गर्मी, अध्यात्मवाद-भौतिकवाद, ईश्वर-इन्सान, उसी तरह से इन्सानी चेतन-शक्ति और भौतिक शरीर। अगर शरीर में चेतन शक्ति न हो तो वह शरीर शव है। अगर भौतिक शरीर नहीं है, तो उस चेतना का कोई महत्व नहीं है, भाव यह कि चेतन-शक्ति के बिना शरीर की कोई पहचान या महत्व नहीं और शरीर के बिना चेतन-शक्ति की कोई पहचान नहीं है। दोनों के समावेश को ही इन्सान कहा गया है।

इन्सानों की भी श्रेणियाँ है। एक वह इन्सान है जिसके अन्दर इन्सानियत नाम की कोई चीज़ ही नहीं होती। वह अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। उसके अंदर इर्ष्या, नफरत, जलन कूट-कूट कर भरी होती है। वह दूसरों के दुःख को देख कर आनन्द महसूस करता है। उसकी सोच में शैतानियत, हैवानियत और दुष्ट विचार भरे होते है क्योंकि वह कर्म और कर्मफल के प्रति ध्यान नहीं देता। संक्षेप में इतना ही कहना है कि उसके कर्म सिर्फ दूसरों को दुःख देना, उनका मज़ाक उड़ाना, दूसरों के कामों में रुकावट पैदा करना और उनकी मज़बूरी का लाभ उठाना, भाव हर मौके का लाभ उठाना ही उसकी विशेषता होती है। इस तरह के इन्सान ईश्वर को न मानने वाले होते है। इनकी संख्या भी कम होती है।

दूसरी श्रेणी में वह इन्सान आते हैं जिनमें अच्छे और बुरे गुणों का मिश्रण होता है। अधिकतर यह विकारों के अधीन ही काम करते हैं और अपने स्वार्थों तक ही सीमित रहते हैं। इनकी सोच अपने परिवार, सगे-सम्बन्धी या दोस्तों तक ही सीमित रहती है। जब तक इनका स्वार्थ पूरा होता रहता है तब तक यह किसी का बुरा नहीं करते। पर जब इनके स्वार्थ टकराते हैं तब यह इर्ष्या, द्वेष, नफरत, जलन, छल-कपट, बदले की भावना का सहारा लेते हैं। भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए ठीक-गलत दोनों ढंगों का प्रयोग कर लेते हैं। इस तरह के इन्सान दुष्कर्म करते समय इस बात का एहसास नहीं करते कि वे गलत काम कर रहे हैं। विवेकशील न होने के कारण वह गलत-सही का निर्णय नहीं कर पाते। इनमें इन्सानियत होती तो है पर कम। इनमें से कुछ इन्सान ऐसे भी होते है जो स्वार्थ से भी ऊपर उठ कर जीवन गुज़ारते हैं। इसलिए इनमें अच्छे गुण, बुरे गुणों से ज्यादा होते हैं और यह अच्छे-बुरे, ठीक-गलत का एहसास कर सकते हैं। यह इन्सान आस्तिक और नास्तिक दोनों तरह के होते हैं, इस तरह के इन्सान असंख्य होते है।

तीसरी श्रेणी के इंसान वे होते है जिनमे अच्छे गुणों की भरमार होती है और अवगुण नाम मात्र होते हैं। विकार तो हर इन्सान में होते ही हैं पर ऐसे इन्सान विकारों का सदुपयोग करते हैं। इसलिए ऐसे व्यक्ति ईश्वर की कृपा के पात्र बनते हैं। इनका स्वभाव शांत और सरल होता है। इनमें छल-कपट, चुस्ती-चालाकी, हेरा-फेरी आदि नहीं होते। इन इन्सानों में भौतिक सुखों के प्रति आकर्षण कम होता है और वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ठीक और उचित ढंग को अपनाते हैं। इनको जो कुछ भी मिलता है उसमें ही संतुष्ट हो जाते हैं। यह इन्सान ज़्यादातर सद्कर्म करते हैं। यह आस्तिक होते हैं और ईश्वर के साथ निःस्वार्थ प्यार करते हैं और दूसरों की भावनाओं की कदर करते हैं। वे नेक कर्म सद्व्यवहार और सभी से प्यार करते हैं और दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा व्यवहार अपने लिए दूसरों से चाहते हैं। इस तरह के इन्सान बहुत कम होते हैं।

चौथी श्रेणी के इन्सान सद्गुणों का भंडार होते हैं। यह इन्सान अपनी इच्छा से कुछ नहीं करते, सब कुछ परमशक्ति की इच्छा पर छोड़ देते हैं। इनका व्यवहार सत्य, न्याय और प्रेम पर आधारित होता है। इनके अंदर त्याग की भावना अधिक होती है, इसलिए वे भौतिक सुखों की इच्छा नहीं करते। वे आदर्श जीवन जीते हैं और सभी के दिलों में बसते हैं। वे अधर्म का नाश करने के लिए किसी भी नीति का प्रयोग कर लेते हैं। वे दयालु, कृपालु, और दया के सागर होते हैं। वे किसी को भी अपना दुश्मन नहीं मानते, अगर कोई इन्हें अपना दुश्मन भी समझता है तो भी वे उनसे प्यार ही करते हैं। ऐसा इन्सान एक समय में गिनती में केवल एक ही होता है और वह भी निश्चित होता है।

उपरोक्त श्रेणियाँ गुणों के आधार पर हैं। अब जिन श्रेणियों का वर्णन करने जा रहे हैं वह इन्सान की सोच और बुद्धिमत्ता पर आधारित हैं।

मनमत --

सबसे पहली श्रेणी उनकी है, जो अपनी बुद्धि पर ही विश्वास करते हैं। जो कुछ उनके मन में आता है उसे ही वे श्रेष्ठ मानते हैं और वे किसी के कहने को सत्य नहीं मानते। इस तरह के इन्सान अपनी धुन के पक्के होते हैं। जो उनकी समझ में आता है उसी को वे सही मानते हैं। जो उनकी समझ में नहीं आता है उस वे सही नहीं मानते। ऐसी सोच वाले व्यक्तियों को मनमति या मनमत वाला कहा जाता है।

शास्त्रमत --

दूसरी श्रेणी में वे इन्सान आते हैं जो सिर्फ धार्मिक ग्रंथों से ज्ञान प्राप्त करने को ही ठीक मानते हैं। उन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं होता कि ज्ञान में कितनी सच्चाई है भाव जो कुछ धार्मिक ग्रंथों में लिखा गया है, वह ही ठीक है, पत्थर पर लकीर है। इस तरह के ज्ञान को शास्त्रमत या किताबी ज्ञान भी कहा जाता है।

गुरुमत --

तीसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जो गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान को महत्व देते हैं। उनका किताबी ज्ञान, शास्त्रों के ज्ञान या व्यक्तिगत सोच के साथ कोई मतलब नहीं होता। उनके गुरु जो कहते हैं वे उन्हें ही सत्य मानते हैं और अपनी व्यक्तिगत सोच और विचारों से ज्यादा गुरु की शिक्षा को महत्व देते हैं। इस तरह की सोच वाले इन्सानों को गुरु मत को मानने वाले कहा गया है।

श्रीमत --

चौथी श्रेणी उन इन्सानों की है जो न तो अपनी सोच से काम लेते हैं, न ही शास्त्रों, ग्रंथों के ज्ञान को मान्यता देते हैं और न ही किसी गुरु या महान् आत्माओं के ज्ञान को मान्यता देते हैं। उनके अनुसार ज्ञान केवल वही श्रेष्ठ होता है जो ज्ञान ईश्वर किसी शरीर का प्रयोग करके या स्वयं अपने इन्सानी रूप में अपने मुख से देते हैं। उस वक्त दिया गया ज्ञान श्री मत का ज्ञान कहलाता है।

उपरोक्त श्रेणियों के इलावा और भी श्रेणियां हैं जो उनके मनोबल पर आधारित हैं:

साधारण मनोबल --

इनमें पहली श्रेणी उन इन्सानों की है जो बिना किसी संघर्ष के अपनी मंजिल को पाना चाहते हैं। अगर मंजिल की प्राप्ति में उनको मुश्किल नज़र आती है तो वह रास्ता छोड़ कर किसी और रास्ते पर चल पड़ते हैं भाव मुश्किल और परेशानियों के डर से काम शुरू ही नहीं करते।

मध्यम मनोबल --

दूसरी तरह के इन्सान वे हैं जो अपनी मंजिल को पाना तो चाहते हैं, उस के लिए कोशिश भी करते हैं, पर अगर उनकी मंजिल में रुकावटें, परेशानियां ज्यादा आ जाती हैं, तो वे धीरज छोड़ देते हैं और निराश होकर अपना रास्ता बदल लेते हैं, भाव इस तरह के इन्सान ज्यादा संघर्ष नहीं कर सकते।

ऊँचा मनोबल --

तीसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जो अपनी मंजिल को पाने के लिए हर तरह की रुकावट, समस्या, मुश्किल का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं। मुश्किलों, परेशानियों से वे घबराते नहीं अपितु मज़बूती के साथ अपनी मंजिल की तरफ बढ़ते रहते हैं भाव किसी भी हालत में उनका मनोबल नहीं गिरता और वे अपनी मंजिल को प्राप्त करते हैं।

यह पहले भी स्पष्ट किया जा चुका है कि इन्सानी शरीर और जीव आत्मा (चेतन शक्ति) दोनों के मिश्रण को इन्सान कहा गया है। इस के साथ ही यह स्पष्ट करना भी ज़रूरी है कि इन्सानी शरीर के अन्दर जीव आत्मा के साथ ईश्वरीय शक्ति भी विराजमान होती है जो परमशक्ति का अंश होता है और मूक दर्शक बना रहता है। वह तब तक मूक दर्शक रहता है जब तक जीव-आत्मा ईश्वरीय अंश के साथ सम्पर्क स्थापित नहीं कर लेती। जब जीव आत्मा का सम्पर्क ईश्वरीय अंश से हो जाता है तब वह अंश उस जीव आत्मा का मार्ग दर्शन करता है। कर्मफल इन्सानी जीव आत्माएं भोगती हैं, ईश्वर का अंश नहीं। परमशक्तिने इन्सान के प्रति अपने हर कर्तव्य को पूरा किया है, उसके जीवन के लिए हर उचित प्रबंध किया है। उसे अपने बारे में ज्ञान करवाने के लिए समय-समय पर अनेक महान् आत्माओं को धरती पर भेजा है। उनके द्वारा इन्सान को अपने बारे में ज्ञान करवाया कि इन्सान को रचने वाला कोई है जो सब कुछ करने में समर्थ हैं। इसलिए इन्सान का कर्तव्य है कि वह उस ईश्वर के अस्तित्व को माने और उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे कि ईश्वर के गुण, शक्तियां और नियम क्या हैं। इन्सान का कर्तव्य है कि वह ईश्वर को पहला स्थान दे। जो इन्सान इस तरह करता है तो ईश्वर भी उसको पहला स्थान देते हैं। जब इन्सान ईश्वर के प्रति अपने फर्जों से बेमुख होता है तो उसे अपने जीवन में दु:खों-कष्टों और परेशानियों का सामना करना पड़ता है। परमशक्ति ने इन्सान के लिए जीवन को सुचारू ढंग से चलाने के लिए कुछ फ़र्ज़ बनाए हैं।

1. इन्सान का पहला फ़र्ज़ है कि वह अपनी सेहत का ध्यान रखे। अगर उसकी अपनी सेहत ठीक है तब ही वह अपने परिवार और समाज के प्रति फर्जों को निभा सकेगा।

2. दूसरा कर्तव्य परिवार के प्रति है। माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति फ़र्ज़ है कि वे अपने बच्चों का पालन-पोषण अपने सामर्थ्य के अनुसार करें। इसी प्रकार बच्चों का भी फ़र्ज़ है कि वे अपने माता-पिता का सहारा बनें।
3. इन्सान का तीसरा कर्तव्य समूची मानवता के प्रति है। वह देश और मानवता के प्रति ऐसा कोई भी काम न करें जो देश और मानवता के लिए घातक हो। इन्सान का धर्म व कर्म इन्सानियत पर ही आधारित होना चाहिए।
4. इन्सान का चौथा कर्तव्य उन इन्सानों के प्रति है जिनके बीच उसे हर समय विचरना होता है। इन्सान का कर्तव्य है कि दूसरों से ऐसा ही व्यवहार करे जैसा व्यवहार वह अपने लिए दूसरों से चाहता है। किसी के साथ इर्ष्या-द्वेष, नफ़रत आदि न करे।
5. इन्सान का पांचवा कर्तव्य ईश्वर के प्रति है कि वह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करे, उस के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करे और ईश्वर के प्रति शुक्रगुज़ार रहे। क्योंकि ईश्वर से बड़ा परोपकारी कोई नहीं होता है, इसलिए इन्सान को ईश्वर के उपकारों को कभी भी भूलना नहीं चाहिए।

वास्तव में इन्सान वही होता है जिसमें इन्सानियत नाम की चीज़ मौजूद है। इन्सानियत क्या है ? ईश्वर द्वारा इन्सान के लिए बनाए गये नियमों और सिद्धांतों पर चलना जैसे कि नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करना ही इन्सानियत है। दूसरा नियम है, दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करो जैसा कि आप अपने लिए दूसरों से चाहते हो। जब इन्सान इन नियमों को जीवन में अपनाता है तब इसका अर्थ है कि उस में इन्सानियत नाम की चीज़ है और वही इन्सान कहलाने का हकदार है भाव उसे ही इन्सान कहना उचित है।

इन्सान के जीवन में ईश्वर का महत्व

पाठकगण पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं कि संसार के सब प्राणियों में से ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना इन्सान है। ईश्वर ने इन्सान को ही वह बुद्धि दी जिससे वह अच्छे बुरे की पहचान कर सके, विचार व्यक्त करने के लिए उसे भाषा दी, विवेकशीलता दी, इस के साथ ही ईश्वर ने इन्सान के अन्दर पांच प्रवृतियों काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार का समावेश किया ताकि सृष्टि का संचालन एवम् आवागमन का चक्र सुचारू ढंग से चलता रहे। इन्सान कर्म करता है और कर्म फल भोगता है। उसी को ईश्वर ने अपना राज़दार बनाया है। समय-समय पर महान आत्माओं को धरा पर भेज कर इन्सान को अपने बारे में ज्ञान करवाया। इन्सान के जीवन में सुख-दुःख, खुशी-गमी, सफ़लता-असफलता, लाभ-हानि, यश-अपयश, जीवन-मृत्यु सभी ईश्वर की देन हैं पर यह सब पूर्व जन्म के संस्कारों का ही फल होता है ईश्वर ने ही इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले उसकी हर जरूरत का उचित प्रबंध किया अर्थात् इन्सान जिन

वस्तुओं का प्रयोग करता है वह सब ईश्वर ने ही बनाई हैं इन्सान ने तो उनकी केवल खोज ही की है □ इन सब प्रमाणों के होने के बावजूद इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को मानने से इन्कार कर रहा है क्योंकि इन्सान को ईश्वर दिखाई नहीं देता □ इस लिए इन्सान कह देता है कि यह सब अपने आप ही हो रहा है, इन्सान ही कर्ता है और कोई कर्ता नहीं है जो इन्सान के जीवन को प्रभावित कर रहा है □

इन्सान के जीवन में ईश्वर का क्या महत्व है और क्यों है ?

निम्नलिखित कुछ कारण दिए गए हैं जो यह दर्शाते हैं कि इन्सान के जीवन में ईश्वर का क्या महत्व है और क्यों है ?

सृष्टि रचना में ईश्वर की इन्सान के लिए देन :

सर्वप्रथम यदि यह सोचा जाए कि यह सूरज, चाँद, सितारे, धरती, आकाश, वायुमण्डल आदि किस ने बनाए तो इन्सान कहेगा कि कुदरत ने □ कुदरत, जिस ने यह सब कुछ बनाया है, जिन के कारण इन्सान का जीवन संभव हो सका, उसी कुदरत को ही ईश्वर कहते हैं □ ईश्वर ने ही सृष्टि की रचना के पश्चात् इन्सान बनाया, उसकी जरूरतों का उचित प्रबन्ध किया □ ईश्वर ने जो कुछ भी बनाया है उसका प्रयोग इन्सान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में करता है □ यदि ईश्वर ने यह सब न बनाया होता तो इन्सान का जीवन संभव हो ही नहीं सकता था □

धरती में आकर्षण शक्ति :

जो कुछ भी दिखाई दे रहा है या नहीं दिखाई दे रहा वह सब नियमों में बंधा हुआ है □ परमशक्ति ने ही हर जीव निर्जीव को नियमों में बांधा है □ परमशक्ति का कोई भी कार्य निरर्थक नहीं होता □ यदि देखा जाए, अगर धरती में आकर्षण शक्ति न हो तो धरती पर कुछ भी नहीं ठहर सकता □ सब कुछ वायुमण्डल में ही उड़ता रहेगा, उस अवस्था में जीवन कैसे संभव हो सकता है ? यह ईश्वर की ही कृपा है कि धरती में आकर्षण शक्ति है और इन्सान का जीवन संभव है □

जल-वायु व खनिज पदार्थ :

सर्वप्रथम जीवों को जीने के लिए हवा, पानी, खुराक इत्यादि की जरूरत होती है । परमशक्ति ने इस का बड़े ही सुनियोजित ढंग से प्रबन्ध किया है । धरती की सतह पर 28% भूमि है और 72% पानी है । इस से बारिश होती है, सृष्टि चक्र चलता है, इन्सान को खाद्य पदार्थ मिलते हैं । आज धरती पर कितनी जन संख्या है पर परमशक्ति ने हर चीज़ का उचित प्रबन्ध पहले से ही किया हुआ है । क्या इन्सान यह सृष्टि चक्र चला सकता है ? धरती में खनिज पदार्थ, पेट्रोलियम, बिजली, यह सब परमशक्ति ने पहले से ही पैदा किए हुए हैं, इन्सान ने तो केवल इनकी खोज की है, वह भी जब परमशक्ति ने जरूरत महसूस करवाई तब ही खोज हुई और उसका श्रेय इन्सान को दिया । यदि इन्सान ही कर्ता है तो इन्सान ने पहले ये खोजें क्यों नहीं कर लीं ? परमशक्ति ने एक सीमा रेखा खींच रखी है कि यह काम इन्सान का है और यह काम परमशक्ति का है । जैसे धरती में बीज डालना इन्सान का काम है, फल लगाना या न लगाना यह ईश्वर का काम है । यही कारण है कि इन्सान को अपना किया काम तो दिखाई देता है मगर ईश्वर का किया काम दिखाई नहीं देता । अत: इन्सान कह देता है कि जो कुछ हो रहा है अपने आप ही हो रहा । जबकि न तो अपने आप कुछ बनता है और न ही नियमों में बंधता है, जब तक उसको कोई बनाने वाला व नियमों में बांधने वाला न हो अर्थात् कोई है जिसने ये सब बनाया है, नियमों में बाँधा है । इन्सान का फर्ज़ है कि वह उसे माने, उसे याद करे तथा उसका शुक्रगुज़ार रहे ।

कर्म-फल और पुनर्जन्म :

चाहे जीव है या निर्जीव है सब कुछ नियमों में बंधा है । उस तरह इन्सान का जीवन भी नियमों में बंधा है अर्थात् जिसका जन्म हुआ है उसने मरना भी है । हर जीव की एक औसत आयु है जिसके पूरा होने पर जीव मृत्यु को प्राप्त होता है । इन्सान का जीवन भी नियमों में बंधा है । इन्सान भी अपनी आयु भोग कर मृत्यु को प्राप्त होता है और फिर जन्म लेता है । जो उसने कर्म किए हैं उन्हीं कर्मों के आधार पर परमशक्ति इन्सान को उसके माता-पिता, बहन-भाई, पति-पत्नी, बच्चे, रंग-रूप, बुद्धि, तन्दरुस्ती आदि देती है । जैसे इन्सान के कर्म होते हैं उसी आधार पर उसे परिवार, माता-पिता व अन्य रिश्ते मिलते हैं अर्थात् इन्सान के जीवन का अधिकांश घटनाक्रम इन्सान के पूर्व जन्म के आधार पर घटता है जैसे कोशिश तो

बुहत लोग़ करते हैं, कठिन परिश्रम भी करते हैं मगर सब को सफ़लता नहीं मिलती □ सफल केवल वही होते हैं जिन पर ईश्वर की कृपा होती है □ इन्सान के जीवन में सफ़लता-असफलता, सुख-दुःख, लाभ-हानि, यश-अपयश, जय-पराजय आदि सब परमशक्ति की इच्छा से ही होते हैं □ इन्सान ईश्वर को माने या न माने ईश्वर का इन्सान के जीवन में अहम् स्थान है □

इन्सान का सच्चा गुरु

यह तो विज्ञान भी मानता है कि जब इन्सान आस्तित्व में आया तो उसके आने से पहले सब कुछ बन चुका था अर्थात् इन्सान ने यह सब कुछ नहीं बनाया □ जिस ने बनाया है वह चाहता है कि इन्सान उसे याद करे □ इसलिए ईश्वर ने समय-समय पर महान् आत्माओं का चुनाव इन्सानों में से किया और उनको अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधन के रूप में प्रयोग किया □ उनके माध्यम से अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन भी किसी सीमा तक किया □ उन महान् आत्माओं ने जो अनुभव और ज्ञान प्राप्त किया उसे उन्होंने आगे बांटा □ परमशक्ति ने केवल आध्यात्मिक ज्ञान ही नहीं बल्कि इन्सान को एक नेक इन्सान बनना भी सिखाया है □ इन्सान ने जो कुछ भी सीखा है ईश्वर से ही सीखा है □ वास्तव में सब का सच्चा गुरु तो परमशक्ति ही है □ उसी से इन्सान ने सब कुछ पाया और सीखा है जैसे ईश्वर ने सब जीवों की रचना की, उनके जीवन को नियमों में बांधा □ यह तो दिखाई देता है कि माता–पिता अपने बच्चे का पालन पोषण करते हैं मगर यह दिखाई नहीं देता कि वो कौन है जिसने जानवर एवम् इन्सान में ममता डाली । वह परमशक्ति है जो ममतामयी, करुणामयी और भक्त वत्सल है और वही सबका सच्चा गुरु है ।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि इन्सान का जीवन ईश्वर की देन है □ ईश्वर की कृपा से इन्सान साँस लेता है, उसी की कृपा से इन्सान को सब कुछ मिला है □ इसलिए इन्सान को चाहिए कि वह ईश्वर के अस्तित्व को माने, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे, अपने जीवन में ईश्वर को प्रथम स्थान दे और सदैव उसका शुक्रगुजार रहे □ कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करने से पहले प्रार्थना करे □ जब कार्य हो जाए तो ईश्वर का धन्यवाद करे □ यदि किसी कारणवश सफ़लता नहीं मिलती तो इन्सान ईश्वर से नाराज न हो बल्कि ये सोचे कि ईश्वर जो करता है ठीक ही करता है, वह कभी गलत नहीं होता □यह असफ़लता उसके कर्मों का ही फल है □इस से उसका यह जीवन तो सुखी होगा ही अगला जीवन भी सुखमय होगा और वह ईश्वर की कृपा का पात्र भी बनेगा □

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि इन्सान का जीवन ईश्वर के बिना सम्भव ही नहीं □ इसलिए इन्सान को ईश्वर के अस्तित्व को सदा स्वीकार करना चाहिए और कभी भी यह नहीं सोचना चाहिए कि ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं □ ईश्वर ने ही इन्सान को प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ बनाया है। इन्सान का शरीर भौतिक है और उसके शरीर के अन्दर जो जीवात्मा है उसका सम्बन्ध अध्यात्मवाद से है। भौतिक शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खुराक तथा सेहत के नियमों की आवश्यकता है उसी तरह जीवात्मा को सशक्त बनाने के लिए ईश्वर प्रेम की आवश्यकता है। ये सभी कुछ इन्सान के जीवन में ईश्वर के महत्व को ही दर्शाती हैं।

5
इन्सानियत

इन्सान एक सामजिक प्राणी है। वह बहुत सी अच्छी या बुरी बातें समाज से ही सीखता है। ईश्वर जो इस सृष्टि का रचयिता है उसने इन्सान को प्राणियों में से सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है। ईश्वर ने इन्सान को बुद्धि तत्व दिया है, सोचने-समझने की शक्ति दी है, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भाषा दी है। अच्छे और बुरे का ज्ञान करवाया है, उसे ही अपना राजदार एवं सांझीदार बनाया है। समाज में अच्छाई एवं बुराई दोनों ही विद्यमान होते है, अन्तर केवल इतना है कि अच्छाई को समाज अच्छी दृष्टि से देखता है और बुराई को इन्सान बुरी दृष्टि से देखता है। उसी तरह इन्सान में भी अच्छे एवम् बुरे गुण विद्यमान होते हैं। समाज अच्छे गुणों वाले इन्सान को अच्छी दृष्टि से देखता है, उसको याद करता है, उसकी प्रशंसा करता है और कहता है कि उसमें इन्सानियत है। अवगुणों वाले व्यक्ति को समाज अच्छी दृष्टि से नहीं देखता और कहता है कि उसमें हैवानियत है। इन्सान को जन्म से लेकर मृत्यु तक कदम-कदम पर दूसरे लोगों से मिलना पड़ता है। उसे हर प्रकार के मेल-जोल को कायम रखने के लिए अलग-अलग नियमों या सिद्धान्तों का सहारा भी लेना पड़ता है। इन्सान को अपने जीवन में वही सिद्धान्त अपनाने चाहिए जो उसके जीवन को आदर्शमय बनाए अर्थात् उसका जीवन दूसरों के लिए आदर्श हो।

इन्सान में इन्सानी मूल्यों की सकारात्मक उपस्थिति इन्सान को सत्यार्थ रूप में दर्शाती है। इन्सान में विचारों की विशालता, सिद्धान्तों की व्यवहारिकता, इन्सान को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाती है। इन्सान का व्यक्तित्व और आचरण ही उसके इन्सानी अथवा नैतिक मूल्यों का मूल्यांकन करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इन्सान में इन्सान होने का भाव, एहसास या दृष्टिकोण और सकारात्मक गुणों का समावेश ही इन्सानियत को दर्शाता है। इन्सानियत धर्म, देश, जाति, वर्ग सबसे परे है। इसलिए कहा जाता है कि इन्सानियत ही इन्सान का वास्तविक धर्म है। वास्तव में इन्सान वही है जिसमें इन्सानियत है।

इन्सानियत क्या है ?

समाज इन्सानियत को इन्सान के सकारात्मक गुणों के संदर्भ में देखता है। इन्सान का व्यक्तित्व, उसका आचरण, उसके इन्सानी तथा नैतिक मूल्य ही उसका वास्तविक मूल्यांकन करते है। इन्सानियत शब्द का अर्थ है व्यक्ति की सोच, विचारधारा, एवं दृष्टिकोण।

इन्सानियत का अभिप्राय इन्सान के स्वभाव, आचरण, सोच-विचार, सिद्धान्त एवं इन्सानी गुणों के समावेश से है, जिसे हम इन्सान का व्यक्तित्व भी कह सकते हैं।

इन्सान में इन्सानियत है, इस तथ्य को कैसे निर्धारित कर सकते हैं ? इसका उत्तर है कि इन्सान का व्यक्तित्व, उसका आचरण, चरित्र, दृष्टिकोण, सोच-विचार ही इन्सानियत का आधार होता है । इससे स्पष्ट होता है कि इन्सान की विचारधारा, सिद्धांत, व्यवहार एवं दृष्टिकोण या नज़रिया मिल कर ही इन्सान के व्यक्तित्व को निर्धारित करते है । व्यक्तित्व ही इन्सान की इन्सानियत को प्रकट करता है।

आचरण का अर्थ व्यवहार से लिया जाता है। परन्तु यदि हम इसे इन्सानियत तक ही सीमित कर दें तो भी यह ठीक ही होगा। वास्तव में आचरण व्यवहार एवं सिद्धांत का संयुक्त सुमेल है। आचरण के अन्तर्गत सभी मानवीय मूल्य तथा व्यक्ति के नैतिक गुण आते हैं। इन्सान में नैतिक गुणों का होना, इन्सान के पूर्व जन्म के संस्कारों, जन्म से माता-पिता द्वारा मिले संस्कारों, नैतिक शिक्षा, परिवार व समाज के वातावरण पर भी निर्भर करता है।

सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक आचरण से अभिप्राय यह है कि इन्सान सिद्धांत को जानने वाला हो, उस सिद्धांत को अपने जीवन में व्यवहारिक रूप से लागू करने वाला हो और सभ्य हो। इसके साथ-साथ चारित्रिक गुणों का होना भी अति आवश्यक है। इन्सान दृढ़ चरित्र का अर्थात स्थिर स्वभाव का हो । चरित्र में इन गुणों का होना भी आवश्यक है जैसे सत्य बोलना तथा सत्य का साथ देना, निष्ठावान होना, बड़ों का सम्मान तथा छोटों से प्यार करना आदि।

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है । यहाँ पर आध्यात्मिक ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जाता है । इस धाम की स्थापना स्वयं उस शक्ति ने प्रमाणों सहित की है जो अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है, सृष्टि की रचयिता और पालनकर्ता है, जिसके हाथ में इन्सान का जीवन-मृत्यु, लाभ-हानि, यश-अपयश, सफ़लता-असफलता, सुख-दुःख, खुशी-ग़मी, शान्ति-अशांति है । जो सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है, जिसके पास इन्सान शरीर त्याग कर जाता है, जो कर्मफल दाता है, जिस शक्ति की आराधना ऋषि-मुनि, सन्त-फकीर, देवी-देवता, वीर-पीर और भगवान करते हैं, जिसे लोग़ ईश्वर, अल्लाह, वाहिगुरू, गॉड, राधास्वामी, निरंकार, शिव, ब्रह्म आदि नामों से पुकारते हैं। जो उसे किसी रूप में नहीं मानते लेकिन उसे कुदरत, प्रकृति, नेचर, अदृश्य शक्ति, अनाम शक्ति आदि नामों से पुकारते हैं, उसी शक्ति की घोषणा है कि "मैं अदृश्य से सदृश्य बनी हूँ, यह शरीर मेरा है, मेरा नाम मदन है ।" इन्सान उसी शक्ति की सर्वोत्कृष्ट कृति है परन्तु जिसे मानवता, इन्सानियत या मनुष्यत्व की पहचान है वही इन्सान सत्य व्यक्तित्व का स्वामी है। वही ईश्वरीय रचना के महत्व का ज्ञाता है । नैतिक मूल्यों का ह्रास इन्सान को पतन की ओर अग्रसर करता है । ईश्वर ही इन्सान को पूर्ण ज्ञान देकर उसमें इन्सानियत का पुनः नवांकुर प्रदान करता है। श्री मदन धाम में परमशक्ति सदृश्य इन्सानी रूप में स्वयं इन्सानियत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रही है परन्तु साथ-

साथ अपने कुछ प्रिय सहायकों, सेवकों एवं भक्तों को बलपूर्वक इन्सानियत के पथ का अनुसरण करवा रही है । परमशक्ति ने यहाँ पर स्पष्ट किया है कि इन्सान के जीवन के नैतिक मूल्यों का आधार क्या होना चाहिए ।

सर्वप्रथम इन्सान को ईश्वर के अस्तित्व को मानना या स्वीकार करना है । ईश्वर ने इस सृष्टि में जो कुछ भी बनाया है इन्सान के लिए ही बनाया है । इसलिए इन्सान का भी कर्तव्य बनता है कि वह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करे ।

ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करना :-

इन्सान को चाहिए कि वह ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करे कि ईश्वर क्या है ? उसके नियम, गुण, शक्तियाँ क्या हैं ? जब तक इन्सान ईश्वर के गुणों के बारे में नहीं जानता तब तक वह ईश्वर से प्यार नहीं कर सकता । इन्सान यदि किसी को प्यार करता है तो गुणों के आधार पर करता है । इसी तरह जब इन्सान ईश्वर के गुणों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है तो धीरे-धीरे वह ईश्वर से भी प्यार करने लगता है, ईश्वर के बनाए सिद्धान्तों का पालन करने लगता है। तब ईश्वर उस इन्सान पर अपनी कृपा करते हैं और इन्सान को सदमार्ग पर चलाते हैं । इससे इन्सान में विनम्रता आ जाती है जो दूसरों के लिए एक आदर्श होती है ।

नेक कर्म करना :-

इन्सान जब जीवन में नेक कर्म करता है तो वह इन्सानियत की राह पर चलता है । कर्म तो इन्सान मन से, वाणी से तथा शरीर से करता है इसलिए इन्सान मन में भी किसी के लिए दुर्भावना न रखे । किसी के प्रति इर्ष्या, द्वेष, जलन, नफ़रत न रखे । किसी का उपहास न उड़ाए । असभ्य भाषा का प्रयोग न करे । किसी को कटु वचन न कहे । वाणी में सदा मिठास हो । सबसे सद्व्यवहार हो । किसी को कुछ कहने से पहले सोचे कि यदि यही कुछ मुझे कहा जाए तो कैसा लगेगा । किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पहले कार्य की सफ़लता के लिए ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करता हो और कार्य हो जाने पर ईश्वर का आभार प्रकट करता हो । किसी के उपकार को कभी भूलता न हो । उसमें अहम् भाव न हो । दूसरों के हित के लिए कार्य करता हो □सभी महान-आत्माओं और धर्मों का समान दृष्टि से आदर-सत्कार करता हो । इसके साथ-साथ वह अपने दुखों के लिए ईश्वर को दोषी न मान कर उनसे प्रार्थना करे और सुखों के लिए ईश्वर का धन्यवाद करे ।

इन्सानी कर्तव्यों का पालन करना :-

इस सृष्टि में ईश्वर से बड़ा कोई भी परोपकारी नहीं, क्योंकि उसने सब कुछ किया ही इन्सान के लिए है । इसलिए इन्सान उसके अस्तित्व को मानते हुए कभी भी उसके उपकार को न भुलाए और उसके प्रति श्रद्धा, विश्वास, लगन, धैर्य और संतोष रखे ।

इन्सान का दूसरा कर्तव्य अपने प्रति है कि वह अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखे। यदि उसका अपना स्वास्थ्य ठीक होगा तभी वह अपने दूसरे कर्तव्यों को उचित ढंग से निभा सकता है।

इन्सान का तीसरा कर्तव्य अपने परिवार के प्रति है। वह बच्चों का पालन-पोषण अपने सामर्थ्यानुसार करे तथा अपने माता-पिता व बज़ुर्गों से सहानुभूति रखते हुए उनके बुढ़ापे का सहारा बने।

इन्सान का चौथा कर्तव्य देश तथा समूची मानवता के प्रति है। इन्सान स्वार्थ से ऊपर उठ कर हर इन्सान को इन्सान समझे। देश और कानून के प्रति कोई भी ऐसा कार्य न करे जो देश और मानवता के हित में न हो।

पांचवां कर्तव्य दूसरे इन्सानों के प्रति है जिनके बीच उसने हर समय विचरना है। इन्सान स्वयं का तथा दूसरों का जीवन सुखमय बनाने के लिए उनसे वैसा ही व्यवहार करे जैसा वह अपने लिए उनसे चाहता है। किसी को कुछ कहने से पहले सोचे कि यदि यही शब्द मुझे कहे जाएँ तो मुझे कैसा लगेगा। सभी से प्यार करे। प्यार से ही प्यार पैदा होता है। किसी को भी अपना दुश्मन न माने। यदि कोई उसे अपना दुश्मन मानता भी है तब भी उससे प्यार करे। अपने से छोटों से प्यार करे और बड़ों को मान-सम्मान दे। अपने माता-पिता का आदर-सत्कार करे। मन में किसी के प्रति कुविचार न लाए। किसी की उन्नति से जलन न करे। किसी के प्रति अनैतिक भाषा का प्रयोग न करे। किसी का शोषण न करे। सदा न्याय का साथ दे। नेक कर्म, सद्व्यवहार व सभी से प्यार करे, किसी की मजबूरी का लाभ न उठाए और न ही अपने पद का दुरूपयोग करे।

इन्सान इस धरती का सर्वश्रेष्ठ जीव है। ईश्वर ने इन्सान के लिए सब कुछ बनाया है, इसलिए वे भी चाहते हैं कि इन्सान का जीवन उनके लिए हो और इन्सानी जीवन सुखमय और आनन्दमय हो। ऐसा हो सकता है यदि इन्सान उपरोक्त गुणों को अपने जीवन में ईमानदारी से क्रियान्वित करे परन्तु ऐसा होता नहीं। ईश्वर ने जब इन्सान बनाया तो उसके अन्दर कुछ प्रवृत्तियाँ पैदा कीं जो संसार को चलाए रखने के लिए आवश्यक हैं जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इत्यादि। वैसे तो यह पाँचों जीवन के विकास का आधार हैं किन्तु जब इन्सान इनका दुरुपयोग करता है, आवश्यकता से अधिक इनका प्रयोग करता है या केवल अपने स्वार्थ हेतु ही इनका प्रयोग करता है तो उपरोक्त प्रवृत्तियाँ विकार का रूप धारण कर लेती हैं। इन्सान अपनी सुंदरता का, धन-वैभव का, बल का तथा अपने यौवन आदि का अहंकार करता है। इन्सान अह्म् वश दूसरों का शोषण करता है, अनुचित लाभ उठाता है। दूसरों की भावनाओं को कुचलकर उनसे खिलवाड़ करता है। दूसरों को तुच्छ मान कर उनकी हँसी उड़ाता है अर्थात जो इन्सान अपने लिए नहीं चाहता वह दूसरों से करता है। ईश्वर को भुला कर स्वयं को ही सब कुछ मानने लगता है, तब इन्सान इन्सानियत को खो देता है भाव नैतिकता से गिर जाता है।

इन्सान का जीवन तो सत्य, न्याय, प्यार और नैतिक मूल्यों की मूर्ति के समान होना चाहिए ताकि लोग़ उसके आदर्श जीवन का उदाहरण दूसरों को दे सकें। वह तभी हो सकता है जब इन्सान मन, वचन, कर्म से स्वच्छ तथा नेक हो। इन्सान को निजी स्वार्थों से ऊपर उठ कर अपनी मंज़िल की ओर बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। यह सब कुछ तभी सम्भव है जब इन्सान पर ईश्वर की कृपा होती है। ईश्वर की कृपा तभी होती है जब इन्सान ईश्वर द्वारा बनाए सिद्धांत पर चलता है और वह सिद्धांत है दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करना जैसा दूसरों से अपने लिए चाहते हो। इसके साथ-साथ नेक कर्म, सद्व्यवहार व सभी से प्यार करें। जब इन्सान उपरोक्त गुणों एवं नियमों को अपने जीवन में अपनाता है वास्तव में वही इन्सान इन्सानियत पर चल रहा होता है और इन्सान कहलाने का वास्तविक हकदार वही होता है।

6
इन्सान दुःखी क्यों ?

कहते हैं यह संसार दुःखों का घर है, कोई भी सुखी नहीं है। कोई सन्तान न होने के कारण, कोई सन्तान के कारण, कोई बीमारी के कारण तथा कोई किसी और परेशानी के कारण दुःखी है। इस संसार में ऐसा कोई भी इन्सान नहीं है जो कह सके कि वह पूर्णतया सुखी है। हर किसी को कोई न कोई दुःख जरूर है। चाहे कोई अमीर है या ग़रीब, जवान है या बूढ़ा, पुरुष है या स्त्री, चाहे वह किसी भी पद पर आसीन हो, चाहे उसे कितने भी सांसारिक ऐशोआराम प्राप्त हों पर हर किसी के दुःख अलग-अलग प्रकार के हैं, कारण अलग-अलग हैं। हर कोई अपने-आप में दुःखी है। उदाहरण के तौर पर जहां खाना है वहाँ भूख नहीं है और जहां भूख है वहाँ खाना नहीं है। आखिर ऐसा क्यों है ? इस के क्या कारण हो सकते हैं ?

प्रत्येक इन्सान मानसिक शांति, तंदुरुस्ती और खुशहाली चाहता है। वह एक अच्छा रुतबा चाहता है। वह चाहता है कि समाज में उसकी अलग पहचान हो। दुनियाँ की हर सुख-सुविधा उसे प्राप्त हो। लेकिन ज्यों-ज्यों उसे सांसारिक सुख मिलते जाते हैं त्यों-त्यों उसकी इच्छाएँ और भी बढ़ती जाती हैं। इस प्रकार वह धीरे-धीरे अशुभ व अनुचित मांगें करने लगता है जो अनैतिकता पर आधारित होती हैं। परमशक्ति तो हर इन्सान से न्याय ही करती है। हर इन्सान

को वही मिलता है जिसके वह योग्य होता है। ईश्वर इन्सान की अशुभ और अनैतिक इच्छाएँ कभी पूर्ण नहीं करते। इन्सान के दुःखी होने के कुछ और भी कारण हैं जो निम्नलिखित हैं :-

10. शारीरिक रोगों या कमियों के कारण दुःख

इन्सान को शरीर और बुद्धि उसके पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर मिलते हैं। कई बार इन्सान को ऐसा रोग लग जाता है कि उसके पास सब सुख-सुविधाएँ होते हुए भी वह उनको भोग नहीं सकता। इन्सान कोई वस्तु तो खरीद सकता है परन्तु उसे भोगने का सुख नहीं खरीद सकता। यह भी इन्सान के दुःखी होने का एक कारण है।

11. अनैतिक इच्छाओं के कारण दुःख :

इन्सान के मन में कई बार ऐसी इच्छाएँ उत्पन्न हो जाती हैं जो समाज, इन्सानियत व सदाचार की सीमाओं से बाहर होती है, जिससे उसका वर्तमान तथा भावी जीवन दुःखी हो जाता है। ऐसी इच्छाएं न तो पूर्ण होती है और न ही वह कुछ और कर पाता है और न उसकी आशा ही टूटती है और न ही पूर्ण होती है। वह न वर्तमान में और न ही भविष्य में जी सकता है। इन्सान का जीवन उस अनैतिक इच्छा के त्रिशंकु पर लटका रहता है। अतः अनैतिक इच्छाओं के कारण इन्सान दुःखी रहता है।

12. योग्यता के अनुसार प्राप्ति न होने के कारण दुःख

कई बार इन्सान स्वयं को बहुत योग्य समझता है पर उसे उसकी योग्यता के अनुसार सफ़लता नहीं मिलती। उसका सारा जीवन इस त्रासदी में निकल जाता है कि उसके साथ ईश्वर ने अन्याय क्यों किया ? जब वह अपने से कम योग्यता वाले व्यक्ति को सफल देखता है तो उसे समझ नहीं आता कि उसे सफ़लता क्यों नहीं मिली ? इस प्रश्न को सुलझाने में ही उसका जीवन बीत जाता है। यह भी इन्सान के दुःखों का कारण है।

13. स्वयं से संतुष्ट न होने के कारण दुःख

कई इन्सान ऐसे होते हैं जो सारी जिंदगी भागते ही रहते हैं। उन्हें सफ़लता भी मिलती है पर उन्हें उस सफ़लता से संतुष्टि नहीं मिलती। वे अपने जीवन का लक्ष्य इतना ऊँचा निर्धारित कर लेते हैं कि भले ही वह समाज की दृष्टि में बहुत सफल होते हैं पर स्वयं में वे असंतुष्ट ही रहते हैं। उनका अपने परिवार तथा अपने समीप आने वाले व्यक्तियों के प्रति आचरण बहुत कठोर व क्रोध भरा हो जाता है। वे स्वयं भी दुखी रहते हैं तथा दूसरों को भी दुखी करते हैं। इस प्रकार सब कुछ होते हुए भी वे अकेले ही रह जाते हैं। न तो उन्हें उनके लक्ष्य की प्राप्ति होती है और न ही अपनों का प्यार ही मिलता है। उनका जीवन नर्क के समान व नीरस हो जाता है। अतः वे निराश हो जाते है और उन्हें अपना जीवन व्यर्थ लगने लगता है। इन्सान के दुःखी होने का यह भी एक कारण है।

14. निराशावादी सोच के कारण दुःख

कई इन्सानों की सोच निराशावादी होती है। वे शीघ्र ही उत्साहित हो जाते हैं और शीघ्र ही निराश भी हो जाते हैं। वे जीवन का निराशावादी पक्ष ही देखते हैं। थोड़ी मुश्किल आने

पर घबरा जाते हैं और अपनी चेष्टा बंद कर सब कुछ छोड़ कर बैठ जाते हैं। न ही उन्हें स्वयं पर विश्वास होता है और न ही वे ईश्वर पर विश्वास करते हैं। इस प्रकार उनकी सोच ही उनके दुःख का कारण बन जाती है।

15. ईर्ष्या-द्वेष के कारण दुःख :

जब व्यक्ति समाज में विचरता है तो बहुत से निर्धन तथा बहुत से धनी लोगों से मिलता है। कुछ इन्सान केवल इसी कारण दुखी रहते हैं कि उनके निकट रहने वाले लोगों के पास सुख-सुविधाएँ क्यों हैं ? उनके अपने पास जो कुछ भी होता है उसके कारण वे सुखी नहीं होते पर जो कुछ नहीं है उसके कारण दुखी होते हैं। जैसे एक इन्सान के पास कार है इसकी तो उसे खुशी नहीं है, उसे दुःख इस बात का है कि पड़ोसी के पास उससे अच्छी कार क्यों है ?

16. लालच के कारण दुःख :

कई इन्सानों को ईश्वर ने सब कुछ दिया होता है परन्तु और अधिक लालच के कारण वे दुखी हो जाते हैं। इच्छा तो पूरी हो सकती है पर लालसा नही, लालसा जितनी पूरी होती है उतनी ही बढ़ती जाती है। आखिर एक दिन इन्सान अपने जीवन का उद्देश्य ही भूल जाता है। यह लालच उसे अपने कर्तव्यों से विमुख कर देता है। इस प्रकार का इन्सान स्वयं भी दुखी होता है व दूसरों को भी दुःख देता है।

17. गरीबी के कारण दुःख :

कई इन्सान जन्म से ही गरीब घर में पैदा होते हैं। कुछ लोग़ किसी दुर्घटना या परिस्थिति वश गरीब हो जाते हैं। इस गरीबी के कारण न वे सही ढंग से जी सकते हैं और न ही मर सकते हैं। चाहे उनकी सभी जरूरतें पूरी हो जाएँ परन्तु मानसिक वेदना उनका जीवन दुखमय बना देती है।

18. अशुभ व अनुचित इच्छाओं के कारण दुःख :

अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इन्सान कई बार किसी को हानि पहुँचाना चाहता है या इस तरह की इच्छा उसके मन में पैदा हो जाती है जिसके योग्य वह नहीं होता। इस तरह की अशुभ व अनुचित इच्छाएँ इन्सान के दुःख का कारण बन जाती हैं क्योंकि ऐसी इच्छाएँ यदि पूरी हो जाएँ तो भी दुःख देती हैं और यदि पूरी न हों तो भी दुःख देती हैं।

इन्सान के दुखी होने के उपरोक्त जो कारण है, वे सभी इन्सान की विचारधारा के अनुसार हैं। परन्तु वास्तविक कारण इन्सान के कर्म हैं जिनके कारण इन्सान दुखी या सुखी है। अर्थात् सुख कोई वस्तु नहीं है, सुख कोई व्यक्ति नहीं है जिसके मिल जाने से या न मिलने से इन्सान सुखी या दुखी हो जाए। सुख तो एक अहसास है जो ईश्वर की कृपा से मिलता है। उपरोक्त तथ्यों को न समझना सबसे बड़ी अज्ञानता है जो इन्सान को अपनी पहचान करने में बाधा उत्पन्न करती है। यदि इन्सान कर्मफल के सिद्धांत को समझने तथा स्वयं को जानने की, पहचानने की चेष्टा करे कि वह कौन है ? कहाँ से आया है ? उसे कहाँ जाना है, उसके जीवन का उद्देश्य क्या है, वह शरीर में होते हुए भी शरीर से कैसे अलग है ? शरीर तो कर्मफल भोगने का साधन है अर्थात् वह शरीर के माध्यम से ही सुख-दुःख का अनुभव करता है। जो स्वयं को शरीर

से अलग महसूस कर लेता है वह सम भाव रहता है। वह दुःख में दुखी नहीं होता, सुख में सुखी नहीं होता। जैसे यह घर मेरा है पर मैं घर नहीं हूँ वैसे ही यह शरीर मेरा है पर मैं शरीर नहीं हूँ। इस भेद को पहचान लेना ही स्वयं की पहचान है।

ईश्वर ने इन्सान के लिए नियम बनाया है कि वह दूसरों से ऐसा व्यवहार करे जैसा वह अपने लिए दूसरों से चाहता है। जब इन्सान इस नियम पर नहीं चलता अर्थात् इस नियम को तोड़ता है तो वह दोषी बन जाता है, पर वह कई कार्य अच्छे भी करता है। यही नियम कर्मफल का आधार है। इसी नियम के अन्तर्गत इन्सान को कर्मफल प्राप्त होता है, उसके जीवन में सुख-दुःख आते हैं। श्री मदन धाम में परमशक्ति ने अपने साकार रूप में किसी समय स्वयं ही प्रश्न किए और स्वयं ही उत्तर दे कर स्पष्ट किया कि इन्सान दुखी क्यों है ?

प्रश्न : इन्सान दुःखी क्यों है ?

उत्तर : अज्ञानता के कारण।

प्रश्न : अज्ञानता क्या है ?

उत्तर : स्वयं को न पहचानना ही अज्ञानता है।

प्रश्न : स्वयं को कैसे पहचाना जा सकता है ?

उत्तर : प्रभु कृपा से ही स्वयं को पहचाना जा सकता है।

प्रश्न : प्रभु कृपा किस पर होती है ?

उत्तर : जिस पर प्रभु इच्छा हो जाए उस पर प्रभु कृपा हो जाती है।

इतना कहने के उपरान्त परम शक्ति ने बातचीत बंद कर दी कि इन्सान स्वयं विचार करे कि प्रभु इच्छा किस पर होती है और कैसे हो सकती है। अब प्रश्न उठता हैं कि प्रभु इच्छा क्या होती है ? जब इन्सान ने कर्मफल ही भोगना है तो प्रभु इच्छा का क्या महत्व है ? क्या प्रभु इच्छा कर्मफल को भी काट देती है ? प्रभु इच्छा क्यों और किस आधार पर होती है ? क्या प्रभु इच्छा पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर होती है या इस जन्म के कर्मो या व्यवहार के आधार पर भी होती है ? इसको स्पष्ट करने के लिए कुछ आधार दिए जा रहे हैं जो कि परमशक्ति जी के श्रीमुख से समय-समय पर दिए गए ज्ञान व अनुभवों का सार हैं। जिनको जानने के बाद इन्सान यदि उन्हें अपने जीवन में लागू करता है तो उस पर प्रभु इच्छा हो सकती है जिससे वह प्रभु कृपा का पात्र बन सकता है।

प्रभु इच्छा के आधार :

11. पूर्व जन्म के संस्कार :

इन्सान जो कुछ भी करता है, सब वर्तमान को आधार बना कर ही करता है। उसकी सोच केवल इस जन्म तक ही सीमित होती है। उसकी पसंद नापसंद उसके इस जन्म के अनुभवों पर ही आधारित होती है। परन्तु ईश्वर त्रिकालदर्शी हैं। उनकी कृपा, उनकी इच्छा इन्सान के पूर्व जन्म के कर्मों का फल भी हो सकती है। जैसे इन्सान अच्छे या बुरे कर्मों का फल अपने आने वाले जन्मों में भोगता है, उसी प्रकार ईश्वर उसके प्रेम और भक्ति का फल भी देते हैं।

12. तप से राज तथा राज से नर्क :

जैसे कि मान्यता है कि जब इन्सान ईश्वर की भक्ति करता है तो उसे राज मिलता है अर्थात् उस इन्सान को सुख-सुविधाएँ, यश-मान तथा पदवी प्राप्त होती है । जब उसे सुख सुविधाएँ, यश-मान, मिलता है तो उसमें अहम् भाव आ जाता है फिर इन्सान अहम् में आकर दुष्कर्म करता है, शोषण करता है, ईश्वर को भूल जाता है तब उसे अगले जन्म में नरक तुल्य जीवन बिताना पड़ता है । अगर कोई इन्सान सब सुविधाएँ होने के बावजूद ईश्वर का शुक्रगुज़ार रहता है, दूसरों के साथ सद्व्यवहार करता है, ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करता है, उस ज्ञान को अपने जीवन में लागू करता है व नेक इन्सान बनने की कोशिश करता है तो ईश्वर उस पर प्रसन्न होते हैं और तब उस पर प्रभु इच्छा हो जाती है ।

13. इन्सान का व्यवहार :

इन्सान का जीवन सुख-दुःख का मिश्रण है जो कि उसके कर्मों का फल है । यदि इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करने की कोशिश करता है जैसा कि वह दूसरों से अपने लिए चाहता है तथा ईश्वर के बताए हुए नियमों पर चलते हुए नेक कर्म, सद्व्यवहार और सब से प्यार करने की कोशिश करता है तो उस पर प्रभु इच्छा हो जाती है । जब प्रभु इच्छा हो जाती है तो फिर ईश्वर उस व्यक्ति को अपनी इच्छा से चलाते हैं । यदि उसमें कोई अवगुण भी हों तो प्रभु उस के अवगुण नहीं देखते और उसे अपनी इच्छा से एक नेक इन्सान बना लेते हैं ।

14. ईश्वर की रज़ा में राजी रहना :

प्रायः इन्सान जब सफल होता है तो स्वयं को महत्व देता है अर्थात् अपनी मेहनत, बुद्धिमत्ता व समझदारी को कारण मानता है । जब वह असफल होता है तो ईश्वर को दोषी मानता है और समझता है कि ईश्वर ने उसके साथ अन्याय किया है । जबकि सच्चाई तो यह है कि हर इन्सान को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है । ईश्वर कभी भी किसी के साथ अन्याय नहीं करते । वे तो सत्य और न्याय के प्रतीक है । जब व्यक्ति ईश्वर से प्यार करता है, उसकी रज़ा में राज़ी रहने का प्रयत्न करता है, अपने दुःखों, कष्टों, परेशानियों के लिए अपने कर्मों को ही दोषी मानता है तथा सुखों के लिए सदैव ईश्वर का शुक्रगुज़ार रहता है, वह हर समय उसे याद रखता है, ईश्वर को हमेशा प्रथम स्थान देता है तो ईश्वर उस पर प्रसन्न हो जाते हैं और उस पर प्रभु इच्छा हो जाती है ।

15. अपने सांसारिक कर्तव्य निभाते हुए ईश्वर से प्यार करना :

जब कोई इन्सान अपने सांसारिक कर्तव्य निभाते हुए ईश्वर से प्यार करता है, अपने दैनिक जीवन में से ईश्वर के लिए समय निकालता है, ईश्वर का गुणगान करता है, करवाता है, सुनता है, अपनी नेक कमाई में से कुछ ईश्वर के निमित्त लगाता है और ईश्वर के बताए हुए नियमों

पर चलते हुए अपने परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करता है तो वह भी प्रभु इच्छा का पात्र बन जाता है।

उपरोक्त कुछ आधार हैं जिन के कारण इन्सान प्रभु इच्छा का पात्र बन सकता है। हर किसी ने कहा है कि ईश्वर बेअंत है, उसकी माया बेअंत है, उसके बारे में कुछ भी निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता कि वह कब क्या कर दे, किसी को क्या दे दे, किसी से क्या ले ले ? परन्तु आज जब परमशक्ति श्री मदन जी के रूप में अपने बारे में ज्ञान दे रहे हैं तथा इन्सान को जीवन जीना सिखा रहे हैं। उनके द्वारा क्रियात्मक रूप में ज्ञान दे कर दर्शाया जा रहा है कि जब किसी पर प्रभु इच्छा हो जाती है तो फिर ईश्वर उस इन्सान का मार्गदर्शन करते हैं तथा उसे बुरे कर्म करने से रोकते हैं। यदि वह फिर भी गलती करता है तो उसे दृष्टांत देते हैं। जब उसे गलती का एहसास होता है तो क्षमा कर उसे राहत प्रदान करते हैं। इस तरह वह दुष्कर्म करने से बचता है। वह ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए उसका शुक्रगुज़ार रहता है, उसकी रज़ा में रहने की कोशिश करता है तथा अपने दुःखों के लिए कभी भी ईश्वर को दोषी नहीं मानता। सुख में ईश्वर का आभारी रहता है। फिर उसे ईश्वर ज्ञान करवा देते हैं कि इन्सान तो अपने कर्मों के कारण ही दुःखी है, हर कोई अपने कर्मों का ही फल भोगता है। ईश्वर उसे पहचान करवाते हैं कि वह कौन है ? उसकी मंज़िल क्या है ? उसके जीवन का उद्देश्य क्या है ? जिस प्रकार इस शरीर की भौतिक इच्छाएँ हैं उसी प्रकार इस शरीर के अंदर जो जीवात्मा है उसकी भी एक खुराक है और वह है, ईश्वर से प्यार तथा ईश्वर से मिलन, जिससे इन्सान को सच्चा सुख मिलता है। तब वह इन्सान भौतिक आवश्यकताओं पर कम ध्यान देता है और जीवात्मा की खुराक पर अधिक ध्यान देने लगता है। जब ईश्वर उस पर कृपा करते हैं, उसको नेक इन्सान बनाते हैं, अपना प्यार देते हैं, तब उस इन्सान के दुखों, कष्टों व परेशानियों का अंत होता है और उसे प्रभु प्रेम के सच्चे सुख की अनुभूति होती है। परमशक्ति की इच्छा तो इच्छा ही होती है उसके लिए उसे योग्य होना भी आवश्यक नहीं होता है। जब परमशक्ति की इच्छा हो जाती है तो वहाँ पर कोई भी नियम, सिद्धांत, लागू नहीं होता, जिस पर इच्छा हो जाए उस पर कृपा हो जाती है। यदि ईश्वर की इच्छा हो जाए तो वह उसे कर्मफल से मुक्त करके मोक्ष प्रदान करते हैं। यहाँ यह कहना भी आवश्यक है कि किसी भी इन्सान को सदा के लिए मोक्ष पद की प्राप्ति नहीं होती, चाहे वह कोई भी आत्मा क्यों न हो। ईश्वर किसी भी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसे पुनः धरती पर भेज देते हैं।

7

इन्सानी जीवन का उद्देश्य: ईश्वर प्राप्ति व उसके पड़ाव

इन्सान के जीवन का उद्देश्य ईश्वर की प्राप्तिः

उद्देश्य शब्द का अर्थ है लक्ष्य, मकसद। संसार में हर इन्सान के जीवन का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। प्रत्येक इन्सान की इच्छाएँ, स्वभाव, आदतें व रुचियाँ भिन्न भिन्न होने के कारण उनके जीवन का उद्देश्य भी अलग होता है। जब इन्सान पैदा होता है तो ईश्वर ने उसके जीवन का उद्देश्य पूर्व जन्मों के संस्कारों के आधार पर निश्चित किया होता है पर वह इन्सान की समझ से बाहर होता है। वैसे तो हर इन्सान कर्म करता है, पर कर्म ही इन्सान को महान् आत्मा या महापुरुष बनाता है। इन्सान के गुण और जीवन के उद्देश्य का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है :

साधारण इन्सान :

प्राय: इन्सान के जीवन का उद्देश्य रोटी, कपड़ा और मकान की बुनियादी जरूरतों से आरम्भ होता है। फिर इन्सान चाहता है कि वह अपने कार्य-क्षेत्र में उन्नति करे, सफ़लता प्राप्त करे, उसे नेक सन्तान मिले, सन्तान का भविष्य उज्ज्वल हो, आर्थिक खुशहाली हो, सामाजिक रुतबा हो, समय और वातावरण के अनुसार उसकी इच्छाएँ पूर्ण हों और शारीरिक तन्दरुस्ती हो। इन्सान का जीवन इन उद्देश्यों की पूर्ति करने में ही गुजरता है। जब ये पूर्ण नहीं होते तो इन्सान को ईश्वर की आवश्यकता महसूस होती है। इन्सान चाहे ईश्वर को जिस भी रूप में याद करे, उसका उद्देश्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति होता है। इन्सान इन जरूरतों के साथ जन्म लेता है और इन जरूरतों के साथ ही समाप्त हो जाता है पर उसकी इच्छाएँ समाप्त नहीं होतीं।

महान्-आत्मा या महात्मा :

महान् आत्मा का अर्थ औरत या मर्द नहीं बल्कि वह आध्यात्मवादी इन्सान जिसके जीवन का उद्देश्य अपने आत्म स्वरूप को जानना, आत्म ज्ञान प्राप्त करना और ईश्वर प्राप्ति होता है। वे अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए कम और परहित के लिए अधिक जीते हैं। महात्मा ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं तथा दूसरों को ज्ञान देते हैं। यदि परहित के लिए उन्हें अपना जीवन भी कुर्बान करना पड़े तो भी वे डगमगाते नहीं।

महान्-पुरुष या महापुरुष :

महापुरुष उन इन्सानों को कहा जाता है जो अपने निजी हितों से ऊपर उठ कर मानवता के लिए जीते हैं, कमजोर लोगो की सहायता करते हैं, बीमारों के लिए हस्पताल बनवाते हैं, दुखियों के दुःख दूर करने का यथासम्भव प्रयत्न करते हैं, समाज के सुधार के लिए कोशिश करते हैं, वहमों तथा आडम्बरों के सम्बन्ध में लोगों को जागृत करते हैं। दूसरों के लिए जीना व दूसरों के जीवन को सुखमय बनाना ही उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य होता है।

परम-आत्मा या परमशक्ति :

जैसे इन्सान कोई भी कर्म करता है तो उसके पीछे उसका कोई उद्देश्य जरूर होता है उसी तरह परमशक्ति का कोई भी कार्य अर्थहीन नहीं होता। यदि ईश्वर ने इस सृष्टि का सृजन किया है तो इसके पीछे भी उसका कोई उद्देश्य अवश्य होगा। परमशक्ति ने जो कुछ भी बनाया है इन्सान के प्रयोग के लिए बनाया है पर इन्सान ने जो भी बनाया अपने लिए बनाया है। इन्सान ने

जो कुछ भी सीखा है वह ईश्वर से ही सीखा है। परमशक्ति ने प्यार करने के लिए इन्सान की रचना की इसीलिए ईश्वर का दूसरा नाम ही प्यार है। जब इन्सान किसी को प्यार करने लगता है तो उसकी खुशी, पसंद, नापसंद, सुख-सुविधा का ध्यान रखता है। प्यार में अपना सब कुछ सौंप देता है, सब कुछ कुर्बान कर देता है। ईश्वर जो कुछ भी करता है उसके पीछे उद्देश्य प्यार ही होता है, जैसे माता-पिता भले ही अपने बच्चे को मारें, झिड़कें या प्यार करें उसके पीछे बच्चे की भलाई ही होती है, ममता ही होती है। जिस प्रकार एक बच्चे के बीमार होने पर माँ उसे कड़वी दवाई देती है और दूसरे कमजोर बच्चे को अच्छी खुराक देती है। इस में माँ का कोई पक्षपात नहीं होता, उसका प्यार होता है। उसी प्रकार ईश्वर इन्सान को दुःख दे या कष्ट दे, उस के पीछे ईश्वर का प्यार ही होता है। ईश्वर जो भी करता है उस में उनका प्यार ही होता है।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इन्सान हर सम्भव कोशिश करता है पर समय के साथ-साथ उद्देश्य बदलते जाते हैं। बचपन में माता-पिता, बहन-भाई, मित्र-बन्धु, अध्यापक आदि के विचार ही इन्सान के उद्देश्य को निर्धारित करते हैं। जैसे-जैसे इन्सान की सोच विकसित होती है वह अपने दृष्टिकोण से संसार को देखना शुरू कर देता है तो वह अपनी मानसिकता के अनुसार अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारित करता है। वह देखता है कि एक दौड़ लगी हुई है और हर कोई, न चाहते हुए भी दौड़ रहा है पर क्यों दौड़ रहा है ? केवल अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए। इन्सान चुस्ती, चालाकी, हेरा-फेरी, बेईमानी, भ्रष्टाचार क्यों कर रहा है ? जबकि यह सच्चाई है कि एक दिन सभी ने मृत्यु को प्राप्त होना है फिर भी इन्सान दौलत एकत्रित करता है, कोठियां, बंगले बनाता है। क्यों ? हर किसी का उत्तर होगा कि अपने व अपने परिवार के लिए यह सब करना पड़ता है।

इन्सान आदिकाल से ही परिवार के रूप में रह रहा है। परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। माता-पिता हर दुःख सह कर अपने बच्चे को पालते हैं। उसे जीवन जीने का ढंग बताते हैं। हर जायज़-नाजायज़ ढंग से उसे एक कामयाब इन्सान बनाना चाहते हैं क्योंकि इन्सान आशा करता है कि जब वह बूढ़ा हो जाएगा, लाचार बेबस हो जाएगा तब उसकी संतान उसकी देखभाल करेगी, उसे सहारा देगी। इन्सान ऐसा सोचता है क्योंकि उसका जीवन अनिश्चितताओं से भरा पड़ा है, आने वाले पल में क्या होगा इन्सान नहीं जानता। इसलिए उसे एक भय लगा रहता है। उस भय को दूर करने के लिए वह सहारा ढूँढता है, क्योंकि यह सहारा उसे अपनी सन्तान, पति-पत्नी, धन-दौलत में दिखता है। क्या वास्तव में कोई रिश्ता सहारा देता है ? रिश्तों में खोखलापन प्रायः देखने को मिलता है जैसे कई पति-पत्नी अदालतों में लड़ रहे हैं। अनेकों माता-पिता ऐसे हैं जो सन्तान होते हुए भी बेसहारा और लाचार हैं, कोई उन्हें पानी पिलाने वाला नहीं हैं। कई लोग़ धन-दौलत होते हुए भी मौत मांगते हैं पर उन्हें मौत नहीं मिलती। कई ऐसे भाई हैं जो एक दूसरे के खून के प्यासे हैं, एक दूसरे की शक्ल भी नहीं देखना चाहते। पर फिर भी इन्सान जो भी करता है अपने तथा अपने परिवार के लिए करता है।

इन्सान सब पर विश्वास करता है पर उस पर विश्वास नहीं करता जिस ने उसके जन्म लेने से पहले माँ के अंदर दूध पैदा किया, उसके साँस लेने के लिए हवा दी, खाने के लिए अनाज पैदा किया, इतनी सुंदर कायनात बनाई अर्थात इन्सान को जो चाहिए था वह उसके जन्म से पहले ही पैदा किया, उसकी हर जरूरत का उचित प्रबंध किया। जिस प्रकार इन्सान के

सांसारिक माता-पिता हैं, उसी प्रकार इन्सान के अंदर जो शक्ति है उसकी रचना करने वाला भी कोई है। इन्सान के जीवन का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति होना चाहिए परन्तु इन्सान उसका अस्तित्व मानने से ही इन्कार कर रहा है, क्यों ?

कई लोगों का मानना है कि ईश्वर नाम की कोई चीज नहीं है। यह सब अपने आप ही हो रहा है। इस सृष्टि का सृजन करने वाला कोई नहीं है। यदि इन्सान उसे जानने की कोशिश भी करता है तो ईश्वर की बेअंत माया में उलझ कर रह जाता है। इन्सानी बुद्धि की एक सीमा है जो ईश्वर की बेअंत माया को समझने में असमर्थ है। जैसे कि जानवरों में माता-पिता, बहन-भाई आदि रिश्ते हैं पर जानवरों की बुद्धि इन रिश्तों को समझने में असमर्थ है। उसी प्रकार इन्सान की बुद्धि जानवरों से तो विकसित है पर वह अपने रचयिता से रिश्ते को समझने में असमर्थ है। ईश्वर ही अपनी इच्छा से कुछ इन्सानों को अपनी पहचान करवाता है, अपना अस्तित्व दर्शाता है, उन्हें ज्ञान देता है, तब इन्सान कहता है कि ईश्वर है। जिस इन्सान को ईश्वर का अनुभव नहीं मिलता वह कहता है कि ईश्वर नहीं है। ईश्वर को प्यार करने वालों ने कहा है कि ईश्वर संसार के कण-कण में है, वह इन्सान के अंदर भी है बाहर भी है। वह एक शक्ति है जो सर्वव्यापक है पर वह जड़ नहीं है, निर्गुण नहीं है, वह तो चेतन है, सर्व गुणों का स्वामी है, वह ममतामयी है, करुणामयी है पर उसे आँखों से नहीं देखा जा सकता, उस तक पहुंचा नहीं जा सकता। फिर इन्सान क्या करे जिससे उसे परमशक्ति का अनुभव प्राप्त हो। जिन महान्-आत्माओं से परमशक्ति ने सम्पर्क किया उन्होंने भी विभिन्न ढंगों से इन्सान को ज्ञान दिया। किसी महान् आत्मा ने कहा कि उसे सप्ताह में एक बार ही याद करना चाहिए, किसी ने कहा कि दिन में पांच बार याद करना चाहिए, किसी ने कहा इन्सान को प्रतिदिन अढ़ाई घंटे याद करना चाहिए, कोई कह रहा है ईश्वर श्वास-श्वास, ग्रास-ग्रास याद करना चाहिए। इन्सान जब इन विचारधाराओं के बारे में जानने की कोशिश करता है तो हर संस्था उसे आश्वासन देती है कि जब इन्सान उनकी पूजा-पद्धति के अनुसार ईश्वर को याद करेगा तो ईश्वर उसे अपना अनुभव अवश्य देंगे। यदि इस तरह सब को अनुभव मिलना होता तो आज संसार में एक धर्म होता, एक पूजा-पद्धति होती। इससे यह स्पष्ट होता है ये सब मार्ग ईश्वर की ओर ले जाते हैं परन्तु ईश्वर ने किस को अपना अनुभव देना है, यह उसकी अपनी इच्छा है।

इन्सान के ईश्वर को याद करने के कई उद्देश्य हो सकते हैं। कुछ लोग़ केवल अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए, कुछ लोग़ मन की शांति प्राप्त करने के लिए और कुछ अपना अगला जन्म सुधारने के लिए ईश्वर को याद करते हैं। कुछ लोग़ ऐसे भी हैं जो ईश्वर प्राप्ति करना चाहते हैं। जब इन्सान इस आध्यात्मिक यात्रा की ओर बढ़ता है तो उसके मन में शंकाएँ पैदा होना स्वभाविक है। जिसके मन में शंकाएँ नहीं हैं, प्रश्न नहीं हैं, उसे ढूँढने की आवश्यकता भी नहीं है। शंकाओं का पैदा होना ही इन्सान की आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत होती है। अध्यात्मवाद का अर्थ केवल ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त करना, निम्नस्तर की शक्तियों के बारे में ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि ईश्वर से प्यार करना, उसका अनुभव प्राप्त करना है जिसने इस सृष्टि को रचकर नियमों में बांधा है। नीचे कुछ प्रश्न दिए गए है जो आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वालों के मन में अक्सर पैदा होते हैं :

प्रश्न : क्या ईश्वर भी इन्सान से कुछ चाहते हैं ? ईश्वर प्राप्ति इन्सान की जरूरत है या ईश्वर भी चाहता है कि इन्सान उसकी प्राप्ति करने की चेष्टा करे ?

उत्तर : परमशक्ति ने स्वयं श्री मदन धाम की स्थापना की है। यहाँ अध्यात्मवाद से जुड़े हर प्रश्न का उत्तर क्रियात्मक रूप में दिया जाता है। यहाँ परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्रीमुख से ज्ञान दिया है। परमशक्ति ने समय-समय पर महान् आत्माओं से सम्पर्क स्थापित करके उन्हें अपने बारे में ज्ञान दिया, उनके माध्यम से अपने नाम रखवाए और निर्जीव चिह्नों की स्थापना करवाई। परमशक्ति का कोई भी काम अर्थहीन नहीं होता। परम-शक्ति ने जब-जब भी अपना अस्तित्व दर्शाया तो उसका मुख्य उद्देश्य रहा है कि इन्सान उसके अस्तित्व को मानते हुए उससे प्यार करे। जैसे माता-पिता अपने अपने बच्चों का पालन-पोषण करके अपना फर्ज निभाते हैं। माता-पिता कहें या न कहें वे आशा करते हैं कि उनके बच्चे उनका आदर-सम्मान करें, उनकी आज्ञा में रहें, आपस में प्यार से रहें, जब उन्हें जरूरत हो तो उनकी मदद करें, उनकी देखभाल करें। चाहे इन्सान खुद कैसा भी हो, वह चाहता है कि उसकी सन्तान एक नेक इन्सान बने। परमशक्ति तो प्राय: अदृश्य रहती है। इन्सान उससे मनचाहा रिश्ता बना लेता है। परन्तु आज परमशक्ति इन्सानी रूप में है। परमशक्ति श्री मदन जी जब सम्बोधन करते हैं तो अक्सर कहते हैं "देखो बच्चो, मैं परमशक्ति आप सब से सम्बोधित हो रही हूँ। वैसे तो मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो केवल एक शक्ति हूँ, पर अपने विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए इन्सान बनी हूँ।" भाव परमशक्ति श्री मदन जी आज नर लीला कर रहे हैं। वे इन्सान को जीवन जीने का एक नया और निराला ढंग बता रहे हैं। अब इन्सान का भी फर्ज बनता है कि वह ईश्वर को जाने, पहचाने, उससे नि:स्वार्थ प्यार करे और उसके बताए नियमों --*"दूसरों से ऐसा व्यवहार करो जैसा आप दूसरों से अपने लिए चाहते हैं"* और *"सब से प्यार करो, चाहे कोई आपको अपना दुश्मन भी मानता हो, तो भी उससे प्यार करो"* पर चले, उसके बनाए इन्सानों से प्यार करे। परमशक्ति जड़ नहीं चेतन है। इन्सान के प्यार का, विश्वास का, उस पर प्रभाव पड़ता है। इसका अर्थ यह नहीं कि परमशक्ति अपनी प्रशंसा चाहती है बल्कि वह नि:स्वार्थ प्यार करती है और नि:स्वार्थ प्यार चाहती है। जब इन्सान परमशक्ति को प्यार करता है तो परमशक्ति भी उसे प्यार करती है। यदि ऐसा न होता तो न ही भगवान होते और न ही भक्त होते। यदि ये नाम हैं, उनकी पूजा हो रही है और लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण हो रही हैं तो यह इस बात का प्रमाण है कि परमशक्ति चाहती है कि इन्सान उससे प्यार करे व उसकी प्राप्ति करने की कोशिश भी करे। अर्थात परमशक्ति चाहती है कि इन्सान उसके अस्तित्व को माने तथा उससे प्यार करे। पर जब इन्सान सच्चे मन से ईश्वर की ओर बढ़ता है तो ईश्वर उसकी परीक्षा भी लेते हैं। कई बार दु:ख-कष्ट, परेशानी भी देते हैं। यदि इन्सान स्वार्थी हो तो वह पीछे लौट जाता है। परन्तु यदि दृढ़ विश्वासी हो तो ईश्वर उसे अपनी कृपा से सहारा दे कर चलाते हैं। इसीलिए भक्त उन्हें परमदयालु और परमकृपालु भी कहते हैं।

□□□□□□ : क्या इन्सान के जीवन का उद्देश्य परमशक्ति की खोज होना चाहिए? क्या उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहिए?

□□□□□ : उपरोक्त प्रश्न के दो भाग हैं ज्ञान प्राप्त करना तथा खोज करनी। साधारण तौर पर ये एक समान ही लगते हैं पर इन के अर्थों में गहरा भेद है जिसको समझने की जरूरत है। ईश्वर की ओर कदम बढ़ाने से पहले इन प्रश्नों के उत्तर इन्सान को मालूम होने चाहिए तभी वह अपनी मंज़िल की ओर बढ़ सकता है। जो ज्ञान महान् आत्माओं ने दिया है वह उनके व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर है। ईश्वर का ज्ञान एक गहरे सागर के समान है जिसमें अनेक

धाराएं आ कर समा जाती हैं। उस सागर में से जिसे जो मिला उसने उसी का वर्णन किया। जैसे सब नदियाँ व दरिया सागर में मिल कर एक हो जाते हैं, उसी तरह सब ज्ञान रुपी नदियाँ उस सागर में एक हो जाती हैं। इस तरह रास्ते अनेक हैं, विचारधाराएं अनेक हैं, ईश्वर के अनेक ही रूप हैं और अनेक ही नाम हैं। हर रूप में ईश्वर अपने कुछ भक्तों को दर्शन भी दे रहा है, उनकी प्रार्थनाएं भी सुन रहा है, प्रमाण भी दे रहा है। इसलिए लोगों की श्रद्धा और विश्वास उन रूपों में है। परमशक्ति ने इस बात पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठाया है और श्री मुख से ज्ञान दिया है कि महान् आत्माओं के द्वारा दिए गए ज्ञान को पढ़ना, सुनना ज्ञान प्राप्त करना है। इस ज्ञान को प्राप्त करने से इन्सान के मन में अपने इष्ट के प्रति श्रद्धा बढ़ती है।

ईश्वर की खोज करना बिलकुल ही अलग बात है। ईश्वर की खोज का अर्थ है आत्म ज्ञान प्राप्त करना तथा स्वयं को पहचानना कि मैं कौन हूँ ? मेरा रचयिता कौन है ? मेरा व उसका रिश्ता क्या है ? मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है ? मेरे अंदर कौन बोलता है ? कौन इच्छाएं पैदा करता है ? कौन उन्हें पूरी करता है ? कहा जाता है कि ईश्वर इन्सान के अंदर है। यदि अंदर है तो कहाँ है ? कौन है जो शरीर को छोड़ जाता है ? इन प्रश्नों के उत्तर जानना ही ईश्वर की खोज करना है। ज्ञान प्राप्त करना और खोज करने में वही अन्तर है जो अन्तर किसीके प्यार की कहानी सुनने में तथा किसी से स्वयं प्यार करने में है। जब ईश्वर कृपा करते हैं तो इन्सान को अपने अंदर से ही इन प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं और उसे ही आत्म ज्ञानी कहा जाता है। इन्सान अपने जीवन में भौतिक वस्तुओं के बारे में जानने की कोशिश करता है। अपना समय बिताने के लिए कई संसाधन जुटाता है, पैसा भी खर्च करता है, समय भी व्यर्थ गंवाता है पर उद्देश्य क्या होता है ? उसमें उसे कुछ समय के लिए आनन्द प्राप्त होता है। उसी तरह ज्ञान प्राप्त करना या आत्म ज्ञान प्राप्त करना तथा उसे दूसरों को बाँटना, इन्सान के संताप को कम करता है, सात्विक विचार पैदा करता है, आनन्द और संतुष्टि देता है और उसे एहसास होता है कि उसके जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है ? इसी सम्बन्ध में यहां कुछ आम प्रश्नों उत्तर नीचे दिए जा रहे हैं।

प्रश्न : क्या इन्सान के जीवन का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति होना चाहिए ? यदि कर्मफल ही भोगना है तो फिर ईश्वर प्राप्ति का क्या अर्थ ?

उत्तर : परमशक्ति सर्वसुखदाता है। वह परम दयालु है, परम कृपालु है। पर फिर भी इन्सान दुखी क्यों है ? जो इन्सान के पास है उससे इन्सान संतुष्ट नहीं है परन्तु जो उसके पास नहीं है उसके कारण दुखी है। आम इन्सान शारीरिक तंदरुस्ती, मानसिक शांति और खुशहाली चाहता है। यदि इन्सान को यह सब मिल भी जाएं तो भी वह संतुष्ट नहीं होता क्योंकि उस की इच्छाएँ और ऊंची हो जाती हैं। जब इच्छाएँ पूर्ण नहीं होतीं तो असंतोष पैदा होता है और असंतोष ही निंदा, चुगली, चुस्ती, चालाकी, हेरा-फेरी, दूसरों को नीचा दिखाना, किसी की कमज़ोरी का मजाक उड़ाना आदि के रूप में प्रकट होता है। इन्सान का असंतोष ही उसे नैतिकता से गिरा देता है और वह अपने मूल स्वभाव से दूर हो जाता है। इन्सान का मूल स्वभाव क्या है ? इन्सान का मूल स्वभाव है प्यार करना। इन्सान अकेला नहीं रह सकता। इसीलिए आदिकाल से वह समाज में रहता आ रहा है। इन्सान को किसी साथी की आवश्यकता होती है। अकेले रहना उसके लिए सज़ा है। इन्सान प्यार करना व प्यार पाना चाहता है पर सच्चा प्यार इन्सान को नहीं मिलता जो इन्सान के अंदर असंतोष पैदा कर देता है। जैसे कि प्यार पाने से सुख

मिलता है और धोखा मिलने से दुःख होता है। दुःख ही असंतोष बन कर निंदा-चुगली, इर्ष्या-नफ़रत, हेरा-फ़ेरी, दूसरों को नीचा दिखाना, किसी की कमज़ोरी का मज़ाक उड़ाना आदि के रूप में निकलता है। यह असंतोष ही अनैतिक इच्छाएँ पैदा करता है जो उस के दुःखों का कारण बनती हैं। हर इन्सान किसी न किसी से प्यार की, विश्वास की, उम्मीद करता है परन्तु यह विश्वास, निःस्वार्थ प्यार ही इन्सान को नहीं मिलता। इसी कारण समूची मानवता में सब सुख होने के बावजूद भी असंतोष है, निराशा है। इस प्यार की तलाश में इन्सान ईश्वर की शरण में आता है। एक ईश्वर ही है जो इन्सान से निःस्वार्थ प्यार करता है, वह भक्त वत्सल है, ममतामयी है, करुणामयी है, सर्वसुख दाता है, दीन बन्धु है। आज धार्मिक समागमों में तथा संतों, महापुरुषों के प्रवचनों में लाखों की संख्या में लोग़ जाते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि इन्सान ईश्वर का प्यार पाना चाहता है, मन की शांति प्राप्त करना चाहता है। ईश्वर प्राप्ति किसी वस्तु की प्राप्ति नहीं है, किसी व्यक्ति की प्राप्ति नहीं है। ईश्वर की प्राप्ति से भाव ईश्वर के प्यार की प्राप्ति है। जब इन्सान ईश्वर को निःस्वार्थ प्यार करता है तो ईश्वर भी इन्सान को बहुत प्यार करता है। किसी के बताने से, समझाने से या पढ़ने से यह बात समझ नहीं आ सकती। जिस तरह एक छोटे बच्चे को पति-पत्नी के रिश्ते की समझ नहीं आ सकती, उसी तरह एक अज्ञानी को ईश्वर के रिश्ते की समझ नहीं आ सकती। ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए उससे प्यार करना व उसके प्यार को महसूस करना ही प्राप्ति की शुरुआत है। ईश्वर की प्राप्ति ही सर्वोच्च प्राप्ति है। जिसे ईश्वर का प्यार मिल जाए उससे खुशकिस्मत और कौन हो सकता है ?

□□□□□□ **: यदि इन्सान ने कर्मफल ही भोगना है तो ईश्वर का प्यार पाने का क्या अर्थ है ?**

□□□□□ : श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। परमशक्ति आज इन्सानी रूप में यहाँ विराजमान है। परमशक्ति साकार रूप में अध्यात्मवाद सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर क्रियात्मक रूप में दे रही हैं। उन्होंने श्री मुख से ज्ञान दिया है कि इन्सान कर्मफल भोगने के लिए ही जन्म लेता है। इन्सान के जीवन का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जाए। हर धर्म में इन्सान को मोक्ष प्राप्ति के भिन्न-भिन्न मार्ग बताए गए हैं। परमशक्ति साकार रूप में परिवार में रह कर अपने कर्तव्य निभाते हुए जिंदगी जीने का ढंग बता रही है और क्रियात्मक रूप में बता रही है कि कर्मफल देने के सिद्धांत का आधार है - *"दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करना जैसा आप दूसरों से अपने लिए चाहते हों।"* इन्सान को चाहिए कि वह ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करे, उसके साथ एक रिश्ता कायम करे, उससे प्यार करे, उससे डरे भी एवं अपने कष्टों-परेशानियों के लिए ईश्वर से नाराज़ न होकर उसे दोषी न माने बल्कि प्रार्थना करे। यदि इन्सान ऐसा करता है तो धीरे-धीरे इन्सान की सोच निर्मल हो जाती है। उसके अन्दर ईश्वर का डर रहता है। वह कोई भी कर्म करने से पहले या किसी को कुछ कहने से पहले सोचता है कि यदि मैं उसके स्थान पर होता तो मुझे कैसा लगता ? जिस इन्सान के अन्दर यह डर आ जाता है वह कई बुरे कर्मों से तो बचता ही है, उसके अन्दर असंतोष कम होना शुरू हो जाता है और सात्विक विचार आते हैं। जब इन्सान सच्चे मन से इस नियम पर चलने की कोशिश करता है तो ईश्वर कई बार सूली को भी सूल बना देते हैं। यदि ईश्वर इच्छा हो तो उसे मोक्ष भी प्रदान कर देते हैं। ईश्वर का उद्देश्य इन्सान को नेक बनाना है न कि केवल उसे सज़ा देना।

परमशक्ति दयालु है, कृपालु है, अनन्त गुणों की स्वामी है। इन्सान को चाहिए कि वह ईश्वर से प्यार करे।

□□□□□□□ : यदि परमशक्ति ने अपनी इच्छा से ही अनुभव देना है तो फिर ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रयास करने का क्या अर्थ है ?

□□□□□□ : यदि मानव इतिहास पर दृष्टि डालें तो जितने भी धर्म और मिशन हैं, इतिहास साक्षी है कि उनके अधिकतर संस्थापक वे हुए हैं जिनकी कोई धार्मिक पृष्ठभूमि नहीं थी। वे साधारण इन्सान थे। परमशक्ति ने अपने ही ढंग से उनसे सम्पर्क किया। उनके माध्यम से अपने नियमों, गुणों का प्रदर्शन भी किया। परन्तु कई लोग़ ऐसे भी हैं जो अपना घर-परिवार छोड़ कर जंगलों में चले गए। उन्होंने स्वयं को अनेक यातनाएं दीं, अनेक ढंग अपनाए, अपना सारा जीवन ईश्वर की खोज में लगा दिया, कुछ एक ने तो अपनी जान तक दे दी पर उन्हें आवाज़ नहीं आई। इस से यह सिद्ध होता है कि परमशक्ति जड़ नहीं चेतन है पर उसे प्राप्त करने का कोई निश्चित ढंग नहीं है। वह अपनी इच्छा से ही अपना अनुभव देती है।

□□□□□□□ : यदि ईश्वर का अनुभव ईश्वर की इच्छा से ही मिलता है तो फिर इन्सान पूजा-पाठ, जप-तप, हवन-यज्ञ, चिंतन-मनन क्यों करता है ? इसका क्या अर्थ है ?

□□□□□□ : हर धार्मिक संस्था, मिशन ईश्वर प्राप्ति के अनेक ढंग बताते हैं। इनमें से अधिकतर चिंतन-मनन पर ही बल देते हैं। परन्तु यहाँ पर परम शक्ति ने साकार रूप में अपने श्री मुख से स्पष्ट किया है कि परमशक्ति ही कर्मफल दाता है। उसने हर इन्सान को उसके कर्मों का फल देना है। इन्सान अपने जीवन में जो भी सुख-दुःख भोगता है वह उसके कर्मों का ही फल होता है। इन्सान जो भी कर्म करता है, परमशक्ति उसका फल इन्सान को देती है। यदि इन्सान परमशक्ति से नाराज़ होता है, उसे बुरा-भला कहता है तो उसका भी प्रतिफल मिलता है और यदि इन्सान उस की रज़ा में राज़ी रहता है, उसका शुक्रगुज़ार होता है व उससे निःस्वार्थ प्यार करता है तो उसका भी प्रतिफल मिलता है। परमशक्ति चाहती है कि इन्सान उसे याद करे, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे और उसे प्यार करे। इन्सान ईश्वर को जानने के लिए कई ढंगों का प्रयोग करता है। कई ढंगों द्वारा ईश्वर के प्रति प्यार प्रकट करता है जैसे पूजा-पाठ, जप-तप, भक्ति, पुण्य-दान, सेवा, चिंतन-मनन, हवन-यज्ञ, तीर्थयात्रा आदि। परमशक्ति श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। परमशक्ति श्री मदन जी ने श्री मुख से बताया है कि यदि इन्सान के पास समय हो तो उसे चिंतन-मनन करना चाहिए। सत्संग सुनना, करना और करवाना पुण्य कार्य हैं, परन्तु यदि इन्सान नेक कर्म, सद्व्यवहार तथा सब से प्यार नहीं करता तो सब व्यर्थ हैं। यदि इन्सान दूसरों को अपने जैसा समझता है, किसी को कुछ कहने से पहले सोचता है कि अगर मैं इसके स्थान पर होता तब मुझे कैसा लगता, तो इन्सान कभी किसी का बुरा नहीं करेगा। जब इन्सान ईर्ष्या-द्वेष, जलन-नफ़रत, झूठ-बेईमानी, हेरा-फ़ेरी, चुस्ती-चालाकी आदि छोड़ कर एक नेक इन्सान बनने की कोशिश करता है, नेक कमाई करता है और ईश्वर के बताए नियमों पर चलते हुए अपने कर्तव्य निभाने की कोशिश करता है तो ईश्वर भी उस पर प्रसन्न होते हैं। फिर उस इन्सान को अपनी कृपा से चलाते हैं। उस का मार्गदर्शन भी करते हैं, गलत कार्य करने से भी रोकते हैं और दृष्टांत भी देते हैं तब इन्सान को ईश्वर से प्यार होना शुरू हो जाता है।

इन्सान के जीवन का उद्देश्य तो मोक्ष प्राप्ति ही होना चाहिए जो ईश्वर प्राप्ति से मिलता है। पर हर इन्सान परमशक्ति तक नहीं पहुँच सकता। साधारणतय: इन्सान अपने जीवन में शारीरिक सुख, मानसिक शान्ति, तन्दरुस्ती और ख़ुशहाली चाहता है। यदि इन्सान यह सब चाहता है तो उसे परमशक्ति के बनाए नियमों पर भी चलना पड़ता है। जब इन्सान व्यवहार के नियम पर चलने का प्रयत्न करता है तो ईश्वर भी उसकी मदद करता है, जिससे इन्सान अपने उदेश्य को प्राप्त करता है। अगर इन्सान ईश्वर की प्राप्ति करना चाहता है तो उसे नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करना चाहिए। ईश्वर प्राप्ति के सम्बन्ध में अनेक मत है। हर संस्था अपनी अलग-अलग परिभाषा बताती है। इन्सान को कैसे पता चले कि ईश्वर प्राप्ति का कौन सा मार्ग सही है और उस मार्ग पर चलने पर उसे क्या प्राप्त होगा, उसके क्या लक्षण है ?

पाठकों की सुविधा के लिए नीचे कुछ पड़ाव दिए गए है, जिन्हें पढ़ने के बाद वह आसानी से जान सकेगा कि उसकी मंजिल क्या है ? यहाँ पर यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि ईश्वर को किसी भी निश्चित नियम में नहीं बांधा जा सकता, इसलिए अपवाद हर जगह होते है। यह तो पाठकों की सुविधा के लिए किया गया एक प्रयास है। ईश्वर प्राप्ति के निम्नलिखित पड़ाव माने जा सकते है :

1. जम्हाइयाँ आना :

शुरू में व्यक्ति जब ईश्वर की ओर बढ़ता है तब ईश्वर का स्मरण करते ही व ध्यान लगते ही जम्हाइयाँ आनी शुरू हो जाती हैं। इस का अर्थ है कि ईश्वर उसके आस-पास है, पर इन्सान को वह दिखाई नहीं दे रहा। ईश्वर तो कण-कण में मौजूद है फिर भी नजर नहीं आता। इस का कारण है कि इन्सान इस योग्य नहीं होता। इस लिए इन्सान को ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करनी चाहिए कि वे उसे अपने योग्य बनाएँ तथा उस पर कृपा करें ताकि वह अपनी मंज़िल की ओर बढ़ सके।

2. शरीर में सरसराहट का होना तथा आँखों में आंसूओं का आना:

इस अवस्था में जब व्यक्ति ईश्वर का ध्यान करता है तो उसके शरीर में सरसराहट होनी आरम्भ हो जाती है और आँखों में आँसू आने शुरू हो जाते हैं। यह इन्सान के अपने इष्ट के प्रति प्रेम के आँसू होते हैं। कई बार इन्सान को ऐसे लगता है जैसे बिजली का करंट पूरे शरीर में दौड़ने लगा हो। कभी-कभी नींद में भी ऐसे हो जाता है, परन्तु इन्सान को घबराना नहीं चाहिए और जब ऐसा संकेत हो तो ईश्वर की ओर ध्यान करना चाहिए। इस पड़ाव पर कभी-कभी इन्सान को महसूस होता है जैसे कोई दैवी शक्ति उसके शरीर में प्रवेश कर रही है। एक बात सदैव याद रखनी चाहिए कि कोई शक्ति बाहर से प्रवेश नहीं करती। केवल ईश्वरी शक्ति जो जन्म से ही इन्सान के साथ हैं, अपने आप को उस शरीर में उजागर करती हैं। इसलिए इन्सान को उनके प्रति शुक्रगुज़ार होते हुए उनसे प्रार्थना करनी चाहिए।

3. प्रवेशता का होना :

यह आवश्यक नहीं है कि हर कोई इस अवस्था को प्राप्त हो। यह अवस्था अभिशाप भी है व वरदान भी है। इस अवस्था में कुछ विशेष परिस्थितियों में इन्सान का सिर हिलना, बाजुओं या शरीर का हिलना, इन्सान का अस्त-व्यस्त हो जाना साधारण बात है परन्तु

यह सब इन्सान के वश में नहीं होता और उसे आवाज़ भी नहीं आती। ईश्वर उसे अनुभव तो देते हैं पर उससे बात नहीं होती। कई बार शारीरिक कष्ट भी होते है जिनके कारण इन्सान अपने परिवार व समाज के लिए परेशानी का कारण बन जाता है। अक्सर लोग़ इसे मानसिक रोग का होना भी मान लेते हैं परन्तु इसके पीछे कई कारण होते हैं : जैसे इन्सान के मन में शंका होना कि यह ईश्वर की कृपा है या उसकी मनोस्थिति है; निम्न स्तर की शक्ति का प्रभाव है या परमशक्ति उसे अपना अनुभव दे रही है। ईश्वर के बारे में अधूरा ज्ञान होना, अपने बारे में शंका होना, स्वयं ही कुछ गलत धारणाएं बना लेना, मन में चंचलता, उमंगें पैदा हो जाना, इच्छाएँ पैदा होना, अपने सांसारिक कर्तव्यों से पीछे हटना आदि भी होते हैं। ईश्वर यह प्रवेशता कई बार प्रेत-आत्माओं, देवी-देवताओं, वीरों-पीरों का अस्तित्व सिद्ध करने के लिए या कर्मफल देने के लिए भी देते हैं। कुछेक व्यक्ति इस अवस्था पर ही स्थिर हो जाते हैं। उनके लिए यह प्रवेशता अभिशाप बन जाती है। यदि कोई इन्सान ईश्वर के नियमों पर चलने की कोशिश करता है और स्वयं को इन विचारों से ऊपर उठाने की कोशिश करता है व ईश्वर के समक्ष बार-बार प्रार्थना करता है तो ईश्वर उनकी शंकाओं और समस्याओं का समाधान करते हैं। उनके मन में जो प्रश्न या शंकाएँ पैदा होती हैं उन्हें अपनी कृपा से दूर कर देते हैं और उन्हें अगले पड़ाव पर पहुंचा देते हैं। जो इन्सान ईश्वर से सच्चा प्यार करते हैं तथा ईश्वर के प्रति समर्पण भाव रखते हैं या जिनके पूर्व संस्कार होते हैं उन पर यह अवस्था आती ही नहीं और अगर आती भी है तो थोड़े समय के लिए आती है। ईश्वर उनमें से कुछेक को माध्यम बना कर उनके द्वारा अपने नियमों, गुणों व शक्तियों का प्रदर्शन भी करते हैं। इस प्रकार यह उनके लिए वरदान सिद्ध होती है।

4. आवाज़ का आना :

यहाँ से ईश्वर कृपा का ऊँचा स्तर आरम्भ होता है। इस अवस्था में प्रायः इन्सान को अपने अंदर से या बाहर से आवाज़ आनी शुरू हो जाती है। ईश्वर उसे गलत कार्य करने से रोकते हुए सही कार्य करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। परन्तु कई बार इन्सान अपनी मनोस्थिति के कारण उलझ भी जाता है क्योंकि अपने अंदर की भावना और ईश्वर की आवाज़ में वह अन्तर नहीं कर पाता। उस वक्त इन्सान को ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करनी चाहिए। आवाज़ आने के भी दो पड़ाव हैं। पहले पड़ाव में इन्सान को जब आवाज़ आती है तो उसकी चेतना लुप्त हो जाती है। इन्सान को बोलते समय पता नहीं होता कि क्या बोला जा रहा है। दूसरे पड़ाव में इन्सान की चेतना को पता तो होता है कि क्या बोला जा रहा है पर वह जो बोल रहा है उस पर उसका नियंत्रण नहीं होता। यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि जो लोग़ प्रवेशता के पड़ाव में से होकर आते है उनकी कही बातें ज्यादातर गलत होती है क्योंकि उनकी अपने प्रति और ईश्वर के सबंध में जो भ्रान्तियां होती हैं वह पूरी तरह से दूर नहीं हुई होती। जो लोग़ सीधा इस स्थिति में आते है उनसे ईश्वर साफ और स्पष्ट बात करते है और उनका उचित मार्गदर्शन भी करते हैं। इस स्थिति में ईश्वर के दर्शन नहीं होते।

5. ईश्वर के दर्शन होना :

इस स्तर पर इन्सान को अपने इष्ट के दर्शन होने लगते हैं अर्थात् जब अपने इष्ट की और ध्यान लगाता है तो उसे बंद या खुली आँखों से दर्शन होते हैं। इन्सान की अपने इष्ट से घंटों

बातचीत होती है, पर जब बात होती है तो दर्शन नहीं होते जब दर्शन होते है तो बात नहीं होती। इस स्तर वाला व्यक्ति उतने समय के लिए अपने इष्ट से अभेद हो जाता है। पर इन्सान तो चाहता है कि ईश्वर उसके समक्ष बैठ कर बातें करे।

6. ईश्वर का साक्षात् दर्शन देना :

इस स्तर पर इन्सान अपने इष्ट से अभेद हो जाता है। यह उसके प्यार की चरम-सीमा होती है मगर यह अवस्था बहुत कठिन है। इस अवस्था तक कोई गिना-चुना व्यक्ति ही पुहंच पाता है। इस अवस्था में इन्सान का इष्ट उसके समक्ष बैठ कर बातचीत करता है और जो उससे कहा जाता है वह बिल्कुल ठीक होता है।

उपरोक्त दिए गए पड़ावों का अध्ययन करने के बाद इन्सान आसानी से अंदाजा लगा सकता है कि वह किस पड़ाव तक पहुंचा है और उसकी मंजिल क्या है ? कई बार पहली स्थिति वालों को चौथी या पांचवी स्थिति वाले अनुभव भी मिल जाते है या कभी पांचवी या चौथी स्थिति वालों को पहली या दूसरी स्थिति वाले अनुभव मिल जाते है इससे न तो घबराना चाहिए और न ही उतेजित होना चाहिए अर्थात् वही स्थिति मानी जानी चाहिए जो ज्यादातर महसूस होती हो। यहाँ पर यह कहना जरूरी है कि ईश्वर की प्राप्ति, ईश्वर की कृपा से ही हो सकती है और ईश्वर की कृपा ईश्वर की इच्छा से ही सम्भव है।

समाज में प्रवेशता के बारे में अनेक भ्रांतियां हैं, कोई इसे कसर, हवा का आना, प्रवेशता होना, देवी-देवता का प्रवेश होना, वीर-पीर की मेहर अथवा भूत-प्रेत की पकड़ होना आदि मानते हैं। वास्तव में इन्सान में प्रवेशता की अवस्था में बाहर से कुछ भी प्रवेश नहीं होता। परमशक्ति ही व्यक्ति को कर्मफल देने के लिए या फिर अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए स्वयं को इन्सानी शरीरों में प्रकट करती है। कर्ता हर रूप, हर अवस्था में परमशक्ति ही रहती है। परमशक्ति इन्सान को अपने से दूर रखने के लिए निम्न स्तर की शक्तियों के नाम की प्रवेश्ता को महत्व दे देती है। इन्सान को अनुभव देने के अनेक प्रयोजन होते हैं जैसे :

12. अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु इन्सान का प्रयोग करने के लिए।
13. दुष्कर्मों का फल देने के लिए।
14. पूर्व जन्म के कर्मों का फल देने के लिए।
15. विपरीत परिस्थितियों में सहारा देने के लिए।
16. विपरीत व्यवहार में सुधार लाने के लिए।
17. देवी-देवताओं का अस्तित्व दर्शाने के लिए।
18. असुरी शक्तियां और वीरों-पीरों का अस्तित्त्व सिद्ध करने के लिए।
19. दुष्कर्मों से छुटकारा दिलवाने के लिए।
20. इन्सान को अपना अस्तित्व बताने के लिए।
21. साधारण से महान् आत्मा बनाने के लिए।

22. **यह दर्शाने के लिए कि इन्सान के अतिरिक्त भी कोई शक्ति है जिसके आगे सभी बेबस, लाचार और मजबूर होते हैं।**

8
मोक्ष प्राप्ति और क्षम्य अपराध

मोक्ष का अर्थ

सबसे पहले यह जानना ज़रूरी है कि मोक्ष का क्या अर्थ है। मोक्ष का शाब्दिक अर्थ है — मुक्ति, छुटकारा, स्वतंत्रता, निर्वाण, दबाव से अलग होना, बन्धन से छूटना, निज़ात पाना, मुक्त होने की अवस्था, परन्तु अध्यात्मिक दृष्टिकोण से मुक्ति का अर्थ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होना, परमपद, परमगति, ब्रह्मपद, अमरपद, अमरत्व आदि पाना है।

इस सृष्टि में हर चीज़ का जोड़ा है जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, ख़ुशी-ग़मी, यश-अपयश, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, सर्दी-गर्मी, स्वर्ग-नरक और जीवन-मृत्यु । इसी तरह अध्यात्मवाद और भौतिकवाद का भी जोड़ा है। एक के बिना दूसरे का कोई महत्व नहीं है। जो भौतिकवादी हैं उनका मत है कि जो कुछ इन आँखों से दिखाई दे रहा है वही सत्य है, जो दिखाई नहीं देता वह मिथ्या है। जबकि आध्यात्मवादियों का मत है कि जो कुछ इन आँखों से दिखाई दे रहा है वह सब नाशवान है और जो दिखाई नहीं देता वही अजर, अमर, अविनाशी है और वही सत्य है।

आध्यात्मवादी इस बात को मानते हैं कि इस सृष्टि को बनाने वाली कोई शक्ति है जो अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। इन्सान का जीवन-मृत्यु, लाभ-हानि, यश-अपयश, सफलता-असफलता, सुख-दुःख, ख़ुशी-ग़मी, शांति-अशांति उसी के हाथ में है। वह गिनती में एक है, उसे ही ईश्वर कहा गया है, वही कर्मफलदाता है। कर्मफल पाने के लिए ही इन्सान का पुनर्जन्म होता है और पूर्व कर्मों के आधार पर ही उसे सुख-दुःख, लाभ-हानि, यश-अपयश, कष्ट-परेशानियाँ, बुद्धि, शरीर, माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी इत्यादि मिलते हैं। इन्सानी शक्ति शरीर में आकर कर्मफल भोगती है, इसलिए इन्सानी शक्ति भी शरीर के आवागमन के चक्र से मुक्ति पाने की आवश्यकता महसूस करती है। परन्तु भौतिकवादी ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते। वे उपरोक्त बातों को नहीं मानते, उनका मत है कि यह सब कुछ स्वचलित प्रक्रिया है।

मोक्ष प्राप्ति कैसे सम्भव :

ईश्वर ने सृष्टि में जो कुछ भी बनाया है, इन्सान के लिए ही बनाया है। प्राणियों में इन्सान को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है। उसे सोचने-समझने के लिए बुद्धि प्रदान की, बोलने के लिए भाषा दी, इन्सान को ही ईश्वर ने अपना सांझीदार बनाया। उसे अपने बारे में ज्ञान देने के लिए समय-समय पर महान् आत्माओं को धरा पर भेजा, इन्सान को ही अपना अनुभव करवाया। यदि

फिर भी इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है तो उससे बड़ा पापी, कृतघ्न और कोई नहीं है । इस दोष का दण्ड इन्सान को भुगतना ही पड़ता है । इसलिए इन्सान का कर्तव्य है कि वह ईश्वर के अस्तित्व को माने और अपने जीवन के उद्देश्य को जानने का प्रयत्न करे । क्या इन्सान का उद्देश्य बार-बार गर्भ में आना है ? इन्सान का उद्देश्य ईश्वर से प्यार करना तथा जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारा पाना है अर्थात् मोक्ष प्राप्त करना है । दुःखों, कष्टों, परेशानियों से छुटकारा पा कर परम-आनन्द की प्राप्ति करना है । यह तभी सम्भव है यदि इन्सान अपने जीवन में कम से कम **90%** सद्कर्म करे, भले ही **10%** ऐसे दुष्कर्म भी हो जाएँ जो क्षमायोग्य हों और जीते जी वह कर्मफल दाता तक पहुंच जाए ।

प्राय: इन्सान अपना जीवन वीरों-पीरों या देवी-देवताओं की मान्यता करते हुए ही व्यतीत कर देता है, कुछ इन्सान ही ऐसे होते हैं जो भगवानों तक पहुंच पाते हैं । ईश्वर तक तो कोई गिना-चुना ही पहुंचता है । इस संदर्भ में इतना ही कहना उचित है कि उन देवी-देवताओं, वीरों-पीरों और भगवानों को जब वह इन्सानी रूप में धरा पर थे, ईश्वर ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनका प्रयोग किया और इन्हें इन रूपों में मान्यता प्रदान की । इन्सान का भी कर्तव्य है कि वह उनका आदर-सम्मान करे परन्तु पूजा, भक्ति ईश्वर की ही करे क्योंकि केवल ईश्वर ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है और वही कर्मफल दाता है, भाग्य विधाता है, मोक्ष दाता है, यमराज और धर्मराज भी वही है । उसी के पास इन्सान अपना नश्वर शरीर त्याग कर जाता है । ईश्वर सत्य, न्याय और प्यार का प्रतीक है, इसलिए इन्सान के जीवन का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति ही होनी चाहिए । नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करते हुए ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है ।

जब तक इन्सान अपने जीवन काल में ईश्वर तक नहीं पहुंचता, मोक्ष दाता की शरण में नहीं जाता तथा निम्न स्तर तक ही सीमित होकर रह जाता है तब तक वह मोक्ष पद प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि मोक्ष की प्राप्ति ईश्वर की इच्छा के बिना हो ही नहीं सकती । इसलिए इन्सान का कर्तव्य है कि वह ईश्वर की कृपा का पात्र बने । ऐसा तब ही हो सकता है जब इन्सान सच्चे मन से ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करे, क्योंकि ईश्वर ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है, वही कर्मफलदाता है । वह सत्य, न्याय और प्यार का प्रतीक है । न्यायकारी होते हुए भी वह परम दयालु, परम कृपालु और दया का सागर है । वह चेतन है जड़ नहीं । वह भी हर चीज़ का एहसास करता है । इन्सान का कर्तव्य है कि वह ईश्वर से निःस्वार्थ प्यार करे । इसके साथ-साथ ईश्वर से डरे और उसका आदर-सम्मान भी करे । डरना इसलिए चाहिए कि कोई ऐसा कर्म न हो जाए जिससे ईश्वर नाराज़ हो जाए, क्योंकि उसकी अप्रसन्नता इन्सान की बर्बादी का कारण बन जाती है । जब इन्सान ईश्वर से निःस्वार्थ प्यार करता है तब ईश्वर भी इन्सान का मार्गदर्शन करता है और उसे दुष्कर्म करने से रोकता है । धीरे-धीरे इन्सान दुष्कर्मों को छोड़ कर नेक कर्म की ओर बढ़ने लगता है जिससे उसका जीवन सार्थक बन जाता है । जब इन्सान ईश्वर से प्यार करने लगता है तो वह ईश्वर के बताए हुए नियमों पर चलने का प्रयास करने लगता है । जब वह प्रयास करता है तो ईश्वर भी उस पर अपनी कृपा करते हैं ताकि इन्सान उन नियमों पर चल सके । व्यक्ति को अपना जीवन सार्थक

बनाने के लिए, जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होने के लिए तथा ईश्वर की प्राप्ति के लिए, ईश्वर के बताए निम्नलिखित नियमों पर चलने का प्रयास करना चाहिए :

1. दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करना जैसा आप अपने लिए दूसरों से चाहते हों।
2. जो कुछ अपने लिए न चाहते हों वह दूसरों से न करो।
3. सदा नेक कर्म, सद्व्यवहार तथा सबसे प्यार करो।
4. किसी को भी अपना दुश्मन न समझो। यदि आपको कोई अपना दुश्मन भी समझता है तब भी उससे प्यार ही करो।
5. ईश्वर से कभी नाराज़ न हो क्योंकि ईश्वर सदैव ठीक ही होते हैं।
6. किसी भी कार्य के लिए ईश्वर को दोषी न मानो। दोष हमेशा इन्सान के कर्मों का होता है।

जो इन्सान उपरोक्त नियमों का पालन सच्चे मन से करता है, वह ईश्वर की कृपा का पात्र बनता है तथा जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है अर्थात् उसे कर्मफल भोगने के लिए पुनर्जन्म नहीं लेना पड़ता है। अन्य इन्सान जन्म-मरण के बन्धन में ही रहते हैं।

क्षम्य अपराध :

व्यक्ति सुबह से रात तक विकारों के वशीभूत या वातावरण व परिस्थितियों के अधीन अनेक भूलें करता है परन्तु जानते हुए या अहम् भाव में आ कर वह कुछ अपराध भी करता है। इस प्रकार किए गए अपराध या भूलें अक्षम्य होती हैं और उनका फल हर अवस्था में भोगना ही पड़ता है। कुछ भूलें या अपराध ऐसे भी होते हैं जो इन्सान अज्ञानतावश या अनजाने में करता है या किसी वातावरण व परिस्थिति के अधीन मजबूरी में करता है या फिर किसी की निःस्वार्थ भलाई के लिए करता है। ऐसे अपराध क्षमा के योग्य होते हैं। जैसे कि पहले भी स्पष्ट किया है कि इन्सान जन्म-मरण के बन्धन से तभी मुक्त होता है जब वह अपने जीवन में 90% सत्कर्म करता है भले ही 10% ऐसे दुष्कर्म भी करता है जो क्षमा योग्य होते हैं। ऐसे कुछ अपराध निम्नलिखित हैं :

1. अनजाने में किए गए अपराध

जब कोई इन्सान जानबूझ कर अपराध नहीं करता बल्कि उससे अनजाने में ही कोई भूल हो जाती है तथा उसे भूल का एहसास होता है तो वह अपनी भूल पर पश्चाताप करता है और क्षमा याचना करता है तथा भविष्य में वैसी भूल न करने का संकल्प करता है तो परमशक्ति उसे क्षमा कर देती है। वैसे तो इन्सान को सही-ग़लत का ज्ञान नहीं है, अपनी तरफ से वह ठीक कार्य करता है परन्तु परमशक्ति की दृष्टि में वह दोष होता है। कई बार इन्सान को दूसरों के कर्म गलत लगते हैं पर हो सकता है कि वे परमशक्ति की दृष्टि में सही हों। कई बार इन्सान की दृष्टि में जो गुण होते हैं, परमशक्ति की दृष्टि में अवगुण होते हैं क्योंकि इन्सान की और परमशक्ति की सोच में बहुत अन्तर है। इन्सान केवल अपने किए गए कर्म को देखता है परन्तु परमशक्ति इन्सान की सोच देखती है कि कर्म किस सोच के आधार पर किया गया है। कोई भी कर्म अपने आप में सही या गलत नहीं होता। सही या गलत तो सोच होती है जिसके आधार पर कर्म किया गया है। जैसे कोई इन्सान किसी धार्मिक स्थान के पास से गुजरता है। वह वहाँ शीश नहीं झुकाता या निरादर करता है। यदि वह अनजाने में यह अपराध करता है

कि उसे इस सम्बन्ध में जानकारी नहीं थी तब तो उसका अपराध क्षम्य होता है परन्तु यदि उसने जानबूझ कर या अहम् भाव में ऐसा किया हो तो उसका अपराध अक्षम्य हो जाता है।

2. अज्ञानतावश किए गए अपराध :

जब किसी व्यक्ति को किसी सम्बन्ध में जानकारी न हो और ऐसी स्थिति में उससे भूल हो जाए तो वह भूल क्षम्य होती है। जैसे एक व्यक्ति का व्यवहार तो बहुत अच्छा है, वह किसी की भावना को ठेस नहीं पहुँचाता, किसी का मन भी नहीं दुखाता। उसे यह पता नहीं कि ईश्वर वास्तव में क्या है ? उसकी प्राप्ति कैसे की जा सकती है ? वह ईश्वर के अस्तित्व को तो स्वीकारता है पर कोई उसे जो कुछ भी करने को कहता है वह वैसे ही करता चला जाता है। अगर वह किसी महान् आत्मा का या ईश्वर के धरा पर आने पर अज्ञानतावश विरोध करता है तो वह अपराध क्षमा के योग्य होता है। परमशक्ति श्री मदन जी ने स्पष्ट किया है कि जब तक वे अपनी कही बात का प्रमाण न दे दें तब तक उसका विश्वास न करना भाव जब तक किसी को परमशक्ति ज्ञान नहीं करवाती और वह अज्ञानता के कारण विरोध करता है तो उसका अपराध क्षम्य होता है। यदि कोई सब कुछ जानते हुए जानबूझ कर अहम् भाव में विरोध करता है तो उसका अपराध अक्षम्य हो जाता है और उसे अपने किए का फल भोगना पड़ता है।

3. मजबूरी में किए गए अपराध :

कई बार इन्सान ऐसी प्रस्थितियों एवम् वातावरण में फंस जाता है और मजबूर हो जाता है और सब कुछ जानते हुए भी गलत करता है। मजबूरी मे किया गया वह अपराध क्षम्य होता है। उदाहरणतय: माता-पिता की आज्ञा या आदेश का पालन करना। जैसे नियम है कि इन्सान को अपने माता-पिता की कमियां को नहीं देखना चाहिए, उनकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए, उनकी हर इच्छा पूर्ण करनी चाहिए आदि। कई बार माता-पिता अपनी मानसिक शांति के लिए या इच्छा पूर्ति के लिए बच्चों को कोई आदेश देते हैं ये आदेश खुशी-ग़मी या समाज में मेल-मिलाप के सम्बन्ध में हो सकते हैं जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक न हों । मजबूरी में किए गए ऐसे अपराध क्षम्य होते हैं।

4. परिस्थिति वश किए गए अपराध:

जब किसी इन्सान के सामने विपरीत परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं जैसे यदि कोई व्यक्ति दुष्ट व्यक्तियों या असामाजिक तत्वों के जाल में फंस जाए, वह या उसका परिवार किसी मुसीबत में फंस जाए या जान जोखिम में आ जाए तो ऐसी परस्थितियों में जो गलती उससे हो जाए तो उसकी गलती क्षमा के योग्य होती है।

5. अधर्म के नाश के लिए किसी भी नीति का प्रयोग :

अधर्मी व्यक्तियों का कार्य दूसरों को दुःख देना, हानि पहुंचाना, अन्याय करना व कमज़ोर लोगों का शोषण करना होता है। ईश्वर का नियम है कि अन्याय करना और अन्याय सहना दोनों ही पाप हैं। यदि आप किसी पर हो रहे अन्याय को देखते हो तो आपको उस अन्याय के विरुद्ध डट जाना चाहिए और सदैव न्याय का साथ देना चाहिए। प्रायः अन्याय ग़रीब, लाचार, बेबस व मज़बूर लोगों के साथ ही होता है, वह चाहे नर हो या नारी, उनकी रक्षा के लिए किसी

भी नीति या ढंग का प्रयोग कर लेना चाहिए। वहां सही-ग़लत से ऊपर उठ कर कर्म करना चाहिए। निःस्वार्थ भाव से किए गए कर्म भले ही किसी सीमा तक अनुचित ही क्यों न हों, क्षम्य होते हैं।

6. समूची मानवता की रक्षा हेतु किए गए अपराध :

ईश्वर ने तो केवल इन्सान बनाया है बाकी दीवारें तो इन्सान ने स्वयं ही पैदा की हैं। ईश्वर ने जिन महान् आत्माओं से सम्पर्क किया उन्होंने समूची मानवता के हित व कल्याण के लिए ज्ञान दिया। इन्सान को भी चाहिए कि वह धर्म, जाति, तथा सम्प्रदाय से ऊपर उठ कर समूची मानवता के हित के लिए कार्य करे। हर इन्सान को अपने जैसा समझे। यदि कोई व्यक्ति समूची मानवता के अहित के लिए कोई कार्य करता है अर्थात् जैसे कोई आतंकवाद, अफवाहें, अशांति या भ्रष्टाचार फैलाता है, या कोई और ऐसा कार्य करता है जिससे समूची मानवता में असंतोष व डर पैदा होता है तो उस कार्य को रोकने के लिए या मानवता की रक्षा करने के लिए अपनी कुर्बानी देना कोई दोष नहीं है। ऐसे में अगर कोई अनुचित कर्म भी हो भी जाए तो वह क्षमा योग्य होता है।

7. मानवता की भलाई के लिए किए गए अपराध :

जैसा कि पहले भी बताया गया है कि परमशक्ति का सम्बन्ध इन्सान की सोच के साथ है। कोई इन्सान दूसरों की भलाई के लिए या समाज के हित में कार्य करते हुए गलती कर बैठता है। उसका उद्देश्य मानवता की भलाई करना है, पर उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किए गए कार्य कई बार गलत हो जाते हैं। यदि उसका उद्देश्य निःस्वार्थ है तो तथाकथित अपराध क्षम्य होते हैं।

8. मानवता के अहित के विरोध में किए गए अपराध :

अगर कोई व्यक्ति या समुदाय मानवता के अहित के लिए कार्य कर रहा है जिससे समूची मानवता को हानि हो रही हो तो इन्सान का कर्तव्य है कि वह उसका विरोध करे। विरोध करते हुए यदि उसे कोई नियम भी तोड़ना पड़ता है तो उसके द्वारा किया गया अपराध भी क्षम्य हो जाता है।

9. निःस्वार्थ रहकर किसी इन्सान की भलाई के लिए किया गया अपराध :

कई बार दूसरों की भलाई करते हुए इन्सान से कोई गलतीहो जाती हैं। यदि इस प्रकार के कार्य में उसका अपना कोई स्वार्थ न हो और किसी को कोई हानि न हो तो इस तरह हुए अपराध क्षम्य होते हैं। जैसे कोई किसी को मारना चाहता है तो उस व्यक्ति को बचाने के लिए उसे झूठ का सहारा लेना पड़ता है। ऐसा अपराध क्षम्य होता है क्योंकि ऐसा अपराध स्वार्थ रहित है।

10. आत्म-रक्षा या परिवार की रक्षा हेतु किया गया अपराध :

कई बार इन्सान के सामने ऐसी स्थिति आ जाती है जब वह या उसका परिवार किसी मुसीबत में फंस जाता है। जैसे किसी व्यक्ति पर कोई गिरोह प्राणघाती आक्रमण कर देता है तो आत्म-रक्षा हेतु यदि उससे कोई अपराध हो जाता है तो ऐसा अपराध क्षम्य होता है।

उपरोक्त वर्णनीय विचारों पर इन्सान चल कर अपने भावी जीवन को आदर्शमय व सुखमय बना सकता है। इस के साथ-साथ इनको अपने जीवन में अपनाने से इन्सान मोक्ष की प्राप्ति भी कर सकता है।

परन्तु कुछ ऐसे भी अपराध हैं। जो क्षमा योग्य नहीं हो सकते और उनका फल हर अवस्था में इन्सान को भोगना ही पड़ता है, यहाँ तक की उसको नया इन्सानी जीवन भी नहीं मिल पाता। वे अपराध निम्न लिखत हैं और जिनका वर्णन और व्याख्या "जीवन दर्पण " पुस्तक में दिया गया है।

1. नास्तिक होना अर्थात ईश्वर के अस्तित्व को नकारना।
2. माता-पिता का निरादर एवम् अवहेलना करना।
3 किसी के किए गए उपकार को भूल जाना।
4 विश्वासघात करना।
5 अपनी किसी अप्रियघटना एवम् दुःख के लिए ईश्वर से नारा होना।
6 ईश्वर द्वारा मानता प्राप्त रूपों का निरादर करना।
7 ईश्वर के सम्पर्क के बिना गुरु बन बैठना।
8 किसी के प्रति झूठी गवाही देना।
9 ईश्वर के साकार रूपों का निरादर करना।

9

ईश्वर के दर्शनों से पाप कब, क्यों और कैसे कटते हैं ?

आम धारणा है कि जब किसी इन्सान को परमशक्ति या ईश्वर के दर्शन हो जाते हैं तब उसके सारे दुखों-कष्टों का निवार्ण हो जाता है। आज परमशक्ति का ऐलान है कि

"मैं परमशक्ति अदृश्य से सदृश्य बनी हूँ, यह मेरा शरीर है, मेरा नाम मदन है, आज मैं इन्सानी रूप में धरती पर आई हूँ।"

यहाँ परमशक्ति श्री मदन जी ने हर चीज़ का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया है और दे रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि ईश्वर के दर्शन हो जाने से इन्सान पाक और पवित्र हो जाता है। पर यह किस समय होता है ? किस तरह होता है ? आदि बहुत सारे प्रश्न हैं जो इन्सान को समझने बहुत ज़रूरी हैं, इनका ज्ञान होना बहुत ज़रूरी है। जब इन्सान ईश्वर की निराकार रूप में भक्ति अर्थात् चिंतन-मनन, जप-तप, पूजा-पाठ आदि करता है और उसका मन एक अबोध बच्चे की तरह निर्मल हो जाता है। उसके मन से इर्ष्या-द्वेष, नफरत, वैरभाव मिट जाते हैं। वह हर किसी के साथ सद्व्यवहार और प्यार करता है और उसका मन ईश्वर के प्यार से भर जाता है अर्थात् जब इन्सान ईश्वर के योग्य हो जाता है तो ईश्वर उनके प्यार से प्रसन्न हो कर उसी रूप में

जिस रूप में वह उन्हें याद करता है; प्रकट हो कर जो कुछ भी कह देते हैं वही हो जाता है। तब उसके दुःख-कष्ट दूर हो जाते हैं। प्रकट तो परमशक्ति ही होती है पर रूप वह होता है जो इन्सान का इष्ट होता है। वैसे तो इन्सान मूर्तियों या चित्रों में ईश्वर के दर्शन करता है पर सत्य में दर्शन वह होते हैं जब उसको परमशक्ति उसके इष्ट के रूप में प्रकट हो कर दर्शन देती है।

आज जब परमशक्ति ऐलान कर रही है कि श्री मदन मेरा साकार रूप हैं। उनके दर्शन परमशक्ति के दर्शन हैं। इन दर्शनों का महत्व यह होता है कि व्यक्ति परमशक्ति की तरफ बढ़ता है और उसका प्यार लगन और श्रद्धा बढ़ती है। जब इन्सान श्री मदन जी को ईश्वरीय रूप में देखने लगता है, वह इर्ष्या-द्वेष, हेरा-फेरी, नफरत, बेईमानी, झूठ आदि से पीछे हट जाता है। नेक इन्सान बनता है, परमशक्ति के बताए नियमों पर चलने के कोशिश करता है, कभी भी परमशक्ति से नाराज़ नहीं होता। नेक कर्म, सद्व्यवहार और सभी से प्यार करता है तब परम शक्ति की इच्छा उस पर हो जाती है और तब उनकी ही कृपा से वह साकार रूप के चलते, फिरते, उठते, बैठते ईश्वरीय दर्शन भी कर पाता है। फिर प्रश्न पैदा होता है कि यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के दुःख-कष्ट दूर क्यों नहीं होते ? जब कि हर कोई परम शक्ति के इन्सानी रूप के दर्शन कर रहा है। क्या केवल साकार रूप के दर्शनों के साथ ही पाप कट जाते हैं ? यह प्रश्न हर किसी के मन में उठता है। इस प्रश्न को गहराई से समझने की ज़रूरत है। अगर साकार रूप के दर्शन के बावजूद भी कष्ट-परेशानियां दूर नहीं होतीं तो इसके कुछ मुख्य कारण हैं जो नीचे लिखे हैं :

9. जब परमशक्ति निराकार होती है तो इन्सान उसकी भक्ति करता है फिर उसके योग्य बनता है तब परमशक्ति उसको दर्शन देती है। परम शक्ति इन्सानी रूप में पहले उसे शरण में लेते हैं फिर अपनी कृपा से उसकी कमियां दूर करते हैं, अपना अस्तित्व दर्शाते हैं और अपनी पहचान करवाते हैं। जब इन्सान परमशक्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है, उसके पास रह कर उसके गुणों को महसूस करता है, तब उसके मन में साकार रूप के प्रति प्यार पैदा होता है। जैसे-जैसे इन्सान का प्यार बढ़ता है उसको अनुभव भी मिलते हैं तब साकार रूप अपने ईश्वरीय रूप के दर्शन भी उसको देते हैं जिस से उसका मन भी निर्मल होता है और उसके पाप भी कटते हैं।

10. परमशक्ति तो इन्सान पर हमेशा कृपा ही करते हैं। जब इन्सान परम शक्ति के साकार रूप के पास आता है तब वह शारीरिक सुख, मानसिक शांति, तंदरुस्ती और खुशहाली चाहता है पर यह कुदरत के नियम के विपरीत है, क्योंकि ईश्वर की प्राप्ति और दुनियावी सुख कभी एक साथ नहीं मिल सकते। यही कारण है कि जो श्रद्धालू ईश्वर के नज़दीक आते हैं पहले वे दुःख ही उठाते हैं। पर जब ईश्वर की किसी पर इच्छा हो जाती है तो वे उनकी कृपा से सच्चा सुख पाते हैं।

11. एक कारण यह भी है कि यहाँ आने वाले सारे व्यक्ति परम शक्ति के साकार रूप को ईश्वर मानते ही नहीं । कुछ इन्हें महान् आत्मा मानते हैं, कुछ लोग महा-पुरुष और कुछ लोग आज भी बाबा मानते हैं । बहुत कम हैं जो ईश्वर मानते हैं । साकार रूप को जो जिस रूप में मानता है उसे उसी रूप में फल मिलता है । इस कारण इन्सान ईश्वर के नज़दीक आ कर भी ईश्वरीय दर्शन नहीं पा सकता ।

12. आमतौर पर इन्सान किसी दुःख तकलीफ के लिए या कष्ट परेशानी के लिए परमशक्ति को दोषी मानता है भाव अपने दु;खों-कष्टों के लिए अपने कर्मों को दोषी नहीं मानता और ईश्वर के साथ छोटी-छोटी बात पर नाराज़ हो जाता है जिसके साथ वह अपने दुखों को और बढ़ा लेता है वह ईश्वर की कृपा का पात्र बनने की बजाय ईश्वर की नाराज़गी ही पाता है । इस तरह के व्यक्ति के पाप साकार रूप के दर्शन मात्र से कैसे कट सकते हैं ? कहने का अर्थ यह है कि जो ईश्वर की रज़ा में राज़ी रहता है वही ईश्वर की कृपा का पात्र बनता है उसके पाप साकार रूप के दर्शन से कटते हैं ।

13. श्री मदन धाम के श्रद्धालुओं के दुःखों का एक कारण यह भी है कि श्री मदन धाम अध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है । जिस तरह से विधार्थी को शिक्षा देने के बाद उसके परीक्षा ली जाती है । उसी तरह से परमशक्ति आने वाले श्रद्धालुओं को ज्ञान देने के बाद परीक्षा लेते हैं । जिसके कारण भी श्रद्धालुओं को दुःखों-कष्टों का सामना करना पड़ता है । पर जब वह श्री मदन जी की परीक्षा में सफल होतें है तब वह परमशक्ति की कृपा के पात्र बनते हैं और तब परमशक्ति उनके दुःख-दर्द दूर करते हैं ।

14. परमशक्ति ने इन्सानी रूप में जिन श्रद्धालुओं को अपनी शरण में लिया है उन्हें अपने श्री मुख से ज्ञान दिया है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य इस जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति पाना है । इन्सान जब परमशक्ति की शरण में आता है तब तक कई दुष्कर्म या पाप कर चुका होता है इसी तरह उसने पिछले जन्म में भी कई पाप और दुष्कर्म किए होते हैं । जब व्यक्ति परमशक्ति की शरण में आता है तब परम शक्ति उसके यह दुष्कर्म छोटे-मोटे कष्ट दे कर काट देते हैं तथा उसे और दुष्कर्म करने से बचाते हैं जिस के कारण भी इन्सान दुःख-कष्ट भोगता है । जब उसके सारे दुष्कर्म कट जाते हैं तब परमशक्ति उसको मोक्ष भी दे देते हैं ।

10

आज्ञा और आदेश

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। परमशक्ति साकार रूप में इन्सान को क्रियात्मक रूप में अध्यात्मवाद का ज्ञान दे रही है और जीवन जी कर भी दिखा रही है कि इन्सान को जीवन कैसे बिताना चाहिए। उसके जीवन की क्या प्राथमिकताएँ होनी चाहिए और वह किस प्रकार अपने रिश्तों को निभाता हुआ जीवन को सफल व सार्थक बना सकता है। अध्यात्मवाद का सम्बन्ध केवल ईश्वर के नियमों, गुणों व शक्तियों के ज्ञान तक ही सीमित नहीं है। उसका सम्बन्ध तो इन्सान के जीवन के हर पहलू से है अर्थात् इन्सान को जीवन किस ढंग से जीना चाहिए। परमशक्ति ने साकार रूप में अपने श्रीमुख से स्पष्ट किया है कि कर्मफल तो हर इन्सान ने भोगना ही है पर जब इन्सान ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है, सत्संग में जाता है, महान् आत्माओं से ईश्वर के बारे में ज्ञान सुनता है तब उसे ईश्वर से प्यार होना शुरु हो जाता है। फिर वह ईश्वर को पाना चाहता है परन्तु उसके विकार उसे उलझा देते हैं, उसे समझ नहीं आने देते कि ईश्वर का प्यार वह कैसे प्राप्त करे। वह ऐसा कौन सा कार्य करे जिससे वह ईश्वर का प्यार पा सके। परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्रीमुख से उदाहरण सहित स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार माता-पिता के दो बच्चे हैं, दोनों ही उनके लिए समान हैं। एक बच्चा उन्हें प्रथम स्थान देता है अर्थात् कोई भी कार्य करने से पूर्व उनकी आज्ञा लेता है व उनका आशीर्वाद प्राप्त करता है। जब माता-पिता उसे कोई काम कहते हैं तो वह उसे बिना किसी किन्तु-परन्तु किए पूरा करता है। दूसरा बच्चा न तो उनका मान-सम्मान करता है, न उनसे पूछ कर कोई कार्य करता है और न ही उनके विचारों को सम्मान देता है, केवल अपनी मनमानी करता है। माता-पिता उससे कैसे प्रसन्न हो सकते हैं। वह भले ही वह उनकी सम्पत्ति का भागीदार बन जाए लेकिन उनके प्यार का पात्र नहीं बन सकता। उसी प्रकार ईश्वर से इन्सान का नाता पिता और सन्तान के नाते जैसा है। हर इन्सान ने पिछले जन्म में जो अर्जित किया है उसका फल तो पाना ही है चाहे वह ईश्वर के अस्तित्व को माने या न माने। परन्तु ईश्वर का प्यार वही पा सकता है जो ईश्वर को अपने जीवन में प्रथम स्थान देता है। हर महत्वपूर्ण कार्य करने से पहले आज्ञा लेता है, आशीर्वाद लेता है तथा जब वह कार्य हो जाता है तो उनका शुक्रगुज़ार होता है, यदि वह ऐसा न करे तो वह परमशक्ति की दृष्टि में दोषी होता है। जब ईश्वर उसे कोई आदेश देते हैं तो वह अपनी सोच से ऊपर उठ कर उसका पालन करता है। ईश्वर उसी व्यक्ति को आदेश देते है जिस पर उन्हें विश्वास

होता है कि वह उनके आदेश की अवहेलना नहीं करेगा। ऐसा व्यक्ति ही ईश्वर के प्यार का पात्र बनता है।

आज जब परमशक्ति साकार रूप में है, इन्सान अपने दु:खों, कष्टों, परेशानियों के लिए साकार रूप के आगे प्रार्थना करता है तो उसे कई बार आज्ञा लेनी पड़ती है कई बार आदेश लेना पड़ता है, दोनों ही ईश्वर अपने श्रीमुख से देते हैं। दोनों का पालन करना इन्सान के लिए आवश्यक है। आम इन्सान इन्हें एक ही समझता है पर इनमें गहरा भेद है। इस भेद को समझना अति आवश्यक है। इस भेद को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित संक्षिप्त विवरण दिया गया है :

आज्ञा :-

इन्सान के जीवन में ऐसे कई अवसर आते हैं जब वह किसी कार्य को करना चाहता है। इसके लिए वह ईश्वर से आज्ञा लेता है अर्थात् प्रार्थना करता है कि ईश्वर उसको उस काम में सफ़लता के लिए आशीर्वाद दें। जब इन्सान मन में भावना, इच्छा या आशा ले कर ईश्वर के आगे प्रार्थना करता है तो वह चाहता है कि ईश्वर उसे उस काम के लिए आज्ञा दे दें जिससे उसे सफ़लता मिले और उसका जीवन सुखमय हो। कई बार जब ईश्वर उसे आज्ञा नहीं देते तो इन्सान उनसे नाराज़ भी हो जाता है अर्थात् आज्ञा में इन्सान की पूरी इच्छा होती है और इन्सान चाहता है कि उसे आज्ञा मिल जाए। यहाँ इन्सान ईश्वर की सोच से अधिक अपनी सोच को महत्व देता है जिस कारण ईश्वर उसकी भावना के अनुसार उसे आज्ञा दे भी देते हैं। कई बार उसे सफ़लता नहीं मिलती और यदि मिल भी जाती है तो वह काम उसके लिए समस्या बन जाती है। तब इन्सान ईश्वर को कोसता है कि मैंने तो ईश्वर से आज्ञा लेकर काम किया था फिर मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ है ? ईश्वर ने मेरे साथ अन्याय किया है या ईश्वर से आज्ञा लेने का क्या लाभ हुआ ? इन्सान स्वभाव से ही स्वार्थी है। यदि सफल हो जाता है तो स्वयं को महत्व देता है और यदि असफल होता है तो दोष ईश्वर को देता है या अपनी किस्मत को कोसता है। जब इन्सान साकार रूप के समक्ष अपने भावों को व्यक्त करता है और विनम्र प्रार्थना करता है कि मेरी तुच्छ सोच से ऊपर उठ कर मेरा मार्गदर्शन करें, तब ईश्वर जो उचित होता है उसकी ही आज्ञा देते हैं। फिर उस कार्य में सफ़लता भी मिलती है। यदि वे किसी काम से मना करते हैं तो वह भी इन्सान के लिए शुभ ही होता है क्योंकि ईश्वर तो त्रिकालदर्शी हैं। वे आने वाले समय के बारे में जानते हैं। ईश्वर इन्सान के लिए वही करते हैं जो उचित व शुभ होता है।

आदेश :-

जैसे भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का जोड़ा है। उसी प्रकार भौतिकवाद में भी मालिक-नौकर, माता-पिता व बच्चों का जोड़ा है। इसी प्रकार अध्यात्मवाद में गुरु-शिष्य का, भगवान-भक्त का जोड़ा है। मालिक नौकर को, माता-पिता बच्चों को, गुरु अपने शिष्यों को तथा भगवान अपने भक्तों को आदेश देते हैं। आदेश में प्रार्थी की अपनी इच्छा नहीं होती। जिस को आदेश मिलता है उसे बिना झिझक ज्यों का त्यों पूरा करना होता है। इसमें आदेश देने वाले की अपनी इच्छा होती है। यद्यपि ये सभी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं होते, इनके आदेश

स्वार्थ पर आधारित हो सकते है, परन्तु इनके आदेश का पालन इन्सान को करना ही चाहिए। ऐसा करने से मानसिक शांति व परस्पर प्यार बना रहता है।

परमशक्ति आज साकार रूप में विराजमान है। परमशक्ति ही यहाँ बात करती है। वह आदेश देते हैं। उनका कोई भी आदेश अर्थहीन नहीं होता। उसका कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। कई बार इन्सान को उनका आदेश अच्छा नहीं लगता। इन्सान उस आदेश का पालन करने में आनाकानी करता है। यदि व्यक्ति को लगता है कि बात उसके हित में है तो वह उसे मानता है, अन्यथा सुन कर भी अनसुना कर देता है, अपनी मनमानी करता है, फलस्वरूप जब कोई अप्रिय घटना होती है तो वह परमशक्ति को दोष देता है। इस तरह एक और गलती कर देता है, ऐसे व्यक्ति से परमशक्ति विमुख हो जाती है। आदेश के सम्बन्ध में कोई तर्क या शंका नहीं करनी चाहिए। उसका पालन आँखें बंद करके बिना किसी किन्तु-परन्तु के कर देना चाहिए। क्योंकि ईश्वर त्रिकालदर्शी हैं इसलिए उनका आदेश भी उनकी सोच के अनुरूप होता है। इन्सान को चाहे अच्छा लगे या बुरा जो आदेश हो जाए उस पर अमल करना जरूरी होता है, परमशक्ति यदि किसी को कोई आदेश देती है तो उसमें शंका नहीं रहती। जो कोई उसके आदेश की पालना करता है, सदा सुखी रहता है। जिसे परमशक्ति कोई आदेश दे, वह भाग्यशाली होता है लेकिन जो आदेश को टाल दे उस जैसा बदनसीब नही हो सकता है। क्योंकि ईश्वर जो भी करते हैं इन्सान के भले के लिए ही करते हैं।

स्वार्थ इन्सान की स्वभाविक विशेषता है। कोई भी काम करने से पहले वह अपने स्वार्थ को सामने रखता है। जब तक उसका स्वार्थ पूर्ण होता रहता है तब तक वह काम करता है। जब स्वार्थ पूरा नहीं होता तब उसकी उस कार्य में रुचि भी कम हो जाती है। उसी तरह इन्सान चाहे ईश्वर के किसी भी रूप को माने, उसमें उसका स्वार्थ ही छिपा होता है। जहां उसका स्वार्थ पूरा हो जाता है वहीं उसकी आस्था बन जाती है। इन्सान को उस रूप से प्यार भी होता है। उसको इस बात से कोई सरोकार नहीं होता कि उसकी मनोकामना किसने पूर्ण की है। जब उसकी मनोकामना पूर्ण नहीं होती, उसका प्यार व श्रद्धा कम हो जाती है। ऐसे लोग़ कम ही होते हैं जो अपने स्वार्थों से ऊपर उठ कर ईश्वर से प्यार करते हैं। जब कोई इन्सान ईश्वर से स्वार्थ रहित प्यार करता है तो ईश्वर उसे अपना अस्तित्व बताते हुए उसे दर्शन देते हैं, उसका मार्गदर्शन भी करते हैं और आदेश भी देते हैं। परमशक्ति के सच्चे भक्त की पहचान यही है कि वह उनके आदेश को खुशी-खुशी स्वीकार करे, उसकी पालना करे और लाभ-हानि, यश-अपयश का विचार न करे।

हर रूप में कर्ता परमशक्ति ही है, वही हर रूप में कार्य करती है। जिस समय किसी इन्सान को निराकार रूप में कोई आदेश होता है तो यदि सम्भव हो उसे साकार रूप से स्पष्टीकरण लेना चाहिए। यदि सम्भव न हो तो ईश्वर के आगे निम्नलिखित प्रार्थना करनी चाहिए :

" हे परमपिता, जो आदेश आपने दिया है मुझे नहीं पता कि वह मेरी भावना है या आपका आदेश है। मैं एक साधारण इन्सान हूँ, विकारों के अधीन हूँ, मुझ पर कृपा करते हुए मेरा मार्गदर्शन करें और मुझे शक्ति प्रदान करें ताकि मैं आपके द्वारा दिए गए आदेश का पूरी ईमानदारी से पालन कर सकूं। आप अपनी कृपा से ही इस कार्य को पूर्ण करवाएं।"

यदि इन्सान अपने आप को महत्व न दे कर ईश्वर को महत्व देता है तो ईश्वर भी उसको भटकने नहीं देते बल्कि सदमार्ग पर ही चलाते हैं। यदि इन्सान कोई भी कार्य करने से पूर्व अपने इष्ट के समक्ष प्रार्थना करता है, ईश्वर को अपने अंग-संग मान कर कार्य करता है तो ईश्वर उसकी सहायता भी करते हैं और उसे सफ़लता भी देते हैं। चाहे आज्ञा ली जाए या आदेश हो परन्तु उद्देश्य यही होना चाहिए कि परमशक्ति को महत्व दिया जाए। आज परमशक्ति इन्सानी रूप में है। इन्सानी रूप में हर चीज़ का प्रभाव पड़ता है। उनकी प्रसन्नता व नाराज़गी इन्सान के जीवन को प्रभावित करती है। जो इन्सान सदैव ईश्वर को याद रख कर उसे प्रथम स्थान देता है, दूसरों के साथ व्यवहार करने से पहले ईश्वर को तथा उसके नियम को याद करता है, उसकी शिक्षाओं को याद करता है तो ईश्वर उस पर प्रसन्न होते हैं। जिस पर ईश्वर प्रसन्न हो जाते हैं, उसके दुष्कर्म भी काट देते हैं चाहे उसके कर्म कैसे भी हों, क्योंकि ईश्वर का उद्देश्य केवल सज़ा देना ही नहीं, ईश्वर तो इन्सान को नेक ही बनाना चाहते हैं। ईश्वर इन्सान को प्यार करना सिखाना चाहते हैं। इन्सान जब एक नेक इन्सान बनने की कोशिश करता है तो ईश्वर उसे संसारी सुख भी देते हैं, मानसिक शांति भी देते हैं। परमशक्ति का आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र खोलने का उद्देश्य इन्सान को अपना अस्तित्व बताना एवम् उसे नेक इन्सान बनाना ही है। इस लिए इन्सान को उनके आगे प्रार्थना करनी चाहिए और अपनी सोच को महत्व न दे कर उनसे आज्ञा या आदेश लेकर ही कोई कार्य करना चाहिए। इस प्रकार इन्सान सफल और सार्थक जीवन बिता सकता है।

11
परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप में धरा पर ! कैसे ?

परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप लेकर धरा पर कैसे है ? इससे पहले यह जान लेना ज़रूरी है कि क्या परमशक्ति का अस्तित्व है ? यदि है तो वह क्या है ? नास्तिक लोग़ परमशक्ति या ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते। उनका मानना है कि ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं है। संसार में जो कुछ भी हो रहा है वह स्वचलित प्रक्रिया है। इस सम्बन्ध में इतना ही कहना है कि विज्ञान भी यह मानता है कि इन्सान, जो धरती का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, उसके धरा पर आने से पहले ही यह सूर्य, चाँद, सितारे, वायुमण्डल, ग्रह, जीव-निर्जीव इत्यादि बन चुके थे। स्पष्ट है कि इनको बनाने और नियमों में बांधने वाला इन्सान नहीं हो सकता, क्योंकि वह तो धरती पर पैदा ही बाद में हुआ। आखिर कोई न कोई तो इस सृष्टि की रचना करने वाला और नियमों में बांधने वाला है। उसे ही ईश्वर या परमशक्ति कहा गया है।

जिस तरह शरीर के अंदर एक शक्ति है जो शरीर का संचालन करती है परन्तु दिखाई नहीं देती लेकिन जिसके अस्तित्व से इन्कार भी नहीं किया जा सकता, ठीक उसी तरह इस सृष्टि का संचालन करने वाली भी एक शक्ति है। वह शक्ति अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। वह सृष्टि के कण-कण में होते हुए भी दिखाई नहीं देती। उस अदृश्य शक्ति को ही परमशक्ति, ईश्वर, अल्ला, वाहिगुरु, गॉड, राधास्वामी, निरंकार आदि नाम दिए गए हैं। उसी शक्ति को कुदरत, प्रकृति या नेचर कहा जाता है। ईश्वर के होने का यह एक स्पष्ट प्रमाण है।

परमशक्ति या ईश्वर क्या है ?

इस सृष्टि को रचने वाली एक शक्ति है जिसे परमशक्ति या ईश्वर कहा गया है। वह शक्ति न नर है न नारी है, वह तो एक शक्ति है, जो अनादि, अनन्त और इन्सान के लिए प्रायः अगम्य व अगोचर है, वही सर्वोच्च है। वह सर्वरूपिणी है अर्थात् हर रूप में वह स्वयं ही कार्य करती है। जीव-निर्जीव को बनाने वाली, नियमों में बांधने वाली एवं जीवों की पालनकर्ता और संहारकर्ता केवल वही शक्ति है। वही शक्ति सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है तथा वही कर्मफलदाता है। वह सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है। वह न्यायकारी होते हुए भी परम दयालु और कृपालु है। वह आनन्द की दाता, सुखों की भंडार, शरणागत् की रक्षक, पाप नाशिनी एवम् मुक्ति दाता है। वह इन्सान के अंदर भी है और सृष्टि के कण-कण में भी विद्यमान है। जब वह शक्ति अदृश्य से सदृश्य बनती है तो वह सर्वगुण सम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी, अजय और अपने आप में पूर्ण होती है, लेकिन उस समय वह गम्य और गोचर होती है क्योंकि उस समय इन्सान उस तक पहुँच सकता है और उसके दर्शन भी कर सकता है।

परमशक्ति या ईश्वर अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए कि इस सृष्टि को रचने वाला, पालन करने वाला और संहार करने वाला कोई है, तब वह महान्-आत्माओं के माध्यम से या फ़िर अपना कोई निर्जीव चिह्न या सजीव रूप निर्धारित करके उनके माध्यम से अपने नियमों, गुणों व शक्तियों का किसी सीमा तक प्रदर्शन करती है। वह शक्ति युगों-युगों के बाद अपनी इच्छा से स्वयं इन्सानी रूप में भी धरती पर आती है। उस समय ही वह क्रियात्मक रूप में सिद्ध करती है कि इन्सान का यश-अपयश, सुख-दुःख, खुशी-ग़मी, लाभ-हानि, सफलता-असफलता, जीवन-मृत्यु इत्यादि उसी के हाथ में हैं। उसी शक्ति की घोषणा है कि वह अदृश्य से सदृश्य बनी है। वह इन्सानी रूप लेकर धरती पर आई है। उसका अपना शरीर है जिसका नाम श्री मदन है। वह साकार रूप में माणकपुर दरबार में विद्यमान है।

परमशक्ति ने गत् 26 वर्षों में अपने धरा पर आने के अनेक प्रमाण क्रियात्मक रूप में दिए हैं। अनेक बातों को क्रियात्मक रूप में प्रमाणित भी किया है और अनेक बातों का खण्डन भी किया है। जैसे कहा भी गया है कि *हे ईश्वर ! तू बेअंत तेरी माया बेअंत, तेरा भेद किसी ने नहीं पाया।* अब देखना है कि आने वाले समय में ईश्वर क्या प्रमाणित करते हैं।

ईश्वर ने अपने धरा पर आने के पिछले 26 वर्षों से जो क्रियात्मक प्रमाण दिए हैं वे निम्नलिखित हैं :-

16. परम शक्ति के साकार रूप श्री मदन जी का कोई गुरु या आराध्य नहीं है। जब परमशक्ति धरा पर आती है तो उसका कोई गुरु या आराध्य नहीं होता क्योंकि वह तो स्वयं ही सबकी गुरु एवं आराध्य (इष्ट) है। इन्सान ने जो कुछ भी सीखा है परमशक्ति से ही सीखा है। इसलिए साकार रूप का न तो कोई गुरु है और न ही कोई इष्ट। यदि श्री मदन जी का कोई गुरु या आराध्य होता तो वे स्वयं भी उसकी पूजा करते और आने

वाले श्रद्धालुओं से भी उसकी पूजा करवाते परन्तु ऐसा नहीं है। इससे यह प्रमाणित होता है कि श्री मदन ही परमशक्ति हैं और परमशक्ति ही श्री मदन है।

17. श्री मदन जी किसी की पूजा नहीं करते अपितु वे स्वयं ही सभी के पूजनीय हैं। श्री मदन जी ने जब भी अध्यात्मवाद में जिनके नाम है उनके सबंध में जब भी किसी रूप के बारे में ज्ञान दिया तो सब से पहले स्वयं उसका पूजन किया पर हर बार पूजा करने के बाद कष्ट हुआ। इसके अतिरिक्त जब भी श्री मदन जी किसी अन्य धार्मिक स्थान पर गए तो वहाँ भी नतमस्तक नहीं हो सके। यदि उन्होंने ऐसा किया भी तो उन्हें कष्ट उठाना पड़ा। इस प्रकार क्रियात्मक रूप में स्पष्ट किया गया कि परमशक्ति जो सबकी पूजनीय है वह भले अदृश्य हो या साकार रूप में धरा पर हो, किसी के आगे नत् मस्तक नहीं होती अपितु उसके समक्ष सबको झुकना पड़ता है।

18. आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र स्वयं परमशक्ति ही साकार रूप में खोल सकती है। संसार में अनेकों ही आध्यात्मिक शिक्षा के केन्द्र हैं जहां परमशक्ति के बारे में अर्थात् रूहानी ज्ञान मौखिक रूप में दिया जाता है। आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र उसे कहते है जहां आध्यात्मिक ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जाए। श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है, यहाँ परमशक्ति श्री मदन जी हर भूमिका निभा कर क्रियात्मक रूप में ज्ञान दे रहे हैं। समाज में अध्यात्मवाद से सम्बंधित जो भी द्वन्द हैं उस पर से पर्दा उठा कर वास्तविकता को सामने लाया जा रहा है ताकि कोई शंका न रहे। यहाँ सच्चाई का पूर्ण ज्ञान अनोखे ढंग से दिया जा रहा है जो कि परमशक्ति का साकार रूप ही दे सकता है।

19. कार्य-प्रणाली शुरू होने के 10 वर्ष बाद परमशक्ति ने घोषणा की कि, *"मैं अदृश्य से सदृश्य बनी हूँ। यह मेरा शरीर है और मेरा नाम मदन है।"* इस घोषणा के बाद परमशक्ति श्री मदन जी ने प्रमाणों सहित अपने परिवार, माता, पत्नी, बेटी, बहन के नाम पर धामों की स्थापना की एवं श्री मदन धाम में प्रमाणों सहित अपने परिवार के सदस्यों के नाम पर पूजा स्थलों की स्थापना करके पूजनीय स्थानों को मान्यता दी क्योंकि परमशक्ति का परिवार साधारण नहीं हो सकता। इसके साथ ही परिसर में साधारण व्यक्तियों को देवी-देवताओं, वीरों-पीरों के रूप में स्थान देकर मान्यता दी और क्रियात्मक रूप में सिद्ध करके बताया कि हर रूप में परमशक्ति ही कर्ता है। वह वीरों-पीरों. देवी-देवताओं, भगवानों का चुनाव इन्सानों में से ही करती है, उनका मान-सम्मान भी करवाती है। केन्द्रों की स्थापना करके श्री मदन जी ने केन्द्र-संचालकों के माध्यम से श्रद्धालुओं के साथ बातचीत करके तथा आने वाले व्यक्तियों की मनोकामनाएं पूर्ण करके सिद्ध किया कि परमशक्ति ही श्रद्धालुओं को उन केन्द्रों पर भेजती है और उनकी मनोकामनाएं भी स्वयं ही पूर्ण करती है। उनके रूपों में

श्रद्धालुओं को दर्शन देती है। वास्तव में वह ही कर्ता है। इस बात से यह सिद्ध होता है कि परमशक्ति ही श्री मदन है और श्री मदन ही परमशक्ति है।

20. परमशक्ति की घोषणा है, "मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ जो अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जन्म लेकर इन्सानी रूप में धरा पर आई हूँ। यह शरीर मेरा है और मेरा नाम मदन है।" इस घोषणा को क्रियात्मक रूप में दर्शाने के लिए कार्य-प्रणाली शुरू की गई है। इस कार्य-प्रणाली में कुल देवता से लेकर परमशक्ति तक का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया गया एवम् दिया जा रहा है। परमशक्ति ही धरा पर है, इसे क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने के लिए श्री ज्योति जी को कष्ट देकर प्रमाणों सहित दरबार की दूसरी मंज़िल पर प्रथम पूजनीय श्री ज्योति शक्ति स्थल की स्थापना की गई। उसके पश्चात् दरबार की तीसरी मंज़िल पर माता रूपवती जी को असहनीय कष्ट देने के पश्चात् आदि शक्ति स्वरूपा माता रूपवती स्थल की स्थापना की गई। फिर श्री मदन जी को असहनीय कष्ट देने के पश्चात् दरबार की चौथी मंज़िल पर श्री मदन स्थल की स्थापना की गई और सिद्ध किया कि जब परमशक्ति साकार होती है तो वही शिव या ब्रह्म कहलाती है जो आज श्री मदन बनी है। उस से ऊपर अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर, सर्वोच्च शक्ति स्थल स्थापित किया गया, पर उसकी स्थापना के बाद ही श्री मदन जी को नब्ज़ रुकने का असहनीय कष्ट शरू हो गया। इस स्थल पर 127 मोड़ आए, परमशक्ति के जो भी निर्जीव चिह्न समाज में प्रचलित हैं एक-एक करके उन सब को स्थपित करने का प्रयास किया गया पर सफ़लता नहीं मिली। हर बार श्री मदन जी को नब्ज़ रुकने का कष्ट बढ़ता ही गया। जब श्री मदन जी को परमशक्ति के स्थान पर विराजमान करके 50 दिन पूजन किया उस दौरान उन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ। अन्ततः परम शक्ति ने आदेश किया कि इस स्थल को गिरा दिया जाए क्योंकि जब परम शक्ति ही साकार बनी है तो फिर निराकार में कौन है। इस तरह क्रियात्मक रूप में सिद्ध किया गया कि परम शक्ति ही श्री मदन बनी है और श्री मदन ही परम शक्ति है।

21. श्री मदन जी किसी भी कार्य को करने के लिए शरीर का प्रयोग नहीं करते। उनके केवल संकल्प मात्र से ही सारे कार्य पूरे हो जाते हैं। वह किसी को कुछ देने के लिए अपने मन में संकल्प ही करते हैं और किसी को गलत काम करने से रोकने के लिए भी संकल्प ही करते हैं। उन्हें शरीर का प्रयोग करने की जरूरत नहीं पड़ती। ऐसा केवल वही कर सकता है जो सर्वशक्तिमान तथा सर्वसमर्थ हो और वह केवल परमशक्ति है जो आज श्री मदन जी के रूप में साकार हुई है।

22. श्री मदन जी यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को इस बात पर बल देते हैं कि उन्हें पूजा-पाठ, जप-तप, हवन-यज्ञ, सुमिरन, चिंतन, मनन की जरूरत नहीं। उन्हें केवल ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए नेक कर्म, सद्व्यवहार, सबसे प्यार करना, ईश्वर की

कार्यप्रणाली में सहयोग देना तथा उनके दिखाए मार्ग पर चलना ही काफ़ी है। ऐसा या तो नास्तिक व्यक्ति कह सकता है या वह कह सकता है जो स्वयं परमशक्ति का साकार रूप हो।

23. श्री मदन जी हर आने वाले श्रद्धालु को सच्चाई के मार्ग पर बलपूर्वक चलाते हैं और गलती होने पर कष्ट देकर या दृष्टांत देकर उसका अनुभव करवाते हैं। गलती मान लेने पर जब उसे क्षमा कर दिया जाता है तो उसे राहत मिलती है। इससे यह प्रमाणित होता है कि कोई है जो हर पल उसके साथ है, उसे देख रहा है, जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। वह कर्मफल दाता है। उसका उद्देश्य व्यक्ति को केवल कष्ट देना ही नहीं बल्कि उसे एक नेक इन्सान बनाना है। ऐसा अनुभव किसी एक या दो व्यक्तियों को नहीं अपितु श्री मदन धाम में आने वाले हर श्रद्दालु को कभी न कभी जरूर मिला है। यह कोई मनोस्थिति नहीं है, अपितु सच्चाई है। शायद ही कोई ऐसा बदनसीब होगा जिसे ऐसा अनुभव न मिला हो। जिस किसी को भी ऐसा अनुभव मिला है वह सहज ही समझ जाता है कि श्री मदन जी परमशक्ति हैं और परमशक्ति ही श्री मदन है।

24. परमशक्ति का सिद्धांत है कि हर किसी से प्यार करो तथा किसी को भी अपना दुश्मन न समझो। यदि कोई आपको अपना दुश्मन भी समझता है तो भी उससे प्यार ही करो। अपने द्वारा दिए गए ज्ञान को सबसे पहले उन्होंने अपने ऊपर व अपने परिवार पर लागू किया और फिर श्रद्धालुओं को ऐसा करने के लिए कहा। हर नियम, हर सिद्धांत को केवल मौखिक रूप में नहीं अपितु अपने जीवन पर लागू करके दिखाया। उसी प्रकार श्री मदन जी ने अपने पास आने वाले हर श्रद्धालु या विरोधी को केवल प्यार ही किया है। जो लोग़ उन्हें अपना दुश्मन भी मानते हैं श्री मदन जी ने उन्हें भी प्यार करके दिखाया है। उन्होंने मानवता को आडम्बरों से रहित सम्पूर्ण जीवन शैली दी जो कि एक आम इन्सान के लिए आदर्श जीवन है। ऐसा केवल परमशक्ति का साकार रूप ही कर सकता है।

25. श्री मदन जी आने वाले किसी भी श्रद्धालु की मांग या इच्छा किसी भी शर्त पर पूरी नहीं करते अपितु यहाँ श्रद्धालु का प्यार व विश्वास ही काम करता है। उन्होंने श्रद्धालुओं की वही मांग पूर्ण की है जो शुभ और उचित हो, कानून के अन्तर्गत तथा नैतिकता पर आधारित हो। श्री मदन जी केवल उसको ही अपना अनुभव देते हैं जो परमशक्ति का अस्तित्व मानते हैं या जिनके पूर्व जन्म के संस्कार या भक्ति है। यह बात परमशक्ति के साकार रूप की ओर ही इशारा करती है।

26. इस दरबार में परमशक्ति का कोई भी निर्जीव चिह्न या मूर्ति स्थापित नहीं हो सकी क्योंकि जब परमशक्ति धरती पर आती है तो केवल उसका ही स्थान सर्वोच्च होता

है और वह ही सबकी पूजनीय होती है। इसे क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने के लिए चौथे स्थल पर सब से पहले ब्रह्म रूप का चित्र लगाकर एक महीना पूजन किया गया। इस दौरान श्री मदन जी की नब्ज़ रुक-रुक कर चलती रही और वे कई-कई घंटे बेहोश रहे, फिर ब्रह्म के साथ शिव का चित्र लगा कर एक महीना पूजन किया गया। ऐसा करने से कष्ट और बढ़ गया और बेहोशी का समय भी बढ़ गया। जब बार-बार प्रार्थना की गई तो परमशक्ति का आदेश हुआ कि दोनों स्वरूपों के मध्य में श्री मदन जी का स्वरूप लगा कर श्री मदन जी को साक्षात् रूप में विराजमान कर के पूजन किया जाए। जब ऐसा किया गया तो श्री मदन जी को कोई कष्ट न हुआ और न ही वे बेहोश हुए। पर एक महीने के बाद फिर उन्हें उसी प्रकार का कष्ट हो गया। पुनः जब प्रार्थना की गई कि इसके पीछे क्या कारण है तो परमशक्ति ने आदेश दिया कि शिव और ब्रह्म के स्वरूप वहाँ से उठा दिए जाएँ लेकिन डर के मारे ऐसा नहीं किया गया। उस रात श्री मदन जी को बेहोशी भी हुई व असहनीय एवम् रौंगटे खड़े कर देने वाला कष्ट हुआ। आखिर रात के बारह बजे चित्र उठाने पड़े। इसके बाद ही उन्हें राहत मिली। इससे क्रियात्मक रूप में सिद्ध हुआ कि परमशक्ति जब अदृश्य होती है तो वह न नर होती है न नारी होती है, वह केवल शक्ति होती है। जब वह सदृश्य बनती है तो वह ब्रह्म कहलाती है, ब्रह्म को ही शिव कहा गया है। आज वही शक्ति श्री मदन बनी है। इसी लिए श्री मदन धाम में श्री मदन स्थल ही सर्वोच्च स्थान है। उससे ऊपर पारब्रह्म स्थल स्थापित करने की बहुत कोशिश की गई पर ऐसा नहीं हो सका। इससे यही सिद्ध होता है कि परमशक्ति ही श्री मदन है और श्री मदन ही परमशक्ति हैं।

27. श्री मदन जी को याद करने पर, परमशक्ति का रूप मान कर उनके आगे सच्चे मन से माथा टेकने पर आने वाले श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, उनके दुःख-कष्ट, परेशानियां दूर होते हैं और उनसे से राहत मिलती है। बहुत से लोगों को श्री मदन जी अपना अनुभव करवा कर उनके साथ सम्पर्क स्थापित करके आवाज़ भी देते हैं। उनको श्री मदन जी के दर्शन भी होते हैं। कुछ लोगों के माध्यम से ज्ञान भी दिया जाता है एवं दूसरे लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण की जाती हैं। यह कार्य केवल परमशक्ति का ही हो सकता है जो आज साकार रूप में है।

28. ऐसे रूप जिनकी आज समाज में मान्यता हो रही है उनकी भूमिका निभा कर उनके बारे में क्रियात्मक ज्ञान दिया जा रहा है कि वास्तव में सच्चाई क्या है। श्री मदन जी ने 38 प्रकार के देवी-देवताओं, वीरों-पीरों, भगवानों तथा समाज में पूजनीय अन्य रूपों की भूमिका निभा कर पहले तो उनका अस्तित्व सिद्ध किया, फिर परमशक्ति रूप में सिद्ध किया कि कोई भी अपने आप में कुछ नहीं है। केवल परमशक्ति ही हर रूप में कर्ता है जो न नर है न नारी है, वह तो एक शक्ति है। श्री मदन जी ने यह सारा

ज्ञान क्रियात्मक रूप में सिद्ध कर के दिखाया है और सच्चाई पर से पर्दा उठाया है। ऐसा केवल परमशक्ति का साकार रूप ही कर सकता है।

29. 17 जुलाई, 1985 को परमशक्ति श्री मदन जी ने स्वयं को कुल देवता के रूप में प्रकट किया। 21 दिसम्बर, 1992 को कहा गया कि आज से श्री मदन जी त्रिलोकी नाथ हैं। 4 फरवरी, 2001 को कहा गया कि आज परमशक्ति अपनी सारी शक्तियाँ श्री मदन जी को दे रही है। ये दिन कई वर्षों तक मनाए गए पर बाद में प्रमाणों सहित बंद कर दिए गए एवम् कहा गया कि न तो परमशक्ति 17 जुलाई को धरा पर आई, न ही 21 दिसम्बर को श्री मदन जी त्रिलोकी नाथ बने और न ही 4 फरवरी को परमशक्ति ने अपनी शक्तियाँ श्री मदन जी को दीं। परमशक्ति तो 22 अक्तूबर, 1947 को जन्म ले कर धरा पर आई है। आध्यात्मिक शिक्षा का क्रियात्मक ज्ञान देने के लिए पहले उपरोक्त दिन प्रमाणों सहित मनाए गए और परमशक्ति 22 अक्तूबर, 1947 से ही धरती पर है, इसे क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने के लिए प्रमाणों सहित 17 जुलाई, 21 दिसम्बर, 4 फरवरी के दिनों को मनाना बंद कर दिया गया।

30. परमशक्ति ने धरती पर जन्म लेने के लिए माता–पिता को साधन के रूप में प्रयोग किया। इस लिए श्री मदन जी उनका आदर सम्मान करते हैं। दूसरी तरफ श्री मदन जी उनको आशीर्वाद भी देते हैं क्योंकि वह परमशक्तिके भक्त थे, उनकी कई जन्मों की भक्ति के फलस्वरूप उनको साधन के रूप में प्रयोग किया और उनके घर में जन्म लिया। इससे यह सिद्ध होता है कि परमशक्ति ही धरा पर है क्योंकि कोई भी शरीरधारी अपने माता-पिता को आशीर्वाद नहीं दे सकता।

ऊपर दिए सभी प्रमाण होने के बावजूद भी कुछ बातें शंका पैदा करती हैं कि श्री मदन जी सर्वशक्तिमान हैं :

- यदि श्री मदन जी सर्वशक्तिमान है तो वह लाचार बेबस क्यों हैं ?
- यदि श्री मदन जी परमशक्ति का इन्सानी रूप हैं तो उनके परिवार को शारीरिक कष्ट और मानसिक परेशानियाँ क्यों हैं ?
- यदि श्री मदन जी सर्वज्ञ हैं तो अंजान होने का नाटक क्यों करते हैं ?
- यदि श्री मदन जी सर्वशक्तिमान हैं तो यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को कष्ट परेशानियाँ क्यों हैं और उनसे कही हर बात सत्य क्यों नहीं होती ?
- श्री मदन धाम में कोई स्थल बना कर गिराया क्यों जाता है और किसी स्थल पर निर्जीव चिह्न स्थापित करके उठाए क्यों जाते हैं ?

- यदि श्री मदन जी परमशक्ति का इन्सानी रूप हैं तो उन पर आयु का प्रभाव क्यों है ?
- यदि श्री मदन जी परमशक्ति हैं तो वह एक साधारण इन्सान जैसे क्यों लगते है ?
- क्या परमशक्ति इतने कम लोगों के लिए ही धरा पर आई है ?
- यदि श्री मदन जी परमशक्ति है तो दरबार का सद्गाम क्यों नहीं हो रहा ?
- जो लोग साकार रूप, परिवार एवम् दरबार का विरोध कर रहे है उन्हें उनके दुष्कर्मों का फल क्यों नहीं मिल रहा है ?

उपरोक्त शंकाएँ केवल उन व्यक्तियों के मन में पैदा होती हैं जिनको कार्य-प्रणाली का केवल बाहरी ज्ञान होता है। यदि कार्य-प्रणाली का गहरा अध्ययन किया जाए तो इन शंकाओं के निम्नलिखित कारण उभर कर सामने आते हैं जिनको समझने से प्रत्येक शंका का समाधान हो जाता है :-

1. अध्यात्मवाद के बारे में क्रियात्मक रूप में ज्ञान देना :-

अध्यात्मवाद का क्रियात्मक रूप में ज्ञान देने का अर्थ है आत्मा, महान् आत्मा, परम आत्मा तथा उस अदृश्य शक्ति के बारे में ज्ञान करवाना जो दिखाई तो नहीं देती पर अपने अस्तित्व का अनुभव करवाती है। उस शक्ति के बारे में ज्ञान तो सदियों से दिया जा रहा है पर श्री मदन धाम में उसके बारे में क्रियात्मक रूप में ज्ञान देने के लिए एवं अध्यात्मवाद में जो भी द्वन्द हैं उन पर से पर्दा उठाने के लिए कई ढंग अपनाए जाते हैं। उनमें से एक ढंग अपने-आप को या उस व्यक्ति को, जिससे कोई बात सम्बंधित हो, कष्ट देकर दर्शाना है। फिर कारण बताकर राहत देनी व सच्चाई बतानी कि वास्तविकता क्या है ? क्रियात्मक रूप में ज्ञान देने के लिए कई बार कई कुछ बनाया जाता है तथा कई कुछ मिटाया भी जाता है। यह सब दर्शाने के लिए कई बार श्री मदन जी स्वयं भी कष्ट लेते हैं। जिस कारण यह लगता है कि श्री मदन जी और उनका परिवार कष्टों में है। वह बेबस तथा लाचार हैं, जबकि सच्चाई का ज्ञान देने के लिए ही यह सब कुछ किया जाता है।

4. निश्चित व्यक्तियों को ही ज्ञान देकर शरण में लेना :-

श्री मदन धाम में ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जाता है जैसे कि विज्ञान के विद्यार्थियों को क्रियात्मक रूप में ज्ञान दिया जाता है। इसलिए उनकी गिनती निश्चित व कम रखी जाती है क्योंकि उन्हें हर चीज़ क्रियात्मक रूप में कर के बताई जाती है। फिर उन्हें वह सब कुछ स्वयं करने के लिए कहा जाता है। इसी तरह गत् 26 वर्षों से उतने ही लोग़ बुलाए गए जितने लोगों का निजी सम्पर्क श्री मदन जी से हो सके क्योंकि आध्यात्मिक शिक्षा का ज्ञान देने के लिए श्रद्धालुओं की संख्या का निश्चित होना आवश्यक था। श्री मदन धाम में बहुत लोग़ आए पर उन्हें कुछ भी समझ नहीं आने दिया गया क्योंकि परमशक्ति की घोषणा है कि वह

अदृश्य से सदृश्य हुई है। इसी घोषणा को सिद्ध करने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा के प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई है। अध्यात्मवाद के हर पक्ष को सिद्ध करके बताया गया है कि वास्तविकता क्या है। केवल उस व्यक्ति को ही अनुभव या प्रमाण दिए गए जिसके पूर्व जन्म के संस्कार थे या जिन पर श्री मदन जी की इच्छा हो गई। श्रद्धालुओं की संख्या को सीमित रखने के लिए श्री मदन जी को लाचारी व बेबसी का प्रदर्शन करना पड़ता है। यदि श्री मदन जी ऐसा न करें तो यहाँ श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ सकती है। यदि श्री मदन जी का सम्पर्क श्रद्धालुओं से नहीं रहेगा तो क्रियात्मक रूप में ज्ञान कैसे दिया जा सकता है। अभी तक जो व्यवस्था श्री मदन जी ने की है उसके लिए श्रद्धालुओं की संख्या सीमित रखना आवश्यक है क्योंकि श्रद्धालुओं को कष्ट होने स्वाभाविक हैं। उनका कारण जानना भी जरूरी है। यदि वे श्री मदन जी से मिलेंगे, कारण पूछेंगे तब ही समाधान होगा। अभी तक कष्ट देकर, कष्ट का कारण बता कर ही क्रियात्मक ज्ञान दिया गया है।

5. केवल स्वार्थी लोगों को ही अपने पास इकट्ठे न करना :-

श्री मदन धाम की स्थापना एक उद्देश्य को लेकर हुई है और उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन लोगों को ही ईश्वर ने अपने पास बुलाया है जो उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए योगदान दे सकें। इसलिए श्री मदन जी ने उन लोगों को ही अपनी शरण में लिया है जिनके पूर्व जन्म के संस्कार हैं और जो अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठ कर श्री मदन जी से प्यार करें। श्री मदन धाम में आध्यात्मिक ज्ञान देने के साथ-साथ भौतिक इच्छाएँ भी पूर्ण की जाती हैं। जो व्यक्ति ईश्वर के पास केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही आते हैं, ईश्वर उनकी इच्छा तो पूर्ण कर देते हैं, परन्तु उन्हें अपने से दूर कर देते हैं और वे व्यक्ति दोबारा आते भी नहीं। जिनको ईश्वर ने अपने पास रखना होता है, उनकी इच्छाएँ तो पूर्ण करते हैं पर साथ ही साथ उन्हें अपना अनुभव देकर अपनी पहचान भी करवाते हैं। आज तक जो भी अनुभव प्राप्त हुए हैं उनके आधार पर यही कहा जा सकता है कि जब भी किसी स्थान से बहुत ज्यादा स्वार्थी व्यक्तियों की भीड़ आनी शुरू हो जाती है तो वहाँ कोई न कोई ऐसी अप्रिय घटना घटित हो जाती है जिससे आम लोगों में कई तरह की शंकाएँ पैदा हो जाती हैं और उनमें से बहुत से लोग़ आना छोड़ देते हैं तथा उनमें से केवल दो-चार व्यक्ति ही टिक पाते हैं।

4. भक्तों के विश्वास की परख करना :-

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। जिस प्रकार विद्यार्थी को शिक्षा देने के बाद उस की परीक्षा ली जाती है, उसी प्रकार श्री मदन जी आने वाले श्रद्धालुओं को ज्ञान देने के बाद कई बार उनकी परख भी करते हैं। इस परख के लिए उनकी सोच के विपरीत वातावरण बनाए जाते हैं, उन्हें उलझाया भी जाता है, भटकाया भी जाता है। जब किसी की इस प्रकार परख होती है, वह इन्सान स्वयं को इस वातावरण में असुरक्षित महसूस करता है तो उसके मन में कई तरह की शंकाएँ उत्पन्न होती हैं। इस तरह श्री मदन जी अपने भक्त की परीक्षा लेते हैं। यह ज्ञान देने का उनका अनोखा ढंग है। इसलिए कई बार श्री

मदन जी सब कुछ जानते हुए भी अनजान बन जाते हैं व सर्वसमर्थ होते हुए भी लाचारी, बेबसी का प्रदर्शन करते हैं।

5. इन्सानी रूप में होने के कारण दो रूपों (साधारण व विशेष) का प्रदर्शन करना :-

परमशक्ति आज इन्सानी रूप में धरती पर है, इसलिए उसका परिवार भी है तथा और भी ऐसे व्यक्ति हैं जिनके साथ उन्हें रहना होता है । उनके साथ सदा ईश्वर बन कर नहीं रहा जा सकता क्योंकि उनके साथ साधारण बातें भी करनी होती हैं, रिश्ते भी निभाने होते हैं, सांसारिक कर्तव्य भी पूरे करने होते हैं। परमशक्ति आज इन्सानी रूप में है। वह इन्सान को जीवन जीना सिखा रही है। इसीलिए श्री मदन जी ने दो रूप अपना रखे हैं – एक साधारण और दूसरा विशेष। जब श्री मदन जी ने कोई आदेश नहीं देना होता या कोई विशेष बात नहीं करनी होती तब वे साधारण रूप में ही बात करते हैं परन्तु जब कोई आदेश देना होता है या कोई विशेष बात करनी होती है तो वे विशेष रूप में करते हैं क्योंकि वे अपनी पहचान उसको ही करवाते हैं जिसे करवाना चाहते हैं। श्री मदन जी ने अपने समीप आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बहुत सीमित रखी है क्योंकि अध्यात्मवाद को क्रियात्मक रूप में सिद्ध करने के लिए श्रद्धालुओं की संख्या सीमित रख कर ही सच्चाई का ज्ञान दिया जा सकता है। इसके लिए उन व्यक्तियों को साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है जिस कारण उनका निजी सम्पर्क श्री मदन जी के साथ होना आवश्यक हो जाता है। यह भी एक कारण है कि श्री मदन जी को लाचारी, बेबसी व मजबूरी दर्शानी पड़ती है।

6. इन्सानी रूप में निश्चित समय तक रहना :-

जिस प्रकार कोई इन्सान किसी नए कार्य का आरम्भ करने से पहले उसकी योजना बनाता है कि कब क्या करना है। उस कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक प्रबन्ध करता है फिर उस कार्य को शुरू करता है। उसी प्रकार परमशक्ति श्री मदन जी ने यह कार्य प्रणाली शुरू की है तो उन्होंने सब कुछ पहले से ही निश्चित किया हुआ है। हर चीज़ को नियमों में बाँध कर स्वयं को समय के बन्धन में बांधा हुआ है। जब तक उन्होंने साधारण इन्सानी रूप में रहना है तब तक उन्होंने स्वयं को लाचार और बेबस दर्शाना है।

15. इन्सानी रूप में होने के कारण उन पर देश, कानून और समाज के नियम लागू होते हैं। इसलिए उनके अन्तर्गत अपनी कार्य-प्रणाली चलाना :-

जब कोई महान् -आत्मा, भगवान इन्सान बन कर धरा पर आते हैं तो उन्हें किसी देश का नागरिक बनना पड़ता है। वहाँ उन पर उस देश के कानून लागू होते हैं परमशक्ति भी जब शरीर धारण करती है तो उन्हें भी देश और कानून के नियमों में रह कर अपना जीवन बिताना पड़ता है। परमशक्ति श्री मदन जी ने भी अपनी कार्य-प्रणाली प्राकृतिक नियमों और देश के कानून के अन्तर्गत ही चलाई है। इसीलिए श्री मदन जी श्रद्धालुओं की वही इच्छा पूर्ण करते हैं जो देश व कानून के अन्तर्गत हो और नैतिकता पर आधारित हो।

16. परमशक्ति इस समय शारीरिक रूप में हैं, इसलिए शरीर पर आयु का प्रभाव पड़ता है :-

आम तौर पर परमशक्ति के बारे में धारणा है कि वह अजर, अमर, अविनाशी है। उन पर किसी चीज़ का प्रभाव नहीं पड़ता और वह जन्म लेकर धरती पर नहीं आती। इसीलिए उन्हें निराकार कहा जाता है। निराकार रूप में इनको कोई भौतिक आवश्यकताएँ नहीं होतीं। श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। श्री मदन जी इन बातों पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठा रहे हैं। परमशक्ति जब इन्सानी रूप में धरती पर आते हैं तो वह एक आम व्यक्ति की तरह जीवन जी कर बिताते हैं। उनकी भौतिक आवश्यकताएं भी होती हैं तथा वे इन्सानों की भांति निश्चित समय के लिए धरती पर आते हैं। अपने उद्देश्य को पूरा करने के उपरांत ओझल हो जाते हैं। इस प्रक्रिया में वह बचपन से लेकर बुढ़ापे तक की हर अवस्था को पार करते हुए इन्सान को रूहानी ज्ञान क्रियात्मक ढंग से देते हैं। उनके द्वारा किए गए प्रदर्शन प्राकृतिक होते हैं। इसलिए श्री मदन जी पर आयु का प्रभाव होना स्वभाविक है।

12
श्री मदन धाम व दूसरे धार्मिक स्थानों में अन्तर

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ पर परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप में आध्यात्मिक ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है। अब प्रश्न यह है कि श्री मदन धाम तथा संसार में जो दूसरे धार्मिक स्थान हैं उनमें क्या अन्तर है ? आप सभी जानते है कि संसार में अनेकों धार्मिक स्थान हैं पर उनमें भी अन्तर है। कुछ धार्मिक स्थान ऐसे हैं जो स्थानीय लोग़ों ने ईश्वर का गुणगान करने के लिए बनाए हैं। उन स्थानों पर स्थानीय लोग़ ही आते हैं, परन्तु वहाँ पर दूर-दूर से लोग़ नहीं आते है। कुछ धार्मिक स्थान ऐतिहासिक होते हैं। उन स्थानों को परमशक्ति अपने किसी मान्यता प्राप्त रूप के माध्यम से अथवा किसी को स्वप्न में दर्शन देकर अपना स्थान बनवाने के लिए आदेश देती है या फिर महान् आत्माओं को धरती पर भेजकर तथा उन्हें अपना अनुभव देकर उनके माध्यम से उन धार्मिक स्थानों की स्थापना करवाती है। उन धार्मिक स्थानों पर लोग़ दूर-दूर से आते हैं पर समीप के लोग कम ही आते हैं। ऐसे स्थान भी ऐतिहासिक बनते हैं यदि उनका कोई निजी इतिहास हो।

श्री मदन धाम की स्थापना न तो यहाँ के लोग़ों ने और न ही किसी महान् आत्मा ने की है। श्री मदन धाम की स्थापना परमशक्ति ने इन्सानी रूप में धरा पर आकर स्वयं की है। यहाँ पर परमशक्ति ने घोषणा की है कि वह अदृश्य से सदृश्य बनी है और उसका

नाम श्री मदन है अर्थात् श्री मदन धाम की स्थापना स्वयं परमशक्ति ने की है और वह स्वयं अपने बारे में सत्य का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है। अतः अन्य धार्मिक स्थानों व श्री मदन धाम में अन्तर होना स्वभाविक ही है। इस अन्तर को निम्नलिखित विवरण द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है :

श्री मदन धाम	दूसरे धार्मि
2. परमशक्ति की घोषणा है कि वह इन्सान बनी है, उसका नाम श्री मदन है। वही उसका अपना शरीर है। ईश्वर गिनती में एक है तथा वह इन्सान बन कर साकार रूप में धरती पर आता है। इस आधार पर ही श्री मदन धाम की कार्यप्रणाली चल रही है। परमशक्ति ने श्री मदन धाम की स्थापना स्वयं की है और वह स्वयं ही यहाँ की कार्यप्रणाली चला रही है। वह किसी की भी सिफारिश, सलाह या हस्तक्षेप करना पसंद नहीं करती। हर कार्य उनकी इच्छा के अनुसार ही होता है। **3.** श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ पर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या सीमित रखी गई है क्योंकि यहाँ पर हर चीज़ का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया	1. समाज में जो दूसरे धार्मि वहाँ के लोगों के द्वार महान् आत्माओं के आत्माओं को परमश परमशक्तिसाकार है तथ कि परमशक्ति निराक कार्यप्रणाली वहाँ के की इच्छा से चलाई स्वयं पर्दे के पीछे रह व माध्यम को मिलता है को भिन्न-भिन्न रूपों मे 2. उन धार्मिक स्थानों प है जो कि शास्त्रों औ इसलिए वहाँ पर श्रद् तथा श्रद्धालुओं की प्रयास भी किये जाते जो प्रथा शुरू हो जाती

जा रहा है। यह ज्ञान किसी धार्मिक ग्रंथ या पुस्तक का वाचन करके नहीं दिया जा रहा है अपितु परमशक्ति श्री मदन जी अपने श्रीमुख से ज्ञान दे रहे हैं और अध्यात्मवाद में जो द्वंद्व हैं उन पर से क्रियात्मक रूप में पर्दा उठा रहे हैं। इसलिए यहाँ समय-समय पर कार्यप्रणाली में परिवर्तन होता रहा है। यहाँ यह स्पष्ट किया गया है कि परमशक्ति ही हर रूप में कर्ता है।

3. परमशक्ति श्री मदन धाम कोई गुरु गद्दी नहीं है, यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के गुरु तथा इष्ट दो नहीं अपितु एक है, जिसके बारे में गुरु ज्ञान देते हैं यहाँ पर वही सर्वज्ञ, सर्व-व्यापक, सर्व-शक्तिमान परमशक्ति अपने बारे में स्वयं ज्ञान दे रही है।
4. श्री मदन धाम में परमशक्ति स्वयं साकार रूप में विद्यमान है इसलिए यहाँ पर परमशक्ति का कोई भी निर्जीव चिन्ह स्थापित नहीं हो सका और न ही कोई स्थान रिक्त है। हर स्थान पर परिवार के सदस्यों और साधारण इन्सानों के चित्र हैं। इन तस्वीरों के आगे माथा टेकने से लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं तथा दुःखों-कष्टों से राहत भी मिलती है।
5. श्री मदन धाम में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए पूजा-पाठ, जप-तप, हवन-यज्ञ आदि की कोई आवश्कता नहीं केवल ईश्वर को याद रखते हुए नेक कर्म, सद्व्यवहार और सबसे प्यार करने पर बल दिया जाता है और यही शिक्षा दी जाती है कि दूसरों से ऐसा व्यवहार करो जैसा आप दूसरों से अपने लिए चाहते हो।

6. श्री मदन धाम में यह बात प्रमाणित की गई है कि ईश्वर का कोई स्थाई रूप नहीं है और न ही वह कहीं पर स्थाई रूप में विराजमान है। वह तो सृष्टि के कण-कण में माया रूप में मौजूद है। जब ईश्वर स्वयं इन्सानी रूप में धरा पर आते हैं तो वही ईश्वर का स्थाई रूप होता है और वह रूप तब तक रहता है जब तक ईश्वर पुनः इन्सानी रूप में धरती पर नहीं आ जाते।
7. श्री मदन धाम में जिसे भी शरण में लिया जाता है उसके लिए दरबार के नियमों पर चलना आवश्यक होता है। ऐसा न

किया जाता है। जिस
पूर्ण हो जाती है उसी व
पर कर्ता कौन है भ्रम ह

3. दूसरे धार्मिक स्थानों प
पर चलते हैं,
अलग होते हैं, महान् अ
और आने वाले श्रद्धा
की प्रेरणा देते हैं।
4. दूसरे धार्मिक स्थानों प
के रूपों में माना ज
देवताओं, वीरों-पीरों,
जिनके माध्यम से परम
पूर्ण करती है या कई स
या मूर्ति नहीं है।

5. संसार के हर धार्मिक स्
मनन, हवन-यज्ञ, तीर्थ
की प्रेरणा दी जाती है
ढंग माना जाता है।
दिया जाता है।

6. ईश्वर को इस लोक से अ
पर दर्शाया जाता है जह
करते हैं। इस लिए स
इस संदर्भ में हर ध
अधिकतर संस्थाओं क
नहीं आता हैं अपित
अस्तित्व दर्शाता है।
7. दूसरे धार्मिक स्थानों प
रूप में शिक्षा दी जाती
जाती है। हर धर्म के भि
उन धार्मिक स्थानों का

करने पर उसे दृष्टांत दिया जाता है। क्षमा मांगने पर राहत भी उ मिलती है । इस तरह परमशक्ति श्रद्धालुओं को बलपूर्वक अपने नियमों पर चलाती है 8. परमशक्ति आज इन्सानी रूप में धरा पर है। वह किसी भी धर्म की स्थापना नहीं करती है उसकी दृष्टी में धर्म और मजहब की दीवारों से ऊपर उठ कर हर इन्सान को इन्सान समझना ही सच्चा धर्म है। परमशक्ति ने प्राकृतिक सात रंगों का ध्वज फहरा कर अपनी पूर्णता को दर्शाया है	8. समाज विभिन्न धर्मों, धर्म अपने इष्ट को ह मानते हैं कि ईश्वर एक दो, तीन या पांच रंगों और विचारधाराओं के

परोक्त के अतिरिक्त जो कुछ श्री मदन धाम में किया जा रहा है उसे समाज मान्यता नहीं दे रहा है क्योंकि यहाँ पर परमशक्ति ने स्वयं साकार रूप में आने की घोषणा की है और स्वयं ही कार्यप्रणाली चला रही है और यहाँ परमशक्ति अपने साकार रूप, परिवार, सेवकों और सहायकों से सम्बंधित दिन मना रही है। यह कार्यप्रणाली आम इन्सान की समझ से परे है। जो रीति रिवाज आज कुरीतियां बन चुके हैं, उनको समाज मान्यता देता है लेकिन परमशक्ति उनका खंडन करती है। कुछ महान् आत्माओं द्वारा भी समय-समय पर उनका खण्डन किया गया है भाव समाज में जो हो रहा है उसे परमशक्ति मान्यता नहीं दे रही, क्योंकि वह रीति-रिवाज़ सदियों पुराने तथा सच्चाई से परे हैं। समाज में धर्म गुरु भी वही कुछ करवाते हैं, जो समाज में पहले से प्रचलित होता है। उन स्थानों पर उनके इष्ट से सम्बंधित त्यौहार मनाए जाते है ।

इस सृष्टि में आज तक इन्सान ने जो कुछ भी सीखा है वह परमशक्ति से ही सीखा है। वह ही इन्सान का सच्चा गुरु है और वह ही आज श्री मदन धाम में इन्सान को अपने साकार रूप में अपने ही बारे में ज्ञान दे रहें हैं। उपरोक्त दिए गए विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री मदन धाम और दूसरे धार्मिक स्थानों में क्या अंतर है पर यह स्पष्ट नहीं होता है कि यह अंतर क्यों है ? इसलिए इतना ही कहना है कि जो कुछ भी समाज कर रहा है वह सदियों पुरानी धारणाओं पर आधारित है। कोई नहीं जानता कि यह धारणाएं किस ने बनाईं, क्यों बनाईं और इसके पीछे क्या उदेश्य था ? परमशक्ति ने अपने साकार रूप में स्पष्ट किया है कि परमशक्ति ही समय-समय पर महान् आत्माओं को धरती पर भेजती है, उनको अपने बारे में ज्ञान करवाती है और उनको प्रेरणा देकर सच्चाई की राह पर चलाती है। जब भी समाज अपनी राह से भटकता है तो सही राह दिखाने के लिए किसी महान् आत्मा को धरती पर भेजा जाता है तब वह महान् आत्मा और अपने नज़दीक आए लोगों को समय, देश व उनके मानसिक स्तर के अनुसार ईश्वर के बारे में ज्ञान देती है और उनको जीवन जीने की नई राह दिखाती है। समाज को चलाने के लिए कई नए रीति-रिवाज़ बनाए जाते हैं या शुरू किए जाते हैं जो उस समय, स्थान और

परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं। धीरे-धीरे उन रीति-रिवाजों को धर्म और ईश्वर के साथ जोड़ दिया जाता है। जब किसी रीति-रिवाज़ के साथ इन्सान की आस्था जुड़ जाती है तो वह सामाजिक नियम धर्म का हिस्सा बन जाते हैं भले ही उनका ईश्वर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता। समय के साथ-साथ यह रीति-रिवाज़ समाज पर बोझ बन जाते हैं। इन्सान इनको ढोने के लिए मजबूर हो जाता है। कोई भी इनको बदलने की कोशिश नहीं करता। परमशक्ति श्री मदन जी ने अध्यात्मवाद के ज्ञान के साथ ही इन वह्मों और भ्रमों पर से पर्दा उठाया और सच्चाई बताई कि धर्म की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। यह समय और काल के अनुसार बदलती रहती है। जो नियम, सिद्धांत, जीवन जीने की नई राह, नई सोच श्री मदन जी ने दी है वह आज के इन्सान और उसके रहन-सहन के अनुकूल है जो एक आम इन्सान के जीवन को सरल और सार्थक बनाती है। श्री मदन जी ने सदियों पुराने चले आ रहे रीति-रिवाजों से इन्सान को छुटकारा दिला दिया है। केवल वही करने के लिए कहा है जो ज़रुरी है।

क्या कारण है जो समाज कह रहा है उसको परमशक्ति श्री मदन जी मान्यता नहीं दे रहे और जो परमशक्ति श्री मदन जी कह रहे हैं उसे समाज मान्यता नहीं दे रहा है

ईश्वर की सोच त्रिकालदर्शी होती है जब कि इन्सान तो अपने वर्तमान को भी अच्छी तरह से नहीं जानता, वह ईश्वर या उनकी कार्यप्रणाली को किस तरह समझ सकता है। समझ तो केवल उसे ही आती है जिस को वह आप समझाते हैं। जो श्री मदन जी करते हैं उसके बारे में समाज पूरी तरह से नहीं जानता, कि ऐसा करने का उद्देश्य क्या हैं, समाज को इसका क्या लाभ होगा। अभी श्री मदन जी ने कुछ गिने-चुने श्रद्धालुओं को ही अपनी शरण में लिया है जिस कारण समाज में इस दरबार के बारे में आधी और अधूरी जानकारी ही है। इसलिए लोगों के मनों में इस दरबार के बारे में गलत धारणा है जो इस दरबार के नियमों व सिद्धांतों को मान्यता न देने का कारण है। श्री मदन जी ने अभी तक अपनी कार्य-प्रणाली को बहुत सीमित रखा है। अभी सार्वजनिक तौर पर प्रमाण देने बाकी हैं इसीलिए जो श्री मदन धाम में हो रहा है समाज के लोग उसको मान्यता नहीं दे रहे। कोई कुछ कह रहा है, कोई कुछ कह रहा है और जो समाज कर रहा है उसको परमशक्ति श्री मदन जी मान्यता नहीं दे रहे, क्योंकि वह सच्चाई से परे हैं। यही कारण है कि श्री मदन धाम और दूसरे धार्मिक स्थानों में अन्तर है।

13
श्री मदन धाम में गुरुदीक्षा या नामदान क्यों नहीं ?

इस प्रश्न को समझने से पहले यह जानना ज़रूरी है कि परमशक्ति श्री मदन धाम क्या है ? उसके उद्देश्य क्या हैं ? यहाँ कार्य-प्रणाली कौन चला रहा है ? श्री मदन जी कौन हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर समझ आने पर ही यह समझ आ सकता है कि श्री मदन धाम में गुरुदीक्षा या नाम दान क्यों नहीं दिया जाता है।

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है । यहाँ आध्यात्मिक शिक्षा क्रियात्मक रूप में दी जाती है । यह न तो रोगों के इलाज का स्थान है, न ही तांत्रिक विद्या का स्थान है और न ही यह गुरुगद्दी है । तो फिर यह क्या है ? यहाँ पर आध्यात्मिक शिक्षा क्रियात्मक रूप में दी जाती है । शिक्षा तो और धार्मिक संस्थाएं भी दे रही है पर वहाँ आध्यात्मिक शिक्षा मौखिक रूप में दी जाती है और यहाँ आध्यात्मिक शिक्षा क्रियात्मिक रूप में दी जाती है। जैसे विज्ञान के विद्यार्थियों को क्रियात्मक रूप में करके सिखाया जाता हैं फिर उनको अपने आप करने के लिए कहा जाता है उसी तरह से श्री मदन धाम में आध्यात्मिक शिक्षा क्रियात्मक रूप में दी जाती है। श्री मदन धाम और दूसरे धार्मिक स्थानों में क्या अंतर है यह एक अलग अध्याय में स्पष्ट किया गया है।

परमशक्ति ने ऐलान किया है कि *"मैं न तो नर हूँ, न ही नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ। मैं अदृश्य से सदृश्य बनी हूँ यह शरीर मेरा है, मेरा नाम मदन है, यह मेरा धाम है।"* इस घोषणा

के अनुसार वह शक्ति, जो अनादि, अनंत, अगम्य, अगोचर, सर्वोच्च, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और सब शक्तियों का स्रोत है, कह रही है कि वह आज इन्सान बन कर धरती पर आई है। परमशक्ति ने अपनी इस घोषणा को सिद्ध करने के लिए इस धाम की स्थापना की है और परमशक्ति ही इस दरबार में अपनी कार्यप्रणाली चला रही है और इस कार्यप्रणाली के अंतर्गत ही कुछ लोगों को ही शरण में लिया गया है। परमशक्ति श्री मदन जी उन लोगों को अध्यात्मवाद के बारे में क्रियात्मक रूप में ज्ञान दे रहें हैं और उनकी शुभ और उचित मांगे भी पूरी कर रहे हैं। परमशक्ति जो भी अपना सिद्धांत बताते हैं, उस सिद्धांत पर इन्सान को बलपूर्वक चलाते हैं। परमशक्ति ने प्रमाणों सहित धामों की स्थापना की है और केन्द्र खोले हैं। परमशक्ति ने साधारण इन्सानों को केन्द्र संचालक मनोनीत कर के उनको केन्द्र संचालकों के रूप में मान्यता दी है और उसके बाद उन साधारण इन्सानों के माध्यम से लोगों को ज्ञान भी दे रहे हैं और लोगों की इच्छाएं भी पूर्ण हो रही हैं। परमशक्ति श्रद्धालुओं को श्री मदन जी के रूप में भी दर्शन देते हैं और जो कुछ दर्शन दे कर कहा जाता है वह पूरा भी होता है अर्थात् परमशक्ति ने जो घोषणा की है उस घोषणा को क्रियात्मक रूप में पूरा कर रही है। श्री मदन जी नहीं कह रहे हैं कि वह परमशक्ति या ईश्वर हैं अपितु परमशक्ति कह रही है कि वह आज इन्सान बनी है। वह कौन है जो इन्सान को दर्शन दे सकता है ? कौन किसी के माध्यम से बात-चीत कर सकता है ? कौन किसी इन्सान को आशीर्वाद दे कर उसके माध्यम से आने वालों की मनोकामना पूर्ण कर सकता है ? यह सब वही कर सकता है जो सर्वशक्तिमान है, सारी शक्तियों का स्रोत है। आज वह इन्सानी रूप में है भाव परमशक्ति ही श्री मदन जी हैं, श्री मदन जी ही परमशक्ति हैं।

यह पहले भी स्पष्ट किया गया है कि इस सृष्टि में हर चीज़ का जोड़ा है जैसे कि देवी देवताओं के श्रद्धालु होते हैं, गुरु के शिष्य होते हैं, भगवान के भक्त होते हैं वे सब अपने पास आने वालों को ईश्वर का अस्तित्व दर्शाते हैं पर इनके ढंग अलग-अलग हैं। इनके पास आने वालों की उम्मीदें भी अलग-अलग होती है। इनके मापदण्ड भी अलग-अलग हैं और उनकी प्राप्ति भी अलग-अलग ढंगों से होती है।

देवी-देवताओं, वीरों-पीरों से आशय उन व्यक्तियों से है जिनका प्रयोग परमशक्ति अपना अस्तित्व और सर्वोच्चता सिद्ध करने के लिए करती है। उनके पास लोग अपनी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए आते हैं। जिस स्थान पर लोगों की ज्यादा इच्छाएँ पूर्ण होती हैं, उस स्थान की उतनी ही अधिक मान्यता होती है। वहाँ जाने वालों की गिनती भी उतनी ही अधिक होती है।

भगवान और भक्त का प्रेम का रिश्ता है। भक्त अपने भगवान या इष्ट के साथ नि:स्वार्थ प्यार करते हैं। भक्त अपने इष्ट का ही हो कर रह जाता है। ज्ञान और भक्ति का कोई मेल नहीं है। ज्ञान दिमाग़ का काम है भक्ति मन की खुराक है। ज्ञान तर्क चाहता है पर भक्ति किसी तर्क को नहीं मानती। एक भक्त के लिए भगवान ही सब कुछ होता है। भगवान की प्राप्ति ही उसकी मंजिल होती है। भक्त को परिभाषाओं के साथ, रूपों के साथ, साकार, निराकार के साथ कोई मतलब नहीं होता। वह अपने इष्ट को ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान मानता है। यही कारण है कि आज लगभग 500 ऐसे नाम हैं जिनके साथ भगवान शब्द लगाया जा रहा

है, जिनकी मूर्तियों को ईश्वर का रूप मान कर पूजा-भक्ति हो रही है। उनको प्रमाण भी मिलते हैं व लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं।

गुरु अपने शिष्य को अध्यात्मवाद के गूढ़ ज्ञान के बारे में बताता है और भक्ति मार्ग पर भी चलाता है इस लिए गुरु को ज्ञान और भक्ति का सुमेल कहा जाता है। गुरु और शिष्य का जोड़ा है। गुरु शब्द दो अक्षरों के मेल से बना है। गु गुणातीत से और रु रूपातीत से बना है। गुणातीत से अर्थ है जो अनुभव तो होता है पर दिखाई नहीं देता इसलिए उसके होने या न होने में द्वंद रहता है। रूपातीत से अर्थ है जिस का कोई रूप हो, जिसको देखा जा सके। जो निराकार को साकार करता है, अँधेरे में से निकाल कर रौशनी में लाता है, वह गुरु है । जैसे एक कमरे में अँधेरा है, उसके अंदर बहुत कुछ है पर नज़र नहीं आता, इसलिए होने या न होने का द्वंद है। यह इन्सान की नज़र की सीमा है। यदि कोई उस कमरे में रोशनी कर दे तो सब कुछ नज़र आने लग जाएगा और द्वंद समाप्त हो जाएगा। जो है वह सामने आ जाएगा दिखाई देने लगेगा। वैसे तो इन्सान को सांसारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए कई तरह के गुरु बनाने पड़ते हैं। उसी तरह से इन्सान अध्यात्मवाद में भी गुरु बनाता है, क्योंकि अज्ञान रूपी अँधेरे को दूर करने के लिए गुरु का होना ज़रुरी है। परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्री मुख से बताया है कि इन्सान का सच्चा गुरु तो परमशक्ति ही है पर हर इन्सान का परमशक्ति से संपर्क नहीं होता। इसलिए इन्सान को गुरु धारण करना चाहिए। पर गुरु वह होना चाहिए जिसका परमशक्ति के साथ संपर्क हो, क्योंकि सच्चा ज्ञान तो वही दे सकता है जिसको स्वयं आत्मिक ज्ञान हो और जो अपने शिष्य का मार्ग दर्शन कर सके, अध्यात्मिक मार्ग पर अपने शिष्य की मदद करे। वह स्वयं ईश्वर से मिला हो और अपने शिष्य को भी ईश्वर से मिला सकता हो। जिस तरह सांसारिक शिक्षा के लिए कई तरह के गुरु होते हैं उसी तरह से अध्यात्मवाद में भी कई तरह के गुरु होते हैं, जो कई तरह से अपने शिष्य को ज्ञान करवाते हैं और आगे बढ़ाते हैं। समाज में प्रचलित धारणाओं के अनुसार गुरुओं की निम्नलिखित श्रेणियाँ हैं :

दीपक गुरु

दीपक गुरु उसको कहा जाता है जो अपने शिष्य को ज्ञान देता है और अपने शिष्य को अज्ञान के अँधेरे से निकल कर रोशनी में लाता है। जिस तरह से एक दीपक से हज़ार दीपक जलाए जा सकते हैं उसी तरह गुरु अपने शिष्य के अंदर ज्ञान का प्रकाश करता है। स्वयं ईश्वर प्राप्ति की कोशिश करता है और अपने शिष्य को भी ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताता है।

चन्दन गुरु

चन्दन गुरु उसको माना जाता है जो अपने शिष्य को ईश्वर का अनुभव इस तरह से करवाता है जैसे चन्दन के वृक्ष के नज़दीक जितने भी वृक्ष होते हैं उनमें से चन्दन की ही खुशबू आने लगती है। उसी तरह चन्दन गुरु के नज़दीक रहने से उसके शिष्य को भी ईश्वर के अनुभव होने लग जाते हैं। उनके अंदर आध्यात्मिकता प्रकट हो जाती है।

पारस गुरु

पारस गुरु उनको माना जाता है जो अपने शिष्य को उसी तरह ज्ञान करवा कर ईश्वर की प्राप्ति करवाते हैं जैसे पारस किसी धातु को सोना बना सकता है। माना जाता है कि पारस

गुरु के स्पर्श मात्र से ही शिष्य के अंदर आध्यात्मिक ऊर्जा पैदा हो जाती है। जो प्रगति शिष्य कई सालों की मेहनत से करता है, पारस गुरु के स्पर्श मात्र से ही एक पल में हो जाती है।

भृंगी गुरु

भृंगी एक ऐसा जीव है जिसकी अपनी संतान नहीं होती पर किसी जीव को उठा कर ले आता है। उसको पालता है, पल-पल उस जीव को डंक मारता है और अंत में वह जीव एक दिन भृंगी ही बन जाता है। जैसे माँ एक बच्चे को जन्म देती है उस तरह से भृंगी गुरु भी अपने शिष्य को नया जन्म देता है भाव अपना रूप ही बना देता है।

उपरोक्त जो भी वर्णन किया गया है यह वे मान्यताएं हैं जो समाज में गुरु के बारे में प्रचलित हैं। इसलिए गुरु के बारे में धारणा है कि एक गुरु अपने शिष्य को अपनी इच्छा से ही ईश्वर की प्राप्ति करवा सकता है। अगर यही वास्तविकता होती तो एक ही गुरु के सारे शिष्य ईश्वर की प्राप्ति कर लेते क्योंकि शिष्य चाहे कैसा भी क्यों न हो, कोई भी गुरु नहीं चाहता कि उस का कोई शिष्य अपनी मंजिल से वंचित रह जाए। अगर गुरु अपने सामर्थ्य से ही ईश्वर की प्राप्ति करवा सकता, तो गुरु अभ्यास करने को क्यों कहते ? नाम की कमाई करने या नाम जपने के □□ए क्यों कहते। सच तो यह है कि गुरु तो केवल ईश्वर के अस्तित्व को मान कर उस की रज़ा में राज़ी रहने की प्रेरणा देते हैं। कर्मफल तो हर इन्सान को भोगना ही पड़ता है। करने वाला और करवाने वाला तो ंवह आप ही है, इन्सान के बस में कुछ नहीं है। इन्सान के जीवन में सुख-दुःख उसके कर्मों का फल है। जब ईश्वर की इच्छा हो जाती है तो वह स्वयं ही इन्सान को अपना अस्तित्व बताते हैं, अपनी पहचान करवाते हैं, अपनी भक्ति करवाते हैं। इसलिए कोई गुरु अपने शिष्य को नाम दान देता है, कोई दीक्षा देता है, कोई भगवें कपड़े पहना कर समाज छोड़ कर सन्यास ग्रहण करने को कहता है भाव अनेक ही ढंग हैं जो समाज में बताए जा रहे हैं। हर धार्मिक संस्था किसी न किसी ढंग से पूजा-पाठ, जप-तप, सिमरन आदि की विभिन्न विधियाँ बताती हैं। वास्तव में हर रूप में कर्ता तो परमशक्ति ही है। वही हर रूप में इन्सान को कर्मफल देती है। वही देवी-देवताओं के माध्यम से लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण करती है, वही भगवानों को मान्यता देती है, उनके रूपों में दर्शन देती है, उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करती है। उसी तरह परमशक्ति ही गुरु के माध्यम से उसके शिष्यों की मनोकामनाएं पूर्ण करती है, उनको मंजिल तक पहुंचाती है। दिखाई तो गुरु ही देते हैं इसलिए गुरु के बारे में यह धारणा है कि समर्थ गुरु ही अपने शिष्य को ईश्वर की प्राप्ति करवा सकता है पर सच्चाई यह है कि जिस गुरु ने अपने आप को महत्व न दे कर परमशक्ति को महत्व दिया, परमशक्ति ने भी महत्व स्वयं न लेकर महत्व उन गुरुओं को ही दिया है। कर्ता परमशक्ति ही रहती है पर महत्व उन महान् आत्माओं को देती है।

परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्री मुख से ज्ञान दिया है कि इस दरबार में आने वाले श्रद्धालुओं की परमशक्ति ही गुरु है और वही उनकी इष्ट है। श्री मदन धाम में पूजा-पाठ, जप-तप, चिंतन-मनन पर बल न देकर केवल नेककर्म, सद् व्यवहार और सभी से प्यार करने के लिए कहा जाता है। श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। परमशक्ति श्री मदन जी ने अध्यात्मवाद की कुछ भूमिकाएं निभा कर अध्यात्मवाद का ज्ञान क्रियात्मक रूप में

दिया है। उन्होंने **1987** से **1991** तक गुरु की भूमिका निभा कर गुरुदीक्षा भी दी, नाम दान भी दिया और शिष्य भी बनाए पर कुछ समय के बाद प्रमाणों सहित बंद कर दिया और बताया कि परमशक्ति जब इन्सानी रूप में आती हैं तो किसी को दीक्षा या नामदान नहीं देती। वह तो इन्सान को अपनी शरण में लेकर अपने इच्छा से चलाती है। परमशक्ति तो कर्मफल दाता है। वह तो हर किसी को कर्मफल देने वाले है ं, उनका सम्बन्ध तो हर किसी के साथ है चाहे उस को कोई माने या न माने, कर्मफल तो हर किसी ने भोगना ही है। परमशक्ति का सम्बन्ध किसी विशेष धर्म, वर्ग या सम्प्रदाय के साथ नहीं होता, उनका सम्बन्ध तो सारी मानवता के साथ होता है। जो भी इन्सान परमशक्ति को जिस भावना से, जिस रूप में, जिस मनोरथ के साथ याद करता है, परमशक्ति उसकी वह भावना पूरी करती है, उस को उस रूप में दर्शन देती है और उसका मनोरथ पूरा करती है। परमशक्ति का किसी के साथ कोई रिश्ता नहीं है पर जो इन्सान जिस रिश्ते से परमशक्ति को याद करता है तो परमशक्ति उसी रिश्ते के साथ उसको अनुभव देती है अर्थात् वह गुरु भी है, माँ भी है, पिता भी है, स्वामी भी है, सखा भी है, वह अनंत गुणों की स्वामी है। वह स्वयं को केवल गुरु शिष्य के सम्बन्ध में कैसे बांध सकती है। कुछ लोग ईश्वर को केवल अपनी सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के □□ए याद करते हैं, कुछ लोग मानसिक शांति और अगले जन्म को संवारने के लिए ईश्वर को याद करते हैं, कुछ लोग ईश्वर की प्राप्ति के लिए उसे याद करते हैं।

गुरु का सम्बन्ध केवल अपने शिष्यों तक ही सीमित होता है जबकि परमशक्ति का सम्बन्ध पूरी मानवता के साथ है। गुरु किसी को प्रेरणा से ही चला सकता है जब कि परमशक्ति इस तरह के हालात बना देती है कि जो परमशक्ति चाहती है इन्सान को वही करना पड़ता है। गुरु किसी भी बात को क्रियात्मक रूप में सिद्ध नहीं करते, जबकि परमशक्ति सर्वशक्तिमान है, वह जो चाहे सिद्ध कर सकती है। गुरु अपने शिष्य को ईश्वर के बारे में ज्ञान देते हैं पर ईश्वर के साथ प्यार करना नहीं सिखा सकते, क्योंकि प्यार करना सिखाया नहीं जा सकता, प्यार समझाया नहीं जा सकता पर परमशक्ति जिस को चाहे अपना अनुभव देकर उसके मन में अपने प्रति प्यार पैदा कर कर देती है। आज परम शक्ति श्री मदन जी के शरीर में बोलती है, वही यहाँ आने वालों का सच्चा गुरु और इष्ट है ं। श्री मदन धाम में परमशक्ति श्री मदन जी आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र खोल कर अपने अनन्त गुणों, नियमों और शक्तियों का क्रियात्मक रूप में ज्ञान भी दे रहे हैं और आने वाले श्रद्धालुओं की दुःख-तकलीफें भी दूर कर रहे हैं जो गुरु शिष्य की भूमिका में स्पष्ट हो पाना असंभव है।

अन्त में यही कहना है कि गुरु-शिष्य, देवी-देवता श्रद्धालु, भगवान-भक्त का जोड़ा है। इसी प्रकार ईश्वर और इन्सान का जोड़ा है। ईश्वर कर्म फल दाता है इन्सान अपने किए कर्मों का फल भोगने के लिए ही जन्म लेता है। इस लिए हर इन्सान का परमशक्ति से नाता है चाहे वो उसे माने या न माने। परमशक्ति जब साकार होती है तो वह न तो नाम दान देती है और न ही गुरुदीक्षा देती है। परमशक्ति आशीर्वाद ही देती है जिसे पाकर इन्सान को अपने मनोरथ की प्राप्ति होती है।

14
कुल देवता से परमशक्ति तक कौन क्या है ?

इस सृष्टि में जो कुछ भी दिखाई देता है या जो कुछ दिखाई नहीं देता पर जिसका अनुभव होता है या जो इन्सानी जीवन को प्रभावित करता है उन सब का ही अस्तित्व है। जिसका नाम है उसका अस्तित्व भी है। हर जीव का नाम उसके गुणों एवं कार्य के अनुसार ही होता है। भौतिकवाद में जो लोग खेतीबाड़ी का काम करते हैं, उन्हें किसान कहते हैं। लोहे का कार्य करने वाले को लोहार कहते हैं। लकड़ी का कार्य करने वाले को बढ़ई कहते हैं। स्कूली शिक्षा देने वाले को अध्यापक कहते हैं। इसी तरह डॉक्टर, इंजीनियर, कैमिस्ट, नेता, अभिनेता आदि नाम उनके कार्यों या गुणों के आधार पर होते हैं। इन सभी के कार्य क्षेत्र भी भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे कहावत है कि जैसा काम वैसा नाम। इसी प्रकार अध्यात्मवाद में बहुत सी अदृश्य शक्तियाँ हैं, जिनका इन्सान को अनुभव होता है और उनका इन्सान के जीवन पर प्रभाव भी पड़ता है। उन शक्तियों के अलग-अलग नाम हैं और उनके नाम के साथ अलग-अलग विशेषण भी लगे हुए हैं।

संसार में सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी इन्सान है। इन्सानों की भी श्रेणियाँ हैं जैसे पहली श्रेणी में दुष्ट, चाण्डाल, हैवान, शैतान आदि आते हैं। दूसरी श्रेणी साधारण इन्सानों की है जिसमें अच्छे, बुरे, तीव्र बुद्धि, मन्द बुद्धि वाले होते हैं। तीसरी श्रेणी उन इन्सानों की है जो सदा दूसरों की भलाई में ही आनन्द की अनुभूति करते हैं। वे अपने लिए कम, दूसरों के लिए अधिक जीते हैं। इसी प्रकार अध्यात्मवाद में भी कुछ नाम हैं, जिनके बारे में ज्ञान होना आवश्यक है कि कौन क्या है ? उनके नाम के आगे भी उनके गुणों के आधार पर ही विशेषण लगते है।

2. कुल देवता

हर इन्सान की कुल का देवता होता है, जिसे केवल एक कुल या वंश ही मानता है। कुल देवता के माध्यम से परमशक्ति या ईश्वर उस कुल की छोटी-मोटी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। यह अध्यात्मवाद का सबसे निम्न स्तर है।

2. भूत-प्रेत एवम् भटकती रूहें

ऐसे इन्सान जो अपने जीवन में घिनौने कार्य करते हैं, फलस्वरूप विपरीत परिस्थितियों में उलझ कर तथा अपने जीवन से दु:खी होकर आत्महत्या कर लेते हैं। वे परमशक्ति की दृष्टि में दोषी होते हैं। उनका अपराध अक्षम्य होता है। परमशक्ति उनको तब तक नया जन्म नहीं देती जब तक उनकी निश्चित आयु जो उन्होंने जीते जी पूरी करनी थी वह पूरी नहीं हो जाती। उनकी चेतन शक्ति या रूह तब तक भटकती ही रहती है उन्हें ही भूत-प्रेत कहा जाता है। उन रूहों का भी शरीर होता है जो मायावी होता है। वह मायावी शरीर उन्हें परमशक्ति देती है। वे रूहें अपने-अपने मायावी शरीर में भटकती रहती हैं। रूहें भी चाहती हैं कि उन्हें नया जन्म मिले क्योंकि आनन्द की प्राप्ति तो शरीर में रह कर ही हो सकती है। इसलिए वे आनन्द की पूर्ति के लिए बलपूर्वक अन्य इन्सानों का शरीर धारण कर लेती हैं और उस शरीर को अपनी इच्छानुसार चलाती हैं। जिस इन्सान के शरीर को भटकती हुई रूहें धारण करती हैं, यह उस इन्सान के दुष्कर्मों का ही फल होता है।

3. क्षेत्रीय देवता

कुछ देवता ऐसे होते हैं जिनकी मान्यता केवल सीमित क्षेत्र में ही होती है। वहाँ पर केवल क्षेत्रीय लोग़ ही जाते हैं और परमशक्ति ही उनकी मनोकामना क्षेत्रीय देवताओं के माध्यम से पूर्ण करती है।

4. उच्चकोटि के देवता

कुछ देवी-देवता उच्चकोटि या उच्चस्तर के होते हैं। उनकी मान्यता बहुत बड़े क्षेत्र में होती हैं। उन स्थानों पर जाने वालों की मनोकामनाएँ अधिक पूर्ण होती हैं और उन स्थानों पर दूर-दूर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

5. देवी-देवता – श्रद्धालु

जो व्यक्ति अपने जीवनकाल में भगवानों और उच्चकोटि की शक्तियों की पूजा करते हैं, घोर साधना करते हैं और जब उनका इष्ट उनकी भक्ति से प्रसन्न हो जाता है तब उनको वह ऋद्धि-सिद्धि का वरदान दे देता है जिसे परमशक्ति पूर्णकर देती है। उन व्यक्तियों के माध्यम से लोगों की भलाई होती है। उन व्यक्तियों के मरणोपरांत उन्हें देवी-देवता का दर्जा प्राप्त होता है। परमशक्ति उनका यश-मान बनाए रखने के लिए और उनकी भक्ति का फल देने के लिए उनके नाम के स्थान बनवा कर वहाँ पर आने वाले लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण करती है।

श्रद्धालु :—

देवी-देवताओं की मान्यता करने वालों, उनमें श्रद्धा रखने वालों को श्रद्धालु कहा गया है। जो कहीं भी, किसी में भी श्रद्धा रखता है, वह उसका श्रद्धालु कहलाता है।

16. वीर-पीर

वीर-पीर का जोड़ा है। लोगों की दृष्टि में ये दोनों एक हैं परन्तु ऐसा नहीं है। वीर का अर्थ है - बहादुर। वे व्यक्ति बहादुर होते हैं जो "दैत्य शक्ति" का जप-तप, पूजा-पाठ करते हैं। उनकी भक्ति हठ पर आधारित होती है जैसे शरीर को तापना, कष्ट सहन करना इत्यादि के आधार पर वे अपने इष्ट को प्रसन्न करने का प्रयास करते है। भक्ति पूर्ण होने पर वे ऋद्धि-सिद्धि का वरदान प्राप्त करतें हैं परन्तु वे रिद्धि-सिद्धि का प्रयोग प्राय: दूसरों के अहित के लिए करते हैं। दूसरों का अहित करके वे आनन्द की प्राप्ति करते हैं। यदि किसी पर प्रसन्न हो जाएं तो उसे माला-माल भी कर देते हैं। यदि किसी पर रुष्ट हो जाएं तो उसका सर्वनाश भी कर देते हैं। दूसरों से बलपूर्वक अपनी पूजा करवाते हैं और प्राय: छल का प्रयोग करते हैं। अपना नाम, रूप बदल कर देवताओं के नाम पर भी अपनी पूजा करवाते हैं और उन्हें अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्रयोग करते हैं।

पीर वैसे तो पहुंचे हुए व्यक्ति को कहते हैं परन्तु उसमें भी अहम् भाव आ जाता है। इसलिए इनके कार्य भी वीरों जैसे ही हो जाते हैं। इसी कारण उनका नाम {वीर-पीर} इकट्ठा आता है दोनों में अन्तर केवल इतना है कि "वीर" छल का सहारा लेते हैं जबकि "पीर" छल का सहारा नहीं लेते और अपने बलबूते पर ही कार्य करते हैं। ये ज्ञान भी देते हैं और लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण करते हैं। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि वास्तव में हर रूप में कर्ता तो परमशक्ति ही होती है। वह स्वयं पर्दे के पीछे रहकर इन रूपों में कार्य करती है।

प्रश्न है कि परमशक्ति ऐसे कार्य क्यों करती है ? इसका उत्तर है कि जो कार्य परमशक्ति अपने रूप में करना उचित नहीं समझती है वह कार्य परमशक्ति इन रूपों को धारण करके करती है। हर इन्सान को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है और कर्मफल केवल कर्मफलदाता ही दे सकता है जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान होता है। वह गिनती में एक है और वह परमशक्ति है। परमशक्ति ही कर्मफल देने के लिए इन रूपों को धारण करती है।

17. साधु-सन्त

समाज में आमतौर पर साधु और सन्त में अन्तर नहीं समझा जाता। उनके लिए दोनों एक समान हैं, परन्तु इनमें भी अन्तर है। साधु उन व्यक्तियों को कहा गया है जो गृहस्थ जीवन को त्याग कर ईश्वर की भक्ति करते हैं, सरल स्वभाव के होते हैं और दूसरों की सेवा में समय व्यतीत करने का प्रयास करते हैं। भले ही वे अपना गृहस्थ जीवन त्याग देते हैं परन्तु उनके अपने जीवन का निर्वाह गृहस्थियों पर ही निर्भर रहता है। पुराने समय में ये घर-बार छोड़ कर जंगलों में चले जाते थे और वहाँ पर ये आश्रमों में रह कर गुज़ारा करते थे। भगवे ं वस्त्र धारण करते थे तथा सन्यासी कहलाते थे परन्तु वर्तमानकाल में ये आमतौर पर गृहस्थियों के आस-पास ही रहते हैं। इस कारण इनके स्वभाव में भी चिड़चिड़ापन आ जाता है।

सन्त पुरुष भी सरल स्वभाव के होते हैं। यह ज़रूरी नही है कि कोई व्यक्ति गृहस्थ जीवन त्याग कर जंगलों में जाए तभी वह सन्त बन सकता है। व्यक्ति गृहस्थ में रह कर भी सन्त बन सकता है। सन्त व्यक्ति का सम्बन्ध भगवे ं पहरावे या माला इत्यादि से नहीं है। उसका सम्बन्ध तो व्यक्ति के गुणों से होता है। क्योंकि सन्त-पुरुष अधिकतर गृहस्थ व समाज में रहते हैं, इसलिए उन पर इन्सानी विकारों का प्रभाव भी रहता है। परन्तु गृहस्थ में रह कर भी समाज सेवा तथा परहित कार्य करते हैं। देखने में तो सभी इन्सान एक समान लगते हैं परन्तु गुणों के आधार पर ही साधु और सन्त की पहचान होती है।

18. महात्मा-महापुरुष

महात्मा, महापुरुष शब्द सुनने में एक समान ही लगते हैं। आमतौर पर समाज में महात्मा और महापुरुष को एक समान ही समझा जाता है, परन्तु जब नाम अलग-अलग हैं तो उनमें अन्तर भी अवश्य होगा। महात्मा का अर्थ है, महान् आत्मा और ये गिनी-चुनी होती हैं। इनमें अच्छे गुण अधिक और अवगुण बहुत कम होते हैं। ये विकारों से पूरी तरह रहित तो नहीं होतीं हैं परन्तु विकारों का सदुपयोग करती हैं। ये अधिकतर दूसरों के लिए जीते हैं। महान्-आत्माएं सरल स्वभाव, शांति-प्रिय और सद्व्यवहार करने वाली होती हैं। इनका सम्पर्क कर्मफल दाता से होता है और किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही धरती पर भेजी जाती हैं। इन्हें समाज का विरोध व आरोप भी सहन करने पड़ते हैं। महान्-आत्माएं जन-कल्याण और समाज-सुधार के लिए अपना जीवन समर्पित कर देतीं हैं। महान्-आत्माएं आस्तिक होती हैं और ये ईश्वर से नि:स्वार्थ प्यार करती हैं। ये धरा पर जिस उद्देश्य के लिए भेजी जाती हैं ये वही कार्य करती हैं। ये अपनी इच्छा से कुछ नहीं करतीं। ये जो चाहती हैं वह होता नहीं, होता वही है जो ईश्वर इनसे

चाहते हैं। गुणों के आधार पर ही इनके नाम के आगे विशेषण लगते हैं जैसे ऋषि-मुनि, गुरु, वीर-पीर, देवी-देव, भगवान आदि। ये सभी महान् आत्माएं कहलाती है।

विशेष गुणों के आधार पर ही किसी व्यक्ति के नाम के साथ महान् शब्द लगता है। जो समाज कल्याण को ही अपने जीवन का उदेश्य मानता हो ऐसे पुरुष को ही पुरुषों में महान् अर्थात् महापुरुष कहा जाता है। महापुरुष भी ईश्वर को किसी न किसी रूप में मानते हैं, लेकिन महात्मा की तरह महापुरुष का ईश्वर के साथ सीधा संपर्क नहीं होता है इसी लिए उनका दर्जा महात्मा के बराबर नहीं होता। जो व्यक्ति स्वार्थवश ईश्वर का पूजा-पाठ, जप-तप करता है उसकी तुलना में महापुरूष की नि:स्वार्थ समाज सेवा उत्तम होती है।

19. ऋषि-मुनि

आदि काल से ही इन्सान के मन में प्रश्न उठते रहे हैं कि क्या इस सृष्टि को बनाने वाला कोई है ? यदि कोई है तो वह कौन है, वह स्वयं कहाँ से आया है, उसने यह सब कुछ किस लिए बनाया है, उसने इन्सान की रचना किस लिए की है तथा वह इन्सान से क्या चाहता है। जैसे कि पहले भी स्पष्ट किया गया है कि इस सृष्टि में हर चीज़ का जोड़ा है, इसी तरह अध्यात्मवाद और भौतिकवाद का भी जोड़ा है। आध्यात्मवादी मानते हैं कि इस सृष्टि को चलाने वाली कोई शक्ति है जो इन आँखों से दिखाई नहीं देती है अर्थात् वह अदृश्य है लेकिन इन्सान के जीवन पर उसका प्रभाव पड़ता है। जो इन्सान अध्यात्मवाद के रहस्यों की खोज में लगे, ऋषि-मुनि कहलाए। भौतिकवादी व्यक्तियों की विचारधारा इससे विपरीत है, उनका विचार है कि जो कुछ इन आँखों से दिखाई देता है उसका ही अस्तित्व है, वही सत्य है तथा जो दिखाई नहीं देता वह असत्य है।

ऋषि :-

उस अदृश्य शक्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए जिन्होंने उसकी भक्ति की, समाधि लगाई तथा जप-तप करके उसके बारे में अनुभव एवं आत्म ज्ञान प्राप्त करके तथा उसे लिखित रूप देकर जिन्होंने समाज को ज्ञान दिया, ऋषि कहलाए। धार्मिक ग्रंथ, वेद-शास्त्र, पुराण आदि सभी इन्हीं की देन हैं। ऋषि शब्द से आशय है दर्शन करने वाला, तत्वों की साक्षात् अनुभूति करने वाला। भारतीय साहित्य में 'ऋषि' की उपाधि ऐसे व्यक्तियों को दी गई है जिन्होंने योग तथा तपस्या के बल पर अपने अंत:कर्ण का इतना विस्तार कर लिया हो कि परमतत्व स्वयं उनके हृदय में प्रकट हो गया हो।| मान्यता है कि ऐसे ही व्यक्ति वेदों के दृष्टा थे।

मुनि :-

जिन्होंने उस अदृश्य शक्ति का चिंतन-मनन किया, अपनी पूजा-पाठ और भक्ति से उस अनाम शक्ति को प्रसन्न किया, उसकी कृपा के पात्र बने, अपने जीवन में जो भी अनुभव या ज्ञान उस अनाम शक्ति के बारे में प्राप्त किया, उसे मौखिक रूप में समाज को दिया और उसे आस्तिक बनाने का प्रयास किया, वही मुनि कहलाए। बहुत कम मुनि देव हुए हैं जिन्होंने अपने अनुभव या अपना ज्ञान लिखित रूप में पेश किया है। वेदों में मुनि शब्द का उल्लेख ऐसे

सन्यासी से है जिसके केश लम्बे हैं और जो अलौकिक शक्ति रखता ह ो । सामान्यत: मुनि शब्द का उल्लेख राग-द्वेष रहित सन्तों और ऋषियों के लिए होता है । यति, तपस्वी, भिक्षु, श्रमण आदि इन्हीं के नाम हैं ।

गीता के अनुसार सुख-दु:ख, राग-भय और क्रोध से रहित बुद्धि वाले व्यक्ति मुनि कहलाते हैं ।

महाभारत के अनुसार जो साधक मौन व्रत का पालन करता है, वह मुनि बनता है ।

उपनिषदों के अनुसार अध्ययन, यज्ञ, व्रत और श्रद्धा से ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करने वाले को मुनि कहते हैं ।

जैन ग्रंथ ऐसे महर्षियों को मुनि बताते हैं जिनकी आत्मा संयम में स्थिर है, जो सांसारिक वासनाओं से रहित हैं और जीवों की रक्षा करते हैं ।

20. गुरु-शिष्य

सृष्टि का संतुलन बनाए रखने के लिए ईश्वर ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है, एक के बिना दूसरे का कोई महत्व नहीं है, जैसे दिन-रात, सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख, लाभ-हानि, शान्ति-अशान्ति, जीव-निर्जीव, स्त्री-पुरुष, अध्यात्मवाद-भौतिकवाद, जीवन-मृत्यु, ईश्वर-इन्सान आदि । इसी तरह गुरु-शिष्य का भी जोड़ा है ।

गुरु :-

गुरु का शाब्दिक अर्थ है — अध्यापक, शिक्षा देने वाला, प्रशिक्षक, मार्गदर्शक, पथ-प्रदर्शक, रहबर, रहनुमा और अध्यात्मवाद में गुरु का अर्थ है जो अपने शिष्य को अज्ञान के अन्धकार से निकाल कर ज्ञान रूपी प्रकाश प्रदान करे । गुरुओं की भी श्रेणियाँ हैं । एक वह गुरु हैं जो इन्सान को स्कूली शिक्षा देता हैं । एक वह भी गुरु हैं जो व्यक्ति को तकनीकी प्रशिक्षण देता हैं । □□□□□□□□□□□□ में वास्तविक गुरु वह होता है जो स्वयं ईश्वर तक पहुंचा हो या जिसका ईश्वर से सम्पर्क हो या फिर जिसके शरीर में ईश्वर स्वयं बातचीत करते हों । गुरु का दर्जा भगवान से नीचे होता है चाहे उस के शिष्यों की संख्या कितनी भी हो जाए । संसार में अनेकों ही ऐसे लोग़ हैं जो न तो अध्यात्मवाद के विषय में कुछ जानते हैं और न ही उनका कभी ईश्वर से सम्पर्क हुआ होता है । केवल अपने स्वार्थ हेतु वे गुरु बन बैठते हैं । कुछ गुरु ऐसे भी हैं जो व्यक्ति को वीर-पीर, देवी-देव या भगवान तक का ही ज्ञान देकर उनके ही जप-तप, सिमरन आदि करने के लिए प्रेरित करते हैं । जो गुरु का अपना इष्ट होता है वह उसी की पूजा करवाता है । जैसे समाज में एक धारणा भी है कि जब तक व्यक्ति अपने जीवन में अध्यात्मवाद के लिए कोई गुरु धारण नहीं करता अर्थात् नाम-दान नहीं लेता है, तब तक उसकी गति नहीं होती । इसलिए व्यक्ति गुरु-दीक्षा लेने के लिए ऐसे गुरुओं के चक्कर में फंस जाता है । ये गुरु ईश्वर के सम्बन्ध में तो कुछ जानते नहीं । अत: लोगों को निम्न स्तर की शक्तियों के नाम पर ही गुरु-दीक्षा देते हैं । ये स्वयं तो डूबते ही हैं, साथ-साथ अपने शिष्यों, सेवकों को भी ले डूबते हैं । ऐसे गुरु लोगों को उजाले की ओर ले जाने की बजाए उन्हें अन्धकार की ओर ले जाते हैं ।

अध्यात्मवाद में सच्चा गुरु या पूर्ण गुरु वह होता है जिसका सम्पर्क ईश्वर से हो, जिसे ईश्वर अनुचित कार्य करने से रोके । जब तक गुरु को ईश्वर के बारे में ज्ञान नहीं होगा तब तक वह

अपने शिष्य को ईश्वर के बारे में ज्ञान कैसे करवा सकता है । इसलिए सच्चा गुरु वही है जो इन्सान को उसकी वास्तविक मंज़िल के बारे में ज्ञान करवाए और उस मंज़िल को पाने के लिए उसका मार्गदर्शन भी करे । जीवन को सार्थक बनाने के लिए इन्सान का अपने जीवन काल में कर्मफल दाता तक पहुंचना ही वास्तविक मंजिल है, क्योंकि केवल वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान होता है और वह गिनती में एक ही होता है, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करना, उससे प्यार करना तथा उसके नियमों पर चलते हुए अपना जीवन बिताना ही आदर्श जीवन कहलाता है । परन्तु यह तभी सम्भव हो सकता है जब इन्सान को पूर्ण गुरु मिल जाए । ऐसे लोगों की संख्या बहुत ही कम होती है जिन्हें पूर्ण गुरु मिलता है । वास्तव में सभी का सच्चा गुरु परमशक्ति ही है तथा वही सबकी इष्ट भी है लेकिन परमशक्ति हर किसी से संपर्क नहीं करती है । वह तो उसी के साथ संपर्क करती है जो उसकी बात को सत्य मान कर चले, उसके बताए हुए नियमों पर चले तथा सभी से प्यार और सद्व्यवहार करे । जो गुरु इन्सान को अंधकार की ओर ले जाते हैं अर्थात् उन्हें ईश्वर के बारे में ज्ञान न देकर निम्न स्तर की शक्तियों तक सीमित रखते हैं वे ईश्वर की दृष्टि में दोषी होते हैं और उनका यह दोष अक्षम्य होता है अर्थात् इसके लिए उन्हें दण्ड भोगना ही पड़ता है ।

शिष्य :-

जो अपने गुरु से शिक्षा प्राप्त करता है उसका शिष्य कहलाता है । शिक्षा चाहे भौतिकवाद की हो या अध्यात्मवाद की, उसके लिए गुरु का होना आवश्यक होता है । शिष्य अपने गुरु का अनुयायी होता है । वह अपने गुरु की आज्ञा में रहकर और उसके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सफल बनाने की कोशिश करता है । वास्तव में शिष्य वही होता है जो गुरु के आदेश का पालन इमानदारी से करता है, सच्चे मन से उसकी सेवा करता है और उसके द्वारा दी गई शिक्षा का अनुसरण करता हुआ अपने गुरु के नाम को भी र ोशन करता है ।

11. भगवान-भक्त

आमतौर पर समाज में भगवान, ईश्वर और परमात्मा को एक ही मानते हैं पर इनमें भी अन्तर है । ईश्वर अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है जो सृष्टि का रचयिता और पालनकर्ता है, जिसकी आराधना ऋषि-मुनि, सन्त-फ़कीर, देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान सभी करते हैं । ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान होता है । वही कर्मफल दाता है तथा वह गिनती में एक है ।

भगवान :-

भगवान अपने आप में कुछ नहीं होते, वे केवल ईश्वर के माध्यम होते हैं । भगवान का दर्जा गुरुओं से ऊपर होता है लेकिन भगवान गुरुदीक्षा नहीं देते । जिस प्रकार गुरुओं के शिष्य होते है उसी प्रकार भगवान के भक्त होते है । भगवान एक से अधिक भी हो सकते हैं । भगवान शब्द भाग्यवान से बना है, भगवान वह मान्यता प्राप्त रूप होता है जिसके शरीर को परमशक्ति धारण करती है तथा किसी सीमा तक उसके माध्यम से अपने गुणों, नियमों और शक्तियों का प्रदर्शन करती है । जिस शरीर का प्रयोग ईश्वर अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए करे उससे बड़ा भाग्यवान और कौन हो सकता है ? लगभग 500 नाम ऐसे हैं जिनके साथ भगवान

शब्द लगा है जैसे भगवान श्री राम, भगवान श्री कृष्ण, भगवान श्री महावीर आदि। भगवान धरा पर केवल ईश्वर द्वारा निर्धारित कार्य करने के लिए भेजे जाते हैं और कार्य पूरा होने के पश्चात् धरती से प्रस्थान कर जाते हैं। भगवान किसी को कर्मफल देने या किसी का कर्मफल काटने में असमर्थ होते हैं क्योंकि कोई भी भगवान सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान नहीं होता। ये तीनों गुण केवल परमशक्ति में ही होते हैं, भगवान अपनी इच्छा से कुछ नहीं करते अपितु सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर छोड़ देते हैं। जिस प्रकार साधारण इन्सान देवी-देवताओं की पूजा करते हैं उसी प्रकार भगवान परमशक्ति को महत्व देते हैं। ईश्वर उन्हें संसार में अजय सिद्ध करते हैं। उनके माध्यम से किसी सीमा तक ईश्वरीय गुणों का प्रदर्शन भी होता है और चमत्कार भी होते हैं। भगवान धरती पर इन्सानी रूप में ही आते हैं। इस सम्बन्ध में इतना स्पष्ट करना है कि वास्तव में भगवान उसे ही कहा जाता है जब ईश्वर स्वयं इन्सानी रूप में धरा पर आते हैं। परमशक्ति का सम्बन्ध सारी सृष्टि से होत ा है। वह तो भगवानों की भी पूजनीय है। वास्तव में भगवान एक ही होता है जो सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है, शक्ति अदृश्य है तथा भगवान उसका सदृश्य रूप होता है।

भक्त :-

जो इन्सान अपने इष्ट का आज्ञाकार, वफ़ादार और सेवादार होता है, अपने इष्ट से निःस्वार्थ प्यार करता है, भक्त कहलाता है। भगवान के भक्त होते हैं। भक्त अपने इष्ट से कभी भी गिला-शिकवा नहीं करत ा। वह हमेशा अपने मालिक की रज़ा में रहत ा है। उसका उद्देश्य केवल अपने स्वामी को प्रसन्न करना होता है। भक्त की कभी पूजा नहीं होती, उसका केवल आदर-सम्मान होता है। जैसे भगवान श्री राम जी के भक्त वीर हनुमान और तुलसीदास जी हुए। भगवान श्री कृष्ण जी के भक्त ों में से मोरध्वज, मीरा जी, सूरदास और सुदामा जी हुए हैं। भगवान शिव के भक्त वीरभद्र जी, बाबा बालकनाथ एवं नारद जी हुए। इसी तरह भगवान श्रीहरि जी के भक्त प्रहलाद और भक्त ध्रुव हुए। इन सभी भक्तों ने अपने स्वामी से निःस्वार्थ प्यार किया।

12. ईश्वर-इन्सान

ईश्वर :-

ईश्वर वह असीम शक्ति है जिसे शब्दों में परिभाषित नहीं किया जा सकता लेकिन उसके सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप में कहा जा सकता है कि इस सृष्टि को रचने वाली एक शक्ति है जो न नर है न नारी है। परमशक्ति अनादि, अनन्त है और इन्सान के लिए प्रायः अगम्य, अगोचर रहती है। वह सभी शक्तियों की स्रोत है। वह सर्वरूपिणी तथा सर्वभ ुवन वन्दनीय है। जीव-निर्जीव को रचने वाली और उन्हें नियमों में बांधने वाली है। वह जीवों की पालनकर्ता व संहारकर्ता है। वह सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है। वह न्यायकारी होते हुए भी परम दयालु और कृपालु है। वह सुखों की भण्डार और आनन्द की दाता है। उसी के हाथ में इन्सान का सुख-दुःख, यश-अपयश, लाभ-हानि, सफलता-असफलता, खुशी-ग़मी और जीवन-मृत्यु है। पूजा के योग्य केवल परमशक्ति ही है जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। वही जानती है कि उसे कौनसा व्यक्ति कहाँ पर याद कर रहा है, चिंतन-मनन कर रहा है। जो व्यक्ति अन्य रूपों की पूजा करते है

जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं होते है उनकी पूजा का फल भी परमशक्ति ही देती है जब वह शक्ति अदृश्य से सदृश्य बनती है, तब वह सर्वगुण सम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी, पूर्ण और अजय होती है। सदृश्य रूप में उसे शिव कहते है, सदृश्य रूप में होते हुए भी वह कार्य अदृश्य रूप में करते है। उसी शक्ति को ही ईश्वर, अल्ला, वाहिगुरु, गॉड, राधा स्वामी, निरंकार, कुदरत, नेचर आदि कहा गया है। वह शक्ति निराकार होते हुए भी साकार है और साकार होते हुए भी निराकार है।

इन्सान :-

ईश्वर ने हर चीज का जोड़ा बनाया है। इसी तरह ईश्वर और इन्सान का भी जोड़ा है। इन्सान ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है। ईश्वर के बिना इन्सान हो ही नहीं सकता है लेकिन यदि सृष्टि मे सभी कुछ हो, पर इन्सान न हो, तो ईश्वर का भी कोई महत्त्व नहीं हो सकता है। परमशक्ति भी इन्सान के साथ ही अपना सम्पर्क करती है। ईश्वर ने उसे ही सब प्राणियों का सरताज बनाया है, उसे ही बुद्धि तत्व दिया है, ईश्वर को जानने की शक्ति प्रदान की है और अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा भी प्रदान की है। इन्सान को ही ईश्वर ने अपना सांझीदार, राज़दार बनाया है और उसको ही अपने बारे में ज्ञान करवाया है। इन्सान कर्मफल भोगता है जबकि ईश्वर कर्मफल दाता है। इन्सान विकारों के अधीन कार्य करता है जबकि विकार ईश्वर के अधीन होते हैं। ईश्वर ने सृष्टि में जो कुछ भी बनाया है इन्सान के लिए ही बनाया है और इन्सान को केवल अपने लिए बनाया है। परमशक्ति सब की जन्म दाता है, वह उन्हें महत्व देती है जो उसे प्यार करते है, उसकी सोच के साथ अपनी सोच मिला कर चलते है, वह उनकी सहायता और रक्षा भी करती है। इसलिए इन्सान का कर्तव्य है कि वह ईश्वर के अस्तित्व को माने, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे, उससे प्यार करे, दु:ख के समय उनसे प्रार्थना करे और सुख के वक्त उनका शुक्रगुज़ार रहे। इन्सान का कर्तव्य है कि वह जीवन में हर कार्य के लिए प्रथम स्थान ईश्वर को दे और उसकी कृपा का पात्र बने, जिससे उसका वर्तमान जीवन तथा भावी जीवन सफल हो सके।

13. शिव-शक्ति

समाज में प्राय: शिव को पुरुष रूप में और शक्ति को स्त्री रूप में देखा और माना जाता है। आमतौर पर इन्सान शिव को उस रूप में देखता है जो रूप चित्रों या कैलंडरों में दर्शाया गया है और शक्ति को अष्ट-भुजी रूप में देखता है, जबकि शिव का शाब्दिक अर्थ है, कल्याणकारी और शक्ति उसका प्रचण्ड रूप है। श्री मदन धाम अध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप में अध्यात्मवाद का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है और सच्चाई पर से पर्दा उठा रही है। माणकपुर दरबार में परमशक्ति ने क्रियात्मक रूप में सिद्ध किया है कि शिव और शक्ति दो नहीं अपितु एक हैं। शिव किसी व्यक्ति का नाम नहीं है अपितु शक्ति का ही नाम है, शक्ति की पूजा शिव रूप में ही होती है। जब परमशक्ति निराकार या अदृश्य होती है तो वह शक्ति होती है जैसे कि परमशक्ति अपने सम्बोधन में भी स्पष्ट करती है कि *"मैं न नर हूँ न नारी हूँ, मैं तो एक शक्ति हूँ, पर युगों-युगों के पश्चात् अपनी इच्छा से नर रूप में धरा पर आती हूँ।"* इस से यह स्पष्ट होता है कि वही शक्ति निराकार होती है पर जब वह नर रूप में धरती पर आती है तब वह अपने गुणों का प्रदर्शन करती है और शिव कहलाती है

। उस समय साकार रूप के शरीर में शक्ति का समावेश होता है, शरीर ही शक्ति की पहचान होता है तथा परमशक्ति साकार रूप की माया बनकर कार्य करती है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि शिव-शक्ति दो नहीं अपितु एक हैं पर रूप दो हैं जैसे पानी तरल है, जब तापमान बढ़ता है तो वह भाप बन जाता है और जब तापमान शून्य से नीचे गिर जाता है तो वह ठोस बर्फ़ का रूप धारण कर लेता है। वास्तव में तीनों रूपों में वह पानी ही है। जब तरल है तब भी पानी है, जब वाष्प रूप (भाप) में है तब भी पानी है और जब ठोस रूप (बर्फ़) में है तब भी पानी ही है अर्थात् उसका मूल रूप पानी ही है। इन तीनों रूपों में उसके भौतिक गुण ही बदलते हैं परन्तु रासायनिक गुण वही रहते हैं। इसी तरह शिव और शक्ति के भी क्रमशः साकार और निराकार रूपों के गुणों में परिवर्तन आता है परन्तु सिद्धांत वही रहते हैं।

14. ब्रह्म और पारब्रह्म

शिव और शक्ति की तरह समाज में ब्रह्म और पारब्रह्म के अस्तित्व को भी अलग-अलग मानते हैं। उनका मत कि ब्रह्म से आगे पारब्रह्म होता है। समाज की इस धारणा को भी श्री मदन धाम में क्रियात्मक रूप में सिद्ध किया गया है कि ये दो नहीं अपितु एक हैं। परमशक्ति की घोषणा है कि वह अदृश्य से सदृश्य बनी है। उसका अपना शरीर है और उसका नाम मदन है। इसका अर्थ है कि श्री मदन जी परमशक्ति के साकार रूप हैं। जब शक्ति अदृश्य होती है तो वह पारब्रह्म कहलाती है और जब वह सदृश्य बनती है तो वह ब्रह्म कहलाती है, इस बात को सिद्ध करने के लिए निराकार शक्ति का स्थान दरबार की पांचवी मंजिल पर बनवाया गया था। उस स्थान पर जा कर श्री मदन जी पौने चार वर्ष तक पूजन करते रहे और उतना समय उन्हें नब्ज़ रुकने का असहनीय कष्ट होता रहा। जब श्री मदन जी को पारब्रह्म के स्थान पर विराजमान करवा कर उनका पूजन करवाया गया तो उन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ। पूजन पचास दिन तक होता रहा और उन पचास दिनों में श्री मदन जी को नब्ज़ रुकने का कष्ट नहीं हुआ। परन्तु जब फिर उन्होंने निराकार शक्ति का पूजन शुरू किया तो उन्हें फिर वही असहनीय कष्ट सहन करना पड़ा। अंत में परमशक्ति का आदेश हुआ कि पांचवें स्थल को गिरा दिया जाए क्योंकि जब अदृश्य शक्ति स्वयं सदृश्य रूप में धरा पर आई है तो निराकार और साकार रूप में कोई अन्तर नहीं रहता अर्थात् जब पारब्रह्म स्वयं ब्रह्म बना हो तो उस समय पारब्रह्म का अलग अस्तित्व नहीं रहता। उस समय महत्व ब्रह्म का ही होता है।

15. आदिदेव शिव — महाप्रभु

आरम्भिक काल में जब मानव जाति असभ्य थी, सामाजिक ढांचा न होने के बराबर था, मानव की अपनी कोई पहचान नहीं थी और न ही उसे जीने का ढंग आता था। उस समय परमशक्ति ने मनुष्य को सभ्य बनाने के लिए, अपनी पहचान करवाने के लिए तथा जीने का ढंग बताने के लिए स्वयं "आदिदेव" या "आदिदेव शिव" के रूप में धरती पर अवतरण किया। आदिदेव के आने से पहले मानव जाति को भगवान और पूजा पद्धति के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं था। समाज में रहकर आदिदेव ने लोगों के समक्ष उन ईश्वरीय गुणों, सिद्धांतों और शक्तियों का प्रदर्शन किया जो उस समय मानव जाति के लिए आवश्यक थे। "आदिदेव" किसी को भी वरदान देने में सक्षम थे।

जब लोगों ने "आदिदेव" द्वारा ईश्वरीय गुणों, शक्तियों और सिद्धान्तों का प्रदर्शन देखा तो वे उनसे प्रभावित हुए। इसीलिए वे लोग़ आदिदेव को उच्चस्तरीय व्यक्तित्व मानने लगे। दैवी शक्तियों के प्रदर्शन के कारण "आदिदेव" इन लोगों में पूजनीय बन गए। जो इन्सान उस समय "आदिदेव" के सम्पर्क में आए, उन्हें देवी या देवता कहा गया और "आदिदेव शिव" को "महादेव" माना गया।

धीरे-धीरे जब सामाजिक ढांचा बदलने लगा, मानव जाति की पहचान होने लगी और मानव सभ्य बनने लगा तो जो ज्ञान उसने "आदिदेव" से प्राप्त किया था। वह उस पर चलने लगा तथा उसने अपने जीवन के ढंग में भी परिवर्तन कर लिया। इस तरह धीरे-धीरे मानव जाति असभ्य से सभ्य बन गई। सभ्य समाज आदिदेव को महाप्रभु के नाम से पुकारने लगा अर्थात् आदिदेव शिव, प्रभु या महाप्रभु उस अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च शक्ति के साकार रूपों के नाम हैं, जिसने इस सारी सृष्टि की रचना की, जिसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।

16. ब्रह्मा, विष्णु, महेश

हिन्दू समाज में ब्रह्मा, विष्णु और महेश नाम बहुत प्रचलित हैं। उनका मत है कि ब्रह्मा जी इस सृष्टि के रचयिता हैं, भगवान विष्णु जी पालनकर्ता हैं, त्रिलोकीनाथ हैं। भगवान महेश के सम्बन्ध में समाज का मत है कि वह जटाधारी हैं। समाज में उनको भगवान शिव भी कहते हैं। वे इस सृष्टि के संहारकर्ता भी माने जाते हैं। इस के अतिरिक्त यह धारणा भी है कि उस अदृश्य शक्ति ने अपनी इच्छा से एक ही समय तीन नर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश पैदा किए। ब्रह्मा को सृष्टि की रचना का, विष्णु जी को जीवों के पालन का और महेश जी को जीवों के संहार करने का कार्य सौंपा।

श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। यहाँ परमशक्ति स्वयं नर रूप में आध्यत्मिक शिक्षा का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है। यहाँ परमशक्ति ने समाज के उपरोक्त मत का खंडन करते हुए स्पष्ट किया है कि ये तीनों परमशक्ति के ही गुणात्मक नाम हैं। जब सभी कहते हैं कि सृष्टि का मालिक एक है तो तीन कैसे हो सकते हैं। परमशक्ति ने स्पष्ट किया है कि ये सब ऋषियों–मुनियों की कल्पना है और ब्रह्मा, विष्णु, महेश नाम की कोई चीज़ नहीं है, यदि ये होते तो अन्य धर्मों में भी इनका वर्णन होता। सारी सृष्टि में सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान केवल एक है और वह परमशक्ति है, वही अदृश्य है, वही सदृश्य है। उस के अतिरिक्त कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं है। परमशक्ति ही जन्मदाता है, पालनकर्ता है और संहारकर्ता भी है। यह तीनों गुण परमशक्ति के ही हैं। पर ऋषियों-मुनियों ने समाज को ज्ञान देने के लिए इन तीनों गुणों के भिन्न-भिन्न पात्र दर्शाए ताकि समाज उस सर्वशक्तिमान के उपरोक्त तीनों गुणों को जान सके।

शक्ति, महाशक्ति, परमशक्ति के स्वरूप

निराकार शक्ति	*अदृश्य रूप*	*सदृश्य या साकार रूप*

शक्ति	आत्मा	पुरुष	गुरु
महा शक्ति	महा आत्मा	महा पुरूष	महा गुरु
परमशक्ति	परमआत्मा	परम पुरुष	परम गुरु

उपरोक्त विवरण की संक्षिप्त व्याख्या नीचे दी गई है :

परमशक्ति ही हर रूप में कर्ता है। वह अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। उपरोक्त सब उसी की रचना और रूप हैं पर गुण सभी के अलग-अलग हैं।

शक्ति :

शक्ति तो हर जीव में व्याप्त हैं, जो प्राय: मूक दर्शक रह कर ही कार्य करती है। वह नर-नारी अर्थात् स्त्री-पुरुष का रूप धारण करती है। जब वह शरीर में होती है तो उसे ही आत्मा कहा जाता है। जिनमें वह शक्ति मूक दर्शक रह कर ही कार्य करती है। प्राय: ऐसे लोग़ स्वार्थी होते हैं और अपने परिवार तक ही सीमित रह कर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। वे विकारों के अधीन हो कर ही कर्म करते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य भौतिक सुखों की प्राप्ति ही होता है। इनमें से ही अधिकांश लोग़ देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। जो लोग़ देवी-देवताओं की पूजा करवाते हैं, समाज में उन्हें गुरु कहते हैं पर उनका न तो परमशक्ति से सम्पर्क होता है और न ही वे परमशक्ति तक पहुंचे होते हैं। वे देवी-देवताओं तक ही सीमित रहते हैं। जो लोग़ देवी-देवताओं की पूजा करते हैं उन में से ही कुछ लोगों पर देवी-देवताओं की मेहर हो जाती है। कुछ समय बाद लोग़ उनको ही देवी-देवताओं के रूप में मान्यता दे देते हैं।

महाशक्ति

यह परमशक्ति का दूसरा रूप है। यह महान् आत्मा बन कर शरीर में आते हैं। इनको ही महापुरुष, ऋषि-मुनि, भगवान, रसूल आदि कहा जाता है। उनमें या तो परमशक्ति बात करती है या वह उनकी बुद्धि पर नियंत्रण करके स्वेच्छा से कार्य करवाती है। इनमें से ही कुछ महागुरु बनते हैं जिनका सम्पर्क परमशक्ति के साथ होता है और वे अपने पास आने वालों को ज्ञान देकर परम आत्मा, परम पुरुष, परम गुरु की पूजा, भक्ति करवाते हैं। महान् आत्माओं में से ही परमशक्ति ही महादेव, महेश्वर, भगवान और रसूल के रूप में मान्यता देती है। वे सब महान् गुणों के स्वामी होते हैं। ये अपने लिए कम और दूसरों के लिए अधिक जीते हैं। ये ईश्वर पर विश्वास करते हुए नेक कर्म, सद्व्यवहार और सबसे प्यार करने की कोशिश करते हैं। ये विकारों से पूरी तरह मुक्त तो नहीं होते पर विकारों का सदुपयोग करते हैं।

परमशक्ति

वैसे तो परमशक्ति असीम है, उसे सीमा में नहीं बांधा जा सकता, फिर भी उसके सबंध में संक्षिप्त रूप में कहा जा सकता है कि वह अनादि, अनन्त, और सर्वोच्च है, वह प्राय: इन्सान के लिए अगम्य, अगोचर रहती है और वही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है। वह किसी को भी किसी भी रूप में मान्यता दे सकती है। परमशक्ति जब किसी व्यक्ति का शरीर धारण करती है या मान्यता देती है तो उस शरीर में वह परम आत्मा बन कर विद्यमान रहती है और उसे अपनी इच्छा से चलाती है। उस शरीर को परम पुरुष, परम देव, परम गुरु, सत्गुरु या सद्गुरु माना जाता है। परमशक्ति उस शरीर के माध्यम से अपने कुछ नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करती है। इन रूपों में परमशक्ति ही कार्य करती है। ये सारी परमशक्ति की ही रचनाएँ हैं। वास्तव में परमशक्ति ही हर रूप में कर्ता है।

वास्तव में जब परमशक्ति स्वयं इन्सानी रूप में धरती पर आती है तो वह शरीर सर्वगुण सम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अन्तर्यामी, पूर्ण और अजय होता है। वास्तव में वही पूर्ण-परमेश्वर, ब्रह्म, परमपुरुष, परमदेव, परमगुरु, एवम् सद्गुरु होता है।

अध्यात्मवाद में कुल-देवता से परमशक्ति तक जितने भी नाम हैं श्री मदन धाम में परमशक्ति श्री मदन जी ने इन सब की भूमिका निभा कर क्रियात्मक रूप में सिद्ध किया है कि इनकी पूर्व जन्मों की पूजा, भक्ति के आधार पर परमशक्ति ने ही इनके नाम रखे हैं तथा इनको यश-मान दिया है। वास्तव में ये सब अपने आप में कुछ नहीं हैं। किसी के पास भी कोई शक्ति नहीं होती। कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं होता। केवल परमशक्ति ही इन रूपों में काम करती है जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। वही श्रद्धालुओं को उनके स्थानों पर भेजती है, वही उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करती है तथा उन रूपों में श्रद्धालुओं को दर्शन भी देती है।

यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि इनका अस्तित्व है भी और नहीं भी। जो इन में विश्वास रखते हैं, उन पर इनका प्रभाव पड़ता है, उनके लिए इनका अस्तित्व हैं। जो इनमें विश्वास नहीं रखते उन पर इनका प्रभाव नहीं होता। उनके लिए इनका कोई अस्तित्व नहीं है।

सत्य तो यह है कि उपरोक्त वर्णित सभी रूप किसी न किसी समय धरती पर आए। उन्होंने कष्ट-परेशानियाँ सहन कीं, ईश्वर की भक्ति भी की और परमशक्ति के उदेश्य की पूर्ति के लिए योगदान भी दिया। शरीर त्यागने के बाद वे मोक्ष पद को प्राप्त होते हैं और जब तक वे मोक्ष में रहते हैं वे जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त रहते हैं परन्तु परमशक्ति ने उनका अस्तित्व रखा हुआ है। इसके तीन मुख्य कारण हैं जो निम्नलिखित हैं :

1. उनके नाम रखने के लिए उनको यश-मान दिया।

2. परमशक्ति सभी को अपने तक नहीं पहुँचने देती, इसलिए सधारण इन्सान के लिए पड़ाव रखे गए हैं।

3. इन्सान को कर्मफल देने के लिए भी उनके रूपों तथा नामों का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार परमशक्ति उनके नाम रखती है इसीलिए उनका अस्तित्व है। वास्तव में उनका अपना कोई अस्तित्व नहीं है । इन्सान का कर्तव्य है कि वह परमशक्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करे। जब इन्सान को ईश्वर के बारे में ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि उसको बनाने वाला कोई है, कर्मफल देने वाला कोई है तो उसे ईश्वर के साथ प्यार हो जाता है । वह उससे डरता भी है और उससे प्यार भी करता है।

15

परमशक्ति का अस्तित्व सिद्ध क्यों नहीं किया जा सकता ?

संसार में देवी-देवताओं, वीरों-पीरों, भगवानों के अनेक धार्मिक स्थान हैं। तांत्रिकों के अनेक स्थान हैं। इस संसार में हर इन्सान किसी न किसी समस्या में फंसा रहता है। क्योंकि इन्सान स्वार्थी है अत: जहां उसका स्वार्थ पूर्ण होता है, वहीं उसकी आस्था बन जाती है। किसी की मनोकामना देवी-देवताओं के पास जाने से पूर्ण होती है, किसी की मनोकामना वीरों-पीरों के स्थान पर जा कर पूर्ण होती है, किसी की भगवानों के स्थान पर जाने से पूर्ण होती है। कुछ ऐसे लोग़ भी हैं जिनकी समस्या का हल तांत्रिकों के पास जाकर होता है। जिसकी मनोकामना जहां पूर्ण होती है उसकी आस्था-विश्वास वहीं बन जाता है।

इन धार्मिक स्थानों पर कुछ ऐसे व्यक्ति भी पदासीन हैं जो इस बात का दावा करते हैं कि उनके पास कोई दैवी शक्ति है। कुछ लोगों के माध्यम से चमत्कार भी होते हैं। उनके माध्यम से लोगों की समस्याएं कुछ हद तक हल भी होती हैं पर संसार में ऐसे इन्सान भी हैं जो इन बातों पर विश्वास नहीं करते। उनका कहना है कि यदि किसी के पास दैवी शक्ति है तो वह सिद्ध कर के दिखाए परन्तु आज तक कोई भी इन्सान अपनी इच्छा से दैवी शक्ति के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सका। कोई यह सिद्ध क्यों नहीं कर सका कि उसके पास दैवी शक्ति है ? इसके कारण निम्नलिखित हैं :

1. परमशक्ति सदैव ही अपना अलग अस्तित्व बनाए रखती है :

परमशक्ति ही इस सृष्टि की रचयिता है। उस ने ही समय-समय पर महान्-आत्माओं को धरती पर भेजा और उनके माध्यम से अपने नियमों और गुणों का प्रदर्शन किया, परन्तु परमशक्ति ने अपना अस्तित्व सदैव अलग बनाए रखा क्योंकि वह महान्-आत्माएं अपने जीवन में लाचार, बेबस रहीं, उन्हें अनेक तरह की कष्ट परेशानियों का सामना करना पड़ा। आज उनके नाम हैं, लोग़ उनकी पूजा करते हैं परन्तु उन्होंने भी कहा है कि " तू बेअंत तेरी माया बेअंत तेरीयाँ तू ही जाने " अर्थात् परमशक्ति ने अपना पूर्ण भेद किसी को भी नहीं दिया।

2. परमशक्ति के सिवा कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं है:

परमशक्ति के सिवा कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं है और न ही परमशक्ति अपने यह गुण किसी को देती है क्योंकि इन्सान चाहे कितना भी महान् क्यों न हो जा□ उस पर विकारों का प्रभाव पड़ता है। परमशक्ति के सिवा कोई भी इन शक्तियों का सदुपयोग नहीं कर सकता। यदि परमशक्ति की इच्छा हो जाए तो वह शरीर का प्रयोग करके किसी सीमा तक उसके द्वारा अपनी शक्तियों का प्रदर्शन कर देती है। इसीलिए इन्सान उस महान् आत्मा को ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान मानने लगते हैं। वही महान्-आत्मा

किसी समय लाचार बेबस लगती है। अगर एक से ज्यादा सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान हो जाएं तो अध्यात्मवाद में अराजकता फ़ैल जाएगी। इसलिए परमशक्ति अपनी इच्छा से ही अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करती है।

3. कोई भी इन्सान अपनी इच्छा से परमशक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता :

आज तक जितनी भी महान् आत्माएं धरा पर आईं परमशक्ति ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें प्रयोग किया। चाहे उनके द्वारा अनेक चमत्कार भी हुए, लोगों ने उन्हें ही ईश्वर का रूप मान लिया। परन्तु जब तक वे धरती पर रहे लाचार, बेबस ही रहे। परमशक्ति ने उतना ही प्रदर्शन किया जितना जरूरी था अर्थात् परमशक्ति ने ही उनका प्रयोग अपनी इच्छा से किया।

4. परमशक्ति अपनी शक्तियां किसी को नहीं देती :

इन्सान विकारों के अधीन है। ईर्ष्या, द्वेष, नफ़रत आदि का प्रभाव भी इन्सान पर पड़ता है। इसलिए परमशक्ति किसी शरीर के माध्यम से अपने नियमों, शक्तियों का प्रदर्शन तो करती है परन्तु जो व्यक्ति किसी से भी ईर्ष्या, द्वेष, जलन नफ़रत न करता हो, न ही बदले की भावना रखता हो, न ही उसमें किसी के प्रति वैर विरोध हो, वह किसी का बुरा न सोचता हो, अपने पराए का भेद न रखता हो, जिसमें क्रोध की भावना न हो और न ही वह किसी को भी अपना दुश्मन मानता हो, उसमें सहनशीलता हो, नेक कर्म, सद्व्यवहार तथा सबसे प्यार करता हो, दूसरों से वैसा ही व्यवहार करता हो जो अपने लिए दूसरों से चाहता हो, ईश्वर से नि:स्वार्थ प्यार करता हो, उसका गुणगान करता हो, उसकी रज़ा में रहने वाला हो, वह हर कार्य प्रभु की इच्छा पर इस विश्वास से छोड़ता हो कि ईश्वर जो करता है ठीक ही करता है, वह किसी भी कार्य के लिए अपने को महत्व न देकर केवल ईश्वर को ही कर्ता मानता हो और सदा ही अपने जीवन में ईश्वर को प्रथम स्थान पर रखता है, तो ईश्वर उस इन्सान पर अपनी कृपा करते हैं। ईश्वर, जिसे परमशक्ति भी कहा गया है, जो सभी शक्तियों की स्रोत एवं स्वामिनी है, अपनी इच्छा से उन इन्सानी शरीरों के माध्यम से अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करती है। परमशक्ति स्वयं पर्दे के पीछे रह कर उन प्रदर्शनों का श्रेय उस इन्सानी शरीर को देती है। परन्तु अपनी शक्तियाँ किसी को भी स्थाई रूप से नहीं देती क्योंकि इन्सान होता तो विकारों के अधीन ही है। विकारों के अधीन होने के कारण वह किसी से निष्पक्ष हो कर न्याय नहीं कर सकता, न ही शक्तियों को संभाल सकता है तथा न ही उनका सदुपयोग कर सकता है। इसीलिए परमशक्ति अपनी शक्तियाँ किसी इन्सान को नहीं देती।

5. किसी भी इन्सान के पास ऐसी कोई दैवी शक्ति नहीं होती, जिसका प्रयोग वह अपनी इच्छा से कर सके :

किसी व्यक्ति के पास कोई शक्ति नहीं होती, केवल परमशक्ति ही इन्सान की भक्ति और प्यार के आधार पर उसके माध्यम से प्रदर्शन करती है। इसलिए कई बार उस व्यक्ति के द्वारा कही हुई बात सत्य हो जाती है और ऐसा लगता है कि उसके पास कोई दैवी शक्ति है। कई बार उसकी बात पूरी नहीं भी होती। चाहे कोई माध्यम आशीर्वाद दे, प्रार्थना करे, मंत्र का उच्चारण करे, झाड़ फूंक करे, पर शत प्रतिशत वह बात सार्थक या ठीक नहीं होती। जिस पर जितनी कृपा होती है उतना ही उसके द्वारा कही हुई बात सार्थक होती है, अर्थात उसके पास अपनी कोई दैवी शक्ति नहीं होती।

6. परमशक्ति किसी की भी चुनौती स्वीकार नहीं करती:

परमशक्ति अपनी इच्छा से अपना अनुभव देती है। यदि परमशक्ति ने अपनी पहचान न करवाई होती तो न ही भगवान होते, न ही भक्त होते और न ही धार्मिक स्थान होते। परमशक्ति के अस्तित्व दर्शाने के परिणामस्वरुप ही यह सब हुआ है। कितनी ही महान् आत्माएं हुई हैं जिनके माध्यम से परमशक्ति ने असम्भव से असम्भव कार्य भी पूरे कि□ परन्तु यदि माध्यम अहम् भाव में आकर कहे कि मैं ऐसा कर सकता हूँ या फिर कोई व्यक्ति उसे चुनौती दे कि वह ऐसा पुन: करके दिखाए तो परमशक्ति न तो चुनौती स्वीकार करती है और न ही उस आधार पर कार्य करती है। यदि परमशक्ति ऐसा करने लग जाए तो परमशक्ति का अनुभव प्राप्त करना तो बहुत सरल है। इसलिए उसके होने या न होने का द्वंद बना रहता है।

7. परमशक्ति अपनी इच्छा से ही अपना अस्तित्व सिद्ध करती है:

परमशक्ति अपना अस्तित्व केवल अपनी इच्छा से ही दर्शाती है। कितने ही लोग परमशक्ति की तलाश में निकले परन्तु उनमें से अधिकतर को निराशा ही हाथ लगी। कई बार इन्सान की कोई इच्छा भी नहीं होती पर परमशक्ति उसके साथ संपर्क स्थापित कर लेती है और अपना अस्तित्व दर्शा देती है। परन्तु कोई इन्सान अपनी इच्छा से परमशक्ति के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सकता

8. परमशक्ति अपना अस्तित्व प्राकृतिक ढंगों से दर्शाती है :

परमशक्ति उसे ही अपना अनुभव देती है जो उसके अस्तित्व में विश्वास रखता हो। शक्ति तो केवल शक्ति है। आज तक परमशक्ति को किसी ने धरा पर आए हुए नहीं देखा। परमशक्ति जब स्वयं अदृश्य से सदृश्य बन कर धरा पर आती है केवल तब ही वह अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन क्रियात्मक रूप में करके अपना □□□□□□□□□ सिद्ध करती है। परमशक्ति अपने नियमों में रह कर प्रमाण भी देती है। उसके सभी प्रदर्शन प्राकृतिक होते हैं।

यही मुख्य कारण हैं कि आज तक कोई भी परमशक्ति के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सका। परमशक्ति ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है। इसी तरह नास्तिक और आस्तिक का जोड़ा है। जिसे परमशक्ति अनुभव दे देती है, उसका विश्वास जहाँ बना देती है वह वहीं स्थिर हो जाता है। उसका विश्वास, श्रद्धा, प्यार उस जगह, उस रूप के साथ हो जाना स्वाभाविक है, पर जिसकी इच्छा पूरी नहीं होती उसको यह सब पाखंड, अर्थहीन, बेमतलब लगता है। जो ईश्वर के

अस्तित्व को नहीं मानते उनके हजारों ही प्रश्न होते है, हजारों ही तर्क हैं कि ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं है, सब कुछ अपने आप ही हो रहा है। पर जो ईश्वर को मानते हैं, उनके अपने ही प्रश्न हैं और अपने ही तर्क हैं। जिस को परमशक्ति अनुभव दे दे, उसके लिए परमशक्ति है। जिसको अनुभव न दे उसके लिए नहीं है। क्या परमशक्ति ही किसी को नास्तिक या आस्तिक बनाती है ? नीचे कुछ कारण दिए गए □□□ जिनके फलस्वरूप इन्सान आस्तिक या नास्तिक बनता है।

1. वातावरण और परिस्थितियां :

इन्सान के आस्तिक या नास्तिक होने में वातावरण और परिस्थितियों का बहुत योगदान होता है □ जैसे माता-पिता के संस्कार, शिक्षा और घरेलू हालात भी इन्सान को आस्तिक या नास्तिक बनाते हैं। ज़्यादातर इन्सान माता-पिता की शिक्षा और जो वे करते हैं, उनके प्रभाव में ही जीवन गुज़ार देता है। जो माता पिता ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं और उनका विश्वास दृढ़ होता है, तो उनके बच्चे भी ईश्वर में विश्वास करने वाले होंगे। जो माता पिता नास्तिक होते हैं या अस्थिर मानसिकता वाले होते हैं उनके बच्चे भी नास्तिक और अस्थिर मानसिकता वाले ही होंगे। इसी तरह इन्सान के मन पर संगति और हालात का प्रभाव पड़ता है। अगर इन्सान की संगत धार्मिक व्यक्तियों से है या उसका रोज़गार या दिनचर्या इस तरह का है जहाँ उस को ईश्वरीय या धार्मिक वातावरण में रहना पड़ता है तो भी इन्सान आस्तिक बन जाता है। उसके विपरीत जिस इन्सान की संगति नास्तिक व्यक्तियों के साथ है या उसका रोज़गार या दिनचर्या इस तरह के वातावरण में है जहाँ नास्तिक या नास्तिक विचारधारा का प्रभाव है तब भी इन्सान नास्तिक बन जाता है।

2. कर्मफल का सिद्धांत:

ईश्वर का कर्मफल देने का सिद्धांत है कि *"दूसरों से वैसा ही व्यवहार करो जैसा कि आप अपने लिए दूसरों से चाहते हो □"* इन्सान अपने जीवन में कुछ अच्छे और कुछ बुरे कर्म करता है, इसलिए उसका जीवन सुख दुःख का मिश्रण होता है। परमशक्ति कर्मफल दाता है। जब इन्सान को कर्मफल के आधार पर दुःख मिलता है तब वह कई जगह भटकता है, पर जब उसको राहत नहीं मिलती तो उसका विश्वास ईश्वर के ऊपर से उठ जाता है और वह नास्तिक बन जाता है। उसके विपरीत जिसके पूर्व जन्म के कर्म अच्छे होते है, चाहे वह ईश्वर को नहीं मानते, उसको जीवन साथी ऐसा मिल जाता है या ऐसी संगत मिल जाती है, जिससे उसके मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा बन जाती है। जब कभी उसके जीवन में दुःख आता है, तब चाहे वह अनमने भाव से भी प्रार्थना करता है, उसकी प्रार्थना सुनी जाती है। जिसके साथ ही उसकी श्रद्धा दृढ़ विश्वास में बदल जाती है भाव वह नास्तिक से आस्तिक बन जाता है।

3. प्रभु इच्छा :

प्रभु इच्छा से भी इन्सान नास्तिक से आस्तिक बन जाता है। जैसे एक इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता पर उसकी बुद्धि, निडरता, ईमानदारी, नम्रता, सभी को प्यार करने की आदत को देखते हुए ईश्वर अपनी इच्छा से भी इन्सान को आस्तिक बना देते हैं। उसको इस तरह के अनुभव देते हैं कि उसको ईश्वर के अस्तित्व को मानना ही पड़ता है। उसी तरह जब इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को तो मानता है पर मन, वचन और कर्म से दुष्कर्म करता है, ईश्वर के बताए नियमों की परवाह नहीं करता तब ईश्वर उसको अपने से दूर कर देते हैं, जिस कारण इन्सान दुष्कर्म करता जाता है। अत: नास्तिक बन जाता है।

16

परमशक्ति अपनी सर्वोच्चता सदैव बनाए रखती है

जैसा कि आप सब जानते हैं कि श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है, यहाँ आध्यात्मिक शिक्षा का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दिया जा रहा है। इस दरबार की स्थापना परमशक्ति ने स्वयं की है जो सृष्टि की रचयिता, पालनकर्ता और संहारकर्ता है। जिसके हाथ में इन्सान का जीवन-मृत्यु, लाभ-हानि, मान-अपमान, सफलता-असफलता, खुशी-गमी और सुख-दुःख है, जो कर्मफल दाता है, जिसके पास इन्सान ने शरीर छोड़ कर जाना है, जिसकी आवाज़ सुन कर जन्म-जन्म के पाप कट जाते हैं, वही शक्ति है जो इन्सान के अंदर भी है बाहर भी है, कण-कण में मौजूद है, वह ही सत्य, न्याय और प्यार की प्रतीक है।

सत्य पर चलना ईश्वर का धर्म है, सभी के साथ न्याय करना उनका कर्म है और सभी से प्यार करना उनका नियम है।

जिसकी आराधना ऋषि-मुनि, संत-फकीर, देवी-देवता, वीर-पीर, भगवान करते हैं, जिसे लोग ईश्वर, अल्लाह, वाहिगुरु, गॉड, राधास्वामी, निरंकार, शिव, ब्रह्म आदि नामों से पुकारते हैं। जो उस शक्ति को स्त्री रूप में मानते हैं वे उसे माँ दुर्गा, अम्बे, जगदम्बे, जगत जननी, जगदीश्वरी, महेश्वरी, महा-माया आदि नामों से पुकारते हैं। जो उसे किसी भी रूप में नहीं मानते वे उसको कुदरत, प्रकृति, अदृश्य शक्ति, नेचर, अनजान शक्ति और अनाम शक्ति आदि नामों से पुकारते हैं।

समाज में भी बहुत से भ्रम हैं। कोई कहता है कि ईश्वर है, कोई कहता है कि ईश्वर नहीं है। जो कहते हैं कि ईश्वर है, उनमें भी बहुत मतभेद हैं। कोई कहता है वह साकार है, कोई कहता है निराकार है और कोई कहता है कि वह निराकार होते हुए भी साकार और साकार होते हुए भी निराकार है। ईश्वर को साकार रूप में मानने वालों में भी मतभेद हैं। कोई उसे ब्रह्म, कोई राम, कोई शिव, कोई कृष्ण अथवा कोई यीशु भी मानते हैं। जो जिस रूप को मानता है वह दूसरे रूपों का खण्डन कर देता है। ईश्वर को निराकार रूप में मानने वाले भी उसको अनेक रूपों में मानते हैं जैसे बिंदु, चिराग, शिवलिंग, ओम्, एक ओंकार □ कोई उसको कैंडल के रूप में मानता है □ जो जिस रूप में मानता है वह उसको ही सर्वोच्च कहता है।

वास्तव में सर्वोच्च कौन है और क्यों है ? और वह सर्वोच्चता कैसे बनाए रखता है ?

जब कुछ भी नहीं था तब भी वह अदृश्य शक्ति मौजूद थी। उसी अदृश्य शक्ति ने, जो अनादि और अनन्त है, इस सृष्टि की रचना की। जीव, निर्जीव बना कर उनको नियमों में बाँधा। जब सब कुछ बन कर तैयार हो गया, उसके बाद इन्सान अस्तित्व में आया। इन्सान और हर जीव नियमों में बंधा हुआ है, जैसे बाल अवस्था, बचपन, जवानी, अधेड़ और बुढ़ापे की अवस्था में से गुज़रना □ निश्चित समय तक हर जीव के शरीर का विकास होना और फिर रुक जाना □ यह सब कुछ सुनियोजित ढंग से नियमों में बंधा हुआ है। इसका अर्थ है कि यह सब कुछ बनाने वाला और नियमों में बान्धने वाला इन्सान नहीं है। इसलिए इन्सान सर्वोच्च नहीं हो सकता। इसका अर्थ है कि जो कुछ भी सृष्टि में बना है वह इन्सान ने नहीं बनाया जबकि इन्सान प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस से सिद्ध होता है कि इन्सान सर्वोच्च नहीं है। तो फिर सर्वोच्च कौन है ?

सर्वोच्च वही अदृश्य शक्ति है जिसने इस सारी सृष्टि की रचना की है, उसको ही सर्वोच्च शक्ति या परमशक्ति कहा गया है जिसके लिए कुछ भी असंभव नहीं । इससे यह स्पष्ट है कि परमशक्ति ने जीव-निर्जीव की रचना के बाद इन्सान की रचना की और उसे अपना अनुभव करवाया। अनुभव के आधार पर इन्सान ने जितनी श्रद्धा, लगन, विश्वास और भक्ति की, उसके अनुसार इन्सानों में से ही सर्वोच्च शक्ति ने किसी को देवी-देवता, किसी को वीर-पीर, किसी को भगवान, किसी को शक्ति और किसी को महाशक्ति बना दिया। इसका अर्थ है कि परमशक्ति के अतिरिक्त कोई भी सर्वोच्च नहीं है। परमशक्ति के अतिरिक्त सब उसकी रचना है और रचना कभी भी रचयिता से बड़ी नहीं होती। उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि सर्वोच्च केवल परमशक्ति है।

अब प्रश्न है कि जो सर्वोच्च है वह अपनी सर्वोच्चता कैसे बनाए रखता है ?

एक साधारण सी बात है कि जो सर्वोच्च होता है वह कभी नहीं चाहता कि कोई उसके आदेश या आज्ञा का उलंघन करे। इसी तरह परमशक्ति भी अपनी सर्वोच्चता बनाए रखने के लिए अपनी आज्ञा और आदेश का उलंघन नहीं चाहती □ जो इन्सान परमशक्ति की कही हुए बात को नहीं मानता, शक्ति चाहे निराकार में हो या साकार में, अर्थात आदेश किसी माध्यम के द्वारा दिया गया हो या स्वयं दिया हो, तो उसे कष्ट परेशानियों का सामना करना पड़ता है। महाभारत में श्री कृष्ण जी ने कौरवों को केवल पांच गांव पाण्डवों को देने के लिए कहा था, ताकि युद्ध की स्थिति को टाला जा सके □ पर कौरवों ने भगवान श्री कृष्ण जी की कही हुई बात को नहीं माना और इसका नतीजा कौरवों को भुगतना पड़ा □ युद्ध में असफलता का मुंह देखना पड़ा और उसके साथ-साथ सारा राज-पाट हाथों से निकल गया। इसी तरह भगवान श्री राम जी ने अपने दूत के हाथ सन्देश भेजा कि लंकापति रावण आदर सहित सीता उन्हें सौंप दें □ वह लंकापति रावण को माफ कर देंगे और लंका पर चढ़ाई नहीं करेंगे □ पर लंकापति रावण ने अहम् में आकर भगवान श्री राम जी के सन्देश को ठुकरा दिया □ फलस्वरूप रावण को युद्ध का सामना करना पड़ा और उसके सारे रिश्तेदार काल का ग्रास बने और उसको असफलता का मुंह देखना पड़ा।

आज परमशक्ति का ऐलान है कि वह निराकार से साकार बनी है, यह शरीर उसका है और उसका नाम मदन है। पहले भी परमशक्ति स्वयं धरती पर आती रही है पर उसका इतिहास कहीं नहीं मिलता। अपने साकार रूप में परमशक्ति ने अलग-अलग केन्द्रों की स्थापना करवाई है और केन्द्र संचालक नियुक्त किए हैं जिनके माध्यम से परमशक्ति वहाँ आने वाले श्रद्धालुओं से संबोधित होती है। साकार रूप में भी जब कोई श्रद्धालु उनकी आज्ञा या आदेश का पालन नहीं करता तो उसका नतीजा ठीक नहीं निकलता भाव उस व्यक्ति को दुखों-कष्टों का सामना करना पड़ता है। जब तक वह अपनी गलती के लिए पश्चाताप करते ंकिसी माध्यम के द्वारा ही दिया गया हो, उसे राहत नहीं मिलती। सदृश्य रूप में परमशक्ति ने स्पष्ट किया है कि मैं कभी भी नहीं चाहती कि कोई मेरी आज्ञा या आदेश का उलंघ्घन करे। जिसने ऐसा किया उसको सजा भुगतनी ही पड़ी।

अपनी सर्वोच्चता को बनाए रखने के लिए परमशक्ति ने कर्मफल देने का अधिकार केवल अपने पास रखा है क्योंकि परमशक्ति के अलावा कोई भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान नहीं होता। इसलिए इन्सान के द्वारा किए गए कर्मों का फल केवल परमशक्ति ही देती है। देवी-देव, वीर-पीर, भगवान किसी सीमा तक इन्सान की सांसारिक मनोकामनाएं तो पूरी कर सकते हैं पर इन्सान के द्वारा किए गए कर्मों का फल नहीं दे सकते। कर्मफल दाता केवल परमशक्ति ही होती है।

परमशक्ति ही इन्सानों में से देवी-देव, वीर-पीर, और भगवानों का चयन करती है। ऐसा परमशक्ति के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता क्योंकि कर्मफल दाता केवल वही है। परमशक्ति इन्सानों द्वारा की गई भक्ति श्रद्धा, प्यार, विश्वास, लगन और सद्कर्म का फल देने के लिए उन्हें साधारण से महान् आत्मा बनाती है। आज भी परमशक्ति सदृश्य रूप में साधारण इन्सानों में से ही देवी-देव, वीर-पीर आदि रूपों में स्थान दे कर महान् बना रही है और क्रियात्मक रूप में सिद्ध कर रही है कि उसके अतिरिक्त कोई भी किसी को देवी-देव, वीर-पीर और भगवान नहीं बना सकता भाव अपनी सर्वोच्चता को बनाए रखने के लिए यह अधिकार भी केवल अपने पास ही रखा है।

समय समय पर जितनी भी महान् आत्माएं या माध्यम धरती पर आए वह चाहे देवी देव, वीर-पीर, भगवान, रसूल, पैगम्बर आदि हैं, सभी को परमशक्ति ने बेबस, लाचार और मजबूर रखा, क्योंकि वास्तव में कर्ता केवल परमशक्ति ही है। वह अपनी इच्छा से जिस का जितना महत्व रखना चाहे उतना ही उसके माध्यम से प्रदर्शन करती है। इस तरह संसार में जितनी भी महान् आत्माओं के या अन्य माध्यमों के स्थान हैं वहां हर इन्सान को जा कर लाभ नहीं होता। किसी को किसी स्थान पर जा कर लाभ होता है, किसी को किसी स्थान से लाभ होता है। इसके अलावा जितनी भी महान् आत्माओं का परमशक्ति से संपर्क रहा, परमशक्ति ने अपनी माया का पूर्ण भेद किसी को भी नहीं दिया। इसलिए उन महान् आत्माओं को अंत में यही कहना पड़ा कि "हे ईश्वर ! तू बेअंत, तेरी माया बेअंत, तेरीयां तू ही जाने।" परमशक्ति ने आज तक किसी भी माध्यम के द्वारा अपने बारे में पूर्ण ज्ञान नहीं दिया और न ही कोई माध्यम ईश्वर को क्रियात्मक रूप में सिद्ध कर सका है। जितना भी ईश्वर ने उनको अनुभव दिया उन्होंने उतना ही मौखिक रूप में ज्ञान दिया तथा अपने अनुभव को कलमबद्ध किया।

उपरोक्त विवरण सिद्ध करता है कि कैसे परमशक्ति अपनी सर्वोच्चता हमेशा बनाए रखती है। उसका मुख्य कारण है कि केवल परमशक्ति ही अनादि-अनंत, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है उसके अलावा सब कुछ उसकी रचना है □ रचना कभी □□ सर्वोच्च नहीं हो सकती। उसको किसी न किसी के आगे झुकना ही पड़ता है और जो रचयिता है वह किसी के आगे नहीं झुकता, उसकी रचना को ही उसके आगे झुकना पड़ता है।

आस्तिक से नास्तिक और नास्तिक से आस्तिक क्यों और कैसे ?

प्राय: देखने में आया है कि कुछ इन्सान आस्तिक से नास्तिक बन जाते हैं, कुछ नास्तिक से आस्तिक बन जाते हैं। उसके पीछे क्या कारण है कि इन्सान के अंदर यह परिवर्तन होता है। इसको समझने से पहले यह समझना ज़रुरी है कि नास्तिक कौन है और आस्तिक कौन है ? समाज में ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाले को आस्तिक कहा जाता है और जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता है वह नास्तिक है। श्री मदन धाम आध्यात्मिक शिक्षा का प्रशिक्षण केन्द्र है। परमशक्ति श्री मदन जी अध्यात्मवाद के हर पहलू का ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रहे हैं। परमशक्ति ने संसार में हर चीज़ का जोड़ा बनाया है। उसी तरह से आस्तिक और नास्तिक का भी जोड़ा बनाया है। वास्तव में नास्तिक होना या आस्तिक होना अधिकतर पूर्व जन्म के कर्मों पर आधारित होता है। जिस को परमशक्ति अनुभव दे देती है, वह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार कर लेता है। जिस को परमशक्ति अपना अस्तित्व नहीं दर्शाती वह नास्तिक बन जाता है। जो परमशक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करता है वह आस्तिक है पर इसमें भी कुछ श्रेणियाँ हैं, स्तर हैं, क्योंकि प्रत्येक की आस्था विश्वास अलग-अलग हैं, इष्ट भिन्न-भिन्न हैं, पूजा पद्धती अलग-अलग है पर ये सभी आस्तिक माने जाते हैं।

कुदरत या नेचर रूप में मानना:

जो लोग़ मानते हैं कि इस सृष्टि को रचने वाली कोई शक्ति ज़रूर है जिसने इस ब्रह्मण्ड की रचना की है वह कुदरत है, नेचर है, जो कुछ भी हो रहा है वह कुदरत के ही करिश्मे हैं □ वे नेक कर्म करते हैं, अपना जीवन सरल ढंग से जीते हैं किसी का दिल नहीं दुखाते, अपने परिवार की देखभाल ठीक ढंग से करते हुए अपने फ़र्ज़ पूरे करते हैं। मानवता की भलाई में विश्वास रखते हैं और दूसरों को वहमों, भ्रमों और आडम्बरों से बाहर निकलाने का यत्न करते हैं।

देवी देवों या वीरों पीरों को मानना:

इस संसार में असंख्य लोग हैं जो अज्ञानतावश या अपने माता-पिता के संस्कारों के कारण देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। उनको ही सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान मानते हैं। उन भोले-भाले लोगों को पता ही नहीं होता कि इनके आगे भी कोई है जिसकी उनके इष्ट भी अराधना करते हैं। उनका जीवन इनकी पूजा पाठ तक ही सीमित रहता है।

भगवानों, महान् आत्माओं और गुरुओं के रूप में मानना:

परमशक्ति अनन्त गुणों की स्वामी है। उसकी माया बेअंत है जो इन्सान की बौधिक सीमा से परे है। उसे शब्दों में कहा नहीं जा सकता, विचारों से समझा नहीं जा सकता। इसलिए ज़्यादातर इन्सान ईश्वर को भगवानों के रूप में याद करते हैं या उन महान् आत्माओं के रूप में याद करते है जिन्होंने धर्मों की स्थापना की, समाज को नई दिशा दी, जीवन जीने की

राह बताई, गुरु बनकर ईश्वर के गुणों नियमों का ज्ञान दिया। इन्सान ईश्वर को उन रूपों में याद करके और उनसे प्यार करके ईश्वर की निकटता और ईश्वर के गुणों को महसूस करता है। परमशक्ति भी उन महान् आत्माओं के प्यार और भक्ति के अनुसार लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण करती है, उनका विश्वास, श्रद्धा, प्यार अपने इष्ट के प्रति बनाती है।

इन्सानों की उपरोक्त दी गई श्रेणियों को आस्तिक कहा जाता है। जो इन्सान ईश्वर के अस्तित्व को किसी रूप में भी स्वीकार करता है वह आस्तिक ही है क्योंकि कर्ता तो हर रूप में परमशक्ति ही है परन्तु वास्तव में आस्तिक वह है जो परमशक्ति तक पहुँच जाता है। परमशक्ति तो अदृश्य है उसे आँखों से नहीं देखा जा सकता पर इन्सान उसकी पूजा करना चाहता है। साधु सन्यासी तो निराकार का चिंतन-मनन कर सकते हैं पर गृहस्थी लोगों के लिए चिंतन-मनन करना, पूजा-भक्ति करना, ध्यान को केंद्रित करना बहुत कठिन होता है। इसलिए गृहस्थी लोगों को ध्यान को केंद्रित करने के लिए कोई न कोई रूप चाहिए होता है।

ऊपर जो भी श्रेणियाँ दी गई हैं उनकी पूजा, भक्ति फलदायक तो है, पर ये सब आराध्यदेव तो हो सकते हैं पर इष्ट नहीं हो सकते। सब की इष्ट तो परमशक्ति है। देवी-देवता, भगवान, महान् आत्माएं, गुरु आदि किसी न किसी विचारधारा का प्रतीक हैं वह भी उस परमशक्ति की आराधना करते रहे हैं। परमशक्ति ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनका प्रयोग किया इसलिए उनका महत्व रखना भी ज़रुरी है। इसलिए इन्सान का भी फ़र्ज़ है कि वह उस कर्ता की पहचान करे, उसके गुणों शक्तियों को जाने, उससे प्यार करे, फिर रूप चाहे कोई हो, अगर इन्सान परमशक्ति के गुणों का ध्यान करके उसके मान्यता प्राप्त रूप को याद करता है तो वह परमशक्ति को ही याद करता है। परमशक्ति ने इन्सान की सहूलियत के लिए अपनी पूजा के लिए चार रूपों को मान्यता दी है।

5. निर्जीव चिह्नों को अपने रूप में मान्यता देनी।
6. सजीव रूप में मान्यता देनी।
7. इन्सानी शरीर धारण करके मान्यता देनी।
8. इन्सानी रूप में स्वयं आना।

परमशक्ति जो भी करती है इन्सान के हित में ही करती है। परमशक्ति ने जो भी बनाया है इन्सान के लिए बनाया है इसलिए उसके अस्तित्व को मानना और जो मिला है उसके लिए दाता का शुक्रगुज़ार होने वाला ही वास्तव में आस्तिक है।

वास्तव में नास्तिक कौन है ?

जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता वही नास्तिक है क्योंकि ईश्वर ने इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले ही उसकी ज़रूरत का हर प्रबन्ध सुनियोजित ढंग से किया। उसकी खुराक, हवा, पानी, वातावरण, मौसम, ऋतुओं आदि का प्रबन्ध किया और उन्हें नियमों में बांधा। क्या इन में से किसी भी चीज़ के कम या ज्यादा होने से इन्सान का जीवन संभव हो सकता है। कौन है जिसने इन्सान के लिए सब कुछ बनाया ? जीव के पैदा होने से पहले उसकी माँ में दूध पैदा किया है। सारी सृष्टि के जीवों के अन्दर मोह ममता डाली, प्यार की भावना पैदा की। इन्सान को बुद्धि, भाषा, लिपि, मिलजुल कर समाज में रहने की भावना

दी । सारी सृष्टि बनाई, नियमों में बांधी । जिसने यह सब किया है क्या उसके उपकारों को भूलना चाहिए ? जो किसी के किए उपकारों को भूल जाए उसे कृतघ्न कहा जाता है । जो इन्सान उस सबसे बड़े दाता को ही भूल जाए और कहे कि यह सब तो अपने आप ही हो रहा है तो उससे बड़ा कृतघ्न और कौन हो सकता है ? ऐसा इन्सान नास्तिक है ।

वास्तव में नास्तिक वह है जो अपने दुखों और कष्टों के लिए ईश्वर को दोषी मानता है । परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्री मुख से ज्ञान दिया है कि इन्सान जो कर्म करता है उसका फल पाने के लिए जन्म लेता है और इन्सान के जीवन में जो भी सुख दु:ख आते हैं उसके आधार पर ही आते हैं । इसलिए जब इन्सान उसके अस्तित्व को तो मानता है पर अपने दुखों के लिए ईश्वर को दोषी मानता है, उसको बुरा-भला कहता है तब वह एक और अपराध कर रहा होता है । इसलिए इस तरह के इन्सान भी नास्तिक ही होते हैं ।

वह इन्सान भी नास्तिक है जो अपने स्वार्थों के पूरा न होने पर ईश्वर को दोषी मानते हैं और अपनी किस्मत को कोसते हैं । कुछ लोग इस तरह के होते हैं जो कर्मफल या पुनर्जन्म को नहीं मानते, उनका मानना है कि न ही कोई कर्मफल है न ही अगला जन्म है वे केवल वर्तमान में ही विश्वास करते हैं, वह इन्सान भी नास्तिक हैं । कर्मफल भोगने के लिए पुनर्जन्म होना है, कर्मफल दाता ने ही कर्मफल के आधार पर पुनर्जन्म देना है । कर्म, कर्मफल, कर्मफल दाता, पुनर्जन्म, जीवन की ही कड़ियाँ हैं । एक को भी न मानना नास्तिकता है ।

आस्तिक व्यक्ति नास्तिक क्यों बनता है?

8. जब इन्सान ईश्वर को पाने के लिए अपने कदम आगे बढ़ाता है तो उसके मार्ग में कई रुकावटें आती हैं, क्योंकि हर इन्सान ईश्वर के पास नहीं पहुँच सकता । मुश्किलें सिर्फ उनके सामने ही आती हैं जो ईश्वर प्राप्ति की इच्छा रखते हैं । जब इन्सान को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है त ो वह हताश निराश हो जाता है और ईश्वर से बेमुख होने लगता है ।

9. जब इन्सान ईश्वर को पाने के लिए आगे बढ़ता है तो ईश्वर भी उस व्यक्ति की परीक्षा लेते हैं कि इन्सान का विश्वास कहाँ तक है । इसलिए ईश्वर उसके सामने विपरीत परिस्थितियां पैदा कर देतें हैं । अपने तक पहुँचाने के लिए ईश्वर, इन्सान को हर तरह से मिट्टी में मिला देते हैं । जब इन्सान शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक तौर पर मिट्टी में मिलने लगता है तो उसका विश्वास डोल जाता है, क्योंकि हर इन्सान ईश्वर की परीक्षा में सफल नहीं हो सकता ।

10. ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखने वाला व्यक्ति जब श्रद्धा, विश्वास, लगन के साथ ईश्वर का जप-तप करने लगता है और अपना जीवन ईश्वर के सिद्धान्तों पर चल कर ही व्यतीत करता है । वह किसी से इर्ष्या, द्वेष, नफरत नहीं करता, पर इसके बावजूद भी अगर ईश्वर उसको अपना अनुभव नहीं करवाते तो भी इन्सान घबरा जाता है क्योंकि इन्सान नि:स्वार्थ कुछ नहीं करता । जब इन्सान का स्वार्थ पूरा नहीं होता तो उसकी दिलचस्पी कम होने लग जाती है । जब इन्सान का मनोरथ पूरा होता नज़र नहीं आता तब आस्तिक व्यक्ति का विश्वास भी डोल जाता है और अंत में व्यक्ति नास्तिक हो जाता है ।

11. इन्सान अपनी पहुँच और अपने सामर्थ्य से ज्यादा पाने का लालच रखता है पर मिलता उतना ही है जितना उसके भाग्य में होता है। जब इन्सान सख्त मेहनत करता है, साहस और ईमानदारी से आगे बढ़ने की कोशिश करता है पर उसको सफलता नहीं मिलती, तो वह ईश्वर के सम्मुख बार-बार प्रार्थना करता है और ईश्वर से सहायता की उम्मीद करता है, पर जब उसको सहायता नहीं मिलती, उसको लगता है कि कोई है ही नहीं, जो उसके प्रार्थना सुने। व्यक्ति निराश हो जाता है और ईश्वर से विमुख हो जाता है।
12. हर व्यक्ति को कर्म फल भोगना पड़ता है। परमशक्ति का नियम है कि वह इन्सान को उसके द्वारा किए गए हर कर्म का फल देती है चाहे वह दुष्कर्म हों या सद्कर्म हों। इन्सान अपने जीवन में कुछ नेक कर्म करता है, कुछ दुष्कर्म करता है। इसलिए उसका जीवन सुख और दुःख का मिश्रण होता है। जब इन्सान जीवन में दुष्कर्मों का फल भोगता है तो उसे कठिनाइयों, दुश्वारियों, परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इन्सान इन सबसे राहत पाने के लिए ईश्वर को याद करता है और उन सभी स्थानों पर जाता है जहां पर उसको अपेक्षा होती है और वह सब कुछ करता है जिससे उसे लगता है कि उसे कठिनाइयों से राहत मिलेगी। परन्तु जब ऐसा नहीं होता तो इन्सान का धीरे–धीर विश्वास उठने लगता है। इसके अतरिक्त उसके द्वारा पूर्व जन्म में किए गए कर्मों के आधार पर परमशक्ति इन्सान का नया जीवन निश्चित करती है। उसके माता-पिता, बहन-भाई, पति-पत्नी, बच्चे, पारिवारिक वातावरण और वह परिवार आस्तिक होगा या नास्तिक होगा, इन सब बातों का प्रभाव भी इन्सानी जीवन पर पड़ता है और वह व्यक्ति आस्तिकता से नास्तिकता की ओर बढ़ जाता है।
13. मनोबल के आधार पर इन्सान तीन तरह के होते हैं। एक वह जो कठिन कार्य देख कर शुरू ही नहीं करते। दूसरे वह जो शुरू तो करते हैं पर जब रास्ते में बाधाएँ, रुकावटें, परेशानियां आती हैं तो वह घबरा कर वह कार्य छोड़ देते हैं। इस तरह के लोग अध्यात्मवाद में भी जब निराश हो जाते हैं तो वह नास्तिक बन जाते हैं। तीसरी किस्म के वह लोग़ होते हैं जो ईश्वर पर विश्वास करते हुए अपना कर्म करते हैं, बाधाओं ,परेशानियों से घबराते नहीं। ऐसे व्यक्ति ही मंजिल को प्राप्त करते हैं।
14. वो व्यक्ति जो केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ईश्वर की ओर बढ़ते हैं। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ही प्रार्थना करते हैं पूजा अर्चना करते हैं। मगर जब उनका स्वार्थ पूरा नहीं होता तो इस तरह के लोग़ नास्तिक बन जाते है। ईश्वर के होने या न होने का मापदण्ड केवल इच्छाओं की पूर्ति नहीं होता। ईश्वर अपनी इच्छा से ही इन्सान की मनोकामना पूर्ण करते हैं, कष्ट परेशानियों में राहत देते हैं।

नास्तिक से आस्तिक कैसे बनता है:

प्राय: देखने में आता है कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, विश्वास, लगन बहुत होती है परन्तु उनके जीवन में कुछ हालत ऐसे बन जाते हैं, घटनाएँ ऐसे घट जाती हैं कि वह ईश्वर से विमुख हो जाते हैं भाव नास्तिक हो जाते हैं। उसी तरह से कुछ ईश्वर का विरोध

करते हैं, उनके अस्तित्व को नहीं मानते पर उनके जीवन में इस तरह के हालत बन जाते हैं, ऐसी घटनाएं घट जाती हैं कि वह नास्तिक से आस्तिक और कई बार आस्तिक से महान् बन जाते है। नीचे कुछ कारण दिए गये हैं जिनके कारण इन्सान नास्तिक से आस्तिक बन जाता है

पूर्व जन्म के संस्कार :

परमशक्ति का यह नियम है कि हर इन्सान को कर्मफल भोगना ही पड़ता है चाहे इन्सान परमशक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करे या न करे। पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर ही इन्सान को सफलता-असफलता, सुख-दुःख, यश-अपयश, लाभ-हानि, घर-परिवार, हालात, वातावरण एवं परस्थितियाँ आदि मिलते हैं। इसी तरह इन्सान का आस्तिक होना भी पूर्व जन्म के संस्कारों पर आधारित होता है। एक इन्सान जो नास्तिक है पर उसके पूर्व जन्म की भक्ति के कारण ईश्वर उसे अपना अनुभव देकर आत्म ज्ञान भी करवा देते हैं फलस्वरूप इन्सान नास्तिक से आस्तिक बन जाता है।

परिस्थितियाँ और हालात :

जैसे कि कहा जाता है कि इन्सान परिस्थितियों का गुलाम है अर्थात् हालात ही इन्सान को नास्तिक या आस्तिक बनाते हैं। इन्सान के जीवन में ऐसे हालात बन जाते हैं, जैसे एक इन्सान मुसीबत में भी फंस जाता है। उसको कोई रास्ता नज़र नहीं आता है फिर कोई उसको सलाह देता है कि ईश्वर के आगे विनती करने से उसकी प्रार्थना ज़रूर सुनी जाएगी। जब इन्सान की प्रार्थना सुनी जाती है और वह मुसीबत में से बाहर निकल आता है। तब उसके मन में ईश्वर के प्रति विश्वास होना स्वाभाविक ही है।

महान् आत्माओं की प्रेरणा:

संसार में समय-समय पर महान् आत्माएं इन्सान को ईश्वर का सन्देश और ज्ञान देती रहती हैं। कई बार इन्सान उन महान् आत्माओं के व्यक्तिगत जीवन से प्रभावित हो कर भी ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार कर लेता है। उनसे ज्ञान प्राप्त करता है और अपने जीवन को सफल बनाता है। जैसे पूर्ण गुरु का मिलना, पूर्ण गुरु अपनी कृपा से ही इन्सान को नास्तिक से आस्तिक बना देता है।

संगति और साथियों का प्रभाव:

कई बार इन्सान को जीवन में इस तरह का साथी मिल जाता है जिसकी आदतें, सोच, विचार, संस्कार आदि इन्सान को इतना प्रभावित करते हैं कि उसके प्रवाह में इन्सान की सोच ही बदल जाती है। जैसे किसी की पत्नी या करीबी दोस्त ऐसा भी मिल जाता है जो दृढ़ विश्वासी, संयमी, ईश्वर को प्यार करने वाला और प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है तब कई बार इन्सान उसके नज़दीक रहने से ही आस्तिक बन जाता है। जैसे कि वर्णन किया गया है कि इन्सान पर संगति और वातावरण का प्रभाव पड़ता है। यदि इन्सान का साथ अच्छे और धार्मिक व्यक्तियों से होता है तो उस पर धार्मिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है जिसके कारण उसके मन में धीरे–धीरे परिवर्तन होने लगता है और वह आस्तिकता की और बढ़ता है।

ईश्वर-इच्छा के कारण:

जब इन्सान ईश्वर को कुदरत के रूप में मानता है उसका विरोध नहीं करता। वह मानवता के हित में तथा दूसरों के भले के लिए कर्म करता है। वह नेक कमाई करता है, किसी का दिल नहीं दुखाता, सभी से प्यार करने की कोशिश करता है। उसके पूर्व जन्म के कर्म चाहे जैसे भी हों, अगर प्रभु इच्छा हो जाए तो ईश्वर किसी न किसी ढंग से इन्सान को अपना अस्तित्व दर्शा कर उसे आस्तिक बना देते हैं तथा उसके स्वभाव, रूचियों, और आदतों में भी परिवर्तन कर देते हैं।

महान् आत्माओं की कार्य-प्रणाली में सहायक होना :

ईश्वर तो ज्यादातर अदृश्य रहते हैं □ वह अपना आस्तित्व सिद्ध करने के लिए महान् आत्माओं को धरा पर भेजते है □ उन महान् आत्माओं के कार्य को पूरा करने के लिए सेवादारों, सहायकों और श्रद्धालुओं को भी उनके पास भेजते हैं। परमशक्ति ही लोगों को उन महान् आत्माओं के द्वारा प्रमाण देकर और उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करके अपना अस्तित्व सिद्ध करती है। इस तरह कुछ नास्तिक लोग़ भी आस्तिक बन जाते हैं।

अंत में यही कहना है कि हर चीज का जोड़ा है □ एक के बिना दूसरे का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि एक के गुण दूसरे के विपरीत होते हैं। ईश्वर ने जो कुछ भी बनाया है उचित है। ईश्वर ने हर चीज का सन्तुलन बनाए रखने के लिए ही जोड़ा बनाया है। इस लिए यह सब ईश्वर-इच्छा पर ही निर्भर करता है। परमशक्ति ने ही सृष्टि का कार्य सुचारू ढंग से चलाने के लिए हर चीज का जोड़ा बनाया है और बनाए रखना आवश्यक भी है।

18
परिवर्तन कुदरत का नियम क्यों और कैसे?

यह तो हम सब जानते ही हैं कि जो कुछ भी हम देख रहे हैं वह परिवर्तनशील है अर्थात् कुछ भी स्थाई नहीं है। हर जीव निर्जीव की एक निश्चित उम्र होती है। समय के अनुसार उसमें परिवर्तन आता है और फिर परिवर्तन के बाद एक नया सृजन होता है।

पर यह परिवर्तन क्यों होता है ? इसलिए सब से पहले यह जानना ज़रुरी है कि कुदरत या प्रकृति क्या है ? परिवर्तन क्या है ? उसका क्या अर्थ है ? क्या महत्व है ? परिवर्तन का क्या उद्देश्य है ? उसका कार्यक्षेत्र क्या है ? यह कैसे होता है ? क्या यह अपने आप हो रहा है या कोई कर रहा है ? जब हम गहराई से इसका अध्ययन करते हैं तो सहज ही समझ में आ जाता है कि कोई है जो यह परिवर्तन कर रहा है। उसी को ही कुदरत, नेचर, ईश्वर, अल्लाह, गॉड, वाहिगुरु, निरंकार, राधा-स्वामी आदि नामों से पुकारा जाता है।

कुदरत क्या है ?

कुदरत एक ऐसी अदृश्य शक्ति है जो दिखाई तो नहीं देती, पर महसूस की जा सकती है। जो काम इन्सान की सोच, समझ, सामर्थ्य से दूर होने के बावजूद भी हो जाए तो उस कार्य को कुदरती तौर पर होना कहा जाता है। जिसने धरती, सूर्य, चाँद, सितारे, आकाश, जीव-निर्जीव, दृश्य-अदृश्य वस्तुएँ बनाईं और नियमों में बांधी उसे ही कुदरत कहा जाता है। जैसे तरह-तरह की वनस्पति का पैदा होना, दिन-रात का बदलना, ऋतुओं का बदलना आदि कार्य इन्सान नहीं कर सकता तो फिर वह कौन है जो यह सब करता है ? उसको ही विज्ञान ने कुदरत या प्रकृति कहा है। आध्यात्मवादी उसे एक शक्ति मानते हैं जिसने यह सब कुछ बनाया है क्योंकि अपने आप तो कुछ नहीं बनता है और न ही नियमों में बंधता है। यह सब कुछ नियमों में बंधा है और नियमों के अधीन ही काम हो रहा है। जिसने भी इसको नियमों में बांधा है उसे ही कुदरत, प्रकृति, परमशक्ति या ईश्वर कहा जाता है। विज्ञान और अध्यात्मवाद में मतभेद है। विज्ञान का मत है कि एक शक्ति से ही यह सब बना है पर वह चेतन नहीं है, वह जड़ है, परन्तु आध्यात्मवादी मानते हैं कि ईश्वर एक शक्ति है जो निराकार है पर वह जड़ नहीं चेतन है। उसने अपनी इच्छा से ही सृष्टि की रचना की है। वह शक्ति ही समय और इन्सान की ज़रूरत के अनुसार परिवर्तन करती है। किसी नतीजे पर पहुँचने से पहले यह जानना ज़रुरी है कि परिवर्तन या बदलाव क्या है।

परिवर्तन किसे कहते हैं ?

कुदरत ने अपने और इन्सान के कार्यक्षेत्र में एक सीमा रेखा खींच रखी है। जो काम इन्सान की पहुँच से बाहर हैं, वह काम कुदरत करती है। जैसे धरती के अंदर उपजाऊ शक्ति है, खनिज पदार्थ हैं, पैट्रोलियम है, तरह-तरह की वनस्पतिआँ है, नदियाँ हैं, पहाड़ हैं, क्या यह किसी इन्सान ने बनाए हैं ? इसका उत्तर है नहीं, तो फिर प्रश्न पैदा होता है यह सब किसने

बनाए है ? विज्ञान का मत है यह सब एक बहुत बड़े परिवर्तन का नतीजा है। समय और परिस्थितियों में जो भी उल्ट फेर या बदलाव होता है उसको ही परिवर्तन कहा जाता है। हर तरह के परिवर्तन में कुछ ना कुछ नवीनता होना उसका स्वाभाविक गुण है। नवीनता के कारण ही एक रोचकता हमेशा बनी रहती है । परिवर्तन सृष्टि पर हर तरफ से प्रभाव डालता है। परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जो कुदरत का स्वाभाविक गुण है। परिवर्तन की गति और गुणवता में हमेशा भिन्नता पाई जाती है। परिवर्तन के होने से ही कुदरत के महत्व और ज़रूरत का पता चलता है। परिवर्तन ही इन्सान को नित्य नई खोज करने के लिए उत्साहित करता है। कुदरत के परिवर्तनों का नीचे दिए गए अनुसार वर्गीकरण किया जा सकता है।

भौतिक परिवर्तन (Physical Changes) :

वह परिवर्तन जो पृथ्वी के अंदरूनी और बाहरी वातावरण और जन-जीवन को प्रभावित करता है, वह भौतिक परिवर्तन होता है ।

आवर्ती परिवर्तन (Regular Changes) :

वह परिवर्तन जो एक निश्चित समय और निश्चित नियम के अनुसार लगातार जारी रहता है, उनको आवर्ती परिवर्तन कहा जाता है । इन परिवर्तनों में एक पल का भी हेर-फेर नहीं हो सकता अगर एक पल का भी हेर-फेर हो जाए तो बहुत उलट फेर हो सकता है । कुदरत ने इन नियमों को लागू किया है जैसे धरती के अपनी धुरी के गिर्द घूमने से दिन और रात का होना । इसी तरह से समुद्र में आने वाले बड़े ज्वार पूर्णिमा या अमावस्या को ही आते हैं । इसी तरह इस सौरमण्डल के ग्रह और उपग्रह एक निश्चित गति में गतिमान हैं, उनकी गति के साथ ही सृष्टि चक्र सुचारू रूप से चलता है।

ऋतु परिवर्तन (Weather Changes) :

धरती का जो हिस्सा सूर्य के ठीक सामने होता है जिस पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, वहां गर्मी का मौसम होता है और जिस हिस्से में सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं, उस हिस्से में सर्दी का मौसम होता है, जबकि भूमध्य रेखा पर हमेशा गर्मी और ध्रुवों पर हमेशा बर्फ जमी रहती है । यह सब परिवर्तन धरती के सूर्य के गिर्द निश्चित गति से चक्कर लगाने के कारण होता है । इसी तरह सूर्य की किरणों द्वारा समुद्र के पानी का वाष्पीकरण होना, भिन्न-भिन्न वायु दबाव वाली आर्द्र वायु राशियों के मिश्रण का पहाड़ों से टकराना और बादलों के रूप में वर्षा होने का कारण बनता है। कुदरत के इस अदभुत नियम के कारण ही इस धरती पर जीवन चक्र निरंतर चलता रहता है ।

प्राकृतिक आपदाओं और महामारियों के कारण परिवर्तन (Natural Calamities) :

प्राकृतिक आपदाओं और महामारियों से भाव है भूचाल का आना, जवालामुखी का फटना, बाढ़ का आना, अकाल पड़ना, चक्रवाती तूफान, सुनामी का आना और प्लेग, हैज़ा, स्वाईन फ्लू, मलेरिया आदि बीमारियों का फैलना । इन प्राकृतिक आपदाओं और

महामारियों के कारण धरती पर बड़े-बड़े परिवर्तन आते रहे हैं। इनके द्वारा परमशक्ति धरती पर संतुलन स्थापित करती है अर्थात प्राकृतिक आपदाओं और महामारियों द्वारा कुदरत, खेती की पैदावार और जन-संख्या में संतुलन स्थापित रखती है। यह परिवर्तन होने भी ज़रुरी होते हैं और कुदरत निश्चित समय पर यह परिवर्तन किसी न किसी ढंग से करती है। इससे पैदावार और जन-संख्या का संतुलन बना रहता है।

जलवायु परिवर्तन (Climatic Changes):

ऋतुओं के परिवर्तन को मौसम का परिवर्तन कहा जाता है परंतु किसी जगह के कुदरती, स्थाई वातावरण को जलवायु कहा जाता है। जैसे मैदानी इलाके का जलवायु गर्म है, पहाड़ी इलाके का जलवायु ठंडा है। परंतु जलवायु में भी परिवर्तन आते हैं पर इनकी गति बहुत धीमी होती है। कई सदियों के बाद यह परिवर्तन बहुत बड़े पैमाने पर दिखाई देने लगते हैं जैसे वायु में प्रदूषण होने के कारण कार्बन डाई आक्साइड का बढ़ना , उससे हरित गृह प्रभाव (Green House Effect)का होना, उससे भूतल पर तापमान का लगातार (Global Warming)बढ़ना, उससे ग्लेशियरों का पिघलना, उससे समुद्र तल का ऊँचा होना, उससे तटीय भू भागों का समुद्र में समा जाना आदि।

सांस्कृतिक परिवर्तन (Cultural Changes):

इन्सान के जीने के ढंग और उस में आए बदलावों को सांस्कृतिक परिवर्तन कहा जाता है। आदिमानव से लेकर आज के मानव के जीवन के सफर में क्या क्या परिवर्तन आए हैं उनका संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया गया है :

सामाजिक परिवर्तन (Sociological Changes):

इन्सान एक सामाजिक प्राणी है उसको समाज के वर्तमान स्वरूप तक पहुँचने के लिए बहुत से परिवर्तनों में से गुज़रना पड़ा है। शुरू-शुरू में इन्सान आदिमानव के रूप में रहता रहा। उसका रहन-सहन जानवरों की तरह था पर समय के साथ-साथ उसकी बुद्धि का विकास हुआ तो उसने झुण्डों में रह कर अपना बचाव किया। समय के साथ यह ज़रुरतें रिश्तों में बदलीं, रिश्ते परिवारों में बदले और परिवारों ने कबीलों का रूप लिया। इन्सान को मिल-जुल कर रहना भी कुदरत ने ही सिखाया क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं और शक्तियों के सामने इन्सान असमर्थ था। उनका सामना करने के लिए इन्सान को सांझी सोच और सांझे विकास की ज़रूरत थी। जैसे-जैसे कुदरत अपने परिवर्तन करती रही, मानव की ज़रूरतें और सोच विकसित होती रही। वह गुफाओं में से निकल कर झुग्गियों और गांवों में रहने लगा। उसको रहने के लिए और खेती के लिए पानी की ज़रूरत थी इसलिए जितनी भी सभ्यताओं का विकास हुआ है वह नदियों के किनारे पर ही हुआ है, इन्सान पत्थर युग, धातु युग, कृषि युग का सफर पूरा करके इस आधुनिक युग में पहुंचा है। समय-समय पर जैसे इन्सान की सोच ने विकास किया, उसकी ज़रूरतें बढ़ीं, उसके साथ ही कुदरत ने नई-नई खोजें करवा कर इन्सान के जीवन को सुखमय किया। जब भी समाज अपनी राह से भटका कुदरत ने समय-समय पर किसी समाज सुधारक

या धार्मिक नेता को भेज कर, इन्सान को जीवन जीने का ढंग बताया और इन्सान के रहन-सहन, खान-पान, सोच में परिवर्तन किया।

शैक्षणिक परिवर्तन (Educational Changes):

इन्सान ने अपने जीवन में जो भी सीखा है वह कुदरत से ही सीखा है। कुदरत ही पक्षियों को उड़ना सिखाती है, पानी के जीवों को तैरना सिखाती है। इन्सान ने इन पक्षियों से उड़ना सीखा, पानी के जीवों से तैरना सीखा, जानवरों से शिकार करना, अपने परिवार का पालन-पोषण और रक्षा करना सीखा, समय के साथ-साथ ही शिक्षा देने के ढंग, तरीकों में परिवर्तन आता गया। शिक्षा के आदान-प्रदान के कारण ही इन्सान सारे जीवों पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने में सफल हुआ है। पहले शिक्षा बोलकर कहानियों के रूप में दी जाती थी, फिर लिपि और क्रियात्मक रूप में दी जाने लगी। शिक्षा देने वाले व्यक्ति को गुरुदेव की उपाधि दी गई। इससे यह अनुमान लगता है वह लोग अपने जीवन में ज्ञान को कितना महत्व देते थे जैसे कि हिंदू समाज में ज्ञान देने वाले व्यक्ति को पूजनीय स्थान दिया गया। इस तरह ज्ञान की उपयोगिता के कारण ही सामाजिक नीतियों का निर्माण हुआ। आध्यात्मिक ज्ञान, व्यवहारिक ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, खेतीबाड़ी सम्बन्धी ज्ञान आदि अनेक परिवर्तन हुए।

राजनैतिक परिवर्तन (Political Changes):

वास्तव में सभ्यता के परिवर्तन का ही नतीजा है कि सामाजिक चेतना के विकास के बाद शैक्षिक और बौधिक परिवर्तन हुए। उसके बाद ही नियमों को संगठित करके उनको समाज पर लागू करने की ज़रूरत महसूस हुई अर्थात् जब इन्सान कबीलों में रहने लग पड़ा तो सामूहिक ज़रूरतों को पूरा करने और सामूहिक निर्णय लेने के लिए कुछ नियमों की ज़रूरत महसूस हुई, उन नियमों को लागू करने के लिए किसी न किसी ताकत, किसी सत्ता की ज़रूरत महसूस हुई, यह विचारधारा समय के साथ धार्मिक और राजनैतिक नेताओं के रूप में बदल गई, किसी जगह धार्मिक नेता ही राजनैतिक नेता बने, किसी जगह राजनैतिक और धार्मिक नेता अलग-अलग रहे पर एक दूसरे को प्रभावित ज़रूर करते रहे। इस तरह राजनीति का जन्म हुआ जो समय के साथ जागीरदार प्रथा, राजा प्रथा, सामंतवाद, प्रजातंत्र, लोकतंत्र, समाजवाद आदि परिवर्तनों में गुजर कर वर्तमान अवस्था में पहुंची है। मौजूदा अवस्था पर पहुँचने के लिए इन्सान को अनेकों संघर्षों में से गुजरना पड़ा। एक व्यवस्था को बदलने के लिए कई-कई पीढ़ियों को संघर्ष करना पड़ा, कुर्बानियां देनी पड़ी, जितने भी स्वतन्त्रता संग्राम हुए हैं उनके पीछे राजनैतिक परिवर्तन ही मूल आधार रहे है।

आर्थिक परिवर्तन (Economical Changes):

मानव जीवन कबीलों से समाज और समाज से राज के रूप में स्थापित हो चुका था। इसलिए उसको व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। जिस के अनुसार समय-समय पर नीचे लिखे परिवर्तन हुए।

6. वस्तुओं का लेन देन भाव अनाज के बदले में जरूरत की अन्य वस्तुओं का लेन-देन आदि।

7. वस्तुओं के बदले सोने चांदी की मोहरों का लेन-देन।
8. वर्तमान समय की मुद्रा व्यवस्था।ए
9. वर्तमान समय में हर राष्ट्र का अपनी मुद्रा को सुदृढ़ बनाना।
10. मुद्रा सफीती को घटाना।

मानवीय जीवन और सोच में परिवर्तन:

इन्सान का प्रारम्भिक जीवन शिकार करने और अपने परिवार तक सीमित था पर प्रकृति ने समय के साथ-साथ उसके जीवन और सोच में भी परिवर्तन किया है। उसको मिल कर रहने की आवश्यकता का एहसास करवाया और दूसरों के बारे में सोचने का ढंग सिखाया। जब तक व्यक्तिगत सोच नहीं बदलती तब तक किसी भी समाज और समुदाय का विकास नहीं हो सकता क्योंकि सोच ही इन्सान को हैवान बनाती है सोच ही इन्सान को महान् बनाती है। इसलिए कुदरत ने समय के साथ ही इन्सान के जीवन और सोच को भी बदला है। कई बार इन्सान के जीवन में इस तरह की घटनाएँ घटती हैं जिनके कारण इन्सान के जीवन में परिवर्तन हो जाता है, उस इन्सान की आदतों, स्वभाव, रुचियों और सोच में बदलाव आ जाता है जिसके कारण उसका कर्म भी बदल जाता है। वैसे तो इन्सान के जीवन में जो कुछ भी घटता है उसके किए कर्मों का ही फल होता है। पर फिर भी समाज में इस तरह के अनेक उदाहरण हैं। जैसे महान् कवि कालिदास, अंगुलिमाल महान् ऋषि बाल्मीकि, स्वामी रामतीर्थ, महात्मा गाँधी आदि अनेक इस तरह के इन्सान हुए हैं जिनके जीवन में इस तरह की घटनाएं घटी जो उनको परमार्थ के रास्ते पर ले गईं और उन्हें महान् इन्सान बना दिया।

धार्मिक परिवर्तन (Spiritual & Religious Changes):

इन्सान जब भी किसी की पूजा करता है उसके दो आधार होते हैं – डर और स्वार्थ। जब भी इन्सान को डर लगता है, उस डर को दूर करने के लिए इन्सान किसी का सहारा चाहता है। दूसरे, जहां इन्सान का स्वार्थ और ज़रूरतें पूरी करने में उसकी पहुँच खत्म होती है तो इन्सान उस स्वार्थ को पूरा करने के लिए आसरा ढूंढता है। यह दोनों कारण ही इन्सान को धार्मिक बनाते हैं। जैसे-जैसे इन्सान का बौद्धिक विकास होता गया उसके पूजा के स्वरुप और ढंग बदलते रहे पर उद्देश्य वही रहा। इस बदलाव को ही धार्मिक परिवर्तन कहा गया है। जब भी ज्ञान अज्ञान में बदल जाता है, धर्म अधर्म में बदल जाता है अर्थात् धर्म में गिरावट आ जाती है, उस समय भिन्न-भिन्न भूखण्डों में समय और परिस्थितियों के अनुसार धर्म में बदलाव होते रहे हैं। धार्मिक परिवर्तन हमेशा नई विचारधाराओं के पैदा होने के कारण होते हैं, जो पुराने रीति-रिवाजों और पाखण्डों का तर्क सहित खण्डन करते हैं। जिस तरह इन्सान की दृष्टि की सीमा है, उस सीमा के बाद उसको दिखाई नहीं देता पर इसका मतलब यह नहीं है कि उस सीमा से परे कुछ नहीं है। उसी तरह मानव के इतिहास की भी सीमा है। इस समय इन्सान का लिखित इतिहास केवल 5000 वर्ष पुराना है। जब इतिहास की तरफ देखते हैं तो पता चलता है कि इन्सान के धार्मिक जीवन में कितने परिवर्तन हुए हैं।

पहला परिवर्तन: प्राकृतिक रूपों की पूजा

जैसे-जैसे सभ्यता का विकास हुआ इन्सान ने अपने रहने, खाने-पीने का प्रबन्ध किया और वह कबीलों में रहने लगा। वह प्राकृतिक शक्तियों और आपदाओं से डरने लगा तथा उसे ऐसा अनुभव हुआ कि यदि मैं इनकी पूजा करूं तो मेरा बचाव हो सकता है या जिससे उसके अपने स्वार्थों का पूरा होने की आस हुई उसने उसकी पूजा करनी शुरू कर दी। इतिहास बताता है कि भारत, चीन, अरब, यूनान, रोम आदि में इन्सान सब से पहले किसी न किसी ढंग से अग्नि, सूर्य, चाँद, धरती, पवन, वर्षा आदि को देवता मान कर उनकी पूजा करता रहा है।

दूसरा परिवर्तन: देवी देवताओं की मान्यता और मूर्ति पूजा:

3000 ईसा पूर्व जब आर्य भारत आए उस समय उन्होंने कुदरत के स्रोतों के रूप बना कर उनकी पूजा करनी शुरू कर दी। उनकी मान्यता थी कि सूर्य, चाँद, धरती, आकाश, हवा, पानी, अग्नि आदि का कोई देवता है जिस को प्रसन्न करके अपना स्वार्थ पूरा किया जा सकता है या उस के प्रकोप से बचा जा सकता है। इसलिए मूर्तियों का श्रृंगार और सामूहिक पूजा-स्थल का निर्माण होना शुरू हुआ जिस के बाद कर्म-काण्ड और पूजा-अर्चना शुरू हुई। यूनान, रोम, चीन, अरब, मिस्र में भी इसी तरह पूजा होती रही है। इतिहास बताता है शिवलिंग की पूजा भी आर्य सभ्यता से ही संसार में चली आ रही है। जहां-जहां भी आर्य सभ्यता गई वहां आज भी किसी न किसी रूप में शिवलिंग की पूजा हो रही है।

तीसरा परिवर्तन: निराकार रूप की पूजा

तकरीबन 1500 ईसा पूर्व वेदों की रचना हुई। वेदों की रचना के बाद ही एक ईश्वरवाद और आत्मज्ञान का आरम्भ हुआ। ईश्वर को निराकार मान कर ईश्वर की पूजा और स्तुति की शुरुआत हुई। इस समय मध्य एशिया में मूसा ने निराकार ईश्वर को यहोवा का नाम दिया और उस के दस निर्देश (Ten commandments) अपनी कौम को दिए व देवी देवताओं की पूजा का खण्डन किया। केवल एक ईश्वर *'यहोवा'* को याद करने और उसी को मानने की शिक्षा दी।

चौथा परिवर्तन: नास्तिकवाद और ज्ञान की उत्पति :

जब ऋषियों मुनियों ने एक ईश्वर का विचार दिया तो उस के बाद इन्सान के मन में ईश्वर को जानने की, उसके बारे में खोज करने की इच्छा जागी। इसी जिज्ञासा ने ईश्वर के बारे में तरह-तरह की विचारधाराओं को जन्म दिया। कपिल ऋषि के अनुसार ईश्वर सिद्ध नहीं होता इस लिए ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है, जीव और प्रकृति ही अनादि है। द्वैतवाद में ईश्वर को अनदि कहा गया है और जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह भी अनादि है। अद्वैतवाद से भाव है इस सृष्टि को रचने वाला केवल एक ब्रह्म है जिस ने अपनी इच्छा से इस सृष्टि की रचना की है। उसकी माया सर्वव्यापक है, जीव-निर्जीव उसकी रचना हैं। वह ही रक्षक, पालनकर्ता और संहारकर्ता है। नास्तिकवाद की विचारधारा के कारण जितने भी धर्म प्रचलित हुए वह सब ज्ञान प्रधान धर्म थे। बुद्धमत और जैनमत ने कर्म और कर्मफल को ही माना। इसी तरह शंकराचार्य जी ने अद्वैत मत और रामानुज जी ने विष्णु को सृष्टिकर्ता मान कर वैष्णव मत की शुरुआत की। लगभग 600 ईसा पूर्व कन्फूशियस ने चीन में व्यवहार और सामाजिक न्याय का सिद्धांत और एक

नयी विचारधारा समाज को दी। यूनान में अरस्तु ने आत्मा की अमरता और एक ईश्वरवाद की विचारधारा दी। इस काल में धरती के हर भूखण्ड में ज्ञान का प्रकाश हुआ और इन्सान को अपने रचयिता के बारे में ज्ञान हुआ जिस के साथ इन्सान के मन में उसके स्वरुप को जानने, उसके दर्शन करने की लालसा पैदा होने लगी। जिसने आने वाले समय में भक्ति लहर की नींव रखी गई।

पांचवा परिवर्तन: भक्ति लहर और साकार की पूजा

कुदरत ही समय के साथ इन्सान को अंगुली पकड़ कर नई दिशा की तरफ ले जाती है। कुदरत इन्सान के मन में विचार पैदा करती है उसको सोचने के लिए और खोज करने के लिए प्रेरित करती है। आज जो खोजें हो रही हैं यह **1000** साल पहले क्यों नहीं हुई। कुदरत भी इन्सान को ज़रूरत महसूस करवाती है फिर खोज करवाती है। जब इन्सान को यह पता लग गया कि इस सृष्टि को बनाने वाला कोई है तो इन्सान ने उस को देखने की और उससे प्यार करने की ज़रूरत महसूस की। उस समय बुद्ध के अनुयायियों ने बुद्ध की मूर्ति बना कर उस को ज्ञान काया का नाम देकर पूजा करनी शुरू की। जैन मत को मानने वालों ने तीर्थन्करों की मूर्तियां बना कर उनकी पूजा की, हिंदू धर्म में शास्त्रों और पुराणों की रचना हुई और ब्रह्मा, विष्णु, महेश की पूजा शुरु हुई। ईश्वर को भगवान मान कर उसकी पूजा-भक्ति की लहर ने अध्यात्मवाद का स्वरुप ही बदल दिया और अवतारवाद की विचारधारा हिंदू धर्म में स्वीकार की गई। भक्त कबीर, भक्त रविदास, भक्त नामदेव, मीराबाई, पीपाजी, धन्ना भक्त आदि ने ज्ञान और भक्ति का सुमेल करके एक नई सोच दी अर्थात इन्सान को ईश्वर है कि नहीं है के भंवर से बाहर निकाल कर ईश्वर से प्रेमाभक्ति और सेवा का मार्ग बताया। इसी तरह मध्य एशिया में यीशु जी ने भक्ति, सेवा, करुणा और ईश्वर प्रेम का सन्देश दिया। यीशु जी के इस सन्देश में पूरा पश्चिम जगत बह गया । ईसाई यीशु को ईश्वर का बेटा और उसका ही रूप मान कर उससे ही प्यार करते हैं। हज़रत मोहम्मद जी ने खुदा को इन्सान की समझ से परे बताया और उस को समझने, उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करने से ज्यादा महत्व उसकी स्तुति और प्रार्थना को दिया। आज सभ्य और सुशिक्षित समाज में लोग मूर्ति पूजा कर रहे हैं, कुछ देवी देवताओं को मान रहे हैं, कुछ लोग भगवानों की पूजा कर रहे हैं, और कुछ लोग महान् आत्माओं की पूजा कर रहे हैं। कुछ लोग ईश्वर को निराकार मानते हैं पर उसके प्रतीक चिन्ह बना कर ईश्वर को याद कर रहे हैं जैसे शिवलिंग, ज्योति, कैंडल, चिराग, बिन्दु आदि। कहने से तात्पर्य है कि इबादत अनेक ही ढंग हैं, अनेक ही धार्मिक संस्थाएं हैं, अनेक ही विचारधाराएं हैं जिनमें समय समय परिवर्तन होता रहा।

उपरोक्त धार्मिक परिवर्तनों का अध्ययन करने से इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि जब परिवर्तन की अँधेरी चलती है तो कोई धर्म, कोई विचारधारा अछूती नहीं रहती। हिंदू धर्म में अवतारवाद की विचारधारा जोर पकड़ने के कारण आरतियों तथा अन्य पूजा पद्धतियों का विकास हुआ। ईसाई धर्म यीशु को ही परमेश्वर मान कर उनके आगे प्रार्थना और उनसे प्रेम करने लगा। जो विचारधाराएं या समाज समय के अनुसार नहीं बदलते समय उनके निशान ही मिटा

देता है। हर विचारधारा को, समाज को, कुदरत के इस खेल के आगे झुकना ही पड़ता है और इसे ही परिवर्तन कहा जाता है।

विज्ञान का मत है कि यह धरती अरबों वर्ष पहले अस्तित्व में आई थी। इस दौरान मानव जाति बहुत से पड़ावों में से निकल कर वर्तमान अवस्था में पहुंची है। इस दौरान कितनी ही सभ्यताएं बनी होंगी और नष्ट हुई होंगी। इतिहास बताता है कि 5000 साल पहले मिस्र, रोम, यूनान, सिंधु घाटी, तक्षशिला आदि सभ्यताएं हुई हैं जिनका लिखित इतिहास तो नहीं मिलता पर उनके निशान आज भी मौजूद हैं। इस तरह अनेकों ही सभ्यताएं होंगी जो समय के साथ ही नष्ट हो गई होंगी। यह परिवर्तन समय के साथ होता रहा है और होता रहेगा क्योंकि परिवर्तन कुदरत का नियम है।

अब प्रश्न पैदा होता है कि यह परिवर्तन कौन करता है ? क्या यह परिवर्तन अपने आप होता है या कोई है जो यह परिवर्तन कर रहा है ? अगर कोई है तो उसका क्या उद्देश्य है और वह ऐसा क्यों कर रहा है ? परमशक्ति श्री मदन जी ने अपने श्रीमुख से ज्ञान दिया है कि परमशक्ति ज़्यादातर निराकार ही रहती है। वह जड़ नहीं चेतन है। वह हर बात महसूस करती है जैसे जब इन्सान नींद में होता है तो उसका शरीर कोई हरकत नहीं करता पर उसके मन में विचारों का प्रवाह चलता रहता है। इसमें शरीर का कोई सरोकार नहीं होता पर इन्सान उस समय सुख-दुःख, लाभ-हानि, यश-अपयश, सब कुछ महसूस करता है, वह डरता है, प्यार करता है, खुश होता है, दुखी होता है। क्या उस समय उस को शरीर की ज़रूरत होती है ? उसी तरह ईश्वर निराकार होते हुए भी मानवीय संवेदनाओं को महसूस करते हैं।

ईश्वर की कार्यप्रणाली को एक उदहारण दे कर समझाया जा सकता है। जैसे एक बहुत बड़ा ज़मींदार अपने बाग की देखभाल के लिए कुछ कर्मचारी नियुक्त करता है पर कुछ समय के बाद उनकी शिकायतें आ जाती हैं। कुछ कारणों से वहां का प्रबंध ठीक नहीं चलता तो वह ज़मींदार कुछ नए निर्देश देकर कोई नया कर्मचारी भेजता है। पर फिर कुछ समय के बाद वह कर्मचारी भी असफल हो जाता है। जिमींदार समस्या को ग़ौर से देखता है और किसी नए कर्मचारी को नए निर्देश देकर भेजता है तथा और भी बदलाव करता है। पर हर कर्मचारी कुछ समय बाद असफल हो जाता है। जिमींदार को और भी काम हैं, उसको अपने बाग से प्यार तो है और उसका काम बाग की बेहतरी के लिए प्रबन्ध करना है। इसलिए वह समय-समय पर परिवर्तन करता है, और हर ज़रूरत का उचित प्रबन्ध करता है क्योंकि उसका कर्म परिवर्तन करना है। सर्वशक्तिमान ईश्वर उस जिमींदार की तरह है। जब भी इन्सान अपनी राह से भटकता है, अपने रचयिता को भूलता है या मौजूदा स्रोत इन्सान की ज़रूरत पूरी नहीं करते तब ईश्वर इन्सान की बेहतरी और उसकी ज़रूरत पूरी करने के लिए महान् आत्माओं को अपना काम देकर धरती पर भेजते है। उनको ज़रुरी निर्देश भी देते हैं, उनको कार्य भी सौंपते हैं। वे जो भी करते हैं उसके निर्देश के अनुसार ही करते हैं। उसकी रज़ा में राज़ी रहते हुए अपना फ़र्ज़ पूरा करते हैं। उनको मान-यश मिलता है, लोगों का विरोध भी मिलता है, इल्ज़ाम भी लगते हैं अर्थात् आज समाज में जिन महान् आत्माओं के नाम हैं, कुछ लोग उनको मान देते हैं, कुछ लोग उनके कार्यों की, उनकी विचारधाराओं की आलोचना करते हैं। परन्तु वह मालिक स्वयं सफलता-असफलता, लाभ-हानि, यश-अपयश से परे है। सफलता-असफलता, लाभ-हानि,

यश-अपयश आदि तो इन्सान के लिए होते हैं, वह जो भी करता है, ठीक ही करता है, उसका किया कोई भी काम गलत नहीं होता। इन्सान को लगता है कि यह जो कुछ भी जो रहा है ग़लत है, इसकी क्या ज़रूरत थी पर गहराई से देखने पर पता चलता है यह सब तो ज़रुरी था। जैसे एक इन्सान वर्षा होने पर कह देता है, इस की क्या ज़रूरत थी बाढ़ आ जाती है, जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। यह तो उस इन्सान की अज्ञानता है। ईश्वर जो भी करता है पूरी सृष्टि को ध्यान में रख कर करता है। ईश्वर का काम इतना सहज और सरल ढंग से होता है कि इन्सान को लगता है यह सब अपने आप हो रहा है, पर वह होता समस्त इन्सानियत की बेहतरी के लिए है। जब भी ज़रूरत होती है लोग पुकार उठते हैं, किसी को कोई रास्ता दिखाई नहीं देता, दुःख तकलीफें बढ़ जाती हैं, बेचारे गरीबों का जीना दूभर हो जाता है। जैसे कहते हैं कि दु:खी की पुकार पत्थरों का सीना चीर देती है। तब युग परिवर्तन होता है एक नए समाज का निर्माण होता है। कोई ठंडी हवा का झोंका बन कर आता है और देखते ही देखते दुनिया के रंग-मंच पर एक नाटक होने लग जाता है, पात्र अपना खेल खेलते हैं। एक नया समाज अस्तित्व में आ जाता है, नए सपने जन्म लेते हैं, नई विचारधारा बनती है। यह कुदरत का ही खेल है, जिसे परिवर्तन कहते हैं।

वर्तमान समय में अनेकों ही धर्म, मिशन, धार्मिक और सामाजिक संस्थाएं हैं जो इन्सान के सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए कार्यशील हैं, हर किसी का अपना कार्यक्षेत्र है, अपना मकसद है, अपने नियम, सिद्धांत हैं। यह संस्थाएं ईश्वर ने ही प्रेरणा दे कर स्थापित करवाई हैं।

परमशक्ति ने अपनी एक नई लीला श्री मदन धाम में शुरू की है। परमशक्ति आज श्री मदन जी के श्रीमुख से आध्यात्मिक ज्ञान क्रियात्मक रूप में दे रही है। पिछले 26 वर्षों से परमशक्ति स्वयं यहाँ कार्यप्रणाली चला रही है और यह कार्यप्रणाली निरन्तर परिवर्तनों में से गुज़र रही है। 17 जुलाई 1985 को इस दरबार की कार्यप्रणाली बड़े ही नाटकीय ढंग से शुरू हुई। उस दिन यह दर्शाया गया कि श्री मदन जी पर कुल देवता लक्ष्मणयति की मेहर हो गई है। इस दौरान यहाँ भूतों-प्रेतों से पीड़ित लोग आने लगे। कुछ देर बाद बाबा बालक नाथ तथा अन्य क्षेत्रीय देवताओं का प्रवेश श्री मदन जी के शरीर में दिखाया गया। 38 प्रकार के देवी-देवताओं के रूप में प्रदर्शन किया गया। उन सब रूपों में बातचीत की गई और उनकी मन्नतें लेकर व्यक्तियों को राहत दी गई। पहले इनके अस्तित्व को सिद्ध किया गया फिर महामाया के रूप में इनका आना प्रतिबंधित कर दिया गया। केवल मुनि देव नारद को ही आने की आज्ञा दी गई। उसके बाद यह बताया गया कि सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान केवल एक है जो निराकार है और वह है आदि शक्ति। सात साल श्री मदन जी के श्रीमुख से आदि शक्ति रूप में बातचीत होती रही। उसके बाद आदि शक्ति ने कहा मैं भी किसी के अधीन हूँ। वह हैं ब्रह्म। मैं आपको आपके पिता के पास ले जा रही हूँ।

ब्रह्म की भूमिका में बताया गया कि ब्रह्म से आगे है पार-ब्रह्म। पार-ब्रह्म से भाव है वह शक्ति जो अनादि, अनंत, अगम्य, अगोचर, सर्वोच्च है जिस को परमशक्ति कहा जाता है। वह शक्ति जिस ने इस सृष्टि की रचना की, नियमों में बांधा है, वह जड़ नहीं चेतन है। वही अपने

उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय-समय पर महान् आत्माओं को धरती पर भेजती है और युगों-युगों के बाद स्वयं भी शरीर धारण करके इन्सानी रूप में धरती पर आती है। जब वह शरीर धारण करती है तब ही वह शिव या ब्रह्म कहलाती है। उस समय वह उस शरीर के द्वारा अपने नौ गुणों का प्रदर्शन करती है अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न, सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी, अंतर्यामी, पूर्ण और अजय आदि नौ गुणों का प्रदर्शन जिस शरीर के द्वारा होता है उस को ही शिव या ब्रह्म कहा जाता है। उसको ही परमशक्ति का साकार रूप या इन्सानी रूप कहा जाता है।

परमशक्ति द्वारा पिछले 26 वर्षों में दिए ज्ञान के आधार पर कहा जा सकता है परिवर्तन कुदरत का स्वभाविक गुण है। इसलिए वह ही समय-समय पर परिवर्तन करती है। जैसे शैतानी आत्मा का गुण है कि वह दूसरों को दुःख, कष्ट, परेशानियाँ देकर आनन्द महसूस करती है। साधारण इन्सान अपने और अपने परिवार के लिए ही सोचता है और केवल वही कार्य करता है जिस में उस का स्वार्थ पूरा होता है। उसमें ही उसको संतुष्टि मिलती है। महान् आत्माएं, महान् पुरुष अधिकतर दूसरों के भले और सुधार के लिए ही काम करते हैं। इन्सान को ज्ञान देना, दुष्कर्मों से रोकना, अच्छे कामों के लिए प्रेरित करना, लोगों की भलाई के लिए कार्य करना, भाव वे अपने लिए कम और दूसरों के लिए ज्यादा जीते हैं। उनको इसमें ही संतुष्टि मिलती है। यह महान् आत्माओं का स्वाभाविक गुण होता है। भगवान या परमात्मा, जो भी करते हैं वह परहित के लिए ही करते हैं। परोपकार करना उनका स्वभाविक गुण है, भगवान किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए धरती पर आते हैं, अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हर नीति का प्रयोग करते हैं, भगवान दूसरों को आदर्श जीवन जीने का ढंग सिखाते हैं और अपना उद्देश्य पूरा करके चले जाते हैं।

परमशक्ति, कुदरत, ईश्वर, अल्लाह, गॉड, वाहिगुरु, राधा स्वामी, निरंकार जो कि एक ही शक्ति के नाम हैं, जो उसके भक्तों ने रखे हैं। वही कर्मफल दाता है। हर कोई अपने किए कर्मों का ही फल पा रहा है। यदि कोई अमीर है, गरीब है, दुःखी है, सुखी है, सफल है, असफल है, बीमार है, तंदरुस्त है, भाव जो कुछ भी दिखाई देता है वह अच्छा है या बुरा है इन्सान के कर्मों का ही फल है। परमशक्ति हर इन्सान के अंदर भी है, बाहर भी है, पर वह मूकदर्शक रह कर सब कुछ देखती रहती है। वह किसी के कर्म करने में दखल नहीं देती। वह केवल न्यायकारी नहीं है अपितु वह दयालु भी है, कृपालु भी है। ईश्वर भी अपना काम करते हैं, वह है परिवर्तन। कर्मफल तो व्यक्तिगत होता है। यह परिवर्तन इतने सहज और सरल ढंग से होता है कि लगता है, कि जो कुछ भी हो रहा है इसको संचालित करने वाला कोई नहीं है, न ही कोई प्रार्थना सुनने वाला है। उसको याद करने की, उससे प्यार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। पर समय-समय पर इस तरह की घटनाएं घटती हैं जिनके कारण इन्सान सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि यह कौन कर रहा है ? उसका क्या उद्देश्य है ? आज विज्ञान ने यह जान लिया है कि वर्षा कैसे होती है, हवा कैसे चलती है, सूर्य की रौशनी कैसे तपिश देती है, ऋतुएं कैसे बदलती हैं, दिन रात कैसे बनते हैं। कभी यह सब भेद इन्सान की समझ से बाहर थे, इन्सान समझता था कि कोई देवी-देवता इनका संचालन कर रहा है पर आज इन्सान जानता है कि यह सब नियमों में बंधे हुए हैं और नियमों के अनुसार ही कार्य करते हैं। आज भी बहुत सारे प्रश्न हैं जिनको विज्ञान

जानने की कोशिश कर रहा है। कुछ पहेलियाँ हैं जिनको सुलझाने की कोशिश कर रहा है। परमशक्ति स्वयं ही इन्सान के मन में विचार पैदा करती है, अपने बारे में और अपने नियमों के बारे में ज्ञान करवाती है। अध्यात्मवादी अपने साथ हुई किसी हुई घटना के कारण को कर्मफल समझ कर, किसी हुई गल्ती को जानने की कोशिश करते हैं अपितु वैज्ञानिक उस घटना के भौतिक कारणों को जानने की कोशिश करते हैं।

आओ विचार करें कि परमशक्ति परिवर्तन क्यों करती है ? उसका क्या उद्देश्य हो सकता है ?

अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए:

परमशक्ति अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए ही महान् आत्माओं को धरती पर भेजती है और उनके साथ सम्पर्क स्थापित करके उनके माध्यम से अपने गुणों का प्रदर्शन करती है। जब भी समाज किसी दुविधा में फंसता है उस वक्त परमशक्ति का सन्देश ले कर नई विचारधारा के साथ कोई महान् आत्मा प्रकट होती है। उसके विचार ही नियमों का समूह बनते हैं जो फिर धर्म का रूप ले लेते हैं। उस महान् आत्मा को पता नहीं होता कि परमशक्ति उस के साथ क्या खेल खेल रही है ? उसके जीवन में घटनाएं घटती हैं तथा वक्त और हालात उसको महान् बना देते हैं। इसलिए ही महान् आत्माएं जिनका ईश्वर के साथ सम्पर्क हुआ उन्होंने कहा है "तू बेअंत, तेरी माया बेअंत, तेरियां तू ही जाणे" पर आज उनके नाम हैं। करोड़ों की गिनती में उनके श्रद्धालु हैं। लोग उनको ही ईश्वर या ईश्वर का रूप मान कर पूज रहे हैं। जबकि उन महान् आत्माओं ने दुःख-कष्ट, परेशानियां सह कर भी ईश्वर का गुणगान किया, अपने आप को तुच्छ बता कर, उस अदृश्य ताकत को सर्वशक्तिमान कहा, सुखों का सागर कहा, कृपालु, दयालु, ममता का सागर, प्यार की मूरत कहा। उनके सन्देश के फलस्वरूप ही मानव समाज ईश्वर के अस्तित्व को मानता आ रहा है। लोग ईश्वर को उन महान् आत्माओं के रूप में याद करते हैं, उनसे प्यार करते हैं। परमशक्ति उन महान् आत्माओं के रूप में भक्तों को दर्शन देती है क्योंकि महान् आत्माओं ने स्वयं यश न लेकर यश परमशक्ति को दिया। परमशक्ति ने भी स्वयं यश न लेकर यश उन महान् आत्माओं को दिया। परमशक्ति समय के साथ-साथ परिवर्तन करती है और अपना अस्तित्व हमेशा बनाए रखती है। आज विज्ञान के युग में भी अनेक महान् आत्माएं हैं जिनके माध्यम से चकित कर देने वाले प्रदर्शन हो रहे हैं। क्या विज्ञान की खोजों ने, साक्षरता ने, ईश्वर के अस्तित्व को खत्म कर दिया ? आज इस युग में भी ईश्वर को मानने वालों की कमी नहीं।

निरन्तरता व नवीनता बनाए रखने के लिए:

परमशक्ति या कुदरत जो भी काम करती है नियमों में रह कर ही करती है। इन्सान अपने पूर्ण जीवन काल में देखता है कि परमशक्ति के हर काम में निरन्तरता बनी रहती है, जैसे सर्दी के बाद गर्मी, रात के बाद दिन। यह सब काम प्राकृतिक ढंग से होते जाते हैं। पर परमशक्ति निरन्तरता को बनाए रखने के अतिरिक्त नवीनता के लिए भी परिवर्तन करती है। जैसे कभी सर्दी बहुत ज्यादा हो जाती है कभी गर्मी बहुत ज्यादा हो जाती है, कभी दिन बड़े हो जाते हैं कभी रातें

बड़ी हो जाती हैं। इस तरह परमशक्ति अपनी निरन्तरता से नवीनता भी लाती है। परमशक्ति के जितने भी काम हैं उनमें समानता तो है पर उस में नवीनता भी बनी रहती है।

रोचकता बनाए रखने के लिए

परमशक्ति ने इन्सान के अस्तित्व में आने से पहले ही उसकी हर ज़रूरत का प्रबन्ध किया। परन्तु इन्सान नवीनता चाहता है। अगर केवल दिन ही होता या केवल रात ही होती, भाव कोई परिवर्तन ही न होता तो इन्सान का जीवन नीरस ही होता। परमशक्ति उस के जीवन में रोचकता बनाए रखने के लिए परिवर्तन करती है। नई-नई खोजें करवाती है, जल-वायु एवं वातावरण में परिवर्तन करती है।

उत्सुकता बनाए रखने के लिए

प्रकृति जब भी परिवर्तन करती है तो इन्सान की समझ में नहीं आता जिस से उसके मन में जिज्ञासा बनी रहती है, उत्सुकता रहती है। वह चाहे आध्यात्मवादी है या भौतिकवादी है उसके अंदर उस परिवर्तन का कारण जानने की, उसको समझने की इच्छा पैदा होती है। यह जिज्ञासा ही इन्सान को खोज करने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। ज्ञानी एवं जिज्ञासु व्यक्ति ही समाज और देश के लिए सोचते हैं।

निराशा समाप्त करने के लिए

जब इन्सान अपने जीवन से, समाज के वातावरण से निराश होता है, कुछ लोग इन हालातों से तंग आ कर अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर लेते हैं पर कुछ दृढ़ विश्वासी हालात का सामना करते हैं, संघर्ष करते हैं। प्रकृति उनकी मदद करती है और ऐसे दृढ़ विश्वासी लोग ही समाज में क्रांति लाते हैं, बदलाव लाते हैं, एक नए समाज का सृजन करते हैं। परमशक्ति जब भी कोई परिवर्तन करती है तो वह स्वयं सामने नहीं आती क्योंकि वह तो ज़्यादातर निराकार रहती है। वह अपने कार्य के लिए किसी व्यक्ति को चुनती है, उसके मन में विचार पैदा करती है, उसको बेचैन करती है, उसके सामने इस तरह के हालात पैदा कर देती है कि उसको वह कार्य करना ही पड़ता है। विपरीत हालातों में भी उसको डोलने नहीं देती। वह व्यक्ति अपने जीवन में चाहे लाचार बेबस रहे पर लोगों की नज़र में वह महान् होता है। जैसे महात्मा गाँधी अपनी जीवनी में लिखते हैं कि ईश्वर ने इस तरह के हालात बना दिए कि उनको वह कार्य करने ही पड़े। मदर टेरेसा की जीवनकथा में बताया गया है कि वह दार्जिलिंग से वापस आ रहीं थी कि उनके अंदर से ही ईश्वर ने उनको सेवा का कार्य शुरू करने की प्रेरणा दी। उस प्रेरणा के कारण ही उन्होंने चर्च छोड़ कर एक नई संस्था की शरुआत की। परमशक्ति ही इन्सान को साधन बना कर उसके मन में प्रेरणा देकर उनसे ऐसे कार्य आरम्भ करवाती है जो इन्सान सोच भी नहीं सकता पर वह कार्य युगों-युगों तक मानव जीवन को प्रभावित करते रहते हैं। इन्सान की सोच तो बहुत सीमित है यद्यपि परमशक्ति की सोच बहुत विशाल है। इन्सान के जीवन की निराशा को दूर करने के लिए ही परमशक्ति परिवर्तन करती है। परिवर्तन से ही नए सपने जन्म लेते हैं, नई आशा पैदा होती है और इन्सान निराशा के अँधेरे से बाहर निकलता है।

सर्वोच्चता बनाए रखने के लिए

परमशक्ति सदैव अपनी सर्वोच्चता बनाए रखती है । जब भी इन्सान ईश्वर को भुला कर स्वयं को कर्ता समझने लगता है, धर्म अधर्म में बदल जाता है, नैतिकता अनैतिकता में बदल जाती है, ताकतवर गरीब का शोषण करने लगता है, न्याय जाति, वर्ग और व्यक्ति को देख कर बदला जाता है । तब परमशक्ति परिवर्तन करती है, वह सुधार नहीं करती, सुधार करना तो महान् आत्माओं का काम होता है । इस लिए परमशक्ति किसी महान् आत्मा को भेजती है । उस के माध्यम से ज्ञान दिया जाता है, लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं, पर परमशक्ति अपना पूर्ण भेद किसी को नहीं देती और न ही किसी महान् आत्मा के माध्यम से अपने समस्त गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन करती है । परमशक्ति तो कर्मफल दाता है, परमशक्ति इन्सान को कर्म करते समय कभी नहीं रोकती केवल मूक दर्शक रहती है । इन्सान कर्म करने में स्वतन्त्र है इसलिए वह कर्म के अनुसार कर्मफल भोगता है । पर परमशक्ति भी चेतन है जड़ नहीं, जब मानव के दुःखों की पराकाष्ठा हो जाती है और सब ईश्वर को पुकारते हैं तो ईश्वर सामूहिक प्रार्थना सुनता है और जो करता है वही परिवर्तन कहलाता है । जैसे जब यहूदी समुदाय मिस्र में सदियों की गुलामी से तंग आ गया तो ईश्वर ने मूसा को मसीहा बना कर भेजा, मुगल शासकों से गरीब लोग तंग आ गए तो परमशक्ति ने गुरु गोबिंद सिंह जी से खालसा पंथ की नींव रखवाई । परमशक्ति अपनी सर्वोच्चता बनाए रखने के लिए समय-समय पर परिवर्तन करती रहती है ।

स्थिरता बनाए रखने के लिए

जब भी कोई विचारधारा, रीति-रिवाज़, सामाजिक ढांचा, कानून व्यवस्था या राजनैतिक सत्ता समय के साथ कुरीतियों का शिकार हो जाती है तो समाज में अस्थिरता आ जाना स्वाभाविक है । अस्थिरता को दूर करने के लिए उस विचारधारा, कानून व्यवस्था, राजनीतिक सत्ता में परिवर्तन होता है । यह परिवर्तन अस्थिरता को दूर करके मानव जीवन को स्थिर और सुखमय बनाने के लिए ज़रुरी होता है ।

संतुलन बनाए रखने के लिए

जैसे कि आप सब जानते हैं कि प्रकृति ने हर चीज़ का जोड़ा बनाया है जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, जीवन-मृत्यु, साकार-निराकार, सर्वगुण-निर्गुण, अच्छा-बुरा, गुण-अवगुण, स्त्री-पुरुष, नास्तिक-आस्तिक आदि । इसी तरह दोनों में संतुलन बनाने के लिए भी परमशक्ति परिवर्तन करती है । भौतिकवादी हो या अध्यात्मवादी सारे भूमण्डल में प्रकृति की एक संतुलित प्रक्रिया है । जब किसी विचारधारा का ज़रूरत से ज्यादा प्रभाव हो जाए अर्थात दूसरी विचारधाराओं को समाप्त करने लगता है तब परमशक्ति व्यापक स्तर पर या निम्न स्तर पर परिवर्तन करती है । जैसे कर्मकाण्ड और ब्राह्मणवाद का प्रभाव बढ़ गया तो जड़वाद या नास्तिकवाद (सांख्य दर्शन) का जन्म हुआ । जब बुद्ध मत, जैन मत, चार्वाक मत का प्रभाव बढ़ा तो परमशक्ति ने महान् आत्माओं द्वारा चार धामों और 12 ज्योतिर्लिंगों की स्थापना करवाई । जब पूरा विश्व अपने-अपने धर्मों के लिए धर्म युद्धों में गर्क हो रहा था उस वक्त परमशक्ति ने ही महान् आत्माओं से भक्ति लहर आरम्भ करवाई और पूरे विश्व में अमन और शांति का सन्देश दिया । इस प्रकार परमशक्ति ने संतुलन स्थापित किया ।

धरती के किसी हिस्से पर जब भी भौतिकवाद ज्यादा प्रभावशाली हो जाता है और अध्यात्मज्ञान का नाश होने लगता है, नैतिकता का पतन होने लगता है और सामाजिक असंतुलन और गृह-युद्ध की स्थिति बन जाती है तब परमशक्ति संतुलन बनाने के लिए परिवर्तन करती है और यह परिवर्तन बहुत ज़रुरी होता है। परिवर्तन करना केवल परम शक्ति/कुदरत का ही काम है। परिवर्तन कोई इन्सान या महान् आत्मा अपनी इच्छा से नहीं कर सकती, परिवर्तन किया नहीं जाता अपितु हो जाता है। परिवर्तन की विशेषता यह है कि जब यह होता है तब पता नहीं लगता पर जब हो जाता है तब पता लगता है कि परिवर्तन हो गया है।

अनिश्चितता बनाए रखने के लिए

परमशक्ति जो भी करती है इन्सान के लिए ही करती है। परमशक्ति ने ही इन्सान से सम्पर्क स्थापित किया और अपने बारे में ज्ञान दिया पर अपना पूरा भेद किसी को नहीं दिया। किसी ने उसे निराकार कहा है, किसी ने साकार कहा है। आज तक कोई भी निश्चित तौर पर नहीं कह सका कि परमशक्ति/कुदरत क्या है। जब भी इन्सान कुदरत के भेदों को जानने की कोशिश करता है, उस तक पहुँचने की कोशिश करता है, परमशक्ति कुछ ऐसा कर देती है कि इन्सान उलझ कर रह जाता है अर्थात् जीवन के बाद मृत्यु होनी है यह सच्चाई है पर कब होनी है यह निश्चित नहीं है। इसी तरह परमशक्ति अनिश्चितता बनाए रखने के लिए भी परिवर्तन करती है। जैसे भूचाल, तूफान, सुनामी, बाढ़ आदि। इन प्राकृतिक आपदाओं के सामने इन्सान लाचार और बेबस है क्योंकि इनका पता ही नहीं कि यह कब आ जाएं। परमशक्ति अपना अस्तित्व और सर्वोच्चता हमेशा बनाए रखती है इसलिए अनिश्चितता बनाए रखना बहुत आवश्यक है। इस तरह परमशक्ति अनिश्चितता बनाए रखने के लिए भी परिवर्तन करती है।

सारांश

उपरोक्त जो विचार हैं उनका भाव यह निकलता है कि जब भी इन्सान विज्ञान की चकाचौंध में स्वयं को कर्ता समझने लगता है और अपने रचयिता को भूल जाता है उस समय परमशक्ति अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए, अपनी सर्वोच्चता सिद्ध करने के लिए, निर्माण और विनाश करने के लिए परिवर्तन करती है। जैसे एक साधारण इन्सान के कर्म का उद्देश्य अपने और अपने परिवार की ज़रुरतों को पूरा करना, महान् आत्माओं के कर्म का उद्देश्य समाज की भलाई और सुधार करना होता है, उसी तरह कुदरत के कर्म का उद्देश्य अपनी बनाई रचना की ज़रुरतें पूरी करना और जो भी उसके लिए उचित होता है वह करना होता है। इसलिए ही उसको कल्याणकारी भी कहा जाता है। उस कल्याणकारी ताकत को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा जाता है।

जब इन्सान में से इन्सानियत खत्म हो जाती है, विज्ञान प्रकृति के नियमों से खिलवाड़ करने लगता है तब प्रकृति के नियमानुसार धरती अपना धुरा बदलती है परिणामस्वरूप भूतल पर परिवर्तन होता है। भूतल परिवर्तन से कुछ समय पहले वह कुदरत/परमशक्ति युगों-युगों के बाद स्वयं भी इन्सान बन कर धरती पर आती है। उस समय

परमशक्ति अपने बारे में वास्तविकता का ज्ञान क्रियात्मक रूप में करवाती है और इन्सान को अपना अस्तित्व दर्शाती है। इसके बाद एक नए युग का शुभारम्भ होता है।

19
ईश्वर एक है तो मत-मतान्तर क्यों ?

संसार में अलग-अलग धर्म, सम्प्रदाय, मिशन अथवा संस्थाएं हैं। जो जिसमें आस्था रखता है उसे ही सर्वोच्च मानता है। यह भ्रम या द्वंद आदिकाल से ही मानव सभ्यता के साथ निरंतर पल्लवित होता रहा है। जैसे कहावत है कि "आवश्यकता आविष्कार की जननी है" अर्थात् जब सर्दी अधिक पड़ती है तब ही गर्म कपड़ों की आवश्यकता महसूस होती है। इसी तरह देश, काल व परिस्थितियाँ किसी नई विचारधारा को जन्म देती हैं। अल्ग अल्ग विचारधार ाएं या मत धीरे-धीरे परिपक्व हो कर मतान्तर का कारण बनते हैं।

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है कि विभिन्न विचारधाराओं या मतों की उत्पत्ति वहाँ के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के अनुरूप होती है। प्रत्येक मत या विचारधारा की उत्पत्ति वहाँ की आवश्यकताओं के अनुसार भी होती है।

मतान्तर के कारण :

4. प्राकृतिक वातावरण :-

किसी भी क्षेत्र के निवासीओं की विचारधारा, जीवन शैली तथा संस्कृति को सर्वप्रथम वहाँ का वातावरण प्रभावित करता है। प्राकृतिक वातावरण दो प्रकार से मनुष्य को प्रभावित करते है :-

ग) क्षेत्रीय जलवायु :- किसी भी क्षेत्र की जलवायु मनुष्य के स्वभाव तथा धार्मिक विचारधारा को प्रभावित करती है। मरुभूमियों में जन्म लेने वाले धर्मों तथा विचारों की कट्टरता का भी यही कारण है।

घ) धरातलीय बनावट :- वैसे तो धरातलीय बनावट तथा जलवायु दोनों तथ्य एक दूसरे के पूरक हैं। यह दोनों मिलकर ही प्राकृतिक वातावरण का निर्माण करते हैं। धरातलीय बनावट को मुख्य रूप से चार भागों में बांटा गया है।

ii) पर्वत iii) मैदान
iii) पठार iv) तटीय प्रदेश

पर्वतीय क्षेत्रों के निवासी कर्मशील होते हैं। उनके धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों पर शक्ति-पूजा का प्रभाव अधिक होता है। इसी प्रकार मैदानी क्षेत्रों के निवासी कुशाग्र एवं कृषि आधारित जीवन जीते हैं। इसलिए उनके धार्मिक उत्सव अधिकतर कृषि से सम्बंधित होते हैं।

5. सांस्कृतिक वातावरण :-

किसी भी मत या धर्म के प्रसार के लिए वहाँ की स ंस्कृति का विशेष योगदान रहता है । सांस्कृतिक वातावरण धार्मिक विचारों को गति एवं प्रभाव प्रदान करत ा है । जैसे जापान अपनी जनसंख्या की खाद्य आपूर्ति (अनाज) 40% तक कर पाता है । इसलिए भले ही वहाँ पर बौद्ध धर्म की प्रमुखता है, इसके बावजूद उनका मुख्य भोजन मछली है । इसी तरह ज्वालामुखी क्षेत्र होने के कारण जापान के प्राचीन फ्यूजीयामा ज्वालामुखी पर्वत को पूज्य मान ा जाता हैं ।

इसी प्रकार उत्तर भारत के ब्रज प्रांत में गोवर्धन पर्वत परिक्रमा प्रसिद्ध धार्मिक कार्य एवं उत्सव माना जाता है ।

6. शैक्षणिक वातावरण :-

मनुष्य के किसी भी विचार को, उसके द्वारा अर्जित की गई शिक्षा एवं ज्ञान, दोनों प्रभावित करते हैं । समय-समय पर ऐसे महापुरुष धरती पर आए, जिन्होंने स्कूल एवं विश्व विद्यालय खोल कर धार्मिक रूढ़ियों को दूर करके अपने मत का प्रचार करने का प्रयत्न किया । यह भी कालान्तर में मत-मतान्तर का कारण बना ।

4. आर्थिक कारण :-

खाने के लिए रोटी, पहनने के लिए कपड़ा और रहने के लिए मकान, व्यक्ति की यह तीन प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं । एशिया में आर्थिक स्थिति के खराब होने के कारण लोगों को प्रलोभन देकर समय समय पर धर्मान्तरण कराए गए । आज भी व्यक्ति आर्थिक तंगी से मुक्त होने के लिए नई विचारधारा को खुशी से अपनाता है ।

5. राजनैतिक कारण :-

राज्य की नीतियां तथा प्रशासन भी धार्मिक विचारधारा को प्रभावित करता है । जब-जब किसी शासक ने किसी धर्म को अपना राजधर्म घोषित किया तो उस के प्रचार और प्रसार बढ़ने के कारण अनुयायी स्वत: बढ़ते गए । भारत में सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म अपनाने के साथ सम्पूर्ण एशिया में बौद्ध धर्म प्रभावी हो गया । इसी तरह ब्रतानिया के शासन के कारण भारत में इसाई धर्म का प्रचार हुआ ।

6. वैज्ञानिक कारण :-

जैसे-जैसे विज्ञान ने उन्नति की, नई-नई खोजें की, आविष्कार किए, इन्सान स्वयं को कर्ता मानने लगा । 'ईश्वर है' इस पर से उसका विश्वास उठने लगा और धीरे-धीरे वह नास्तिकता की ओर बढ़ने लग ा । यह भी मत-मतान्तर का एक कारण बना । परन्तु 21वीं सदी के आरम्भ के साथ-साथ विज्ञान का युग आरम्भ हुआ । मानव चन्द्रमा पर पहुँच कर नई दुनियां बनाने का दावा करने लगा । विभिन्न आविष्कारों के पश्चात् सदी के महान्तम् वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने कहा कि कोई शक्ति है जो सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड को क्रियान्वित कर सन्तुलन में रखे हुए है ।

7. व्यक्तिगत कारण :-

कोई भी विचार या मत इन्सान को तब सर्वाधिक प्रभावित करता है जब वह स्वयं उसे अनुभव करता है। जैसे किसी व्यक्ति की कोई मनोकामना किसी मज़ार, मूर्ति, दरगाह या किसी व्यक्ति विशेष के आगे माथा टेकने से पूर्ण हो जाती है तो वह उसी का अनुयायी हो जाएगा। इसी तरह जब आस्था अपनी चरम सीमा पर होती है तब यह मतान्तर का ठोस कारण बन जाती है।

इसी तरह व्यक्ति अपने गुण, रुचि के अनुसार जो कर्म करता है ये सब मान्यताओं के अनुयायी होने के लिए उत्तरदायी है।

यहाँ यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि व्यक्ति के पूर्व जन्म के संस्कार, उसकी योग्यता, गुण, रुचि तथा स्वभाव को पूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। इस के साथ-साथ एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि यदि परमशक्ति की इच्छा किसी व्यक्ति पर हो जाए तो वह व्यक्ति की योग्यता, गुण, संस्कार, अच्छाई, बुराई सभी कुछ नज़र अंदाज़ कर देती है। परन्तु परमशक्ति की इच्छा का भी आधार होता है, वह है व्यक्ति द्वारा ईश्वर से किया गया नि:स्वार्थ प्यार, श्रद्धा, विश्वास, लगन और उसकी रज़ा में राज़ी रहना। परमशक्ति उस इन्सान को सभी निम्न पड़ावों में से निकाल कर अपने तक पहुंचा देती है और उसका माध्यम के रूपमें प्रयोग करके उसके द्वारा संसार को अपने बारे में ज्ञान भी देती है। वह ज्ञान भी कालान्तर में मत-मतान्तर का कारण बनता है।

परमशक्ति ने जिनको भी माध्यम बना कर धरा पर भेजा और समाज में उनके द्वारा अपने बारे में ज्ञान दिया, उन सभी का कहना है "सबका मालिक एक है"। उनके द्वारा यह भी कहा गया " एक नूर से सब जग उपजिया " अर्थात् ईश्वर एक है और उसी से सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई है। वह अनादि, अनन्त, अगम्य, अगोचर और सर्वोच्च है। उसी ईश्वर ने सब जीवों में इन्सान को सर्वश्रेष्ठ बनाया और सभी प्राणियों का सरताज बनाया है। उसे ही बुद्धि तथा सोचने समझने की शक्ति दी है।

ईश्वर ने अपना कर्तव्य निभाते हुए समय-समय पर महान् आत्माओं को धरती पर भेजकर उनके द्वारा इन्सान को अपने बारे में ज्ञान करवाया परन्तु परमशक्ति ने वह ज्ञान देश-काल तथा वहाँ के वातावरण के अनुसार अलग-अलग दिया। यह ही मत-मतान्तर का वास्तविक कारण है। उन महान् आत्माओं का महत्व रखने के लिए ईश्वर ने उनके द्वारा अपना नया रूप, नया चिह्न तथा नया नाम रखवाया। जैसे ईश्वर, अल्लाह, गॉड, राधा-स्वामी, निरंकार, एक ओंकार, ओम्, शिवलिंग, ज्योति, बिन्दु, चिराग, कैंडल आदि। ईश्वर ने इन्हीं नामों, रूपों तथा चिह्नों के अन्तर्गत अपने भक्तों की मनोकामनएं भी पूर्ण की और दर्शन भी दिए। इसी तरह ईश्वर ने समय-समय पर कुछ महान् आत्माओं को धरा पर भेज कर उनके द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी सीमा तक अपने नियमों, गुणों और शक्तियों का प्रदर्शन किया। संसार में उन महान् आत्माओं का महत्व रखने के लिए उनके स्थान भी स्थापित करवाए, उन स्थानों का महत्व रखने के लिए वहाँ पर जाने वाले लोगों की मनोकामनाएं भी पूर्ण कीं तथा उनके रूपों में भक्तों को दर्शन भी दिए। जिनकी मनोकामना जहां-जहां पर पूर्ण हुई, वहाँ-वहाँ उनकी आस्था बनती गई। जो उन महान् आत्माओं के अनुयायी बने, उन्होंने उस महान्-आत्मा के धरा से जाने

के बाद अलग-अलग सम्प्रदाय, मिशन तथा धर्म स्थापित कर लिए। इस तरह ईश्वर के अलग-अलग रूप तथा नाम प्रचलित हो गए जो बाद में मत-मतान्तर के कारण बने।